बापूकी प्रेम-प्रसादी

प्रेम

भारतीय

घनश्यामदास बिड़ला

खण्ड ४

गांधी-युग की
एक महत्वपूर्ण पत्रावली

समर्पण

बापू की यह प्रेम प्रसादी बापू को समर्पण

बापू ने समय समय पर मुझे जो पत्र लिखे
और मैंने जो उन्हें लिखा उन सबका यह संग्रह
है। महादेव भाई इत्यादि ने भी जो मुझे लिखा
या मैंने उन्हें लिखा, उन सबका भी समावेश इसमें
इसलिये है कि वे सब पत्र-व्यवहार बापू की आज्ञा
प्रेरणा या सम्मति से ही हुआ है। मैंने भी जो
इन लोगों को लिखा वह सब बापू के लिये ही था।
उन सबको बापू के ही पत्र व्यवहार मानकर
इस प्रकाशन में इसलिये स्थान दिया गया
कि यदि मेरे पत्रों को निकाल दिया जाय
तो सारी शृंखला टूट जाती है।
बापू के अधिकतर पत्र हिंदी में ही हैं।
यदि कभी उन्होंने मुझे अंग्रेजी में लिखा, या

उनकी ओर से महादेव भाई इत्यादि ने अंग्रेजी में
गुजराती, तो उन सब पत्रों का हिन्दी में अनुवाद
करके इसमें समावेश हुआ है। जब अंग्रेजी का
प्रकाशन होगा तो उसी तरह सब हिन्दी पत्रों का भी
अंग्रेजी में अनुवाद करके समावेश होगा।

इस प्रकाशन से बापू के मानस को समझ
सकने का जन समाज को एक अनुपम अव-
सर मिल जाता है। शिक्षा भी मिलती है, क्योंकि
बापू के पत्रों में सब तरह का मसाला है। सब
से महत्व की बात यह समझता हूँ कि इन सब
में व्यक्तिगत आदेश, राजनैतिक और धार्मिक
आदेश जो भी है वह एक महा लोकोत्तर पुरुष
एक साधु पुरुष के और एक सत्पुरुष के उद्गार हैं,
जो आम जन समाज के जीवन में उपयोगी और शिक्षा-
प्रद है और अपने जीवन में अवतरण करने योग्य
है।

प्रस्तावना

गाधीजी पत्र-व्यवहार म वहुत ही नियमित थे। पत्र-व्यवहार के द्वारा ही वे असख्य लोगा से हार्दिक सम्बन्ध रख सक्ते थे और उन्हे जीवन के ऊचे आदर्श सिद्ध करन के लिए प्रेरित करते थे। जिसके साथ सम्बन्ध आया, उसके व्यक्तिगत जीवन म हृदय से प्रवेश पाना उसकी योग्यता, उसकी खूबी और उसकी गहराई को समझकर उसके विकास म मदद देना, यह थी उनके पत्र-व्यवहार की विशेषता। गाधीजी का पत्र-साहित्य उनके लेखा और भाषणो के जितना ही महत्व का है। उनके व्यक्तित्व को समझने के लिए उनका यह पत्र साहित्य बहुत ही उपयोगी है। मैंने देखा है कि पत्रो म उनकी लेखन शली भी अनोखी होती है। ससार मे शायद ही ऐसा कोई नेता हुआ होगा, जिसने अपने पीछे गाधीजी के जितना पत्र-व्यवहार छोड रखा हो।

गाधीजी का पत्र-व्यवहार पढते समय मुझे हमेशा यही प्रतीत हुआ है, *माना* मैं पवित्र गगाजी मे स्नान और पान कर रहा हू। मुझे उसमे हमेशा पवित्रता और प्रसन्नता का ही अनुभव हुआ है। उसके इर्द गिर्द का वायुमडल पावन, प्राणदायी और प्रशमकारी है।

इसीलिए जब श्री घनश्यामदासजी बिडला ने गाधीजी के साथ का अपना पत्र-व्यवहार मेरे पास भेज दिया तो मुझे बडा आनन्द हुआ और उत्साह के साथ मैं उसे पढने लगा। जसे-जसे पढता गया, वस वैसे स्पष्ट होता गया कि यह केवल घनश्यामदासजी और गाधीजी के बीच का ही पत्र व्यवहार नही है। इसम तो गाधीजी के अभिन्न साथी स्व० महादेवभाई देसाई और घनश्यामदासजी के बीच का पत्र-व्यवहार ही सबसे अधिक है। इसके अतिरिक्त गाधीजी के अन्य साथियो देश के कई नेताओ और कार्यकर्ताओ, अग्रेज वाइसरायो और कूटनीतिज्ञो के साथ का पत्र व्यवहार भी है और उनकी मुलाकातो का विवरण भी।

सक्षेप म—हमारे युग का एक महत्व का इतिहास इसमे भरा हुआ है।

यह देखकर मेरे मुह से उद्गार निकल पडा

काश ! यह सारी सामग्री पाच साल पहले मेरे हाथो मे आती।

आज मेरी उम्र इक्यानबे वर्ष की है। विस्मरण ने अपनी हुकूमत मेरे दिमाग पर जोरों से चलाना शुरू कर दिया है। कई महत्व की बातें अब बड़ी रफ्तार के साथ भूलता जा रहा हूं। मुझे विषाद के साथ कबूल करना चाहिए कि पांच साल पहले यह सामग्री मेरे हाथ में आती तो जितनी गहराई में उतरकर मैं उसमें अवगाहन कर सकता उतना आज नहीं कर पाऊंगा। फिर भी मैं मानता हूं कि मूलभूत तत्वों के चिंतन की बैठक अब भी मुझमें साबूत है। उसी के सहारे मैं इस सागर में डुबकी लगाने का ढाढस कर रहा हूं।

सन १९१५ के पहले हमारे देशवासियों ने स्वराज्य प्राप्ति के तरह-तरह के प्रयोग आजमाकर देखे थे। हमने विद्रोह का प्रयोग करके देखा। प्रार्थना विनय का मार्ग भी आजमाया। औद्योगिक प्रगति में आगे बढ़ने के प्रयत्न किये। सामाजिक सुधार के आंदोलन चलाये। धर्म निष्ठा बढ़ाने की भी कोशिशें कीं। स्वदेशी और बहिष्कार के रास्ते से भी चले और बम पिस्तौल का मार्ग भी अपनाकर देखा। स्वराज्य के लिए जो-जो इलाज सूझे, या सुझाये गये, सब लगन के साथ आजमा कर हम भारतवासियों ने देखे। फिर भी न तो स्वराज्य नजदीक आया न आशा की कोई किरण दिखाई दी। हमारे चंद प्रयत्न तो अंग्रेजों का राज हटाने के बदले उसे मजबूत करने में ही मददगार हुए। देश बिलकुल घोर निराशा में पड़ा हुआ था जब सन १९१५ में गांधीजी दक्षिण आफ्रिका से भारत लौट आये।

दक्षिण आफ्रिका में जहां न हमारा राज था न वायुमंडल वहां गांधीजी ने अनपढ़, करीब-करीब असंस्कारी और दुर्दैवी भारतीयों की मदद से सत्याग्रह का एक तेजस्वी आंदोलन चलाकर उसमें सफलता पाई। दक्षिण आफ्रिका के इस अभिनव प्रयोग की, और उसके नेता कर्मवीर गांधी की खबरें हमने यहां बड़े आदर के साथ पढ़ी थीं या सुनी थीं। भारत लौटते ही जब गांधीजी ने आसेतु हिमाचल यात्रा करके सत्याग्रह की अपनी जीवन दृष्टि को समझाना शुरू किया, तब स्वराज्य की जिन्हें सचमुच भूख थी वे सब लोग उनकी ओर आकर्षित हुए। देखते ही-देखते गांधीजी के हृदय का तार राष्ट्र हृदय के तार के साथ एकराग हो गया और सारा देश उनके पीछे निःसंकोच होकर चलने के लिए तैयार हुआ। गांधीजी भारतीय संस्कृति और भारतीय पुरुषार्थ के महान प्रतिनिधि बने। त्याग संयम और तेजस्विता की भाषा बोलने लगे जो भारतीय लोकहृदय की भाषा थी। उनकी असाधारण विनम्रता और लोकोत्तर आत्मविश्वास को देखकर देश को विश्वास हुआ कि अवश्य ही यह कुछ करके दिखानेवाले हैं।

और जिस प्रकार सभी नदियां अपना सारा जल लेकर समुद्र को जा मिलती हैं उसी प्रकार स्वराज्य की लालसावाले हम भिन्न भिन्न संस्कारों पृष्ठभूमियों

और जीवन प्रणालिया के सभी लोग गाधीजी से जाकर मिले। प्रसन्नता के साथ हमने उनके नतृत्व को स्वीकार किया और उनके दिखाये हुए कार्यों म अपना अपना हिस्सा अदा करने के लिए प्रवत्त हुए।

उस समय उनके निकट सपक म आये हुए, उनके गिन चुने आत्मीय जनो म श्री घनश्यामदासजी बिडला का स्थान अनोखा है।

यह तो सभी जानते है कि घनश्यामदासजी देश के इन गिन धनिको मे से एक हैं। उनका मुख्य क्षेत्र तो औद्योगिक ही रहा है। लोग यह भी जानते है कि उन्होंने खूब कमाया है और अनेक सत्कार्यों म मुक्तहस्त से खूब खच भी किया है। गाधीजी को जब भी धन की जरूरत महसूस हुई, उन्होंने बिना सकोच घनश्यामदासजी के सामन वह रखी और घनश्यामदासजी ने बिना विलब के उसकी पूर्ति की है।

गाधीजी की अनेक शिक्षाओ मे एक महत्व की शिक्षा थी कि "धनिको को अपने-आपको अपनी सपत्ति के धनी नही मानना चाहिए बल्कि ट्रस्टी बनकर समाज की भलाइ के लिए उसका उपयोग करना चाहिए।' "यह समाज की ही सपत्ति मेरे पास है, मैं उसका धरोहर या विश्वस्त हू," ऐसा समझकर ही उसका विनियोग करना चाहिए। घनश्यामदासजी को यह शिक्षा तत्वत मान्य न होते हुए भी उन्होने वह अच्छी तरह से हृदयगम की है। देश म अनेक जगहा पर बिडला के नाम से जो शिक्षण सस्थाए धमशालाए अस्पताल आदि चल रहे है वे इसकी गवाही दत हैं। उनकी अपनी सस्थाओ के अलावा ऐसी अनेक सस्थाए दश म है, जो प्रधानतया बिडलो के दान स चल रही है। गाधीजी की करीब करीब सभी सस्थाए घनश्यामदासजी के धन से लाभान्वित हुई हैं। स्व० जमनालालजी बजाज को छाडकर शायद ही दूसरा कोई धनिक होगा, जिसने घनश्यामदासजी के जितना गाधी काय का आर्थिक बोझ उठाया हो।

एक प्रसिद्ध किस्सा है

गाधीजी दिल्ली आय हुए थे। उन्ही दिना गुरुदव रवीन्द्रनाथ भी अपनी विश्वभारती के लिए धन सग्रह करने हेतु दिल्ली पहुचे। वे जगह जगह अपन नाटय और नत्य का कायक्रम रखत थे और बाद म लोगा स धन के लिए प्राथना करत थे। गाधीजी को यह सुनकर बडा दु ख हुआ। इतना बडा पुरुष बुढाप म धन इकट्ठा करन के लिए, सो भी केवल साठ हजार रुपया क लिए इस प्रकार अपन नाटय और नत्य का प्रदशन करता फिरे, यह गाधीजी को असह्य हुआ। उन्ह तुरत घनश्यामदासजी का ही स्मरण हुआ। महादेवभाई स उन्ह कहलवा दिया आप अपने धनी मित्रा को लिखें और छह जन दस-दस हजार की रकम गुरुदेव को भेजकर हिन्दुस्तान को इस शम स बचा लें।'

कहने की आवश्यकता नहीं कि स्वयं घनश्यामदासजी ने यह पूरी रकम गुरुदेव को गुप्तदान के रूप में भेजकर उनको चितामुक्त कर दिया।

गाधीजी ने अपनी संस्थाओं के लिए तो उनसे रुपये लिये ही, दूसरो को भी इस तरह दिलाये। इस पत्र संग्रह में ऐसे कई प्रमाण मिलेंगे जिनसे यह मालूम होगा कि गाधीजी ने किन किन लोगो को बिडलाजी के द्वारा आर्थिक सहायता पहुचाई थी और बिडलाजी ने किस हद तक अपनी संपत्ति गाधीजी के चरणों में अर्पित की थी।

सचमुच एक तरह से यह एक अद्वितीय सम्बन्ध था।

लेकिन इस पर से कोई यह न मान बैठे कि उदारता के साथ दान देना इतना ही केवल घनश्यामदासजी का गाधी कार्य के साथ सम्बन्ध रहा है।

स्वराज्य की जो साधना गाधीजी ने हमारे सामने रखी उसके दो प्रमुख अंग थे। एक था रचनात्मक और दूसरा राजनैतिक।

गाधीजी ने देखा कि सामाजिक प्रतिष्ठा का उच्च नीच भाव और 'सास्कृतिक प्रणाली के लिए पसन्द किया हुआ आप पर भाव' इन दो तत्वो की नीव पर हमने अपना समाज विधान तैयार किया है। परिणाम स्वरूप शांति स्वास्थ्य और सहजीवन के तत्व हमारे समाज जीवन में होते हुए भी हम राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता को सभालने में असमर्थ हुए हैं। भारतवर्ष का पूरा इतिहास इस कमजोरी का प्रमाण देता है।

हमारी इस राष्ट्रीय कमजोरी को हटाकर भविष्य के प्राणवान सर्वोदयी नव समाज का निर्माण करना गाधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हिन्दू मुस्लिम एकता अस्पृश्यता निवारण खादी ग्रामोद्योग राष्ट्रभाषा प्रचार जैसे अठारह-बीस कार्यक्रम देश के सामने रखे और कहा कि "इस कार्यक्रम का पूरा अमल ही पूर्ण स्वराज्य है।"

गाधीजी का यह कार्यक्रम केवल दया धर्म मूलक सेवा कार्य का कार्यक्रम नहीं था बल्कि बहुवर्णी बहुजाति बहुधर्मी बहुभाषी विशाल भारत को सघटित करने का एक दीर्घदर्शी प्रयास था। मानस परिवर्तन के द्वारा जीवन परिवर्तन और जीवन परिवर्तन के द्वारा समाज परिवर्तन की सार्वभौम क्रांति का यह अभिक्रम था। इसमें गाधीजी ने पुराने मूल्यों को नया रूप देना प्रारम्भ किया था।

घनश्यामदासजी ने इस कार्यक्रम की क्रातिकारी सभावनाओ को पहचानकर उसे हृदय से अपनाया। हिन्दू मुस्लिम एकता और अस्पृश्यता निवारण जैसे कार्यक्रमो में उनकी कितनी गहरी दिलचस्पी थी और उनको अमल में लाने के लिए उन्होंने क्या क्या किया, इसका प्रमाण इस संग्रह के कई पत्र देते हैं। गाधीजी के

साथ उनका अगर कहीं मतभेद रहा हो तो वह कुछ अंश में खादी की अर्थनीति के बारे में रहा होगा। इस मामले में वे स्वतंत्र विचार रखते हैं। फिर भी ध्यान खींचनेवाली बात तो यह है कि स्वतंत्र विचार रखते हुए भी एक निष्ठावान सैनिक की भांति वे चरखा कातते रहे, यहां तक कि उन्होंने खादी का व्रत भी लिया। उनके इस अनुशासन प्रिय स्वभाव पर गांधीजी मुग्ध थे। उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त करने के लिए घनश्यामदासजी को एक खास किस्म का चरखा भी भेंट में दिया था और उनके कते हुए सूत की सराहना करके 'जिस पवित्र कार्य का आपने आरम्भ किया है उसको आप हरगिज न छोड़ें," इस प्रकार की नसीहत भी दी थी।

गांधीजी की एक विशेषता थी। वे मनुष्य के सद्गुणों को तुरंत परख लेते थे और देश हित के लिए उसका पूर्ण उपयोग कर लेते थे। हमारा अपने ऊपर जितना विश्वास होता है उससे कहीं अधिक विश्वास गांधीजी का हम पर था। हमको गढ़ते समय वे 'हमारी कमजोर श्रद्धा को मजबूत बनाते थे" और अंत में हमारी सामान्य शक्ति से अधिक काम सहज ही हमसे करा लेते थे।।।

धनिक होते हुए भी धन की माया से अलिप्त रहने की घनश्यामदासजी की आकांक्षा को गांधीजी ने परख लिया था। उनकी व्यवहार कुशलता को भी परख लिया था। उनके विकास में मददगार होने के लिए गांधीजी ने जो उनका मार्ग-दर्शन किया है, उसमें व्यापक मनुष्य जीवन के अनेक छोटे मोटे पहलुओं पर एक क्रांतदर्शी शिक्षा शास्त्री का प्रकाश हम देखने को मिलता है। गांधीजी के पत्रों की यह सबसे बड़ी विशेषता है।

इसमें भी विशेष बात तो यह है कि स्वयं घनश्यामदासजी के विनम्र और निर्मल जीवन का चित्र भी हम इस पत्र संग्रह में देखने को मिलता है।

घनश्यामदासजी गांधीजी के प्रति आकर्षित हुए, गांधीजी की धर्म-परायणता, नेकनीयती और सत्य की खोज की उत्कटता को देखकर वह धीरे धीरे उनके परमभक्त बन गये। गांधीजी जो भी जिम्मेदारी उठाते थे उनका बोझ अपने सिर पर लेना घनश्यामदासजी ने अपना कर्त्तव्य माना और पूरे हृदय के साथ वह अदा किया।

मगर उन्होंने अपना पूरा हृदय उत्साह के साथ उंडेल दिया था गांधीजी के राजनैतिक कार्य में। गांधीजी और सरकार के बीच उन दिनों पर्दे की आड़ में जो कुछ चलता था, उसका भीतरी इतिहास हमें इस पुस्तक में पढ़ने को मिलता है। हमारे युग के वे दिन ही ऐसे थे कि प्रतिदिन कुछ-न-कुछ नया इतिहास गांधीजी के आस-पास हुआ या बना करता था। घनश्यामदासजी को गांधी कार्य के इसी अंग

म विशेष और गहरी रुचि थी। हर छोटी-बडी बात म गहराई के साथ ध्यान देते देते व धीरे धीरे उन गिने चुन व्यक्तियो म माने जान लगे, जो गाधीजी का राजनतिक मानस अच्छी तरह म समझते हैं। देखते ही देखत व गाधीजी के राज नतिक मानस के विश्वासी व्याख्याता के रूप म अग्रेज राजनीतिना के सामने आत्मविश्वास के साथ पेश आन लगे। गाधीजी किस दिशा मे सोच रहे हैं इसका खयाल अग्रेज राजनीतिना को करा देना और अग्रेजा के मानम का खयाल गाधीजी को करा देना यह उ्हाने अपनी जिम्मेदारी मानी। यह स्वेच्छा-स्वीकृत जिम्मेदारी थी, जो उ्हाने असाधारण कुशलता और सफलता के साथ निभाई।

इस पुस्तक म घनश्यामदासजी का जा चित्र विशेष रूप से नजर के सामने आता है वह है एक कुशल राजनीतिन का, और वह कौरवो के दरबार म समझौते के लिए गये हुए श्रीकृष्ण का स्मरण हमे करा देता है।

करीब बत्तीस साल तक चले हुए इस पत्र यवहार को देखकर प्रथम मरे मन म आया कि मैं इसकी तीन स्वतत्र पुस्तकें बनाने की सलाह दू। एक म सिफ गाधीजी और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हो जिसस हम इस बात का दशन हो सके कि कितने विविध विषयो की गहराई म उतरकर और प्रत्येक विषय का मम समझकर गाधीजी कस अपने माने हुए आत्मीय जना का मागदशन करते थ और किस प्रकार अपना वात्सल्य उन पर उडेलते थे।

दूसरी पुस्तक म सिफ महादेवभाई और घनश्यामदासजी के बीच का ही पत्र व्यवहार हो जिसस दो निकटतम स्नेहिया के विश्रब्ध वार्तालाप की खुशबू का हम अनुभव मिले।

और तीसरी म बाकी की सभी सामग्री हो जो ऐतिहासिक दृष्टि स महत्व रखती है।

मगर सोचने पर मुझे लगा कि नही जो सामग्री यहा है वह वसी ही एकत्र प्रकाशित की जानी चाहिए जसी वह क्रमश यहा दी गई है भले ही पुस्तक का आकार बढ जाय या उस दो जिल्दो म प्रकाशित करना पडे। यह कोइ मनोरजन के लिए लिखी हुई पुस्तक नही है। यह तो एक सागर है जो खूब ऐतिहासिक महत्व रखता है। आनेवाली पीढिया जब हमारे जमाने को समझने की कोशिश करेंगी तब उ्हें यह सदभ ग्रथ बहुत ही उपयोगी और आकषक मालूम हागा। इतिहास के विद्यार्थिया के लिए इसम काफी महत्व की सामग्री भरी हुई मिलेगी। यह एक बहुत ही कीमती ऐतिहासिक दस्तावेज है जिसका पूरा महत्व भविष्य की पीढ़िया ही जानगी।

मर जसे गाधी भक्त को तो इसमे लोकोत्तर प्रेरणा मिली है।

इस उम्र म और तबीयत की ऐसी हालत म यह प्रस्तावना तैयार कर सका उसका बहुत बडा श्रेय मरे तरुण साथी श्री रवीन्द्र केलेकर की मदद को है।

स्नहाधीन

अनुक्रमणिका

१९४०

१	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२ जनवरी)	मूल	३
२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ जनवरी)	अनु०	३
३	लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (१४ जनवरी)	अनु०	६
४	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ जनवरी)	अनु०	६
५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ जनवरी)	मूल	८
६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ जनवरी)	मूल	१३
७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ जनवरी)	अनु०	१४
८	मुझे महादेव देसाई का तार (१८ जनवरी)	अनु०	१५
९	लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (२३ जनवरी)	अनु०	१६
१०	मुझे बापू का तार (२७ जनवरी)	अनु०	१६
११	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२७ जनवरी)	मूल	१७
१२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३१ जनवरी)	अनु०	१७
१३	हम बहुत-कुछ करना है (६ फरवरी)	अनु०	१८
१४	महादेव देसाई को मेरा पत्र (८ फरवरी)	अनु०	२१
१५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ फरवरी)	मूल	२३
१६	महादेव देसाई को मेरा पत्र (९ फरवरी)	अनु०	२४
१७	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१० फरवरी)	अनु०	२५
१८	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१० फरवरी)	अनु०	२५
१९	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ फरवरी)	मूल	२६
२०	महादेव देसाई को मेरा तार (२२ फरवरी)	अनु०	२९
२१	मुझे महादेव देसाई का तार (२३ फरवरी)	अनु०	३०
२२	बजरंगलालजी को महादेव देसाई का पत्र (२३ फरवरी)	अनु०	३०
२३	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ फरवरी)	मूल	३१

२४	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२४ फरवरी)	अनु०	३१
२५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३ मार्च)	अनु०	३२
२६	महादेव देसाई को मेरा पत्र (८ मार्च)	अनु०	३३
२७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (११ मार्च)	अनु०	३४
२८	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१४ मार्च)	अनु०	३५
२९	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ मार्च)	अनु०	३६
३०	मुझे बापू का पत्र (१७ मार्च)	मूल	३८
३१	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ मार्च)	मूल	३८
३२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२९ मार्च)	मूल	३९
३३	बापू को अबुल कलाम आजाद का पत्र (३० मार्च)	अनु०	४०
३४	लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (४ अप्रैल)	अनु०	४१
३५	मौ० अबुल कलाम आजाद को बापू का पत्र (४ अप्रैल)	अनु०	४३
३६	एस० राधाकृष्णन को बापू का पत्र (५ अप्रैल)	अनु०	४३
३७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१२ अप्रैल)	मूल	४४
३८	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ अप्रैल)	अनु०	४५
३९	बापू को मेरा पत्र (१७ अप्रैल)	मूल	४७
४०	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१९ अप्रैल)	अनु०	४७
४१	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१९ अप्रैल)	मूल	४९
४२	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२० अप्रैल)	अनु०	५०
४३	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२५ अप्रैल)	मूल	५०
४४	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२६ अप्रैल)	अनु०	५१
४५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२९ अप्रैल)	मूल	५३
४६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३० अप्रैल)	अनु०	५४
४७	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ मई)	मूल	५६
४८	मुझे बापू का पत्र (२१ मई)	मूल	५७
४९	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२३ मई)	अनु०	५८
५०	महादेव देसाई को मेरा पत्र (२४ मई)	अनु०	५९
५१	मुझे बापू का पत्र (३० मई)	मूल	५९
५२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (३ जून)	मूल	६१
५३	मुझे बापू का पत्र (४ जून)	मूल	६२
५४	मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ जून)	मूल	६२
५५	मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ जून)	मूल	६३

५६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१० जून) मूल ६४
५७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (११ जून) अनु० ६५
५८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१२ जून) अनु० ६५
५९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ जून) अनु० ६६
६० मुझे महादेव देसाई का पत्र (१३ जून) अनु० ६७
६१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१३ जून) मूल ६७
६२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१४ जून) अनु० ६८
६३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ जून) मूल ७०
६४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ जून) अनु० ७१
६५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ जून) अनु० ७२
६६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१६ जून) अनु० ७२
६७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ जून) अनु० ७४
६८ महादेव देसाई को मेरा तार (२० जून) अनु० ७४
६९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२२ जून) मूल ७५
७० मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ जून) मूल ७५
७१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१० जुलाई) अनु० ७६
७२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१६ जुलाई) अनु० ७७
७३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ जुलाई) अनु० ७७
७४ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ जुलाई) मूल ७८
७५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१९ जुलाई) मूल ७८
७६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ जुलाई) अनु० ७९
७७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२७ जुलाई) मूल ८०
७८ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१ अगस्त) अनु० ८१
७९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (४ अगस्त) मूल ८१
८० महादेव देसाई को मेरा पत्र (६ अगस्त) अनु० ८२
८१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (७ अगस्त) अनु० ८३
८२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ अगस्त) मूल ८४
८३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (९ अगस्त) मूल ८५
८४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (११ अगस्त) अनु० ८६
८५ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ अगस्त) अनु० ८६
८६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ अगस्त) मूल ८७
८७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ अगस्त) अनु० ८७

८८ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ अगस्त) अनु० ८८

८९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ अगस्त) अनु० ८९

९० मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ अगस्त) मूल ९०

९१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१९ अगस्त) अनु० ९१

९२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१९ अगस्त) अनु० ९१

९३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२० अगस्त) अनु० ९२

९४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ अगस्त) अनु० ९३

९५ लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (२९ अगस्त) अनु० ९४

९६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ अगस्त) अनु० ९५

९७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (३१ अगस्त) मूल ९५

९८ बापू को लार्ड लिनलिथगो का पत्र (२ सितम्बर) अनु० ९६

९९ लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (६ सितम्बर) अनु० ९८

१०० मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ सितम्बर) अनु० ९९

१०१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (९ सितम्बर) अनु० १००

१०२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१० सितम्बर) अनु० १०१

१०३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (११ सितम्बर) अनु० १०२

१०४ मुझे बापू का तार (२१ सितम्बर) अनु० १०२

१०५ महादेव देसाई का मेरा तार (२२ सितम्बर) अनु० १०३

१०६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (४ अक्तूबर) अनु० १०३

१०७ मुझे महादेव देसाई का तार (८ अक्तूबर) अनु० १०४

१०८ बापू का मेरा पत्र (९ अक्तूबर) मूल १०४

१०९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१० अक्तूबर) अनु० १०९

११० महादेव देसाई का मेरा पत्र (१३ अक्तूबर) अनु० ११३

१११ वाइसराय के निजी सचिव को बापू का तार (१७ अक्तूबर) अनु० ११४

११२ बापू को वाइसराय के निजी सचिव का तार (१९ अक्तूबर) अनु० ११५

११३ लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (२० अक्तूबर) अनु० ११५

११४ वाइसराय का बापू का तार (२१ अक्तूबर) अनु० ११७

११५ बापू को लार्ड लिनलिथगो का पत्र (२४ अक्तूबर) अनु० ११७

११६ बापू का वाइसराय का तार (२४ अक्तूबर) अनु० ११९

११७ वाइसराय का बापू का तार (२५ अक्तूबर) अनु० ११९

११८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२६ अक्तूबर) अनु० १२०
११९ मुझे बापू का पत्र (२६ अक्तूबर) मूल १२१
१२० मुझे महादेव देसाई का पत्र (२८ अक्तूबर) मूल १२१
१२१ लार्ड लिनलिथगो को बापू का पत्र (३० अक्तूबर) अनु० १२२
१२२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२ नवम्बर) अनु० १२५
१२३ बापू को जे० जी० लेथवेट का पत्र (२ नवम्बर) अनु० १२६
१२४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (६ नवम्बर) अनु० १२६
१२५ दिल्ली की प्रेस-कान्फ्रेंस में महादेव देसाई का भाषण (१० नवम्बर) अनु० १२८
१२६ जे० जी० लेथवेट को बापू का पत्र (११ नवम्बर) अनु० १३८
१२७ बापू को मेरा पत्र (११ नवम्बर) मूल १४०
१२८ जे० जी० लेथवेट को बापू के पत्र का सारांश (११ नवम्बर) अनु० १४४
१२९ महादेव देसाई की दिल्ली-डायरी के कुछ अंश (११ १४ नवम्बर) अनु० १४५
१३० मुझे महादेव देसाई का पत्र (१५ नवम्बर) अनु० १७९
१३१ मुझे अमृतकौर का पत्र (१५ नवम्बर) मूल १८०
१३२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ नवम्बर) मूल १८०
१३३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२१ नवम्बर) अनु० १८१
१३४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२५ नवम्बर) अनु० १८२
१३५ जे० जी० लेथवेट को बापू का पत्र (२७ नवम्बर) अनु० १८३
१३६ बापू को जे० जी० लेथवेट का पत्र (३० नवम्बर) अनु० १८६
१३७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (३० नवम्बर) अनु० १८६
१३८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१ दिसम्बर) मूल १८७
१३९ रेजिनाल्ड मैक्सवेल को बापू का पत्र (२ दिसम्बर) अनु० १८८
१४० महादेव देसाई को मेरा पत्र (२ दिसम्बर) अनु० १८९
१४१ बापू को रेजिनाल्ड मैक्सवेल का पत्र (७ दिसम्बर) अनु० १९१
१४२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (८ दिसम्बर) मूल १९१
१४३ जे० जी० लेथवेट को बापू का पत्र (१० दिसम्बर) अनु० १९२
१४४ बापू को जे० जी० लेथवेट का पत्र (१४ दिसम्बर) अनु० १९४
१४५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१६ दिसम्बर) मूल १९४
१४६ गांधीजी के साथ वार्तालाप पर नोट (१८ दिसम्बर) अनु० १९५

१४७ मुझे महादव देसाई का पत्र (२१ दिसम्बर) अनु० १९६
१४८ महादव देसाई को मरा पत्र (२३ दिसम्बर) अनु० १९७
१४९ महात्मा गाधी का हिटलर को खुला पत्र (२४ दिसम्बर) अनु० १९८
१५० गाधीजी से हुई चर्चा पर नोट (२५ दिसम्बर) अनु० २०१
१५१ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२७ दिसम्बर) मूल २०७
१५२ महादेव देसाई को मरा पत्र (२९ दिसम्बर) अनु० २०९
१५३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३० दिसम्बर) अनु० २११

बिना तारीख क पत्र

१५४ जे० जी० लथवेट को महादेव देसाई का पत्र अनु० २१३
१५५ लाड लिनलिथगो को बापू का पत्र अनु० २१३

१९४१

१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (५ जनवरी) अनु० २१७
२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२० जनवरी) मूल २१७
३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२२ जनवरी) अनु० २१८
४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२४ जनवरी) अनु० २१९
५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२५ जनवरी) मूल २२१
६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ जनवरी) अनु० २२२
७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (७ फरवरी) अनु० २२३
८ मुझे बापू का पत्र (१० फरवरी) मूल २२३
९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१६ फरवरी) मूल २२४
१० महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ फरवरी) अनु० २२५
११ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ फरवरी) अनु० २२५
१२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२० फरवरी) मूल २२६
१३ महादेव देसाई को मरा पत्र (२६ फरवरी) अनु० २२७
१४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३ माच) अनु० २२८
१५ महादेव देसाई का फार्मूला (६ माच) अनु० २२८
१६ सरकार की दमन नीति पर महादेव देसाई का नोट (८ माच) अनु० २३०
१७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१३ माच) अनु० २३२
१८ १ जनवरी स २२ फरवरी १९४१ तक छोटूभाई द्वारा
किये गय काम का विवरण अनु० २३४

१९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१६ मार्च) अनु० २३८
२० डेस्मंड यंग का महादेव देसाई का पत्र (२२ मार्च) अनु० २३९
२१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२३ मार्च) अनु० २४०
२२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ मार्च) अनु० २४१
२३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२६ मार्च) अनु० २४१
२४ महादेव देसाई को रिचार्ड टोटेनहाम का पत्र (२७ मार्च) अनु० २४२
२५ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२८ मार्च) अनु० २४३
२६ सर रिचार्ड टोटेनहाम, गृह विभाग को भेजे गये तार की नकल (२९ मार्च) अनु० २४३
२७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३१ मार्च) अनु० २४४
२८ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ अप्रैल) अनु० २४४
२९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२० अप्रैल) अनु० २४५
३० मुझे महादेव देसाई का पत्र (३ मई) अनु० २४६
३१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३ मई) अनु० २४७
३२ मुझे बापू का पत्र (८ मई) मूल २४७
३३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२० मई) मूल २४८
३४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२२ मई) अनु० २४८
३५ बापू को मेरा पत्र (३० मई) अनु० २४९
३६ मुझे बापू का पत्र (३१ मई) मूल २५२
३७ बापू को मेरा पत्र (२ जून) मूल २५३
३८ मुझे बापू का पत्र (४ जून) मूल २५४
३९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ जून) मूल २५४
४० महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ जून) अनु० २५५
४१ मुझे बापू का पत्र (२२ जुलाई) मूल २५६
४२ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ जुलाई) अनु० २५७
४३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ जुलाई) अनु० २५७
४४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१ अगस्त) अनु० २५८
४५ महादेव देसाई को मेरा पत्र (९ अगस्त) अनु० २५८
४६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ सितम्बर) अनु० २५९
४७ मुझे बापू का पत्र (१२ सितम्बर) मूल २५९
४८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२२ सितम्बर) अनु० २६०

४९ बापू को मेरा पत्र (२३ सितम्बर) मूल २६१
५० मुझे बापू का पत्र (२४ सितम्बर) मूल २६४
५१ मुझे बापू का पत्र (२५ सितम्बर) मूल २६४
५२ मुझे महादेव देसाई का तार (२५ सितम्बर) अनु० २६५
५३ मुझे बापू का तार (२५ सितम्बर) अनु० २६५
५४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२५ सितम्बर) अनु० २६६
५५ मुझे बापू का पत्र (२६ सितम्बर) मूल २६६
५६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२७ सितम्बर) अनु० २६७
५७ बापू को मेरा पत्र (२७ सितम्बर) मूल २६८
५८ मुझे बापू का पत्र (२ अक्तूबर) मूल २६९
५९ बापू को मेरा पत्र (५ अक्तूबर) मूल २७०
६० बापू को हरेन्द्रचन्द्र मुकर्जी का पत्र (८ अक्तूबर) अनु० २७०
६१ हरेन्द्रचन्द्र मुकर्जी को बापू का पत्र (१३ अक्तूबर) अनु० २७२
६२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१८ अक्तूबर) मूल २७३
६३ महादेव देसाई को मेरा तार (२२ अक्तूबर) अनु० २७४
६४ मुझे महादेव देसाई का तार (२२ अक्तूबर) अनु० २७५
६५ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२३ अक्तूबर) अनु० २७५
६६ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२४ अक्तूबर) मूल २७६
६७ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२६ अक्तूबर) अनु० २७६
६८ महादेव देसाई को रामनरेश त्रिपाठी का पत्र (२६ अक्तूबर) मूल २७७
६९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२८ अक्तूबर) अनु० २७९
७० मुझे महादेव देसाई का पत्र (२९ अक्तूबर) मूल २७८
७१ महादेव देसाई को मेरा पत्र (३ नवम्बर) अनु० २८०
७२ बापू को मेरा पत्र (४ नवम्बर) मूल २८१
७३ मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ नवम्बर) अनु० २८३
७४ दुर्गाप्रसाद को मेरा तार (८ नवम्बर) अनु० २८४
७५ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१४ नवम्बर) अनु० २८४
७६ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१२ दिसम्बर) अनु० २८५
७७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२३ दिसम्बर) अनु० २८६
७८ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ दिसम्बर) अनु० २८७
७९ मुझे महादेव देसाई का पत्र (२८ दिसम्बर) अनु० २८८
८० महादेव देसाई को मेरा पत्र (३० दिसम्बर) अनु० २८९

बिना तारीख के पत्र

८१	बापू को मेरा पत्र	अनु०	२९१
८२	मुझे महादेव देसाई का पत्र	मूल	२९४

१९४२

१	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१ जनवरी)	अनु०	२९७
२	मुझे महादेव देसाई का पत्र (२ जनवरी)	अनु०	२९७
३	महादेव देसाई को मेरा पत्र (५ जनवरी)	अनु०	२९८
४	महादेव देसाई को मेरा पत्र (७ जनवरी)	अनु०	२९८
५	महादेव देसाई को मेरा पत्र (८ जनवरी)	अनु०	२९८
६	मुझे महादेव देसाई का पत्र (११ जनवरी)	अनु०	२९९
७	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ जनवरी)	अनु०	३००
८	मुझे नारायण देसाई का पत्र (२७ फरवरी)	मूल	३०३
९	बापू को मेरा पत्र (२८ फरवरी)	मूल	३०३
१०	मुझे बापू का पत्र (१ मार्च)	मूल	३०४
११	मुझे बापू का पत्र (१ मार्च)	मूल	३०५
१२	मुझे बापू का पत्र (५ मार्च)	मूल	३०५
१३	मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ मार्च)	मूल	३०६
१४	मुझे अमृतकौर का पत्र (१० मार्च)	मूल	३०७
१५	मुझे अमृतकौर का पत्र (१२ मार्च)	मूल	३०८
१६	अमृतकौर को मेरा पत्र (१४ मार्च)	अनु०	३०९
१७	मुझे अमृतकौर का पत्र (१४ मार्च)	मूल	३१०
१८	मुझे महादेव देसाई का पत्र (१४ मार्च)	मूल	३१०
१९	मुझे बापू का पत्र (१५ मार्च)	मूल	३११
२०	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१७ मार्च)	मूल	३१२
२१	मुझे अमृतकौर का पत्र (२१ मार्च)	मूल	३१३
२२	अमृतकौर को मेरा पत्र (२५ मार्च)	मूल	३१४
२३	मुझे बापू का पत्र (८ अप्रैल)	मूल	३१५
२४	महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ अप्रैल)	मूल	३१५
२५	मुझे बापू का पत्र (१६ अप्रैल)	मूल	३१७
२६	बजरंगलाल पुरोहित को महादेव देसाई का पत्र (१८ अप्रैल)	मूल	३१८

२७ महादेव देसाई को बजरंगलाल पुरोहित का पत्र (२० अप्रल) मूल ३१६
२८ मुझे बापू का पत्र (२५ अप्रल) मूल ३२०
२९ मुझे महादेव दसाई का पत्र (३० अप्रल) मूल ३२०
३० महादव दसाई को मेरा पत्र (२३ मई) अनु० ३२१
३१ मदनलाल कोठारी को महादेव देसाई का पत्र (२४ मई) मूल ३२२
३२ बजरंगलाल पुरोहित को महादेव देसाई का पत्र (११ जून) अनु० ३२२
३३ मुझे महादव दसाई का पत्र (११ जून) अनु० ३२३
३४ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१५ जून) अनु० ३२४
३५ मुझे महादेव दसाई का तार (२३ जून) अनु० ३२५
३६ मुझे बापू का पत्र (२४ जून) मूल ३२६
३७ महादेव देसाई को मेरा तार (२५ जून) अनु० ३२७
३८ मुझे महादव दसाई का पत्र (२५ जून) अनु० ३२७
३९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (२७ जून) अनु० ३३१
४० मुझे महादेव देसाई का पत्र (२६ जून) मूल ३३२
४१ हरिराम गोयल को महादव देसाई का पत्र (३ जुलाई) मूल ३३३
४२ मुझे महादेव देसाई का पत्र (६ जुलाई) अनु० ३३४
४३ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१३ जुलाई) अनु० ३३५
४४ महादव देसाई को मेरा पत्र (१४ जुलाई) अनु० ३३७
४५ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१४ जुलाई) अनु० ३३९
४६ मुझे महादेव देसाई का तार (१५ जुलाई) अनु० ३४०
४७ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१६ जुलाई) अनु० ३४०
४८ मुझे महादेव देसाई का पत्र (१७ जुलाई) मूल ३४३
४९ महादेव देसाई को मेरा पत्र (१८ जुलाई) अनु० ३४४

[अगस्त १९४२ म भारत छोडो आदोलन आरम्भ हो जाने के कारण लेखक का गाधीजी स पत्र-व्यवहार नहीं हुआ। पुन यह शृखला जनवरी १९४४ स आरम्भ हुई।]

१९४४

१ मुझे सुशीला नयर का पत्र (६
२ प्यारेलाल का मेरा तार (१३ म

३	मुझे बापू का पहली पत्र (१० जून)	अनु०	३५०
४	प्यारेलाल को मेरा तार (४ जुलाई)	अनु०	३५१
५	मुझे प्यारेलाल का तार (४ जुलाई)	अनु०	३५२
६	मुझे प्यारेलाल का पत्र (३१ जुलाई)	अनु०	३५२
७	प्यारेलाल को मेरा पत्र (७ अगस्त)	अनु०	३५३
८	रामेश्वरदास बिड़ला को बापू का पत्र (१२ अगस्त)	मूल	३५४
९	मुझे प्यारेलाल का पत्र (१४ अगस्त)	अनु०	३५५
१०	प्यारेलाल को मेरा पत्र (२१ अगस्त)	अनु०	३५७
११	प्यारेलाल को मेरा पत्र (२४ अगस्त)	अनु०	३५८
१२	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२९ अगस्त)	अनु०	३५९
१३	प्यारेलाल को मेरा पत्र (३ सितम्बर)	अनु०	३६०
१४	मुझे प्यारेलाल का पत्र (६ सितम्बर)	अनु०	३६१
१५	प्यारेलाल को मेरा तार (१३ सितम्बर)	अनु०	३६३
१६	प्यारेलाल को मेरा तार (१३ सितम्बर)	अनु०	३६३
१७	प्यारेलाल को मेरा तार (१३ सितम्बर)	अनु०	३६४
१८	मुझे बापू का तार (१६ सितम्बर)	अनु०	३६४
१९	मुझे प्यारेलाल का पत्र (१६ सितम्बर)	अनु०	३६५
२०	बापू को मेरा तार (१ अक्तूबर)	अनु०	३६६
२१	मुझे बापू का पत्र (८ अक्तूबर)	मूल	३६६
२२	मुझे बापू का पत्र (१६ अक्तूबर)	मूल	३६७
२३	प्यारेलाल को मेरा पत्र (२० अक्तूबर)	अनु०	३६८
२४	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२२ अक्तूबर)	मूल	३६८
२५	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२४ अक्तूबर)	अनु०	३६९
२६	बापू को ए० सी० नन्दा का पत्र (१४ नवम्बर)	अनु०	३७०
२७	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२७ नवम्बर)	अनु०	३७२
२८	प्यारेलाल को मेरा पत्र (३० नवम्बर)	अनु०	३७३
२९	प्यारेलाल को मेरा पत्र (३ दिसम्बर)	अनु०	३७४
३०	मुझे प्यारेलाल का पत्र (६ दिसम्बर)	अनु०	३७५
३१	मुझे प्यारेलाल का तार (९ दिसम्बर)	अनु०	३७७
३२	प्यारेलाल को जियाजीराव कॉटन मिल के मैनेजर का पत्र (३० दिसम्बर)	अनु०	३७७

बिना तारीख का पत्र

३३	प्यारेलाल को मेरा तार	अनु०	३८३

१९४५

१	मुझे बापू का पत्र (९ जनवरी)	मूल	३८७
२	सुशीला नयर को मेरा पत्र (१२ जनवरी)	अनु०	३८८
३	मुझे प्यारेलाल का पत्र (१६ जनवरी)	अनु०	३८८
४	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१८ जनवरी)	अनु०	३९०
५	नरहरि परीख को मेरा पत्र (२१ जनवरी)	अनु०	३९१
६	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२३ जनवरी)	अनु०	३९३
७	प्यारेलाल को मेरा पत्र (२३ जनवरी)	अनु०	३९३
८	मुझे बापू का पत्र (२४ जनवरी)	मूल	३९४
९	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२५ जनवरी)	अनु०	३९४
१०	मुझे नरहरि परीख का पत्र (२५ जनवरी)	मूल	३९५
११	प्यारेलाल को मेरा पत्र (२६ जनवरी)	अनु०	३९५
१२	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२ फरवरी)	अनु०	३९७
१३	मुझे बापू का पत्र (५ मार्च)	मूल	३९९
१४	मुझे बापू का पत्र (१५ मार्च)	मूल	३९९
१५	बापू को मेरा तार (१८ मार्च)	अनु०	४००
१६	बापू का मेरा तार (१९ मार्च)	अनु०	४००
१७	मुझे बापू का तार (२० मार्च)	अनु०	४०१
१८	मुझे बापू का पत्र (२० मार्च)	मूल	४०१
१९	बापू को मेरा तार (२३ मार्च)	अनु०	४०२
२०	मुझे बापू का पत्र (२८ मार्च)	मूल	४०२
२१	मुझे बापू का पत्र (९ अप्रैल)	मूल	४०३
२२	मुझे बापू का पत्र (६ मई)	मूल	४०४
२३	बापू का मेरा तार (७ मई)	अनु०	४०५
२४	मुझे बापू का तार (९ मई)	अनु०	४०६
२५	बापू को मेरा तार (१० मई)	अनु०	४०७
२६	मुझे बापू का पत्र (१० मई)	मूल	४०७
२७	बापू को मेरा तार (१४ मई)	अनु०	४०८
२८	बापू का मेरा पत्र (१८ मई)	मूल	४०९

२९	मुझे बापू का तार (१० सितम्बर)	अनु०	४११
३०	बापू को मेरा तार (२ अक्तूबर)	अनु०	४११
३१	मुझे बापू का पत्र (३ अक्तूबर)	मूल	४१२
३२	मुझे सुशीला नैयर का पत्र (२४ अक्तूबर)	मूल	४१२
३३	मुझे बापू का पत्र (२६ अक्तूबर)	मूल	४१३
३४	मुझे बापू का पत्र (४ नवम्बर)	मूल	४१४
३५	बापू को मेरा पत्र (१२ नवम्बर)	मूल	४१४
३६	मुझे बापू का पत्र (१८ नवम्बर)	मूल	४१५
३७	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१० दिसम्बर)	अनु०	४१६

१९४६

१	मुझे बापू का पत्र (२[illegible] मार्च)	मूल	४१६
२	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२७ मार्च)	अनु०	४१६
३	मुझे प्यारेलाल का पत्र (१४ मई)	अनु०	४२०
४	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१५ मई)	अनु०	४२१
५	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२६ मई)	अनु०	४२१
६	मुझे बापू का पत्र (२७ मई)	मूल	४२३
७	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१४ जून)	अनु०	४२३
८	मुझे बापू का पत्र (१२ जुलाई)	मूल	४२४
९	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२७ अगस्त)	अनु०	४२४
१०	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१० सितम्बर)	अनु०	४२५
११	मुझे प्यारेलाल का पत्र (११ सितम्बर)	अनु०	४२६
१२	मुझे प्यारेलाल का तार (२४ अक्तूबर)	अनु०	४२७
१३	प्यारेलाल को मेरा तार (२८ अक्तूबर)	अनु०	४२७
१४	मुझे प्यारेलाल का पत्र (१२ नवम्बर)	अनु०	४२८
१५	मुझे सुशीला नैयर का पत्र (१३ नवम्बर)	मूल	४३१
१६	प्यारेलाल को मेरा पत्र (१८ नवम्बर)	अनु०	४३३
१७	बिहारशरीफ के नाम बापू की अपील	अनु०	४३५
१८	प्यारेलाल को मेरा तार (२० नवम्बर)	अनु०	४३७
१९	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२ नवम्बर)	मूल	४३७
२०	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२४ नवम्बर)	अनु०	४३८
२१	मुझे प्यारेलाल का पत्र (२६ [illegible])	अनु०	४४०

२२ मुझे बापू का पत्र (२६ नवम्बर) मूल ४४१
२३ मुझे क्षितीशचन्द्र दासगुप्त का पत्र (१ दिसम्बर) अनु० ४४२
२४ मुझे बापू का पत्र (२९ नवम्बर) मूल ४४३
२५ मुझे प्यारेलाल का पत्र (३० नवम्बर) अनु० ४४३
२६ मुझे बापू का पत्र (१ दिसम्बर) मूल ४४४
२७ प्यारेलाल को मेरा पत्र (४ दिसम्बर) अनु० ४४५
२८ मुझे सुशीला नैयर का पत्र (५ दिसम्बर) मूल ४४६
२९ मुझे बापू का पत्र (६ दिसम्बर) मूल ४४७
३० प्यारेलाल को मेरा पत्र (१३ दिसम्बर) अनु० ४४७
३१ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२५ दिसम्बर) अनु० ४४८

बिना तारीख का पत्र

३२ *आसाम के बारे में गांधीजी के साथ हुई चर्चा पर नोट* अनु० ४५१

१९४७

१ प्यारेलाल को मेरा पत्र (१८ जनवरी) अनु० ४५९
२ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२५ जनवरी) अनु० ४६१
३ मुझे सुशीला नैयर का पत्र (२६ जनवरी) मूल ४६३
४ मुझे प्यारेलाल का पत्र (११ फरवरी) अनु० ४६४
५ मुझे बापू का पत्र (१५ फरवरी) मूल ४६५
६ प्यारेलाल को मेरा पत्र (१७ फरवरी) अनु० ४६७
७ मुझे प्यारेलाल का पत्र (३० जुलाई) अनु० ४६८
८ प्यारेलाल को मेरा पत्र (६ अगस्त) अनु० ४६९
९ कलकत्ता में (४ ६ सितम्बर) अनु० ४७०
१० मुझे प्यारेलाल का पत्र (७ सितम्बर) अनु० ४७९
११ मुझे प्यारेलाल का पत्र (९ अक्तूबर) अनु० ४८१
१२ प्यारेलाल को मेरा पत्र (१४ अक्तूबर) अनु० ४८३
१३ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२[illegible] अक्तूबर) अनु० ४८३
१४ प्यारेलाल को मेरा पत्र (३० अक्तूबर) अनु० ४८४

१९५५

१ मुझे प्यारेलाल का पत्र (२० जनवरी) अनु० ४८९

१९४० के पत्र

१

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रांत)
२ १ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

वल्लभभाई लिखते हैं 'दिल्ली का काम आसान नहीं लगता। जिन्ना का रोष तो बढता ही जाता है। उसकी बगल में राजा लोग पड़े हैं, जामसाहेब की टोली तो है ही। ऐंग्लो इण्डियन भी है ही। अब शायद वह डिक्लेरेशन का विरोध न करें, पर सेण्टर में जो कुछ होगा उसमें तो वह दखल करनेवाला है ही। सिविलियनों में से कई कंजर्वेटिस की उसे मदद है बाकी हमारी सरकार का भी ज्यों का त्यों चल रहा है। गिब्सन का भी राज राजकोट में चल रहा है। उसने चिनाई को दीवान बनाया और वीरावाला के भाई और लड़के को कायम किया। गिब्सन जब तक है, तब तक राजकोट की परिस्थिति सुधरनेवाली नहीं है।

यह गिब्सनवाली बात तो सच्ची है। चिनाई, वीरावाला से भी बदतर आदमी है।

आपका,
महादेव

२

कलकत्ता
१२ जनवरी १९४०

प्रिय महादेवभाई,

यह खुशी की बात है कि बापू ने वाइसराय की स्पीच अच्छे रूप में ग्रहण की है। वाइसराय मामले का निपटारा करने के लिए कितने उत्सुक हैं यह उनके सम्पर्क में आने पर ही भली भांति जाना जा सकता है। मुझे तो यह प्रतीत हुआ कि वहां जो निराशा की भावना व्याप्त थी, वह अकेले वाइसराय तक ही सीमित

रही थी उनके परिवार के अन्य सदस्यों तक भी छनकर पहुंच चुकी थी। मुझे इंग्लैंड से जो कटिंग मिल रही हैं उनसे पता लगता है कि अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों की समस्या को जो तूल दिया गया था अब उसके खिलाफ प्रतिक्रिया जोर पकड़ रही है। अतएव वाइसराय की स्पीच से सचमुच ढाढ़स बंधा है। उन्होंने जो यह कहा है कि सम्प्रदायों के बीच न्याय का आचरण किया जायगा उसका भी महत्त्व है। इस प्रकार उन्होंने जिन्ना को खबरदार कर दिया है कि उसने समझौता करने में ढिलाई से काम लिया तो सम्राट की सरकार अल्पसंख्यक वर्गों और जातियों को समुचित आश्वासन देने का भार स्वयं अपने ऊपर ले लेगी पर प्रगति अबाध रूप से होती रहेगी।

मुझे ऐसा लगता है कि अब अगला कदम हमारी ओर से उठाया जाना चाहिए। वाइसराय अब तक कई कदम उठा चुके हैं और उनमें से एक भी हमें ठीक नहीं जचा। मैं समझता हूं बापू को उनकी अपील अंगीकार करके उनकी सहायता के लिए आगे बढ़ना चाहिए। अब मामला इस स्थिति में पहुंच गया है कि बापू पूरे आत्म विश्वास के साथ वाइसराय से तुरंत भेंट करने की बात उठायें।

मेरी तो यह धारणा है कि साम्प्रदायिक प्रश्न का निपटारा करने के मामले में कान्स्टीट्यूएंट असेम्बली की मशीनरी बड़े काम की साबित होगी। अब तक हमने न जाने कितने पैक्ट किये और वे सब निकम्मे प्रतीत हुए, उनके द्वारा साम्प्रदायिक समस्या का हमेशा के लिए निपटारा नहीं हो पाया। हमें अब वैसी कोई जोखिम नहीं उठानी चाहिए। इस बार हमें 'नेताओं' से बातचीत करने के बजाय स्वयं अल्पसंख्यक जातियों के पास सीधे पहुंचना चाहिए। कांस्टीटयूएंट असेम्बली की इसलिए भी जरूरत है। इस प्रश्न पर भी मेरे खयाल में यदि कांस्टीट्यूएंट असेम्बली का यह सीमित अर्थ रखे कि केवल निर्वाचित प्रतिनिधि ही उसमें भाग ले सकेंगे तो जो मतभेद आज दिखाई पड़ता है वह नहीं दिखाई देगा। इस ढंग की असेम्बली का विधिवत निर्वाचन अन्य प्रणालियां अपनाकर भी सम्भव हो सकता है। हमें वयस्क मताधिकार आदि के पचड़े में नहीं पड़ना चाहिए। सुप्रसिद्ध नेताओं की एक छोटी सी तदर्थ समिति जिसके निर्णय को प्रांतीय विधान सभाएं मान्यता प्रदान करें तो वह कांस्टीटयूएंट असेम्बली के समतुल्य समझी जा सकती है। या यह भी हो सकता है कि फिलहाल हम इस प्रश्न को हाथ ही न लगायें। यदि हम दुबारा इस शर्त पर पद ग्रहण करें कि जब तक शासन विधान की रचना का काम किसी निर्वाचित असेम्बली को न सौंपा जाय तब तक हम शासन विधान के रचना कार्य में भाग नहीं लेंगे, तो हमारा अभीष्ट सिद्ध हो जाता है।

मुझे यकीन है कि बापू स्थिति स निपटन क हजार रास्त खाज निकालेंगे। हम औपनिवेशिक दर्जे के स्वराज्य की उपलब्धि तथा साम्प्रदायिक समस्या क हल की तलाश सरकारी ढाचे स बाहर करने के बजाय उसके भीतर प्रवश करके अधिक शीघ्रता से कर सकेंग।

पता नही औपनिवशिक दर्जे और पूण स्वराज्य म इतना अधिक भेद क्या किया जा रहा है। यदि हम वस्टमिन्स्टर के विधान के अनुरूप औपनिवशिक दर्जा प्राप्त कर सके ता बाद म जब चाह तब सम्बन्ध विच्छेद करने को हम स्वत त्र रहग। हम खुद ब्रिटेन स कह ही क्या कि वह हमसे नाता तोड द ? जब हम नाता तोडन की स्वतन्त्रता मिल जायगी ता इच्छा होने पर हम स्वय वसा करन का उत्तरदायित्व ग्रहण कर सकते हैं। वसी स्थिति म यदि हम नाता तोडने का निणय लेंगे, तो निर्वाचकों की पूण सहमति से लेंग। यदि हम ब्रिटन स कहेंग कि वह साम्राज्य की बिरादरी से हम निकाल दे तो कुछ ऐसा निणय करेंग जिसका अधिकार एकमात्र निर्वाचित प्रतिनिधियो को ही है। वास्तव मे ब्रिटेन उत्तर म यह कह सकता है हमे इसकी जिम्मेदारी लेन की क्या जरूरत है ? यदि आप लोगों की ऐसी ही इच्छा है तो औपनिवेशिक दर्जा हासिल करने क बाद आपको स्वय वसा करने की पूरी आजादी रहेगी मैं समझता हू कि तक उनके पक्ष म हो जायगा।

हिन्दी प्रचार समिति के समक्ष तुमन जो भाषण दिया, उसका ब्योरा मैंन पढा। मर खयाल म तुमन जो शेर सुनाया वह गलत था। मैंने उस अलग तरह म सुना ह। मैंन तुम्हारे शर को शुद्ध रूप म दर्शान का प्रयत्न किया है। यदि तुम्हारा वाला मजमून ठीक हुआ तो भी मेरा वाला पढन मे ज्यादा अच्छा लगता है। तुमने शेर की चारो पक्तियो म गलतिया की है। पर तुम्हारा भाषण बढिया रहा और तुम्हारी भाषा का तो कहना ही क्या !

इस पत्र के साथ चौधरी बिहारीलाल का एक पत्र भी भेजता हू। तुम्ह वह रोचक लगगा। मैं उन्हें लिख रहा हू कि मैं १००) महीना देन का तयार हू। मैं तो नही समझता कि उन्हे २५०) मासिक की जरूरत है। पर यदि बापू समझें कि कुछ अधिक महायता दनी चाहिए ता मुझे लिख भेजना।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सगाव

३

१४ जनवरी, १९४०

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

मैंने आपकी बम्बईवाली स्पीच एक से अधिक बार पढ़ी। मैं यह पत्र आपके सामने अपनी कठिनाइयां रखने के लिए लिख रहा हूं। वेस्टमिंस्टर के विधान में औपनिवेशिक दर्जे और स्वतन्त्रता को एक दूसरे का पर्यायवाची माना गया है। यदि ऐसी बात है तो वह पर्याय क्यों न काम में लिया जाय जो भारत के लिए उपयुक्त हो।

आपने अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों के प्रश्न की जिस ढंग से चर्चा की है उसके लिए आपके पास पर्याप्त वैध कारण रहे होंगे, पर आपके वक्तव्य के मर्म के बारे में मुझे भारी संशय है। आपका परिगणित जातियों का हवाला मेरी समझ में बिलकुल नहीं आया।

यदि आपको लगे कि आप मुझसे मिलना चाहेंगे तो आपके तार या पत्र के आने भर की देर है मैं आ जाऊंगा। मैं कार्यकारिणी में शायद २२ तारीख तक उलझा रहूंगा।

भवदीय
मो० क० गांधी

४

सगांव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रांत)
१५ जनवरी १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका लम्बा पत्र मिला। इंग्लैंड के लिए भारत की स्वतन्त्रता की घोषणा करना असम्भव है यह जो आपने लिखा है उसका मर्म मैं समझा। पर बापू का कहना है कि भारत को जिस दर्जे का औपनिवेशिक स्वराज्य मिलेगा इस बारे में

५

सगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१७ १ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके सब पत्र मिले। मैं फिर से बाहर गया था— वालचद के साथ। उनकी शुगर फैक्टरी देखने। आपको कभी बहुत सी बाते बतलाऊगा।

इसके साथ बापू का एक लम्बा इण्टरव्यू भेज रहा हू। टाइम्स आफ इण्डिया वाले को दिया था। पर उसने उसका उपयोग नही किया। क्योकि उसने माना कि उससे उसकी दाल नही गलेगी।

यह पत्र उतावली मे लिख रहा हू।

आपका,
महादेव

टाइम्स आफ इण्डिया के साथ बापू का इटरव्यू

[रिपोटर ने गाधीजी के साथ अपनी मुलाकात का आरम्भ इस प्रकार किया]

रिपोटर गतिरोध आता दिखाई देता है शायद वह इस समय भी है। क्या हम नामजद किये गये वास्तविक प्रतिनिधियो की सहायता से समस्या का हल तलाश नही कर सकते ?

गाधीजी नामजद किये गये वास्तविक प्रतिनिधि एक दूसरे के विरोधवाची हैं। वे केवल नामजद करनेवाले का ही प्रतिनिधित्व कर सकते है। वतमान वार्ता के सदभ मे वाइसराय ही एकमात्र नामजद करनेवाला हो सकता है। आप ऐसे गुट का वास्तविक प्रतिनिधित्व करनेवाला नही कह सकते। यदि आपका अभिप्राय थोडे से प्रतिनिधियो से हो तो कम-से-कम मैं जिन्ना साहब को वास्तविक प्रतिनिधि के रूप मे ग्रहण कर लूगा, पर शर्त यह है कि उन्हे लाखो करोडो स्त्री पुरुष मुक्त

सेन में निर्वाचित करें जैसा अमरीका के राष्ट्रपति के चुनाव के समय होता है।

रिपोर्टर सचमुच ?

गांधीजी क्यों नहीं ? क्या मेरे इस कथन में कोई दोष है ? मैं आधुनिक युग का सबसे बड़ा प्रजातन्त्रवादी होने का दावा करता हूँ। मेरी आस्था अहिंसा की बुनियाद पर टिकी है, इसलिए मानव स्वभाव में मेरी आस्था है।

रिपोर्टर अल्पसंख्यक जातियाँ संविधान निर्माण परिषद् के खिलाफ हैं। क्या आपको ऐसा लगता है कि आपका इस ढंग के प्रतिनिधित्व का सुझाव उन्हें स्वीकार होगा ?

गांधीजी एक सही चीज पर आपत्ति करनेवाला इन्सान गलती का भागी होता है। ब्रिटिश राजनेताओं ने इस धारणा का सृजन किया है कि वे लोग जिन्हें अपने अधीन रखेंगे उनके साथ स्वतन्त्र व्यक्तियों जैसा व्यवहार करेंगे। कांग्रेस इस धारणा में निहित नेकनीयती को अनुभव की कसौटी पर कसना चाहती थी। फलतः जो उत्तर हो उसका इस बात से कोई सरोकार नहीं होना चाहिए कि भारत क्या चाहता है और क्या नहीं चाहता है। अब प्रश्न यह उठता है कि ऐसा उत्तर किसे दिया जाय ? यदि कोई विद्रोही शक्ति शासन की बागडोर हथियाना चाहे तो वह सचमुच विद्रोह का आचरण करनेवाली समझी जायगी। पर यहाँ तो किसी प्रकार का विद्रोह है ही नहीं। एकमात्र कांग्रेस ही प्रमुख संस्था है। हाँ, मैं यह बात स्वीकार करता हूँ कि प्रतिद्वंद्वी संस्थाओं की मौजूदगी के कारण सत्ता की बागडोर कांग्रेस को नहीं सौंपी जा सकती। पर यदि ब्रिटेन अपनी घोषणा को सक्रिय रूप देने का इच्छुक है तो वह ऐसा सहज ही कर सकता है। वह शासन-विधान बनाने के लिए एक परिषद् बैठाये जिसमें जनता द्वारा निर्वाचित लोग भाग लें। यह परिषद् जो शासन विधान तैयार करे ब्रिटेन उसे अमल में लाये। जो सदस्य-गण साम्प्रदायिक जातियों और वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हों वे अपने अपने वर्गों के हितों की रक्षा के लिए आवश्यक कायदे-कानून बनायें। बहुत सम्भव है कि इन प्रतिनिधियों के लिए भी ऐसा शासन विधान तैयार करना कठिन हो जो सबको स्वीकार हो और अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों के हितार्थ जो कानून कायदे बनें वे भी बहुतों को स्वीकार न हों। पर ब्रिटेन को तो अपनी नेकनीयती साबित करनी चाहिए। मेरा विश्वास है कि यदि

प्रतिनिधियो का निर्वाचन ठीक और निर्दोष ढग स किया जाए तो इस प्रकार निर्वाचित प्रतिनिधि ऐसा शासन विधान बनान म अवश्य समथ होंग जो अमल म लाया जा मके।

रिपोटर   फज कीजिए जनमत लिया जाए और जनता शासन विधान निर्माण करनेवाली परिपद का जन्म दन की जरूरत न समझे तो क्या आप वसे जनमत का मा य करेंगे ?

गाधाजी   ऐसा करने क लिए म बाध्य हू।

रिपोटर   यदि नामजद लोग आम तौर से सबका जचनेवाली योजना प्रस्तुत करें तो आप उसे स्वीकार करेंगे ? या आप नामजदगी के ही खिलाफ है ?

गाधीजी   मेरे मा यता प्रदान करने या न करने की बात ही नही उठती ह। मा यता के वध हाने के लिए यह आवश्यक है कि वसी मा यता एक ठीक ढग स निर्वाचित सभा द्वारा दी गई हो। वसी परिषद वतमान सरकार अथवा उसके द्वारा नामजद किये गये व्यक्ति या व्यक्तियो का स्थान ग्रहण करगी।

रिपाटर   यदि आपका समाधान हो जाए कि नामजद की गई परिषद के माध्यम से प्रजातत्र की उपलब्धि सम्भव ह क्या तब भी आपकी आपत्ति बनी रहेगी ? क्या कुछ दिन ठहरकर यह देखना उपयुक्त नही होगा कि किस कोटि के व्यक्ति नामजद किय गय है ?

गाधीजी   मैं नामजदगी को हमशा सदेह की दृष्टि से देखता रहूगा क्योकि उसके द्वारा सब लोग सतुष्ट नही हो सकते। जनता के समाधान का एकमात्र साधन निर्वाचन प्रणाली ह। काग्रेस के दावे क बावजूद काग्रस एक एसी सस्था है जो तीस करोड जनता म से केवल तीस लाख मत दाताओ का प्रतिनिधित्व करती है। फलत भारत सचिव का यह कहना वाजिब है कि काग्रस सारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व नही करती है। इसीलिए काग्रस न यह चुनौती दी है कि जनता क पास जाकर उसके प्रतिनिधि सस्था होने के दावे की साथकता परख ली जाए। राज महाराज और भारत मे पलनेवाले यूरोपियन भी यही कर सकते हैं। यदि वे ऐसा न करें तो इसम हमारा क्या दोष है ?

रिपोटर   प्रजातत्रीय भारत म आप भारतीय नरेशो क लिए कौन सा स्थान रखेंगे ?

गाधीजी   मैं उ हे अपनी प्रजा के ट्रस्टी क रूप म आचरण करने का लाभप्रद काय सौंपूगा। हा मैं उनसे यह अवश्य कहूगा कि जो काम उनके

सुपुर्द किया है उसी के अनुरूप आचरण करें। उन्हें उतनी ही सुविधाएं दी जाएंगी, जो ब्रिटेन के राजा को प्राप्त है। कुछ भी हो वे हैं तो अधीन राजा। वे ब्रिटेन से बढ़ चढ़कर तो होने से रहे। इंग्लैंड का राजा किसी को फांसी पर नहीं लटका सकता वह नियत निश्चित शासन प्रणाली के अनुरूप ही आचरण कर सकता है। वह भी एक नागरिक मात्र है। हां, यह अवश्य है कि नागरिकों में उसका दर्जा सबसे ऊंचा है। यदि मैं राजतंत्र में आस्था रखने लगूं तो एकमात्र इंग्लैंड के राजतंत्र को ही पसंद करूंगा और रियासती प्रजा को यह निर्णय करने का अधिकार क्यों न रहे कि वह क्या चाहती है। जहां तक देशी राज्यों की न्याय-व्यवस्था का सम्बन्ध है, मेरा बराबर यही कहना रहा है कि उनकी उच्चतम अदालतें भारत के हाईकोर्ट की देखरेख में काम करें।

रिपोर्टर हो सकता है ब्रिटिश ढंग का प्रजातंत्रीय ढांचा भारत के लिए अनुपयुक्त सिद्ध हो ?

गांधीजी इसका निर्णय शासन विधान परिषद करेगी। वे दिन हमेशा के लिए चले गये, जब तथाकथित प्रतिनिधि अथवा नामजद व्यक्ति भारत के भाग्य का निर्णय करते थे।

रिपोर्टर क्या आपकी धारणा है कि परिषद आर्थिक ढंग के प्रजातंत्र का सुझाव देगी ?

गांधीजी मैं परिषद के बुद्धि विवेक में आस्था रखना चाहूंगा। जहां तक मुझे दिखाई पड़ता है भारत के लिए एकमात्र यही प्रणाली ठीक रहेगी। पर यदि कोई उससे बढ़िया प्रणाली पेश करे तो मैं उसके बारे में अवश्य विचार करूंगा।

रिपोर्टर क्या आप यह मानेंगे कि ब्रिटेन की नेकनीयती में शक की गुंजाइश नहीं है ? जो देर लग रही है, वह इस भयंकर युद्ध के कारण लग रही है क्योंकि वह इसमें बुरी तरह फंसा हुआ है।

गांधीजी अंग्रेजों की नेकनीयती में मेरी आस्था ज्यों की-त्यों है। इसीलिए मैं उन्हें मनाने में लगा रहता हूं। साथ ही मैं अपने लोगों को शक्ति संचय करने के लिए भी कहता हूं। यदि संघर्ष अनिवार्य हुआ तो उसके लिए तैयारी करने की जरूरत है। पर मैं उस घड़ी को टालने की भरसक कोशिश कर रहा हूं। मेरा यह विश्वास है कि इस समय जो फूट पड़ी हुई है उसके लिए ब्रिटेन का पुराना आचरण उत्तरदायी है।

रिपोर्टर यदि ब्रिटेन युद्ध में हार गया तो ?

गांधीजी ब्रिटेन हारा तो मुझे दुःख होगा। पर मैं अपने आपको असहाय कदापि नहीं समझूगा। फर्ज कीजिए यदि रूस जर्मनी इटली और जापान ने भारत पर कब्जा करने के लिए एक गुट बना लिया और वैसी स्थिति में भी भारत ने अहिंसा की नीति पर चलने का संकल्प लिया तो मैं निश्चिन्त रहूगा। अहिंसा के पालन से भारत किसी भी गुट का सामना करने में समर्थ रहेगा। आप देखेंगे कि ब्रिटेन के प्रति मेरी सहानुभूति में स्वार्थ की भावना लेशमात्र भी नहीं है। यदि ब्रिटेन ने सचमुच *न्याय का पक्ष अपनाया है तो भगवान उस भारत के प्रति न्याय की* घोषणा करने की प्रेरणा अवश्य देगा। मैं इस बात के लिए कदापि तैयार नहीं हू कि ब्रिटेन न्याय के पक्ष में हो अथवा न हो जीत उसकी होनी ही चाहिए। यदि भारत अन्याय का पक्ष लेगा तो भारत नष्ट हो जाएगा। मैं यह अनेक बार कह चुका हू कि यदि हिन्दुओं ने *अस्पृश्यता के दूषण का निवारण नहीं किया तो हिन्दुत्व नष्ट हो* जाएगा। मैं तो यहा तक आगे बढ़ूगा कि यदि भारत अन्याय का पक्ष लेने लगे तो मैं उसके विनाश की भगवान से याचना करूगा ठीक जिस प्रकार बोअर युद्ध में इंग्लैंड को पराजित होना पड़ा था। यह माना कि ब्रिटेन के पास भौतिक शक्ति के प्रचुर साधन हैं पर भौतिक *शक्ति पर आवश्यकता से अधिक निर्भर रहना न्यायोचित नहीं है।* मुझे इस बात की खुशी है कि ब्रिटेन अब भी प्रेम के देवता से प्रार्थना करता है गोले बारूद के देवता से नहीं। इसलिए मेरी यही आशा है कि वह एक स्वतंत्र भारत के नैतिक समर्थन की सहायता लेगा। इस समय वह भारत से जो केवल भौतिक समर्थन प्राप्त कर *रहा है उसका एकमात्र कारण यही है कि भारत एक अधीन देश है।* मैं चाहता हू कि ब्रिटेन भारत का नैतिक समर्थन प्राप्त करे और युद्ध में विजयी हो। भगवान करे इस युद्ध का अन्त एक नैतिक पहलू को लेकर हो और विश्व का अंतःकरण ही इसका अंतिम निर्णायक सिद्ध हो। यह तभी सम्भव होगा जब ब्रिटेन को स्वतंत्र भारत का नैतिक समर्थन प्राप्त होगा। कम से कम मेरा यही दृष्टिकोण है।

सेगांव वर्धा
७ जनवरी १९४०

६

सेगाव
१७ १ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

यह पत्र हिन्दी में लिखता हू। भूलाभाई और दूसरे लोग आय और उन्होंने बापूजी से अपनी वाइसराय के साथ हुई बातो का जो बयान दिया उससे बापू को शका है कि शायद मुलाकात का परिणाम कुछ न निकले। उन लोगो का कहना यह था कि जो पोजीशन उन्होंने अपने बम्बई के भाषण में ली है, उस पर वह तनिक भी एडवास नही करेंगे। बल्कि एडवास करना अनमॉरल होगा। सरदार इन बातो मे और ऐंठ गये और उनको तो यह लगा कि बापू ने जो पहला पत्र लिखा, नही लिखना चाहिए था। इन सब बातो का असर बापू के मन पर यह हुआ कि एक दूसरा पत्र लिखना चाहिए। कल टेलिफोन पर तो मैंने आपसे कहा था कि वह पत्र नही लिखा जाएगा। पर बापू को रात नीद नही आई और सुबह निश्चय किया कि पत्र लिखना चाहिए। पत्र की नकल भेज रहा हू। साथ साथ एक तार भी दिया कि मेहरबानी करके मेरे पहले पत्र का जवाब तब तक मौकूफ रखिए जब तक आपको मेरा दूसरा पत्र न मिले। अब तो सब बात भगवान के हाथ मे है। बापू तो कहते है कि वाइसराय साहब उन्हे अच्छी तरह समझते है और वे कहेंगे कि यह आदमी इतना अच्छा और सीधा है कि अलाउड थिंकिंग करके मेरे साथ शेयर करता है। राजाजी को यह सब पसद नही था पर पीछे वे भी मान गए।

आपका
महादेव

७

सेगाव (वर्धा होकर)
२३ जनवरी १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

महामहिम वाइसराय के दो पत्र मिले हैं। दोनों ही खास अच्छे हैं। साथ में प्रतिलिपियां भेज रहा हूं। बापू ने उत्तर में ४ फरवरी का सुझाव दिया है। उनका पत्र भी बड़ा अच्छा रहा। मुझे यकीन है वह वाइसराय को पसंद आयेगा।

सप्रेम
महादेव

संलग्न

वाइसराय शिविर
बड़ौदा
१७ जनवरी, १९४०

प्रिय मिस्टर गांधी,

आपके १४ तारीख के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। पत्र मुझे कल संध्या को मिला। यह कहना अनावश्यक है कि मेरी बम्बई की स्पीच के बारे में इतने सुंदर विचार व्यक्त किये। आपके कथन की मैं सराहना करता हूं। आपको जब भी सुविधा हो आपसे मिलकर मुझे हर्ष होगा। मैं दिल्ली आगामी कल की संध्या तक लौट जाऊंगा और ऐसा लगता है कि उसके बाद कई दिन मुझे कार्यव्यस्त रहना होगा। उधर आप भी कार्यकारिणी में उलझे रहेंगे जैसा कि आप कहते हैं। इस लिए क्या आपके लिए इस मास के अंत में अथवा फरवरी के आरम्भ में किसी दिन भेंट के लिए आना सुविधाजनक रहेगा? २९ जनवरी के बाद मुझे पूरी सुविधा रहेगी। कौन सा दिन ठीक रहेगा यह बाद में तय कर लिया जाएगा।

हार्दिक सद्भावनाओं के साथ

आपका
लिनलिथगो

२१ जनवरी, १९४०

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके १७ जनवरी के पत्र के लिए अनेकानेक धन्यवाद। आपका तार और आपके पत्र के उत्तर में यहां से भेजा गया मेरा उत्तर दोनों पास हो गये।

आपके अभिप्राय को मैंने पूरी तरह समझा है। और आपने मेरी कठिनाइयों के प्रति जो भावना व्यक्त की है उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि हम दोनों के मन में यदि कोई संशय हो तो उसके निवारण के लिए हमारा मिलना वाञ्छनीय रहेगा। हो सकता है कोई समझौता हो ही जाए। यदि बातचीत के दौरान ऐसा लगे कि किन्हीं मुद्दों को लेकर और अधिक विचार विनिमय की आवश्यकता है, तो केवल इसी धारणा से हमारी भेंट में कोई बाधा उपस्थित नहीं होनी चाहिए। कम-से-कम इस बारे में तो मेरा पक्का विश्वास है कि पत्र व्यवहार के माध्यम से गलतफहमी होने की अधिक सम्भावना है, साक्षात्कार के द्वारा वैसी गलतफहमी की सम्भावना बहुत कम रहती है। अतः यदि आप आना चाहें और आगामी मास के प्रारम्भिक दिनों में से कोई दिन आपके लिए सुविधाजनक हो तो भेंट का प्रबन्ध कर लिया जायेगा।

भवदीय,
लिनलिथगो

८

तार

वर्धागंज
१८ जनवरी, १९४०

घनश्यामदास बिड़ला
पिलानी

आज दिल्ली एक महत्त्वपूर्ण पत्र गया है।

९

सेगांव वर्धा
२३ जनवरी, १९४०

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

आपके दोनों सहृदयतापूर्ण पत्रों के लिए धन्यवाद। दूसरा पत्र अभी पहुंचा है। पत्र में आपने जो भावना व्यक्त की है कि बातचीत के दौरान समझौता हो, न हो फिर भी हम कोशिश करनी चाहिए।

८ फरवरी के बाद किसी भी दिन मेरे लिए दिल्ली आना सुविधाजनक रहेगा, पर ११ तारीख को सेगांव में हरिजन सेवक संघ की बैठक है उसके लिए मुझे दिल्ली से लौटना होगा। यदि आप तार द्वारा सूचित कर सकें तो अच्छा रहेगा।

भवदीय
मो० क० गांधी

१०

तार

वर्धागंज
२७ जनवरी १९४०

या तो हरिजन सेवक संघ की बैठक घोषणा के अनुसार वहां हो, या ६ ता० के बाद वहां हो। मेरा विशेष कार्य समाप्त होने के बाद वहां मेरे रुके रहने की अपेक्षा मत करना। अथवा मलिकान्दा के बाद वर्धा में बैठक बुलाओ।

—बापू

११

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
२७ १ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू बडे विचित्र हैं। व तो मानते हैं कि दिल्ली म उनको एक-दो दिन का ही काम रहेगा। इसम निराशा है। और साथ ही यह भी कहते हैं कि औरो को बुलाना पडे तो ठहरना पड, वह दूसरी बात है। इसम आशा बनती है। तब भी कहते हैं कि मुझे १० तारीख तक ठहरना है। एसा समझकर हरिजन-सेवक सघ की सभा १० को क्या रखी जाए ? दो दिन ही ठहरना है ऐसा समझकर ६ को ही रखी जाए। आपने ७ ८ अनाउन्स कर दी होती तो अच्छा हो जाता। अब तक अनाउन्स नही किया है, इस बात का बापू अब लाभ उठा रहे हैं। और उनका दिल तो यहा के अस्पताल म पडा हुआ है। गुजराती, 'हरिजनबन्धु' म 'गुजरातिओ ने' नाम का लेख बापू का आया है। अवश्य पढियेगा। सेगाव का नाम आपने सेवा ग्राम रखा। गवनमेंट रेकाड मे भी गाव का नाम बदलने की अर्जी गई है और बदल जायेगा परतु पागलखाना' रखा होता तो कसा अच्छा होता।

आपका
महादेव

१२

सेगाव वर्धा होकर
३१ जनवरी १६४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपको यह बात दिलचस्प लगेगी कि ठीक जिस समय आप मुझे फोन पर जफरुल्ला के साथ अपनी भेंट का ब्योरा दे रहे थे, मैंने जिन्ना पर एक लेख तैयार करके बापू के सामने रखा था। मैंने यह बात आपको नही बताई क्योकि मुझे यकीन नही था कि बापू लेख को स्वीकृति दे देंगे। खैर, लेख सही-सलामत पास

हो गया और इस हफ्ते के अंक में जा रहा है। एक लेख और भी है, मुझे यकीन है कि वह भी आपको पसन्द आयगा। पर उसके सबसे सुन्दर अंश को बापू ने काट छाटकर ठिकाने लगा दिया है क्योंकि वह जवाहरलाल को चिढाना नहीं चाहते थे। वह लेख वास्तव में आयरलैण्ड के इतिहास का एक पृष्ठ है। उसमें मैंने भारतीय शासन विधान के संदर्भ में उस इतिहास का निचोड प्रस्तुत करते हुए ग्रिफिथ का यह उद्धरण दिया है "हमने आयरिश प्रजातंत्र की शपथ अवश्य ग्रहण की पर जैसा कि प्रजातंत्र के प्रधान डि वेलेरा ने स्वयं कहा है इस शपथ का वह यही अर्थ लगाते हैं कि उसके द्वारा वह प्रजातंत्र का अधिक से-अधिक कल्याण करने को बाध्य हैं। यही बात हमारे ऊपर भी लागू होती है। हमारा भी यही कहना है। आयरलैड के अधिक से अधिक कल्याण के निमित्त जितना कर सकते थे हमने किया। यदि आयरलैड के लोग कहने लगें कि हम और तो सब-कुछ मिल गया पर प्रजातंत्र की सत्ता नहीं मिली और हम उसके लिए लड़ेंगे तो मैं उनसे कहूगा, तुम लोग मूर्ख हो।" इसके बाद मैंने अपनी टिप्पणी दी "ये शब्द हममें से कुछ आवश्यकता से अधिक उत्साही व्यक्तियों के लिए चेतावनी के समान हैं।" बापू ने इस अंश को काट दिया है। मैंने बापू से पूछा "क्या आप ग्रिफिथ के कथन से सहमत नहीं हैं?" बापू बोले 'मैं सहमत तो हू पर यह बात खुल्लम-खुल्ला कहना उचित नहीं है।'

सिकन्दर से २ तारीख को मिलना हो तो मैं समझता हू आप फोन करके मुझे यह अवश्य बतायेंगे कि क्या तय रहा!

सप्रेम
महादेव

१३

बापू का लेख

हमे बहुत-कुछ करना है!

महामहिम वाइसराय और मेरे बीच समझौते की वार्ता भंग हो गई इससे कांग्रेसियों को हताश नहीं होना चाहिए। हम दोनों समझौते की भावनाओं की खोज करने निकले थे। मैंने वाइसराय की बम्बईवाली स्पीच में उसके संकेत देखे थे। पर मुझे पता चला कि यह मेरा भ्रम था। वाइसराय के हाथ बंधे हुए हैं।

वाइसराय अपनी परिधि के बाहर जाने में असमर्थ थे। शायद उनकी अपनी भी यही राय रही हो।

पर भेंट के द्वारा हमारी कोई क्षति नहीं हुई। असफलता के बावजूद हम दोनों एक-दूसरे के अधिक निकट आये। अब स्थिति स्पष्ट हो गई है। अहिंसा में बड़े धैर्य की आवश्यकता है। असफलता केवल देखने में ही लगती है। जब उद्देश्य और साधन दोनों न्यायोचित हैं, तो असफलता का सवाल ही नहीं उठता। इस भेंट के परिणामस्वरूप हम अपने लक्ष्य स्थान के अधिक निकट पहुंच गये हैं। यदि वाइसराय ने ब्रिटिश नीति के प्रतिपादन में स्पष्टवादिता से काम लिया है तो मैंने भी कांग्रेस की नीति के प्रतिपादन में उतनी ही स्पष्टवादिता बरती है। जहां तक मैं समझता हूं समझौते की बातचीत भंग नहीं हुई है। इस बीच हम संसार को यह बताना है कि हम क्या चाहते हैं। भारत अन्य उपनिवेशों जैसा कदापि नहीं हो सकता। इसका मतलब यह हुआ कि भारत संसार की गैर-यूरोपीय जातियों के शोषण-कार्य में साझीदार नहीं बन सकता। यदि यहां के संघर्ष को अहिंसापूर्ण रखना है तो भारत को अपने हाथ स्वच्छ रखने होंगे। यदि भारत को अफ्रीकियों के शोषण तथा उपनिवेशों में अपने ही नागरिकों के विनाश में भागीदार नहीं बनना है तो उसके लिए स्वतंत्रता का दर्जा हासिल करना ही होगा। उस दर्जे की क्या रूपरेखा होगी यह ब्रिटेन के निर्णय की बात नहीं है। यह रूपरेखा हम खुद बनायेंगे अर्थात् हमारे देश के निर्वाचित प्रतिनिधि बनायेंगे। उन्हें विधायक-परिषद की संज्ञा दें या किसी अन्य नाम से पुकारें जबतक ब्रिटिश राजनेता इसके लिए निश्चित रूप से उद्यत नहीं होंगे, वे अधिकार सौंपने को तैयार हैं ऐसा नहीं माना जायगा। भारत इस ढंग की स्पष्ट घोषणा की जो मांग कर रहा है उसके मार्ग में न तो सुरक्षा न अल्पसंख्यक जातियों और वर्गों का प्रश्न न रजवाड़े और न निहित यूरोपीय हित ही बाधक हो सकते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि जो प्रश्न गिनाये गये हैं वे गम्भीर विचार की जरूरत नहीं रखते या उनमें परिवर्तन की गुंजाइश नहीं है। पर इन समस्याओं का न्यायपूर्ण समाधान तभी सम्भव होगा जब वांछित घोषणा कर दी जायगी और तदनुसार यथासम्भव शीघ्रता के साथ उसके अनुरूप काम किया जायगा। जब तक ऐसा नहीं होगा जर्मनी के साथ ब्रिटेन का युद्ध न्याय और स्वार्थ की भावना से रहित कदापि नहीं समझा जा सकता।

तो फिर क्या करना चाहिए ? जब मैं कहता हूं कि मैं लार्ड लिनलिथगो की नेकनीयती का कायल हूं, तो मैं वस्तुस्थिति का बखान मात्र कर रहा हूं। वह हम समझने और अपने उच्चतर अधिकारियों और अपने राष्ट्र के प्रति अपना कर्त्तव्य

पालन करने की भरसक कोशिश कर रहे है। वह अपनी परिपाटियो से बधे हुए हैं इसलिए उनके लिए हमारी स्थिति अपना लेना सम्भव नही है। उनसे तुरत फुरत कुछ करा लेना सम्भव नही है, और हम भी अपने प्रतिपक्षी की उपेक्षा करना या उसकी शक्ति सामर्थ्य को घटाकर नही आकना है। यदि हम उनमे दुर्बलता देखेंगे और उससे फायदा उठाने का प्रयत्न करेंगे तो गलती करेंगे। उनकी दुर्बलता हमारी बल वृद्धि और क्षमता का साधन कदापि नही हो सकती। साथ ही यदि हम सबल रहे तो उनकी शक्ति सामर्थ्य से हमे कोई परेशानी नही होनी चाहिए। अत हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उन्हे अपनी शक्ति सामर्थ्य की प्रतीति करायें। ऐसा हम सविनय अवज्ञा के द्वारा नही स्वय अपना ही घर ठीक करके करा सकते हैं। जहा हम एक ओर ब्रिटिश सरकार को अल्पसख्यको या तथा अन्य चीजो का बहाना लेकर ठीक कदम न उठाने की अनुमति दे सकते हैं वहा हम इस ओर से भी आखें मूदे नही रह सकते कि इन समस्याओ का सही हल हमे तलाश करना है। हम लोग कायदे आजम जिन्ना के घोर राष्ट्रविरोधी और असम्भव रवये को अपने दिमाग मे प्रश्रय नही दे सकते, साथ ही हम मुसलमानो को अपने विचार क्षेत्र की परिधि से बाहर भी नही रख सकते। अन्य समस्याओ के बारे मे भी यही बात लागू है। हमे इस प्रश्नों के बारे मे जनमत तैयार करना होगा, स्वय अपने दिमागो को निर्मल बनाना होगा और यह तय करना होगा कि इन प्रश्नो के सदर्भ मे हमारी क्या स्थिति है। मौलाना साहब ने मुझे बताया है कि काग्रेस और काग्रेसी लोग लोकप्रिय सस्थाओ के निर्वाचनो मे विवेक से काम नही लेते और स्थानीय बोर्ड सभी सम्प्रदायो के साथ हमेशा न्याय का व्यवहार नही करते। हमे ऐसा आचरण करना होगा कि कोई हमारे खिलाफ अगुली न उठा सके। काग्रेस समितियो की हरएक शिकायत की पूरी तरह जाच पडताल करनी होगी किसी भी शिकायत को साधारण समझकर टालना नही होगा। मेरे पास ऐसे पत्र और तार आये हैं जिनमे इस बात की बुरी तरह शिकायत की गई है कि काग्रेस समितियो स्थानीय बोर्डों तथा अन्य सस्थाओ के निर्वाचनो के दौरान मुसलमानो हरिजनो तथा ईसाइयो के दावो की उपेक्षा की गई है। जहा कही ऐसा हो हमे न्याय करने का स्वर्ण अवसर मिलेगा। हमे अधीरता वश अथवा अपनी कमजोरियो पर पर्दा डालने के लिए सविनय अवज्ञा नही करनी है। सविनय अवज्ञा हमारी भीतरी और बाहरी व्याधियों की अमोघ औषधि कदापि नही है। वह तो असाधारण स्थिति से निपटने की एक खास और एकमात्र औषधि है। पर हमे अपने आपको उसके लिए तैयार करना होगा। मैं जब यह कहता हू कि अभी हम इसके लिए तैयार नही हैं तो पूरे उत्तरदायित्व के साथ कहता हू। यह भी सच है कि हम

तयार हो तो भी अभी उसका समय नहीं आया है। वह कभी भी आ सकता है। जब आ पहुंचे, तो ऐसा न हो कि हम उसके लिए तैयार न पाये जाए।

मो० क० गाधी

वधा जाते हुए
६ फरवरी, १६४०

१४

८ फरवरी १६४०

प्रिय महादेवभाइ

बापू के विदा होने के बाद मुझे विश्वस्त सूत्र से पता चला कि वाइसराय पर बापू की भेंट का मैत्रीपूर्ण प्रभाव नहीं पडा। ऐसी धारणा है कि बापू ने रुखाई से काम लिया, मेल मिलाप की भावना का परिचय नहीं दिया और सौहार्द भाव का समुचित प्रत्युत्तर देने में चूक गये। ऐसी आशा की जा रही थी कि बापू ठोस बातों को एक एक करके उठायेंगे और समझौते की दिशा मे अग्रसर होंगे। वाइसराय ने सेना और रजवाडो के प्रसंगो पर चर्चा छेडनी चाही और यह भी चाहा कि वह लोगो के सम्पर्क में आयें और उनकी (अर्थात वाइसराय की) सहायता लेकर समस्या का हल तलाश करने में लगें। बापू की ओर से अपेक्षित उत्तर नहीं मिला और जो खाई मौजूद है उसके ऊपर एक भी तख्ता बिछाने की उन्होंने कोशिश नही की।

इससे लोग आग इस नतीजे पर पहुंचे कि बापू वामपंथियो के प्रभाव में हैं और लडाई छेडने पर तुले हुए हैं। वाइसराय को यह भी आशा थी कि बापू कुछ अधिक समय तक ठहरेंगे जिससे और अधिक मुलाकातें हो सकें और बातचीत का अंत करने में जल्दीबाजी न हो। बापू ने जितनी जल्दबाजी से काम लिया, उससे इन लोगो की यह धारणा बन गई है कि वह खीजकर विदा हुए हैं और उसका एकमात्र परिणाम अवज्ञा ही हो सकता है।

बापू की यह धारणा निर्दोष नहीं है कि वाइसराय उनकी स्थिति को अच्छी तरह समझते हैं और किसी प्रकार की गलतफहमी की गुंजाइश नहीं है। बापू के रुख से वाइसराय को निराशा हुई है इसमें संदेह नहीं। मेरी और देवदास की

धारणा, वाइसराय जसी ही रही कि बापू का रख सहायतापूण न होकर रूखा रहा।

पर जब मैंने सर जगदीशप्रसाद के मुह स यह बात सुनी तो मैंन तुरत कहा कि इस बार म वह वाइसराय तथा लथवेट का भ्रम निवारण कर दें कि बापू मन मे किसी तरह का मैल अथवा निराशा की भावना लकर गय हैं और सविनय अवना अनिवाय है। सर जगदीश ने सारा माजरा लेथवेट को कह सुनाया। लथवेट ने मुझे मिलने को बुलाया। लेथवेट से आज सुवह बातचीत हुई। अब सब कुछ स्पष्ट हो गया है और किसी प्रकार की गलतफहमी बाकी नही रही है।

मेरे साथ बातचीत करने के बाद लथवेट एक बार फिर प्रफुल्लित दिखाइ दिया बोला कि अब सारी स्थिति स्पष्ट हो गई है और सारी बात समझ म आ गई है। उसने जिनासा की कि क्या मर पास कोई ठोस सुझाव है? मैंन उत्तर म यह स्वीकार किया कि मर पास कोइ सुझाव नही है। उस कोई बात सुझानी हो तो शायद तुम मुझे बताना चाहोगे। आम बाता का भी उपयोग है पर उन्ह थोडा बहुत ठास रूप भी तो देना होगा। मेरी राय म अब वह समय आ गया है या कम स कम रामगढ-काग्रेस के बाद तो हमे अपने विचारा का मूत रूप देना ही होगा। यदि हम समझौते की सचमुच कामना करत हा तब तो हम तसबीर के दोनो पहलुआ को देखना होगा। नतिक परिवतन भी तभी सम्भव है जब हम अपने प्रतिरोधी की कठिनाई को समझें और उसका हाथ बटाने के लिए तयार हा।

बापू का कडा रख रहा ऐसी हम सबकी धारणा ह भले ही वसा रख अपनान के लिए बापू के पास युक्तिसगत कारण रहे हा। हा सकता है कि उन्ह यह लगा हो कि फिलहाल चुप रहना ही सबसे बढिया रास्ता हो। मैं बापू को काफी अर्से स जानता हू इसलिए म इसी नतीज पर पहुचा कि उन्हाने कठारता का रख किसी कारणवश अपनाया होगा और उनका यह कहना कि उ हान आशा नहा गवाइ है ता यह केवल शुभेच्छा नही है बल्कि उनकी निश्चयात्मक भावना इससे प्रकट हाती है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ
सेगाव

१५

सगाव, वर्धा होकर (मध्य प्रान्त)
८-२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका टलिफोन पर दिया सदश बापू को सुनाया। बापू को कुछ आश्चय लगा। उनका अनुमान यह है कि विलायत स कुछ उलहाना मिल रहा है, कि गाधी का साथ क्या इतना जल्दी तोड दिया। दूसरी बात यह है कि बापू उनको कह चुके थे कि १३ तारीख तक ठहर सकता हू—अगर ठहरना जरूरी हो। बापू तो यह मानत हैं कि सारा प्रसग विलायत मे माइनारिटी पक्ट के समय जा स्थिति हुई उसकी याद दिलाता था। हा बापू का रुख कुछ कडा था। यह तो कबूल करते हैं, पर वह भी जब आरम्भ मे वाइसराय न कहा कि आप प्रतिनिधि की हसियत से बात नही करते ह तो बात करने का कोई अथ है क्या, तब ही उनको कडा होना पडा। और कहना पडा कि जो कुछ हो मैं एक जनरल की तौर पर बात करता हू। लेथवेट कहता है वह ठीक ही है कि वाइसराय का एक साल ही बाकी रहा है यह बात भूलनी नही चाहिए। मगर यह बात भी नही भूलनी चाहिए कि सविनय अवना को बापू ही राक सकते हैं और वही रोक रह है और आखिर तक रोकते रहेग।

मैंने लेथवेट को पत्र लिखने का मसौदा बनाया था और बापू को दिखाया। बापू न कहा कि कुछ लिखने की जरूरत नही है।

आपका,
महादेव

थोडा परिहास

इस वक्त हम लागा का मुसाफरी क लिए खाना देने म बडी कजूसी की गई। स्टाफ मे कुछ अदल बदल हुई है क्या? कलकत्ते म मिलेंगे क्या? बापू न ता १५ तारीख की शाम को नागपुर पसेजर स निकलकर १७ की सुबह पाच बजे कलकत्ते पहुचन का सोचा है। शायद यह हा कि सीधे आपके घर पर चले जाय और स्नान नाश्ता आदि करक ८ बजे की गाडी शातिनिकेतन के लिए ल लें। मैं तो यह देखना चाहता हू कि जहा आप इतन पमे दते हैं वह बरबाद होता है या उसका कुछ फल आनवाला है। यह आप भी दखें और हमारे साथ आप आवें।

महादेव

१६

६ फरवरी, १९४०

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारी भेजी लेख की प्रति से पहले ही मुझे वह लेख 'हरिजनसेवक' से मिल गया था। बापू इस हद दर्जे की नाजुक स्थिति से जिस खूबी के साथ निपटे हैं देखकर अवाक रह जाना पड़ता है। लेख सचमुच बहुत बढ़िया रहा। मैंने अपने कलकत्ते पत्र में यह कहकर गलती की कि बापू ने प्रतिपक्षी की कठिनाइयों की ओर ध्यान देने से इन्कार कर दिया। वास्तव में वह पहले में यह कह चुके थे। बापू जिस उच्च नैतिक स्तर पर रहकर काम करते हैं हम लोग बहुधा वह बात भूल जाते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति की धुन में हम अपनी कमजोरियां भूल जाते हैं और हमारा ध्यान साधन की ओर न जाकर साध्य पर केंद्रित रहता है। पर बापू के निकट साधन और साध्य एक ही चीज हैं। मैं इस तथ्य को हृदयंगम करने की चेष्टा करूंगा कि यदि हम साधन के प्रति सावधानी से काम लें, तो साध्य स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा। एक व्यावहारिक आदमी की हैसियत से भी देखूं तो मुझे यही लगेगा कि ब्रिटेन के वास्तविक हृदय परिवर्तन के बगैर औपनिवेशिक दर्जेवाला फार्मूला ग्वायर के निर्णय-जैसा ही बनकर रह जायगा। मेरी धारणा है कि हृदय परिवर्तन का सिलसिला शुरू हो गया है। बहुत सम्भव है कि इंग्लैंड और भारत में इस बात को लेकर होड़ होने लगे कि सहृदयता और मैत्री की दौड़ में कौन आगे रहता है अतः अभी धैर्य के साथ प्रतीक्षा करना ही ठीक रहेगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगांव

१७

१० फरवरी, १९४०

प्रिय महादेवभाइ,

साथ म जो वक्तव्य[1] रख रहा हू यदि वह दिया जाए तो बापू की क्या प्रति क्रिया होगी सो जानना चाहता हू। एक बार यह वक्तव्य राजाजी न तयार किया था, और मुझे तथा देवदास दोनो को ही यह सतापजनक लगा था। पर बापू की क्या प्रतिक्रिया होगी, यही देखना है। इसके कुछ अश यदि बापू को ठीक न जचें, तो मैं जानना चाहूगा कि वे अश कौन कौन स हैं और क्या बापू उनमे हेर फेर करना पसन्द करेंगे ? —

कल्पना मात्र के आधार पर ऐसे वक्तव्यो का मसौदा शायद युक्तियुक्त न जचे पर इस दिशा म हम जो नसीहत मिलेगी वह हमम से कुछ को समय नष्ट करना मात्र कदापि नही लगेगा। इसलिए बापू का समय ल रहा हू।

सप्रेम,
घनश्यामदास,

श्री महादेवभाइ देसाई
सेगाव

१ यह उपलब्ध नही है।

१८

१० फरवरी, १९४०

प्रिय महादेवभाई

एसा लगता है कि तुमसे कलकत्ता म भेंट होगी। बापू और तुम १७ की सुबह वहा पहुच रहे हो यह जाना। मेरे भीलवाडा जाने की सम्भावना नही है। मैं कलकत्ता कुन्त दिना बाद जा रहा हू। इसलिए मैं कुछ समय अपने काम-काज म लगाऊगा। बापू कलकत्ता प्रात काल ५ बजे पहुचें स्नान करें और नाश्ता करने

वे बाद शांतिनिकेतन के लिए रवाना हो जाए—यह विचार अच्छा है। तुम्हें याद होगा कि पिछली बार बापू ने लायलका के यहा ठहरने का वचन दिया था। २ ३ घंटा के लिए ही सही वहा ठहरें तो लोयलका को बडा सुख मिलेगा और इसके अलावा वह जगह भी बडी शांत है। यदि बापू का ऐसा विचार हो, तो मुझे तार दे देना।

मैं यहा से १२ तारीख को बनारस के लिए रवाना हो रहा हू। कलकत्ता १७ की सुबह पहुचूगा बापू के पहुचने के कुछ देर बाद। इसलिए यदि बापू का कलकत्ता में रुकने का विचार हो तथा मेरे यहा अथवा लायलका के यहा रुकने का इरादा हो तो बनारस लक्ष्मी के पते पर तार भेज देना।

कृपा करके बापू से पूछना कि वाइसराय ने 'इग्लैंड के नैतिक परिवर्तन' वाली बात किस संदर्भ में कही थी। मुझे याद पडता है कि बापू ने मुझे कुछ ऐसा बताया था कि वाइसराय ने शायद कहा था मैं देखता हू कि आप इग्लैंड का नैतिक परिवर्तन चाहते हैं जिससे इग्लैंड और भारत मिलकर दुनिया का शासन करें। अथवा ऐसी ही कोई बात थी। मुझे यह पता नहीं कि उन्होंने यह किस प्रसंग में कहा था और किस प्रकार कहा था। बापू से पूछकर लिखना।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगाव

१६

सेगाव
१४ २ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

जटलैंड की स्पीच तो बडी भद्दी और बुरी है। बापू को बहुत बुरा लगा और उन्होंने बडा तीखा लेख लिखा है। उसकी एक कापी इसके साथ भेजता हू।

आपका
महादेव

बापू का लेख

क्या यह युद्ध है ?

ब्रिटेन के भारतीय साम्राज्य के निर्माताओ ने साम्राज्य के चार स्तम्भो का बडे धैर्य के साथ निर्माण किया। वे चार स्तम्भ हैं यूरोपीय हित, सेना रजवाडे और साम्प्रदायिक अलगाव। इनमे से पहलेवाले स्तम्भ का बाकी के तीन स्तम्भो ने हित-साधन किया। यथार्थवाद मे विश्वास रखनेवाले को यह समझने मे देर नही लगी कि साम्राज्य का परित्याग करने अथवा साम्राज्यवादी मनोवृत्ति को तिलाजलि देने का दावा करने से पहले इन निर्माताओ को इन चारो स्तम्भो को हटाना होगा। पर इन निर्माताओ का राष्ट्रवादियो अथवा साम्राज्यवाद की मनोवृत्ति का विध्वस करनेवाला से कहना है "हम भारत को अपना आश्रित देश समझना बन्द कर दें, या भारत को एक स्वतत्र राष्ट्र के रूप मे स्वीकार करें इससे पहले आपको इन स्तम्भो को खुद ही हटाना होगा।" दूसरे शब्दो मे उनका कहना यह है कि 'यूरोपीय हितो के सुरक्षित रहने की गारण्टी दो अपनी सेना खुद बनाओ रजवाडा तथा अल्पसख्यक वर्गो और जातियो के साथ अल्पसख्यको-जैसा बरताव मत करो। विध्वसको का उत्तर यह है यूरोपीय हितो को आप ही लोगो ने हमारे ऊपर लादा है, और उनकी सुरक्षा के निमित्त सेना का गठन किया और उसे पूरी तरह अपनी मुट्ठी मे रखा, आपने देखा कि रजवाडो का उपयोग आपकी उद्देश्य सिद्धि मे सहायक हो सकता है, इसलिए आपने कुछ का निर्मूल किया, कुछ नये रजवाडो को जन्म दिया और उन्हे ऐसे अपरिमित अधिकार दिये, जिनका वे साधारण अवस्था मे स्वय अपने ही कुशल मगल के लिए प्रयोग करने की कल्पना तक नही कर सकते थे वास्तव मे आपने भारत को कुछ इस प्रकार टुकडे टुकडे करके रख दिया कि वह आपके खिलाफ सिर उठाने मे सदैव के लिए असमर्थ हो गया। आपने हमारे जातिवाद के अभिशाप को नग्न रूप मे देखा हमारी कमजोरी से फायदा उठाया और उसका कुछ इस ढग से उपयोग किया कि अब ऐसी मागें पेश की जा रही हैं कि यदि उनकी पूर्ति करने मे लगा जाये, तो न भारतीय राष्ट्रीयता रहेगी, न स्वतन्त्रता। साथ ही आपने हमे निहत्था कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप समूचा राष्ट्र बिलकुल नपुसक बनकर रह गया। पर जो-कुछ हुआ उसके लिए हम आपको दोष नही देते हैं। उलटे हम आपके साहस दक्षता और जीवट के कायल है। आपने अपने पूर्ववर्ती साम्राज्य निर्माताओ की नकल की और इस नकल को भी आप लोगो ने असल से बढिया कर दिखाया। पर यदि आप

यह दम भरें जसा कि आप भरत हैं कि आप लोगो न भारत का उसकी चीज लौटान का फमला कर लिया है, तो आपको रास्ते की वे सारी रुकावटें हटानी होगी जो खुद आपन पदा की हैं। आपको हमसे यह कहने का अधिकार है कि हम लोग आप लोगा की उन कठिनाइया की ओर ध्यान नही देते है जो आपका हमारी मागी चीज दने या उसक लिए हमारी सहायता करने तक स रोकती है। यदि आप नकनीयती से काम लें तो आपको यह सब हमार ऊपर छोड दना चाहिए कि हम स्याह करत हैं या सफद। हम भरसक अच्छे स अच्छा ही करेंग। आपका इस मामले म हमारी यायबुद्धि पर भरोसा रखना चाहिए अपने शस्त्रा स्त्रा पर नही। अब तक हमार भाग्य का फसला आप ही करते आ रहे हैं। अब यदि आप सचमुच जा कहते हैं सच्चे दिल स कहते हैं तो हम अपना शासन काय किस ढग स और किस प्रणाली को अपनाकर चलाय इसका निणय हमार ही ऊपर छोड दें। यदि हम इस दिशा म आपस सहायता की याचना करे तभी आपको सहायता करनी चाहिए।

विध्वसका के तक का लाड जेटलड ने जो उत्तर दिया है उस मैं प्रकारातर से पश करना चाहूगा। उन्होंने कहा हमारे कब्जे म जो है वह हमारे कब्जे म ही रहगा। बस इस सकुचित परिधि के भीतर रहकर हम आपका स्वतत्रता अवश्य देंगे पर उतनी ही जितनी हम आपक लिए मगलप्रद समझेंगे। हम जा यह लडाई लड रहे हैं वह केवल इसलिए लड रह हैं कि हमारा साम्राज्य विशृखल होन स बचे। यदि आप इन शर्तों पर हमारी सहायता करना चाहें तो हम उसका स्वागत करेंगे। वास्तव म यह सहायता जितनी हमारे लिए लाभकारी होगी उतनी ही आपके लिए भी होगी। पर यदि आप हमारी सहायता के लिए आगे न बढे ता भी हमारा काम मजे मे चल जायगा। हम एकमात्र आपके दल स ही नही निपटना है अनक दल ऐस भी हैं जो ब्रिटिश शासन की खूबियो के कायल ह और ब्रिटेन की छत्र छाया म बन रहन क इच्छुक है। हम इन वफादार दलो स मागी हुइ सहायता का उपयाग करके ही यह लडाई जीतना चाहते हैं। जब समय आयेगा तो इन दलो की सेवाओ का पुरस्कार हम और अधिक सुधारा के रूप म दगे। जब हम कहते हैं कि हम ससार का प्रजातत्र के लिए सुरक्षित रखना चाहत है तो उससे हमारा अभिप्राय यही है क्याकि हम ससार की सबस बढिया प्रजा तत्रीय शक्ति हैं इसलिए यदि हम सुरक्षित रहेग, तो जो हमार साथ हैं व भी सुरक्षित रहेग। भारत-जसे जो देश हमारी देख रेख म हैं उ हे थाडा थाडा करके प्रजातत्र का स्वाद लन मे समथ बनाया जायगा जिसस उनकी प्रगति म बाधा न पडे और उन्हे वे जाखिमे न उठानी पडें जा हमे उठानी पडी थी।' मरा विश्वास

है कि इस वाक्य वि यास के द्वारा लाड जटलड के साथ अ याय नहीं हुआ है यदि कुल मिलाकर रुपान्तर ठीक माना जाए तो इससे सारी स्थिति स्पष्ट हो जाती है और साम्राज्यवादियो और राष्ट्रवादियो म किसी प्रकार का ताल मल असम्भव लगने लगता है। इसलिए यदि लाड जेटलैंड को ब्रिटिश सरकार के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करनेवाला माना जाए तो यह राष्ट्रवादी भारत के विरुद्ध युद्ध की घोषणा है क्योंकि चारो स्तम्भ चट्टान की तरह ज्यो-के-त्यो बने रहेंगे। राष्ट्रवादी वग इन स्तम्भो से निपटने की जितनी चेष्टा करेंगे—मानो वे कुछ इस प्रकार की समस्याए हो जिनके समाधान की जिम्मेदारी उस पर आती हो—तो ये स्तम्भ उसी परिमाण म अधिकाधिक सुदृढ होते जायेंगे। यदि भारत के लिए इस युद्ध के द्वारा विदेशी प्रभुत्व के हाथो रही-सही स्वतन्त्रता भी गवाना साबित हो तो मैं सच्चे हृदय से ब्रिटिश पक्ष की विजय की कामना कदापि न कर पाऊगा। यह सब मैं घोर मानसिक वेदना के साथ लिखने को विवश हुआ हू।

मो० क० गाधी

सगाव
१३ २ ४०

२०

तार

२२ फरवरी १६४०

महादेवभाई देसाई
गाधी सेवा सघ
मलिकान्दा (ढाका)

राजाजी के फार्मूले में बापू द्वारा परिवर्तन परिवर्द्धन कराने की कृपा करो।

—घनश्यामदास

बिडला पार्क
कलकत्ता

२१

तार

२३ फरवरी, १६४०

घनश्यामदास
'लकी'
कलकत्ता

बापू अत्यंत कार्यव्यस्त। २६ की सुबह पहुंचकर २७ की संध्या को पटना के लिए रवाना हो जायेंगे।

—महादेव

२२

गांधी सेवा संघ,
मलिकान्दा (ढाका)
२३ फरवरी ४०

प्रिय बजरंगलालजी

मैंने अभी अभी घनश्यामदासजी को अपने प्रोग्राम का तार भेजा है। हम लोग २६ तारीख को ५.२५ पर सियालदह ढाका मेल से पहुंच रहे हैं। दूसरे दिन २७ तारीख को संध्या के समय नार्थ बिहार एक्सप्रेस से चल पड़ेंगे।

आप 'एशिया' का जनवरी मास का अंक मेरे लिए रखेंगे न? उसमें बताई पर एक महत्त्वपूर्ण लेख निकला है। यदि वह अंक किसी पुस्तक विक्रेता के यहां मिल जाये तो खरीद लीजिए नहीं तो इम्पीरियल लाइब्रेरी से उधार लेकर उस लेख की नकल करा लीजिए

घनश्यामदासजी को बता दीजिए कि बापू बहुत कार्यव्यस्त हैं इसलिए राजाजी के मसौदे में परिवर्तन-परिवर्द्धन करने योग्य समय नहीं निकाल पायेंगे। हां कलकत्ता पहुंचने पर बापू क्षमा अवश्य करेंगे।

हम लोग आज सध्या को ही चल पडते पर प्रफुल्ल बाबू और बगाल के काय कर्त्ताओ के लिए बापू २५ की सध्या तक रुके रहेग। सघ के अ य सदस्य या तो आज ही, अथवा कल तक रवाना हो जायेंगे।

भवदीय,
महादेव

२३

गाधी सेवा सघ
मलिकादा (ढाका)
२३ २ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

बापू को तो यहा तनिक भी अवकाश न रहा, इसलिए राजाजी के ड्राफ्ट को छू ही नही सके।

बोयल के बारे मे तार मिल गया। उनको २७ तारीख को ३ बजे का वक्त दीजिये।

यहा आमोद्रवा वातावरण सब अच्छा है सिफ राजकीय वातावरण ही दूषित है। प्रफुल्ल बेचारा भला आदमी है व गुडाइज्म से फाइट नही कर सकता है।

आपका
महादेव

२४

मलिकादा ढाका
२४ फरवरी, ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार बापू को दिखाया था। उन्ह राजाजी का मसूदा अच्छा नही लगा। बाद म बोले 'अच्छी बात है।'

हमारा दल बफ के गाले की तरह आकार म बढता जा रहा है। इन दिना

किशोरलालभाई बीमार चल रहे हैं। यहा के डाक्टर का कहना है कि उनके रोग का ठीक ठीक निदान नही हुआ है। उसने कहा कि डा० विधान और फण्डा के विशेषज्ञ को उनका पूरी तरह परीक्षण करना चाहिए कि कहा यक्ष्मा न हो। आपका क्या सुझाव है ? आप यह चाहेंगे कि वह हम लोगो के साथ ही लायलका के यहा जाए या यह कि वह आपके यहा उतरें। अर्थात डॉ० विधान के लिए अधिक सुविधाजनक क्या रहेगा ? आप जैसा उचित समझें निर्णय लें। आपके यहा से नायलका का स्थान कितनी दूरी पर है ? उनसे कह दीजिए कि हमारे दल में कोई दस लोग होंगे। इनमे किशोरलालभाई और उनकी पत्नी भी शामिल हैं। उनके लिए एक अलग कमरे का प्रबंध करना उचित होगा। पर यह सब तभी हो जब आप यह तय करें कि किशोरलालभाई भी नोयलका के यहा ही ठहरें। कृपा करके विधान बाबू से कहकर परीक्षा का समय नियत करवा लीजिए।

केंथल बापू से ३ बजे और श्यामाप्रसाद मुकर्जी से ४ बजे मिलेंगे। श्यामाप्रसाद को शायद लोयलका का ठिकाना मालूम न हो। उन्हें बता दीजिए कहा जाना है।

सप्रेम
महादेव

२५

वर्धा जाते हुए
३ मार्च १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

यदि एण्ड्रूज से मिलना सम्भव हो, तो क्या आप कृपा करके यह साथ भेजी सामग्री उन्हें दे देंगे ? आप जब तक वहा रहें, उनसे हर तीसरे दिन मिलते रहे तो अच्छा रहेगा। जब मैं उनसे मिलने गया, तो उन्हें पत्र देना भूल ही गया। वह पत्र उनकी बहन का था।

फिलहाल तो भविष्य अंधकारमय प्रतीत हो रहा है। पर मैं (आपका सेक्रेटरी जो ठहरा) अपने इंग्लैंडवाले मित्रो के लिए दो एक मसौदे आपके पास भेजने की सोच रहा हू।

सफर शांतिपूर्ण रहा। बा का बुखार नही चढ़ा।

आपका
महादेव

२६

कलकत्ता
८ माच, १९४०

प्रिय महादेवभाई,

तुमन बजरग को बापू के लेख की जो अग्रिम प्रति भेजी थी, वह मैं पढ गया। लेख म बापू ने अपन मन की बात अधिक स्पष्टता के साथ कही है, इसलिए उनका दिमाग जिस दिशा म काम कर रहा है उसकी झाकी लेना सम्भव हुआ। मुझे यह लेख इसलिए भी अच्छा लगा कि इसमे सविनय अवज्ञा की प्रवत्ति को बिलकुल बढावा नही दिया गया है। तुम जानते ही हो कि मुझे सविनय अवज्ञा स कितनी चिढ है। उसके द्वारा अहिंसा की आड मे हिंसा को प्रोत्साहन मिलता है। रच नात्मक काय की ओट मे इसके कारण न जान कितनी तोड फोड हुई है। पर यह सब होते हुए भी इसके कारण दश म विलक्षण जागति हुई। पर यदि इस प्रवत्ति को जीवित रखा गया, ता कोई भी सरकार चलाना असम्भव हो जायेगा भले ही वह हमारी अपनी सरकार हो। अवज्ञा के नाम पर लोग अपनी ही सरकार के खिलाफ सिर उठायेंगे और आतकवाद तथा भ्रष्टाचार के द्वारा शासन काय दूभर कर देंगे। इसीलिए सामूहिक आन्दोलन के विचार-मात्र से मेरा जी कापने लगता है। मैं यह स्वीकार करता हू कि आन्दोलन म से हिंसा की भावना निकाल देने से सविनय अवज्ञा सौम्य बन जाती है पर वस्तुस्थिति क्या है ? बापू मनसा वाचा कमणा—हर प्रकार से अहिंसा का पालन करन पर जोर दत आये है पर उनके निकटतम सहकर्मी तक इस भावना को हृदयगम नही कर सके हैं। काय म ही विचारो का मापदण्ड मिलता है। यही कारण है कि मुझे सविनय अवज्ञा की बात भी नही सुहाती। मुझे यह लेख पसद आया इसका एक कारण यह भी है। मुझे लख का अतिम परा बहुत अच्छा लगा। मैं यह मानता हू कि बापू काग्रस के लिए अनुपयुक्त है। बापू का दुरुपयोग किया जा रहा है, क्योकि लीडर लोग भली भाति जानते हैं कि बापू ही एकमात्र एस व्यक्ति है जो दश का सामूहिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन म भाग लन के लिए सफलतापूवक तैयार कर सकते है। पर लाग बाग उनस सहायता पान क ता इच्छुक हैं उनकी काय याजना का मूत रूप देन क लिए व कदापि तयार नही होग। वसी प्रवत्ति की कही झलक तक नही मिलती। मेरी धारणा तो यही है कि अहिंसा म किसी की आस्था नही है। राजनतिक क्षत्र मे जो लोग हैं वे सब यही चाहते है कि तूफान उठे, पर सघष को अहिंसापूण रखने की

उनकी इच्छा नही है। मैं अपनी ही बात कह दू। अहिंसा की उपादेयता म मेरी बौद्धिक आस्था तो है पर सजीव आस्था नही है। केवल बौद्धिक आस्था हम कही नही ले जाती। यदि बापू काग्रेस से बिलकुल नाता तोड लें, तो शायद देश की अधिक सहायता कर सकेंगे क्योकि एक मध्यस्थ की हैसियत स व अधिक उपयोगी सिद्ध होग। बापू न काग्रस के साथ अपना लगाव घनिष्ठ बना रखा है इसका परिणाम यह हुआ ह कि उनके और वामपथियो के बीच की रेखा बहुत धुधली हो गई है और अहिंसा और हिंसा एक प्रकार स एक दूसरे के पर्यायवाची होकर रह गय हैं। यह अवस्था घोर असगतिपूर्ण है और कभी कभी तो मेरा जी ऊब जाता है।

चाहो तो यह चिट्ठी बापू को दिखा देना। बापू अलग रहकर काम करें तो उनकी अहिंसा के सफल होने की सम्भावना अधिक हो जायगी। कितने मजे की बात है कि काग्रेस बापू के सिद्धान्त के प्रतिनिधित्व का दावा तो करती है पर वैसा करने की अधिकारी कतई नही है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेगाव, वर्धा

२७

सेगाव (वर्धा होकर)
११ मार्च १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका लम्बा पत्र मिला। आप जो कुछ कहते है उसे भली भाति समझता हू और उसकी सराहना भी करता हू। मैंने पत्र बापू के सामने रख दिया था। उन्होने पढा तो पर कहा कुछ नही क्योकि यह उनका मौन दिवस था। यदि यह मान लिया जाय कि सविनय अवज्ञा के बारे म आप जो कुछ कहते हैं ठीक है—और आपका दृष्टिकोण प्राय आर्थर मूर के दृष्टिकोण जैसा ही है तो क्या आप यथेष्ट न होते हुए भी सविनय अवज्ञा की अपेक्षा हिंसा को अच्छा समझेंगे ? मैं तो ऐसा नही समझता। मानव स्वभाव म लाख दुर्बलताए हो पर उसे अपनी

विरोध भावना व्यक्त करने का कोई न कोई माध्यम तो चाहिए ही और यदि आप शापित मानव जाति को उसके इस अधिकार से भी वंचित कर देंगे तो उसे सब कुछ से वंचित कर देंगे और उसे विशुद्ध कायरता के गर्त में ढकेल देंगे। बात जरा कडवी हो गयी पर मेरा अंतःकरण यही कहने को प्रेरित करता है। मुझे यकीन है कि हम निष्कलुष मानस रखकर भूल से मुक्ति पा सकेंगे और सत्य की ओर बढ़ेंगे। सत्य की एक मंजिल तय करने के बाद दूसरी मंजिल तय करेंगे। कल मैंने 'हिंदुस्तान टाइम्स' के कांग्रेस-अंक के लिए एक लेख लिखा है। पता नहीं, वह देवदास को अथवा आपको रुचेगा या नहीं, पर यदि देवदास उसे प्रकाशित करें, तो जरूर पढ़िए।

आपके पत्र के बारे में यदि बापू कुछ कहेंगे तो आपको बताऊंगा। कृपा करके बजरंगलाल से कह दीजिए कि उन्होंने एण्ड्रूज की हालत का जो सविस्तार वर्णन लिख भेजा, उसके लिए मैं उनका आभारी हूं। वह मैंने बापू को दिखाया था इस बार में वह क्या कहते हैं, सो कल बताऊंगा।

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

हम रामगढ के लिए कल शाम पैसेंजर गाडी से रवाना हो रहे हैं। विधान से क्या बात हुई थी? क्या आप उन्हें बापू को वचन मुक्त करने के लिए राजी कर सके?

२८

कलकत्ता
१८ मार्च, १९४०

प्रिय महादेवभाई,

मैं बापू के दर्शन करने रामगढ़ आने का विचार कर रहा था पर फिर मैंने सोचा कि उनका समय नष्ट करना अनावश्यक है। वहां आने का इसके अलावा मेरा कोई और उद्देश्य नहीं था कि बापू से एक बार फिर आग्रहपूर्वक कहूं कि हम लोग गलत रास्ते पर जा रहे हैं। स्थिति गम्भीर है इसलिए उन्हें सारी परिस्थिति पर हममें से कुछ लोगों के विचार के प्रकाश में पुनर्विचार करना चाहिए। बाद में मुझे लगा कि इसका उन पर कोई असर नहीं होगा, इसलिए मैंने उनका समय न

लेना ही ठीक समझा।

मैंने अपने विचार एक कागज पर लिख छोड़े हैं जो कुछ लिखा उसकी नकल साथ में रख रहा हूं। मेरा सुझाव है कि जब बापू को निश्चिंत पाओ, यह उनके सामने रख देना। पर हो सकता है कि उस पत्र के बाद बापू स्वयं ही कह उठें कि मैंने स्वयं वहां आकर अपने विचार पेश न करने का जो फैसला किया सो ठीक ही किया।

लिनलिथगो वाले कांड की बात पत्रों में पढ़ी होगी। स्थिति उत्तरोत्तर गम्भीर होती जा रही है। ब्रिटेन विरोधी भावना जोर पकड़ रही है और उसका अंतिम परिणाम अनिवार्यतः हिंसा में व्यक्त होगा।

रूस और फिनलैंड में शांति स्थापित हो गयी, इसका मतलब यह हुआ कि संकट हमारे पड़ोस में आ पहुंचा है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
रामगढ़

२६

कलकत्ता
१५ मार्च, १९४०

प्रिय महादेवभाई,

विधान से बात हुई थी। उन्होंने बापू को उनके वचन से मुक्त कर दिया है। मैं तुम्हें लिखनेवाला था पर उन्होंने खुद लिख भेजने की बात कही। जी में आता है कि विधान से कहूं कि वह अपना निश्चय बदल डालें क्योंकि तब बापू को कलकत्ता में होकर गुजरना पड़ेगा पर अपनी इच्छा पर काबू किये हुए हूं।

तुमने मेरे पत्र से यह अर्थ कैसे निकाला कि यथेष्ट न होते हुए भी सविनय अवज्ञा की अपेक्षा हिंसा श्रेष्ठतर है? मैं तुमसे इतना तो सहमत हूं कि मानव स्वभाव को अपनी विरोध भावना व्यक्त करने का कोई-न-कोई माध्यम चाहिए इसलिए निश्चित अविनयपूर्ण होते हुए भी सविनय अवज्ञा हिंसा के मुकाबले बेहतर है। अपने शुद्धतम रूप में सत्याग्रह तो बेजोड़ माध्यम है ही। पर मेरा कहना तो यही है कि सम्मानपूर्ण समझौते के सारे मार्गों की टोह लेने से पहले ही हम लोग अपनी विरोध भावना प्रकट करने पर उतारू हो गये हैं। कभी कभी मुझे लगता है

कि हम बातचीत के द्वारा समझौता करने के सुझाव की उपेक्षा करके अपने प्रोग्राम के संघर्षवाले अंश पर आवश्यकता से अधिक जोर दे रहे हैं। हम लोगों ने अपनी मांगें कुछ इतनी बढ़ा चढ़ाकर रख छोड़ी हैं कि अंग्रेजों के लिए सम्मानपूर्ण समझौता करना असम्भव-सा हो गया है। बस, मेरी यही शिकायत है। कार्यकारिणी में भी मेरी जैसी धारणावाले लोग मौजूद हैं। औरों की तरह मैं भी जब बापू के सामने होता हूं, तो आशावादिता की भावना से भर उठता हूं पर जब वहां से हटता हूं और सारी स्थिति पर ठण्डे दिमाग से सोचता हूं तो यह आशावाद और यह आत्म विश्वास सब काफूर हो जाता है। यों यह बुद्धि के बदले हृदय की प्रेरणा पर ध्यान देने जैसा है पर मेरे लिए यह कहना या निर्णय करना कठिन है कि दोनों में से कौन अधिक मूर्ख है—दिल या दिमाग। इसका निर्णय तो भगवान ही करेंगे। जो भी हो हमारी वर्तमान नीति की उपादेयता के प्रति संशय की भावना काफी बलवती है। हम लोग एक निहायत ही नाजुक दौर में गुजर रहे हैं। इस लिए मैंने सोचा कि मैं अपना विचार बापू के समक्ष रख तो दूं। मैंने अपने विचार एक कागज पर लिख डाले और उसकी नकल तुम्हारे पास भेज दी उनका मूल्य चाहे जो हो। जब मैं अपने-आपसे सलाह मशवरा करने लगता हूं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अन्त में विजय बापू की ही होगी क्योंकि यदि वह गलतियां भी करेंगे तो भी अन्य मनुष्यों की गलतियों की अपेक्षा उतनी तीव्र नहीं होंगी। स्वयं भगवान् उनका पथ प्रदर्शन करेंगे। पर यह सब अपने मित्र के साथ वार्ता का न्यारा मात्र है। जब मैं बुद्धि से काम लेने लगता हूं और तर्कसंगत विचार का दौर शुरू होता है तो मैं एकमात्र इसी नतीजे पर पहुंचता हूं कि हम लोगों ने ताश के पत्ते अच्छी तरह नहीं खेले।

पर तुम मुझे लेकर अपना समय क्यों बरबाद करते हो? यदि करना ही हो तो मेरे नाम की वृद्धि के निमित्त भले ही करो। पर मैं अच्छा-बुरा जो भी लिखूं उसे बापू के सामने जरूर पेश कर दिया करो। स्वयं बापू मुझसे अनेक बार कह चुके हैं कि मैं उनसे अपनी बात अवश्य कह दिया करूं। क्योंकि प्रत्यक्ष में भले ही वह बात उन्हें प्रभावित न कर पाये पर अवचेतना में मेरे कथन का कुछ न कुछ प्रभाव तो पड़ेगा ही। यही कारण है कि मैंने अपने इन सारे विचारों की झड़ी लगा दी है। इससे मुझे भी थोड़ा-बहुत मानसिक शांति मिलती है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
रामगढ़

३०

भाई घनश्यामदास

तुमारा खत और तुमारी नोट पढ गया। तुमारे दु ख से दु खी होता हू। मेरा दृढ विश्वास है कि हम इसी मौके पर कुछ भी कम से राजी नही हो सक्ते हैं। मेरी योजना म मैं कुछ भी दोप नही पाता हू। उसम उनका भला ही है। व राजी नही होते हैं वह सिद्ध करता है कि वे हिंदुस्तान की आबादी ही नही चाहते है। राजा लोगो की बात तो असह्य है। तुमसे किसने कहा कि मैं राजा लोगो का मिलना नही चाहता हू। जरा इशारे से भी मैं मिलूगा। बात यह ह कि व नही मिलना चाहते हैं।

बापु के आशीवाद

अगर चाहोगे तो सेवा-सदन के लिये कलकत्ता आने को तयार हू।

—बापु

१७ ३ ४०

३१

सगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रांत)
१७ ३ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने आपके सब पत्र बापू को पढाये। मैंने कभी यह नही माना कि आप महज मेरे साथ विचार विनिमय के लिए मुझे लम्बे खत लिखते हैं। मैंने यह माना ह कि मुझे लिखन स शायद इनडाइरेक्ट रीति स आप बापू को अच्छी तरह कुछ चीजें कबूल कर सक्ते है। इसलिए मैं तो आपके सब पत्र उनके पास रख ही देता हू।

मैंने कतइ नही माना कि आप इम्परफेक्ट नान कोआपरेशन (अपूर्ण असहयोग) से वाइलेन्स (हिंसा) को अधिक पसंद कर सक्ते हैं। मैंने तो यह कहा था कि आपकी पोजीशन परिलसली नीअर मूर (मूर के दृष्टिकोण जैसा ही दृष्टि

काण) हा जाती है, और वह तो हिंसा का अधिक अच्छा मानते हैं ही। बात यह है कि पीडित मानवा के लिए कोइ अच्छा आउटलेट (निकास का माग) चाहिए। वह आउटलेट बापूजी आस्त आस्त परफेक्ट (पूण) कर रहे है। करते करते वे नष्ट हो जायेंगे या तो उस पूण करके छोडेंगे।

बापू अपने जीवन म फिर एक बडे मार्के का कदम उठाने को आमादा हो गये है। शायद यह पत्र मिले उसके पहले ही आपको उसका पता चल जायेगा, बापू को कलकत्ता नही बुलावेंगे तो यहा के सब हालात सुनाने के लिए मैं आपकी सेवा म एक दिन आने के लिए तैयार हू—अगर आप चाहे।

आपका,
महादेव

३२

सगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
२६ ३ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आप मुझे देहली ले जाना चाहते थ, पर ईश्वर मुझे कलकत्ता ले जाता है। बापू ने सोचा था कि एण्डयूज का आपरेशन के दिन मिलना अच्छा होगा। इसलिए जा रहा हू। यह गाडी बहुत खराब है। लिखना दुश्वार है। आज शिवराव का पत्र आया था, वह आपको देखने के लिए भेज रहा हू। उसमे मार्क किया हिस्सा देखेंगे। अगर यह बात है तो हमारी फार्मूला के लिए पूरी आशा है। मैं इतवार की सुबह कलकत्ता पहुचूगा। वहा बात कीजियेगा।

आज राजाजी ने बापू से बहुत बातें की। परिणाम यह आया कि बापू अहिंसा के अधिक इम्प्लीकेशस देखने लगे और यह कहा कि मुसलमान जिस ढंग से काम ले रहे हैं वैसे ही लेते रहेंगे तो हमको हमारा सारा कायक्रम बदलना पडेगा। १५-१६ को जब कायकारिणी होगी तब कुछ नयी ही चीज उनके सामने बापू रखेंगे ऐसा मालूम होता है। पर उसके पहले ही आपका दूतत्व सफल हो जाये तो बहुत बडी बात हो जाये।

आपका
महादेव

३३

१६/ए, बालीगज सरकुलर रोड,
कलकत्ता
३० मार्च, १६४०

हातमाजी,

दिल्ली से एक ऐसे दोस्त का खत मिला है जो वाइसराय के साथ मुलाकात रत रहते हैं। उनका कहना है कि 'अपनी आखिरी मुलाकात के दौरान आप लिनलियगो के दिमाग पर यह असर छोड़कर आए कि अव्वल तो आप उन्हें एक म नुक्ते तक ले गए और जब वह वहां पहुंचे तो आपने उन्हें बीच ही में छोड़ या। मेरे यह दोस्त आगे चलकर लिखते हैं कि अगर आप शुरू में ही यह फ-साफ कह देते कि आप वेस्टमिन्स्टर के ढंग का डोमिनीयन स्टेटस मंजूर नहीं रेंगे तो आपकी समझ में पूरी पोजीशन आ जाती। मगर ऐसा नहीं किया गया। प शुरू से ही इस बात पर अड़े रहे कि वाइसराय पहले इस बात का जवाब दें हिन्दुस्तान को जो दर्जा दिया जाएगा वह वेस्टमिन्स्टर के ढंग का होगा या र किसी ढंग का ? इससे वाइसराय इस नतीजे पर पहुंचे कि अगर इस बात की फाई हो जाएगी, तो समझौते का रास्ता साफ हो जाएगा। वाइसराय ने लन्दन सरकार की तवज्जह इस तरफ दिलाते हुए इस बात पर जोर दिया कि अगर हें इस बाबत बयान देने की इजाजत मिल जाएगी तो इससे उनके हाथ बहुत बूत हो जायेंगे। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि अगर ऐसा कोई एलान या जाए तो उसमें फिर्केवाराना मसला को शामिल न किया जाए। लोग इसकी ालफत जरूर करेंगे मगर अब हिन्दुस्तान की सियासी तकदीर में किसी तरह लगरयर तब्दीलन करना मुमकिन नहीं है लेकिन जब समझौते की बुनियाद के रे में सफाई हो गई और वाइसराय ने आपकी तआवत हासिल करने की पूरी मीद लेकर ऐलान किया तो आपने अचानक अपना रुख बदल दिया और साफ-फ कह दिया कि वह हिन्दुस्तान को मंजूर नहीं है। इससे लिनलिथगो की जीशन कमजोर हो गई और लन्दन की सरकार इस नतीजे पर पहुंची कि इसराय हिन्दुस्तान की हालत का जायजा लेने और वहां के मसलों का हल लाश करने के नाकाबिल हैं। सारी बात का निचोड़ यह है कि वाइसराय को पके रुख के बारे में सख्त शिकायत है।

बस, मेरे दोस्त का खत यहीं खत्म हो जाता है मगर जब मैं हालात में देखतो

गया था तो और जरिया से भी मुझ यही कफियत सुनने को मिली।

जहा तक असली सवाल का ताल्लुक है मैं तो नही समझता कि वाइसराय को किसी तरह की जायज शिकायत होनी चाहिए। आपन जो वेस्टमिन्स्टरवाला सवाल उठाया था उसका मकसद सिफ यही था कि जब उनमे ताल्लुकात तक करने की आजादी का अख्तियार भी शामिल है तो हिन्दुस्तान को इस मामले में फसला करने की आजादी रहनी चाहिए। आपका यह मकसद हर्गिज नही था कि हिन्दुस्तान खुद अख्तियारी के हक से हाथ धोने को तयार हो जायेगा और बरतानिया की हुकूमत उसे जो कुछ देने की मेहरबानी करगी उसे वह मजूर कर लेगा। लेकिन असली सवाल एक तरफ रखा जाए तो अगर लिनलिथगो को दरअसल कोई शिकायत है तो आपको उस शिकायत को रफा कर लेना चाहिए। मेरे ऊपर देहलीवाले खत का यह असर हुआ है कि उनके साथ सियासी पैतरबाजी से काम लिया गया है न कि आपके अपने तरीके से। जो भी हो लिनलिथगो की शिकायत बेबुनियाद है और एक खत के जरिये इस गलतफहमी को दूर करना बेहतर होगा।

इस बाबत आप जो कारवाई करना मुनासिब समझें करें। मैंने तो देहलीवाले खत में बताई गई सारी बात आपके सामने पेश कर दी। खत को लिखनेवाले एक जिम्मेवार और काबिलकद्र इसान हैं।

आपका
अबुल कलाम आजाद

३४

सेवाग्राम वर्धा
४ ४ ४०

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

मौलाना अबुल कलाम आजाद ने एक लम्बा सा खत लिखा है जिसके सम्बद्ध अंश मैं इस पत्र के साथ रख रहा हूं।

मौलाना साहब को जो रिपोर्ट मिली है, यदि आपने उसकी पुष्टि की तो मुझे आश्चर्य भी होगा और मनोव्यथा भी। मेरी जिनासा केवल एक थी। हम दोनों एक-दूसरे के इतने निकट आ गए थे कि हम दोनों ने मन में कोई बात छिपा

कर नहीं रखी थी। पर यदि कोई बात पूरे तौर से स्पष्ट न हो पाई हो, तो मुख्य विषय का फिर से हाथ में लेकर सफाई की जा सकती थी। *औपनिवेशिक दर्जा* कांग्रेस को स्वीकार नहीं है यह उस मुलाकात मे ही स्पष्ट हो गया था, जिसके दौरान मैंने वह जिज्ञासा की थी। उद्देश्य केवल यही जानकारी हासिल करना था कि उभय पक्ष की स्थितियों मे क्या अंतर है। यदि मैंने आप पर यह छाप छोडी हो कि वेस्टमिन्स्टर के ढंग का औपनिवेशिक दर्जा कांग्रेस को स्वीकार होगा, तो मेरे लिए *यह बड़े परिताप का विषय है।*

रिपोर्ट से यह ध्वनि निकलती है कि आपने अपने आपको मुझसे प्रभावित हो जाने दिया जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश कैबिनेट ने आपको अपनी बिरादरी से खारिज कर दिया। मैं इस ढंग के किसी भी सुझाव को मान्यता देने से साफ इकार करता हू। मौलाना साहब का पत्र लेखक ने जो बात सुझाई है वह मानने लायक *नहीं है क्योंकि ब्रिटिश राजनीतिमत्ता का इतना ह्रास कदापि नहीं हो गया होगा* कि वह अपनी मान्यताओ से इतनी आसानी से विचलित हो जाय। मैं यह आशा बनाए रखूगा कि आपने अपने आपको मेरे द्वारा इतना प्रभावित नहीं होने दिया होगा।

जब आपको यह पत्र लिख ही रहा हू तो और एक बात कहकर अपने मन *का भार हलका कर दू। मैं आपको बता ही चुका हू कि मेरा पुत्र देवदास* एक सहृदयता मे ओतप्रोत इन्सान है। इधर वह मुझे बराबर पत्र लिख रहा है कि मैंने आपके साथ अंतिम बार की बातचीत का इस प्रकार सहसा अत करके आपके साथ घोर अन्याय किया है। वह मेरा यह आश्वासन मानने को तैयार नहीं है कि मेरी और आपकी बातचीत को खत्म करना केवल इसलिए जरूरी हो गया कि *हमने देखा कि हम दोनो के बीच की खाई बातचीत को और अधिक समय* तक जारी रखने मात्र से नहीं पाटी जा सकती। वास्तव मे, जिस दिन बातचीत का आरम्भ हुआ उसी दिन आपने कहा था कि बातचीत खत्म करना और पूरे तौर पर उसके खत्म होने की बात कबूलना, अधिक मर्दानगी का काम होगा। मैंने वस्तुस्थिति के इस बरदान की यथार्थता तुरत स्वीकार की। देवदास का कहना है *कि आपने ऐसा शिष्टता के नाते कह दिया था* हो सकता है उसमे अग्रेज सुलभ आत्मगरिमा का भी पुट रहा हो, और वास्तव मे आप बातचीत जारी रखना चाहते हैं। अत उस बेहद बेचैनी हो रही है। वह कहता है कि मैंने *आपके रुख का* गलत समझा। इस घरेलू झगडे का निपटारा केवल आप ही कर सकते है।

भवदीय,
मो० क० गाधी

३५

सेवाग्राम वर्धा
८४४०

जनाब मौलाना साहब

आपको मुझे जब भी खत लिखना चाहें, लिखने की पूरा आजादी है। आप मुझे किसी दूसरे ढंग से लिखें यह तो मैं सोच भी नहीं सकता।

आपके कहने के मुताबिक मैंने लार्ड लिनलिथगो को खत लिख दिया है।

पट्टाभिवाले मामले में मेरा आपसे पूरा इत्तफाक है।

मेरा खयाल है कि लाहौरवाले प्रस्ताव के जवाब में आपको पूरे गौर के बाद कुछ न-कुछ जरूर कहना चाहिए।

आपका
मो० क० गांधी

३६

सेवाग्राम वर्धा
५ अप्रैल, १९४०

प्रिय सर राधाकृष्णन

मैं आपके पत्र का लौटती डाक से उत्तर नहीं दे पाया था। सामूहिक सविनय अवज्ञा हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती। इस बार में दो या अधिक रायें सम्भव नहीं हैं। मैं जल्दबाजी में कोई काम नहीं करूंगा। पर जहां तक राष्ट्रीय दावे का सम्बन्ध है उसमें कोई कमी नहीं की जा सकती। बौद्धिक सामंजस्य स्थापित हो जाने के बाद ही सुलह-समझौता सम्भव है। जब तक ब्रिटिश सरकार यह समझे बैठी रहेगी कि अन्तिम निर्णय का अधिकार एकमात्र उसी का है तब तक कांग्रेस को प्रतिपक्ष ग्रहण किए रहना होगा। मैं चाहता हूं कि दो विकल्पों में से एक को चुनना है या तो जो कुछ आज हमें प्राप्त है उसे स्वीकार कर लिया जाए या फिर उसका विरोध किया जाए। मेरा सारा जीवन आधारभूत सिद्धान्तों के बारे में किसी भी प्रकार की ढिलाई न करने में बीता है भले ही इसमें शक्ति

कम हो। इस मार्ग को अपनाकर मुझे कभी पछताने की नौबत नहीं आई। अंग्रेजों ने जरा भी न झुकने का पक्का इरादा कर लिया है, इससे मुझे संतोष होता है—मैं कहना चाहता था कि खीज होती है, पर अहिंसा के शब्दकोष में इस तरह का कोई शब्द नहीं है। आप देख ही रहे हैं कि रजवाडों को हमसे किसी तरह का सरोकार रखने की छूट नहीं है? धैर्य से काम लीजिए और दृढता का हाथ से मत गंवाइए।

आपका ही
मो० क० गांधी

३७

सेगांव वर्धा
१०४४०

प्रिय घनश्यामदासजी

वाइसराय के जवाब की नकल भेजता हूं। पढकर फाड डालें। देवदास का झगडा बापूजी से चल ही रहा है। वह कहता है अगर आपने वाइसराय से कहा होता कि हमको तो किसी किस्म का औपनिवेशिक स्वराज्य नहीं चाहिए पर आप किस किस्म का देना चाहते हैं यह बताइए तो वाइसराय आपसे कहता यह एकेडेमिक चर्चा किसी और वक्त पर करेंगे। आज करने से कोई लाभ नहीं है। मैं समझता हूं कि यह दलील ठीक है। पर क्या करें? बापू कई दफा ऐसी मिसअण्डरस्टैंडिंग (गलतफहमी) पैदा करते हैं और फिर उसको रफा नहीं कर सकते हैं। जान बूझकर नहीं करते हैं बापू इतने मल्टीसाइडेड (बहुमुखी) हैं कि उनकी एक बात ही सामनेवाले के देखने में आती है और बापू के दिल में दूसरी बात रहती है।

आपके प्रश्न के बारे में मैंने आज फिर याद दिलाया, तो बापू कहने लगे उस बात का वाइसराय से क्या पूछना है। वह तो जब दूसरा मौका आयेगा तब देखा जाएगा।' इसलिए आज जो उन्हें जवाब दिया है उसका उसमें कोई जिक्र नहीं है।

यह आगे कुछ वचनबद्ध होकर आया हुआ दीखता है उसका स्टेटमेंट पक्का होगा। सेल्फ डिटरमिनेशन के अधिकार की घोषणा की बात तो वह करता ही है

और कमेटियो की भी बात है। पर शायद वह यहा आएगा। उससे कुछ मालूम हुआ तो लिखूगा।

यहा की गर्मी का तो क्या बयान करू ? खस की टट्टी तो बापू के कमरे पर लगाई है, इसलिए उनका कमरा उनके लिए, और जो सहयोगी उनके पास बैठते है उनके लिए कुछ ठण्डा रहता है। पर मैं टट्टियो का छिडकाव कराने जितना पानी कहा से लाऊ और नौकर कहा से लाऊ ? और इतनी ठण्डक होने पर भी बापू को गर्मी तो लगती ही है।

आपका
महादेव

शिवराव और थोडे देखने लायक दस्तावेज दे गए थे उनकी नकलें भेजता हू।

महादेव

३८

कलकत्ता
१७ अप्रल १९४०

प्रिय महादेवभाई

तुमने लियाकत अली के प्रत्युत्तर की ओर बापू का ध्यान आकृष्ट किया ही होगा मेरी समझ मे लियाकत अली की आलोचना मे कुछ दम है। यदि लेखो को शब्दश ग्रहण किया जाए तो वे बापू को असगत अवश्य लगेंगे। हम जानते हैं कि बापू को ठीक ठीक अभिप्राय समझाने मे कोई कठिनाई नही होगी पर यह वस्तु स्थिति तो है ही कि बहुधा उनके प्रतिपक्षी उनके कथन के गलत अर्थ निकालते हैं और जो लोग उनके निकटतम सम्पर्क मे है कभी कभी उनके लिए भी बापू के मन की थाह लेना कठिन हो जाता है।

जब मैं वर्धा मे था तो बापू राजाजी को विभाजन के खिलाफ दलील दे रहे थे। और अब तो साफ कहते हैं कि वह विभाजन का अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ प्रतिरोध करेंगे—हा अहिंसात्मक ढग से करेंगे। ऐसे कथनो से जो गलत फहमी पैदा होती है वह वाइसराय अथवा लियाकत अली तक ही सीमित नही रहती बल्कि अन्य अनेक क्षेत्रो मे भी फैल जाती है। मैं परसो मूर के यहा दोपहर के खाने पर था। वह भी बडा चकित था। उसका कहना था कि उसे हरिजन मे

परस्पर विरोधी सामग्री इतनी अधिक मात्रा म पढने को मिलती है कि वह परशान-सा हो जाता है। कभी कदास वह बापू क समथन म कुछ लिखन का लखनी उठाता भी है तो वह यह निणय नही कर पाता कि बापू का अभिप्राय क्या है और इस नतीजे पर पहुचता है कि वास्तव म बापू खुद दिमागी उलझन म फसे हुए हैं। तुम और मैं यह अच्छी तरह जानते है कि बापू के लेखा म उलझन नाम की चीज नही रहती पर दूसरे लोग उन लखो को पढकर क्या अभिप्राय ग्रहण करत हैं इस बाबत भी हम अपनी जानकारी बनाए रखनी चाहिए।

अब यह बताओ कि यदि यह सुझाव पेश किया जाए कि सरकार निम्नलिखित लाइना पर रवया अख्तियार करे तो बापू की ऐसे सुझाव को लेकर क्या प्रतिक्रिया होगी

सम्राट की सरकार ने भारत के लिए जो कदम निर्धारित कर रखा है उसकी उपलब्धि के लिए विभिन्न सम्प्रदायो म साम्प्रदायिक मामलो पर विचार सामजस्य की नितान्त आवश्यकता है। सम्राट की सरकार को यह देखकर दुख होता है कि साम्प्रदायिक तनाव उत्तरोत्तर बढता जा रहा है। उभय पक्षो के दष्टिकोणा पर विचार करने के बाद सम्राट की सरकार यह अनुभव करती है कि लक्ष्य तक पहुचने की पहली सीढी साम्प्रदायिक मेल है और इस उद्देश्य को सामने रखकर दोना सम्प्रदायो के प्रतिनिधि अतिम समझौता करन म समथ हो। सम्राट की सरकार ने वतमान प्रातीय विधान सभाओ को भग करन और ताजा निर्वाचन कराने का निणय लिया है। इन ताजा निर्वाचना के बाद साम्प्रदायिक मामला पर बातचीत करन के निमित्त प्रातीय विधान सभाए प्रतिनिधि चुनेंगी। इस मामले म दोना सम्प्रदायो के सदस्य अपने अपने प्रतिनिधि चुनेंगे। इन प्रतिनिधिया की सख्या कितनी हो इसका निणय बाद म विभिन्न सम्प्रदायो के साथ सलाह-मशवरा करके किया जाएगा। आशा है कि विभिन्न सम्प्रदायो के निर्वाचित प्रतिनिधिया क बीच विचार विनिमय के फलस्वरूप समझौता सभव होगा। अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि क लिए जो भी शासन विधान बनेगा उस सुचारु रूप स चलाने के लिए एसा समझौता अनिवाय है। यह कहन अनावश्यक सा है कि सभी प्रमुख सम्प्रदायो के ठोस समथन के द्वारा जो शासन विधान अस्तित्व म आएगा उसकी अवहेलना करना सम्राट की सरकार के लिए कठिन होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

३९

कलकत्ता
१७४४०

पूज्य बापू

हैलिफक्स का खत अत्यन्त साफ है। आपके प्रति उलाहना है। हम इन लोगो की कठिनाइयो की अवहेलना करके हठ करते हैं यह आक्षेप है। 'सहयोग की आशा है हमारी नीयत अच्छी है', इस पर जोर दिया है। आप पर क्या असर होता है ?

इसका क्या उत्तर भेजू ? इस सम्बन्ध मे सलाह भेजें।

विनीत
घनश्यामदास

४०

कलकत्ता
१९ अप्रैल १९४०

प्रिय महादेवभाई

जेटलड की स्पीच कुछ बुरी नही रही। उसम मेल मिलाप की इच्छा दिखाई देती है। जहा तक उनका सबध है, दरवाजा खुला हुआ है। जो वाक्य उदधृत कर रहा हू वे ध्यान देने योग्य हैं

" हम इस दावे के औचित्य का स्वीकार करते है कि अपने देश की परिस्थितियो के अनुरूप शासन विधान की रचना मे भारतवासियो का प्रमुख हाथ रहना चाहिए।

भारत के भावी शासन विधान के रचना-काय मे हम अपने-आपको इन्ही मुख्य कारणो से अलग-थलग नही रख सकते। पर इसका यह अथ कदापि नही है कि भारत के भावी शासन विधान का गठन भारत की जनता की इच्छा के विपरीत हो। सम्राट की सरकार ने शासन विधान के क्षेत्र म अनुसधान करने का जो उत्तरदायित्व ग्रहण किया है उसका अभिप्राय यही है कि इस काय म भारत

से सभी दलों के साथ सलाह मशवरा किया जायगा। इससे यह कदापि प्रकट नहीं होता कि शासन विधान लादा जाएगा, बल्कि समझौते के द्वारा शासन विधान की रूपरेखा निश्चित करने की इच्छा प्रकट होती है।

मेरी समझ में यह अच्छा खासा फार्मूला है। शायद निम्नलिखित लाइनों पर चलकर *समझौता सम्भव हो सकता है*

१) जबकि सम्राट की सरकार वेस्टमिंस्टर के ढंग के औपनिवेशिक दर्जे को भारत का अंतिम ध्येय मानती है कांग्रेस का ध्येय स्वतंत्रता है। पर बातचीत के द्वारा आत्म निर्णय के अधिकार की मान्यता प्रदान करने के बाद अब सम्राट की सरकार द्वारा यह स्वीकार किया जाता है कि भारत का भावी शासन विधान *औपनिवेशिक दर्जे के आधार पर अवस्थित हो अथवा स्वतंत्रता के आधार पर*, इस प्रश्न का निर्णय सम्राट की सरकार तथा भारतीय प्रतिनिधि-सभा की आपसी बातचीत के द्वारा किया जाएगा। यदि प्रतिनिधि-सभा की यही माग रही कि समझौते की बातचीत स्वतंत्रता के आधार पर हो तो सम्राट की सरकार समझौते की बातचीत चलाने को तैयार पाई जाएगी।

२) समझौते की बातचीत के लिए प्रांतीय विधान-सभाओं के सदस्य साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के आधार पर प्रतिनिधि चुनेंगे। इन प्रतिनिधियों का अनुपात प्रांतीय विधान सभाओं में साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचित सदस्यों की संख्या के अनुसार रहेगा। ये प्रतिनिधि पहले आपस में बातचीत करके साम्प्रदायिक मामलों का निपटारा करेंगे और उसके बाद सम्राट की सरकार के साथ इस बात को लेकर बातचीत करेंगे कि भारत की भावी सरकार के शासन विधान की रूप रेखा कैसी हो।

३) इस प्रश्न पर कि रजवाड़ों को नये शासन विधान में स्थान दिया जाए *या शासन विधान ब्रिटिश भारत तक ही* सीमित रहे प्रतिनिधि-सभा सम्राट की सरकार के साथ बातचीत करेगी। यदि इस बातचीत के फलस्वरूप यह निर्णय हो कि रजवाड़ों को भी शामिल किया जाए तो फिर प्रतिनिधि सभा और रजवाड़ों में आपस में बातचीत की जाएगी।

४) युद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद शासन विधान बनाने का काम हाथ में लिया जाएगा।

५) अंतरिम अवधि में भारत के साथ औपनिवेशिक दर्जेवाले देशों जैसा बरताव किया जाएगा।

मैं समझता हूं कि इस फार्मूले के द्वारा उभय पक्षों की अपेक्षाएं पूरी हो जाती हैं। पर सब-कुछ बापू पर निर्भर है। मेरी अपनी धारणा यह है कि अभी तो

वाइसराय और बापू के बीच सम्पर्क पुन स्थापित होने की सम्भावना नही है। वसा करने से पेचीदगी बढेगी और अटकलबाजी का बाजार गम होगा। पर यदि बापू को ऐसा प्रतीत हो कि लाड जेटलैंड की स्पीच मे समझौते के तत्त्व विद्यमान है तो शायद उन्हे वाइसराय के साथ पत्र व्यवहार आरम्भ कर देना चाहिए। जब सारी बातो की सफाई हो जाए तब वाइसराय के साथ पारस्परिक सम्पक स्थापित करना उचित होगा। इस बारे मे बापू का क्या कहना है ?

गतिरोध की मनोवत्ति कम हो रही है। बापू ने मुझे वर्धा म बताया था कि वतमान स्थिति स हमारी कोई क्षति नही हो रही है। पर उनकी विचार शली और आम लोगो की विचार शैली मे आकाश पाताल का अन्तर है। बापू निकट भविष्य म सघप की बात नही सोच रहे हैं पर आम लोगो की धारणा है कि सघप की तयारिया की जा रही हैं। बापू काग्रेस से अलग होने की बात कह रहे हैं जब कि आम जनता की धारणा है कि वह सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ करने वाले हैं। यह स्थिति खतरनाक है। यदि गतिरोध का, जैसी कि मेरी धारणा है अन्त करना सम्भव हो तो इसके लिए प्रयत्न आरम्भ कर देने चाहिए और जब जेटलैंड कहते हैं कि दरवाजा खला हुआ है तो पहला कदम बापू को ही उठाना चाहिए। लाड हैलिफक्स का भी यही कहना है कि रास्ता बापू दिखायेंगे। मेरी भी यही राय है। मेरे सुझाव पर बापू की क्या प्रतिक्रिया है ?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

४१

सगाव वर्धा

प्रिय घनश्यामदासजी

आपने जो पत्र भेजा है वह काफी महत्त्व का है। बापू सोच रहे हैं। क्या लिखना है कल बतायेंगे।

मुझे बडा अफसोस है कि वह फाईल तो बापू ने नष्ट कर डाली। फाईल तो मौजूद थी पर उसे देखने पर मालूम हुआ कागजात एक भी नही। बापू ने कहा,

'मैंने तो पढ़कर तुरत ही फाड़ डाला था। ऐसी चीज नहीं रखनी चाहिए। यह मेरा अभिप्राय है।" क्या आपके पास उन चीजो की एक भी प्रति नहीं रही है? बजरग के पास अपने शार्टहैंड नोटस तो होंगे ही।

आपका
महादेव

कल फिर से लिखूगा। अभी बापूजी मौलाना से बातें कर रहे हैं। फिर से निकल जाने की बात बापू ने बड़ी ही गम्भीरता से उनके सामने रखी। उस सूचना का अस्वीकार हुआ।
१६ ४ ४०

४२

कलकत्ता
२० अप्रल, ४०

प्रिय महादेवभाई,

यह मूर के साथ मेरे दोपहर के भोजन का परिणाम प्रतीत होता है। बापू का या तुम्हारा मूर को व्यक्तिगत रूप मे लिखना अच्छा रहेगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

४३

सेवाग्राम व्हाया वर्धा
२५ ४ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

प्रणाम। देहली जो पत्र लिखा है सो कुछ कडा है पर मैं समझता हू कि उसका कुछ सीधा जवाब आनेवाला है। अगर सीधा जवाब आवेगा और वह कुछ डाइरेक्शन (दिशा निर्देश) चाहेगा तो बापू रास्ता भी बनावेंगे। आज तो बापू

की इन लोगों की नीयत अच्छी नहीं लगती है। जो आर० टी० सी० (गोलमेज परिषद्) में हुआ, जो राजकोट में हुआ, वही अब बहुत बड़े पैमाने पर हो रहा है—ऐसा बापूजी का बयान है। शायद इस पत्र के जवाब आने पर बापू हैलिफक्स को लिखेंगे।

आपका टेलीफोन आता है और मैं कुछ इतमिनान देनेवाला जवाब नहीं दे सकता हूं। शर्म होती है, लेकिन मैं क्या करूं?

आज रामेश्वरजी की चिट्ठी आई थी। वे बापूजी को बुलाते हैं। पर बापूजी तो निश्चय-सा करके बैठे हैं कि वहीं जाना ही नहीं है। आप कब तक वहां हैं? बंबई जायंगे तो इस रास्ते से क्यों नहीं जाते हैं? ३० तारीख को मुझे यहां से बंबई जाना है। १ तारीख को बंबई में और २-३ को सूरत जाना है।

आपका

महादेव

सविनय अवज्ञा न करने के बारे में बापू ने बहुत स्पष्टता से इस बार 'हरिजन' में लिखा है। देखिएगा।

४४

कलकत्ता

२६ अप्रैल, १९४०

प्रिय महादेवभाई

लड़ाई की शक्ल बिगड़ रही है। डेनमार्क हजम हो गया, नार्वे का भी वही हाल होने जा रहा है। अब तक स्कैण्डिनेवियन देश एक सुखी कुटुम्ब की तरह रहते आ रहे थे—हद दर्जे के सभ्य और बेहद शांतिप्रिय। मैंने पढ़ रखा था कि स्कैण्डिनेवियन देशों में सचमुच का प्रजातंत्र था। वहां शीर्षस्थ और निम्नस्थ व्यक्तियों में विशेष अन्तर नहीं था। मैंने जो पुस्तक पढ़ी थी उसमें लेखक ने बताया था कि समाजवाद का आश्रय लिए बिना राष्ट्रीय सम्पत्ति का एकसमान वितरण किस प्रकार सम्भव है, इसका ये नन्हे देश जीवित उदाहरण हैं।

अभी पिछले साल ही श्री मेरे के साथ स्कैण्डिनेवियन देशों की शासन प्रणाली पर मैं विचार विनिमय कर रहा था। अब सब-कुछ समाप्त हो गया। इन रायटर

ने करुणोत्पादक लहजे में बताया कि किस प्रकार नार्वे के आतंकित निवासी बमवर्षा और मशीनगनों की गोलियों की बौछार के मध्य भग्नात्साह होकर नगर छोड़कर शरण लेने के लिए इधर उधर भटक रहे हैं। इन भले लोगों केवल इस कारण इस दशा को प्राप्त हुए कि उनके पास विध्वंस के तौर तरीकों का एक ललित कला का रूप देने लायक न साधन थे न इच्छा—यह सोचकर हृदय कांप उठता है। हिंसा की निष्फलता उसकी दक्षता के साथ ही साथ प्रमाणित हो रही है। नार्वे की हिंसापूर्ण आत्म रक्षा का क्या फल निकला? और फिलहाल तो जर्मनी की दीर्घतर हिंसा ही सार्थक होती दिखाई दे रही है।

हम लोगों को यह आशा लगाए रखनी चाहिए कि सब लोग हिंसा की निष्फलता की बात समझ लें तभी नये युग का आविर्भाव होगा। पर क्या हम लोग सचमुच विश्व की समस्याओं के समाधान के निमित्त अहिंसा का योगदान कर रहे हैं? हमारी अहिंसा नार्वे, स्वीडन और डेनमार्क के किस काम में आई? *वास्तव में क्या हम जर्मनी के पंजे मजबूत नहीं कर रहे हैं? यह ठीक है कि हम* ब्रिटेन को व्यस्त करने से अधिक और कुछ नहीं कर रहे हैं और शायद हमारे लिए यह कहना भी सम्भव है कि ब्रिटेन की व्यस्तता अनिवार्य है और हम उसे जान-बूझकर व्यस्त नहीं कर रहे हैं। पर यह तो वस्तुस्थिति है ही कि ब्रिटेन पर विपत्ति आई हुई है और हम अपने कार्यों के द्वारा ब्रिटेन तथा आक्रमण के शिकार अन्य भले देशों की व्यस्तता को बढ़ा रहे हैं। ऐसा लगता है कि हम इंग्लैंड का हृदय परिवर्तन करने में सफल नहीं होंगे और नार्वे जैसे देश हमारे रुख की कदापि सराहना नहीं करेंगे।

हमने इस समय जैसा रुख अपना रखा है उसे सामने रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय लोकमत स्पेन तथा चीन जैसे आक्रमण के शिकार देशों को दी गई हमारी पुरानी सहायता के गलत मानी लगाने को बाध्य है। क्या वे देश हमारी सहायता के इन देशों से अधिक अधिकारी थे? यदि यह बात नहीं है तो यह भेदभाव क्यों? क्या यह भेदभाव केवल इसलिए बरता जा रहा है कि इस नैतिकतापूर्ण और साधु कार्य में एक साम्राज्यवादी शक्ति हाथ बंटा रही है भले ही वह ऐसा अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए कर रही हो? बापू ने पिछले महायुद्ध के दौरान लोगों को लाम पर जाने को तैयार कर दिया था और बाद में उन्होंने अपने इस कार्य पर कभी पछतावा नहीं किया। इस बार उनका रुख उनके पहलेवाले रुख से बिलकुल भिन्न प्रतीत होता है वह स्वयं यह भले ही कहते रहें कि उनके दोनों रुखों में कोई विरोधाभास नहीं है और दोनों ही रुख अपने अपने स्थान पर औचित्यपूर्ण रहे हैं।

मुझे रह रहकर संशय होता है कि क्या हमारा मौजूदा रवया नैतिक दृष्टि से अनुमोदनीय है ? बापू का जो निष्कर्ष होगा, ठीक ही होगा पर मैं तो यह एक बार फिर लिख रहा हूं कि हम वर्तमान से अपेक्षाकृत अधिक संतोषजनक योगदान कर सकते थे। बापू सहमत हों ऐसा तो मैं नहीं समझता, पर मैं उनके सामने बीच बीच में अपने संशय रखना उचित समझता हूं। मैंने देखा है कि उनकी विचारधारा भी परिवर्तनशील है। हो सकता है इस अवसर पर भी वैसा ही कुछ हो।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

४५

सेगांव, वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
२९-४-४०

प्रिय घनश्यामदासजी

प्रणाम। वाइसराय का कुछ आया नहीं है। आने पर तुरंत आपको खबर दूंगा। लेकिन कल मेरे जाने पर ही पत्र आया तो बापू से कह जाऊंगा कि आपको लिखें।

आपका कल का पत्र महत्त्व का है। मैंने उसे बापूजी को दिया, ताकि वे उस पर हरिजन में एक लेख लिखें। आपकी दलील माहक है, अकाट्य नहीं है परंतु वह दलील सारे समाज की है और उसका संतोषकारक जवाब बापू से आना चाहिए। मैं ६ को सुबह यहां पहुंचूंगा।

आपका,
महादेव

पुनश्च

हिवस के साथ की बातचीत भेजता हूं। आप उसे मूर को भी दिखाइए और मूर को कहिए कि एंड्रूज के बारे में बापू की अपील का कुछ रिस्पांस (उत्तर) दें।

४६

सगाव, वर्धा होकर (मध्य प्रात)
३० अप्रल, १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपक पत्र का बापू न यह उत्तर दिया है कि यह आगामी अक के एक लेख म स्थान पायगा। इस लेख के ऊपर आपकी चिट्ठी छपगी। आप इतन से सतुष्ट हो पायेंगे या नही सा मैं नही जानता।

शिमला स अभी कोई पत्र नही आया है।

आपका,
महादेव

सलग्न लेख

इस युद्ध के द्वारा हिंसा की निरथकता प्रमाणित हो रही है। यह मान भी लिया जाए कि हिटलर मित्र राष्ट्रो का पराजित कर पायेगा तो भी वह इग्लड और फ्रास को ता कदापि अधीन नही कर सकेगा। इसका अथ यह है कि एक और युद्ध होगा। फज कीजिए उस युद्ध म मित्र राष्ट्रो की विजय हुइ तो भी इसस ससार की स्थिति ज्या-की-त्यो रहेगी। विजयी हाने के बाद मित्र राष्ट्र पहले से अधिक शिष्टता स भले ही पश आन लगें पर उनकी नशसता मे काई फक नही पडेगा हा यदि इस दौरान व अहिंसा का पाठ हृदयगम कर लें और हिंसा क द्वारा उन्हें जो प्राप्ति हुई हो उसे तिलाजलि दने को तयार हा जाय ता बात अलग है। अहिंसा की पहली शत यह है कि वह जावन क सभी क्षत्रा म याय का तकाजा करती है शायद मानव स्वभाव से इतने की अपेक्षा नही की जा सकता। पर मरा विचार भिन्न है। मानव-स्वभाव कितना पतित हो सकता है और कितना ऊचा उठ सकता है, इस बारे म किसी का सीमाए निर्धारित करन का अधिकार नही है।

भारतीय अहिंसा के द्वारा सभ्य पाश्चात्य देशो को काई राहत नहा मिली उसका कारण यह है कि अभी वह अपनी शशवावस्था म है। उसकी प्रभावहीनता देखने के लिए यहा तक प्रवास करने की जरूरत नहीं है। भारत म ही काग्रेस क अहिंसा-व्रत के बावजूद हम लोग बुरी तरह आपस मे बटे हुए हैं। लोगा का काग्रेस पर भरोसा नही है। जब तक काग्रेस अथवा जनता का और कोई दल सामथ्यवान

की अहिंसा का प्रतिनिधित्व नही करगा, तब तक शेष ससार अहिंसा की क्षमता से प्रभावित नही हो पायेगा।

भारत ने स्पेन और चीन को जो सहायता दी वह केवल नतिक सहायता थी। हमारी भौतिक सहायता नही के बराबर थी, जो कि केवल हमारे नतिक समथन का प्रमाण मात्र थी। डेनमाक और नार्वे बात की-बात मे अपनी स्वतत्रता से हाथ धा बठे। भारत भर म ऐसा काई व्यक्ति शायद ही निकल, जिसकी सहानुभूति इन दोनो दशा के माथ न हो। यद्यपि उनका मामला स्पेन और चीन-जसा नही है, तथापि उनकी बर्बादी चीन और स्पेन स कही अधिक हुई है। चीन और स्पन तथा डेनमाक और नार्वे म भौतिक अन्तर भी है पर उनके प्रति सहानुभूति म कोई अन्तर नही है। भारत एक दरिद्र देश है वह इन देशा की सहायता के लिए अहिंसा का छाड और कुछ क्या भेज सकता है? पर जमा कि मैं कह चुका हू अभी हमारी अहिंसा उस स्थिति म नही पहुच पाई है कि उसे बाहर भेजा जा सके। जब भारत अपनी अहिंसा के बूते पर स्वतत्रता प्राप्त कर लेगा, ता वह यह तोहफा बाहर भजन मे भी समथ हो जाएगा।

अब रही ब्रिटेन की बात। भारत ने ब्रिटन को व्यस्त नही किया है। मैं इस बात का पहले स ही ऐलान कर चुका हू कि भारत ब्रिटेन का कदापि व्यस्त नही करेगा। यदि भारत मे अराजकता फली, तो ब्रिटेन को परशानी हागी। जब तक काग्रेस मेरे नियत्रण म है तब तक वह अराजकता का प्रश्रय दने से बची रहेगी।

पर काग्रस के लिए ब्रिटेन को नतिक समथन देना सम्भव नही है। नतिक समथन कोइ यात्रिक चीज नही है, जा सहज भाव स दिया जा सके। उस प्राप्त करना ब्रिटन के हाथ म है। एसा मालूम पडता है कि ब्रिटिश राजनेताओ की यह धारणा है कि काग्रेस के पास नतिक समथन प्रदान करन की क्षमता नही है। शायद वे इस नतीज पर पहुचे हैं कि इस युद्धरत ससार मे उन्ह जिस चीज की जरूरत है वह है भौतिक समथन। उनकी ऐसी धारणा गलत भी नही है। युद्ध म नतिकता तो निषिद्ध ही है। उनका यह कहना कि 'हम ब्रिटेन का हृदय परिवतन करन म सफल नही हा पायेंगे' ब्रिटन के पक्ष मे अपनी सारी दलील का खाखला पन जाहिर करता है। मैं ब्रिटन का अमगल नही चाहता। यदि ब्रिटेन न घुटने टेक तो मुझे व्यथा हागी। पर उसे काग्रेस का नतिक समथन तब तक उपलब्ध नही हागा जब तक वह भारत का पूरी तरह मुक्ति नही द दता।

मेर उपयुक्त मित्र खडा म रगरूट भर्ती करन के मेरे काय और मेर वतमान रवय के अन्तर को नही समझ पा रहे हैं। गत महायुद्ध म नतिक प्रश्न उठाया ही कहा गया था? कांग्रेस ने अहिंसा-व्रत नही लिया था। इस समय उसे जितनी

लोकप्रियता प्राप्त है उस समय प्राप्त नही थी। मैं जो कुछ कर रहा था, बिलकुल अपनी जिम्मेदारी पर कर रहा था। मैंने तो युद्ध परिषद तक मे भाग लिया था और अपनी घोषणा के अनुरूप आचरण करने के दौरान मैंने अपने स्वास्थ्य तक का जोखिम म डाल दिया था। तब मैं लोगो स कहता था कि यदि वे लोग शस्त्रास्त्र चाहते हैं तो उन्हे सेना मे भर्ती हो जाना चाहिए। पर यदि वे मेरी तरह अहिंसा के पुजारी हो तो मेरी यह अपील उन पर लागू नही होती। मैं समझता हू कि मैंने अपने श्रोताओ मे एक भी अहिंसा का उपासक नहीं पाया था। लोग यदि सेना म भर्ती होने से पीछे हटते थे तो केवल इस कारण कि ब्रिटेन के प्रति उनके हृदयो म वैमनस्य की भावना काम कर रही थी। इस भावना ने धीरे धीरे विदेशी चगुल से छुटकारा पाने के नानपूर्ण सकल्प को स्थान दिया।

तब से अवस्था बहुत बदल गई है। पिछले युद्ध म ब्रिटेन को भारत ने एकमत होकर सहायता दी। पर युद्ध के बाद ब्रिटेन का रुख रौलट एक्ट और उसी प्रकार की अन्य चीजो मे सामने आया। काग्रेस ने ब्रिटेन के अन्याय का सामना करने के लिए अहिंसापूर्ण असहयोग का कार्यक्रम अपनाया। सब कुछ याद है। जलियावाला बाग साइमन कमीशन, गोलमेज कान्फरेंस, इन गिने आदमियो की करतूत के दण्डस्वरूप समूचे बगाल का दमन आदि। अब जबकि काग्रेस ने अहिंसा व्रत अपना लिया है तो मुझे रगरूट भर्ती करने के लिए गश्त लगाने की क्या जरूरत है? वास्तव मे ये मुट्ठी भर रगरूट ब्रिटेन को जो कुछ प्रदान कर पाते मैं उससे कही बेहतर चीज भेंट कर सकता हू। पर ब्रिटेन को उसकी जरूरत महसूस नहीं हो रही है। मैं समर्थन प्रदान करने को तत्पर हू पर लाचार हू।

४७

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१५ ५ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। बिहारीलाल को तो जो मागता है भेजना ही पडेगा। गुजराती म कहावत है— पलाडयू एटल मुडावेयज छुटको। शायद मारवाडी मे भी एसी कहावत होगी। यह आदमी बचनेवाला तो है ही नही।

देवदास का आज टलिफान आया था। हालड सरेन्डर हो गया। बल्जियम का भी वही हाल होगा। अब बापू को मत्रिमडल के साथ सीधे सम्बन्ध म आ जाना चाहिए वाइसराय के जरिय मत्रिमडल का एक लम्बी केबल (समुद्री तार) करना चाहिए और उसम भारत की स्थिति साफ करनी चाहिए। सम्भव है उसका कुछ नतीजा आव।

बापू न कहा इस सूचना म कुछ नहीं है। बापू के पास हिटलर की जान कारी हर रोज बढ रही है। मैंने कहा जब तक आप खुल्लमखुल्ला कुछ न कह तब तक ठीक है।

आपका,
महादेव

४८

सवाग्राम
वर्धा
२१ ५ ४०

भाइ घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। मैंन माधव का भी खत तो लिखा है। तुम सबका सुमित्रा की मृत्यु का दु ख तो काफी होना ही है। लेकिन ऐस मौक पर हमार ज्ञान की और श्रद्धा की परीक्षा होती है ना? मुझे विश्वास है कि इस परीक्षा म तुम सब उत्तीण होग।

यूरोप म तो बराबर यादवस्थली जमी है। कुछ भी हो, मेरा हृदय इस बार म बहुत कठिन हो गया है।

बापु के आशीर्वाद

४६

२३ मई, १६४०

प्रिय महादेवभाई

बजरंग तुम्हारे पास बिडला कालेज की परिचय-पुस्तिका छोड आया था। बापू ने उसके संबंध में कुछ लिखने का वचन दिया था। यदि तुमने बापू के सामने वह पुस्तिका अभी तक न रखी हो तो अब रख देना।

अब हमने बिडला कालेज के बारे में अन्तिम निर्णय ले लिया है। हम जयपुर रियासत के अधिकारियों को लिखने जा रहे हैं कि यदि वे लोग हमें १६४१ की जुलाई तक डिग्री कालेज खोलने की अनुमति और अध्यापकों की नियुक्ति और बर्खास्तगी के मामले में पूरी छूट नहीं देंगे तो हम संस्था को बन्द कर देंगे। जुलाई *१६४१ से कालेज का नया सत्र आरम्भ होनेवाला है। स्थिति एकदम असहनीय* हो गई है। हम रियासत के साथ मुठभेड हुए बगैर न दाहिनी ओर मुड सकते हैं न बायीं ओर। हम अध्यापकों की नियुक्ति और बर्खास्तगी के मामले में पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं। डिग्री कालेज खोलने की अनुमति तत्काल भले ही न मिले, *पर हम नियुक्ति और बर्खास्तगी का अधिकार रियासत के हाथों गिरवी रखने को* कदापि तैयार नहीं हैं। इस समय अध्यापकों में कई एक निकम्मे आदमी हैं। मेरी दृढ इच्छा है कि उनके स्थान पर योग्य और दक्ष व्यक्तियों को रख सकूं जिससे कालेज की शिक्षा का स्तर ऊंचा हो। पर इसकी इजाजत नहीं मिल रही है। इस*लिए हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि यदि इस मामले में हमें स्वच्छंदता नहीं* दी गई तो हम संस्था को ब्रिटिश भारत में कहीं ले जायेंगे।

मेरी अपनी तो धारणा यही है कि वैसा करने की नौबत नहीं आयेगी क्योंकि रियासत को हमें अपने अधिकार से वंचित करने का दुस्साहस कभी नहीं होगा। *पर यदि उन लोगों को अपनी गलती महसूस नहीं हुई, तो मैंने फैसला कर लिया* है कि संस्था को ब्रिटिश भारत में ले जाऊं।

बापू पुस्तिका को पढ़ लें और यदि उचित समझें तो हमारे पक्ष में कुछ लिख दें। पर वह समय भी आ सकता है जब उन्हें जोरदार शब्दों में कुछ-न-कुछ लिखने *को बाध्य होना पडेगा।*

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

५०

२४ मई, १६४०

प्रिय महादवभाई,

मैंने तुम्हें फोन पर जा बात बताई थी उसकी पुष्टि नहीं हुइ है। यह अफवाह किसने फलाई, कहना कठिन है। उक्त सज्जन मथेरन म थे। जब मैंन वह अफवाह सुनी, तो उक्त सज्जन के यहा दा बार पुछवाया और खबर की पुष्टि हुई। इसके बाद हमन एसोसिएटड प्रस से पूछा पर उन्हाने अफवाह की पुष्टि नही की। उनके घर से पुष्टि कैसे हुई, समझ म नही आता। पर मैंन तुम्ह यह बतान म सतकता स काम लिया कि जब तक एसोसिएटेड प्रेस अफवाह की पुष्टि न कर द, तुम्हारा तार भेजना ठीक नही रहेगा।

रोजर हिल्स की चिट्ठी वापस लौटा रहा हू। उसन मुझे भी चिट्ठी लिखी थी दाना का विषय प्राय एक-जैसा है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाई
सवाग्राम

५१

सेवाग्राम,
वर्धा
३० ५ ४०

भाई घनश्यामदास,

यह खत बाल का है। उसन इरादा किया था एस ही भेजने का। मैंन कहा अगर भेजना ही चाहता है तो मैं ही भेज दू। लेकिन मेरे भेजन का काई विशेष अथ न किया जाय।

बापु के आशार्वाद

५२

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
३ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

हमारे यहा कोई-न-कोई एक्साइटमट (उत्तेजना) तो रहती ही है। एक लडकी का बापू पर लिखा हुआ खत और साथ रखी पैन किसी ने चुरा ली। पीछे पैन कही फेंकी हुई मिली और खत के पुरजे मिले। बापू को बडा आघात पहुचा और कहा कि इसमे कोई नौकर लोगो का काम नही है हमारे म स ही किसी का काम है। शुक्रवार तक कोई कबूल न करेगा तो शनिवार से उपवास शुरू करेंगे। बहुत तलाश कर रहे हैं सबको समझा रहे हैं पर पता नही चलता। ऐसी व्यर्थ प्रवत्तियो म हमारा कितना समय चला जाता है ?

अब तो इटली भी पडनेवाला मालूम होता है। तब भी यह लोग टाग ऊची की ऊची रख रहे हैं। क्या होनेवाला है ?

फिफ्थ कालम और क्विजलिग का अथ तो अभी जान लिया होगा। फिफ्थ कालम का यानी दुश्मनो न पदा किय हुए घर के ही देशद्रोही और क्विजलिग (शत्रु-पापी) धोखा देनवाला। २ जून के टाइम्स इलस्ट्रेटड वीकली म १० पष्ठो का खासा इटरस्टिग (दिलचस्प) लख इन दो शब्दो पर है। देखियेगा।

उस खत की पहुच भी नही है। आन की मैं आशा भी नही रखता हू।

आपका
महादेव

पुनश्च

घी के बारे म समझ गया। ऐसा तो कितना ही घी मैंने हजम कर लिया है और करूगा। अन्न के फल तो बिडला पाक से आते ही रहते है। इस सब प्रेम के लायक मैं हमेशा रहू तो ठीक ही है। शनिवार को क्या होता है मैं टेलिफोन स खबर दूगा। टालने की—टलवाने की बडी कोशिश कर रहा हू।

५३

सेवाग्राम
वर्धा
४ ६ ४०

भाई घनश्यामदास

बा के बारे म समझा।

जब चाहू तब बालको को लेकर आ जाइये। हवा म दिन मे तो गर्मी है। रात्रि अच्छी वर्षा हो गई है।

बापु के आशीर्वाद

सेठ घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
माउण्ट प्लेर्जेट रोड
बम्बई

५४

सेगाव (वधा होकर)
(मध्य प्रात)
६ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका टेलिफोन मिला। सुबह बापू का मैं काफी सुना चुका था। मैंने कहा था किसी न पाप किया है ऐसा मालूम होन पर आप प्रायश्चित्त करें यह ता ठीक बात है परन्तु किसा न पाप किया है या नही, यह जानन क लिए आप उपवास नही कर सकते हैं। हरेक चीज हम जान सक्ते हैं या जाननी चाहिए ऐसा दावा करना यह एक किस्म की तक्ब्बरी है खुदापन का दावा करने बरोबर है इसलिए आप उपवास का विचार छोड दे। इस बात मे अनसरटेन फक्टस (अनिश्चित बातें) भी काफी है।

बापू ने लिखा, 'तुम्हारी दलील नजर के सामने है ही।

इसमें मैं आशा करता हू कि शायद उपवास न भी करें। यहा से किसी ने चिट्ठी या पत्र चुराई है ऐसा मुझे नही लगता है। हम चाहे उतने कनिष्ठ प्रकार के हों, ऐसे गये गुजरे नही हैं कि बापू को उपवास करने की नौबत आवे, तब तक एक छोटी-सी चोरी की बात छिपाते रहे।

आपका,
महादेव

५५

मगनवाडी
वर्धा (मध्य प्रात)
६ ६-४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

चोरी का प्रकरण कुछ बिगड गया है। कल बापू ने एकाएक अमतुस्सलाम को कहा, 'मुझे तुझ पर शका आती है, तू तुरन्त कबूल कर ले।' मुझे भी इससे आश्चर्य हुआ। उसने कहा "मैंने नही लिया, मैं निर्दोष हू। मेरा खुदा मेरा साक्षी है। ऐसा कहकर उसने आज से उपवास शुरू किया है। मैंने तो बापूजी से कहा उपवास जाहिर करने मे जितनी जल्दबाजी हुई उतनी यह इल्जाम लगाने मे भी हुई। *इस लडकी पर अन्याय हुआ है ऐसा महसूस करने के बाद उस सौ गुना न्याय* देकर सशोधन करना चाहेंगे। वह भी एक बडा अन्याय ही होगा जैसा कई किस्सो मे बापू किया है। यह सब बापू को मैंने सुनाया पर उसका बापू पर कोई असर नही हुआ है। अब तक तो यही सुनता हू कि वे उपवास करेंगे। कल टेलिफोन करेंगे तो अधिक पता चलेगा।

अब उस खत का जवाब आ गया है। पहले मे बापू ने लिखा था, 'यह हत्या काड चल रहा है उसे रोकना चाहिए आप लोगो की हार हो रही है और अब आप सुलह नही माग लेगे तो हत्या बढेगी। हिटलर बुरा आदमी नही है, आज भी आप बन्द करना चाहें तो वन्द करेगा और इस काम मे अगर आप मुझे जर्मनी या और कही भेजना चाहे तो भेज सकते है। यह बात कबिनेट को भी बताना। मैं मानता था कि इसको वे इम्प्रूडेंस (अदूरदर्शिता) मानेंगे। जवाब तो बहुत अच्छा

आया। हम लड रहे है। जब तक ध्येय प्राप्त न हुआ तब तक हम हटनेवाले नही हैं। आपकी चिता मैं जानता हू पर सब ठीक ही होगा। आपने हमार दो लडका के लिए चिता प्रकट की है उससे हम दोनो बहुत प्रभावित हुए हैं। बस।

आपका
महादेव

५६

सगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१० ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

लियाकत के और आपके दोना पत्र बापूजी को पढ सुनाये। उन्होने कुछ कहा नही। परन्तु *आपका एटीटयूड (रुख) ठीक ही है।* सिकदर की फामूलावाली शिवराव की एक चिट्ठी मेरे पास आई थी। उसका बापू ने जवाब दिलवाया कि उसके फामूला म ड्रास्टिक अमेण्डमेटस (आमूल सशोधन) चाहिए। पर वह बापू नही करेंगे उन लोगा का ही करना चाहिए परन्तु योग्य बात तो यह है कि वे मौलाना और जवाहरलाल को भेजें। शिवराव की चिट्ठी भेज रहा हू। वापस कीजियेगा।

बापू का उपवास टला—और वह मेरे ही परिश्रम और सख्त विरोध का फल माना जाए। ऐसा कट्टर विरोध मैंने बापूजी के स्टेप (*कदम*) *का कभी नही किया* था। उपवास शुरू होने के बाद भी एक खासी लम्बी चिट्ठी लिखी थी, और लिखा था कि यह धार्मिक उपवास नही है इसलिए जब तक यह बन्द न हो तब तक मैं अपना विरोध करता ही जाऊगा। दो घण्टे म बापू न उपवास छोडने का निश्चय प्रकट किया। सरदार सतारा से आ गये हो तो उन्हे शिवराव का पत्र दिखादियेगा और बापू के जवाब का मतलब भी कहियेगा।

आपका
महादेव

५७

बिड़ला आरोग्य मंदिर
नासिक रोड
११ जून १९४०

प्रिय महादेवभाई,

मैं कार्यकारिणी की बैठक हो चुकने के बाद पहुंच रहा हूं। माधव ने कहा था कि वह बापू के पास जब वे फुरसत में होंगे ठहरना चाहेगा पर उसे बताया गया कि बापू अत्यंत कार्यव्यस्त होंगे। अतः हम सब १९ या २० को पहुंच रहे हैं, जब भी बापू को अवकाश हो। लिखो कौन सी तारीख ठीक रहेगी। मैं तो वहां केवल दो दिन ही ठहर पाऊंगा पर माधव और वसंत ज्यादा देर ठहरे रहेंगे। क्या उनके सेवाग्राम में टिकने का बंदोबस्त किया जा सकता है?

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

५८

सेवाग्राम
(वर्धा होकर)
१२ जून १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आप चाहें तो अभी आ जाएं पर गर्मी फिर से पड़ने लगी है और बरदाश्त नहीं हो पा रही है। अच्छा तो यही रहेगा कि इसके बाद आवें क्योंकि मुझे आशंका है कि कार्यकारिणीवाले २० तक यहां रहेंगे। माधव और वसन्त जब चाहें

आ जाए। वे तकलीफ बरदाश्त करने को तयार हो तो यहा तो उनके ठहरने का बन्दोवस्त हो ही जायगा।

आपका
महादेव

श्री घनश्यामदासजी बिडला
बिडला आरोग्य मदिर
नासिक रोड (जी० आई० पी०)

५६

बिडला आरोग्य मदिर
नासिक रोड
१२ जून १६४०

प्रिय महादेवभाई

तुमने जो कागज पत्र भेजे थे लौटा रहा हू। तुम देख ही रहे हो मैं यह चिट्ठी नासिक म लिख रहा हू इसलिए ये कागज पत्र सरदार को दिखाने का मौका नही मिला है।

परन्तु इन मसौदो से क्या आना जाना है? वाइसराय को मजूर हो तब तो? बापू ने ठीक ही कहा था कि मसौदे म हेर फेर करना उन लोगो का काम है। पर मेरी तो अब भी यही धारणा है कि कुछ न कुछ फल निकलेगा हा यह बात दूसरी है कि अभी उसका समय नही आया है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

६०

मगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१३ जून १६४०

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ शिवराव का पत्र भेज रहा हू। हेड क्वाटर्स (मुख्यालय) पर क्या हो रहा है इसका आभास शिवराव के पत्र से भली भाति मिलेगा। कुछ लोगों को आत्मसमर्पण की अपेक्षा आत्महत्या श्रेयस्कर लगती है।

नासिक मे कब तक ठहरे रहने का विचार है ?

शिवराव की चिट्ठी लौटा दीजिएगा।

सप्रेम,
महादेव

६१

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१३-६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजा

कुटुम्ब पर क्या आफत आई ? मैं समझता हू कि कुटुम्ब पर पहले ऐसी कोई आफत नही आई है। मरी तो माधवप्रसाद को कुछ लिखने की हिम्मत नही है। बापूजी ने रामेश्वरजी को और कलकत्ता तार दिया है। मुझे तो एक चीज याद आ रही है

विपदो नव विपद सपदो नव सपद।
विप॰ विस्मरण विष्णो सप नारायण स्मृति ॥

रामेश्वरजी को अलग पत्र नहीं लिखता हूं। आपके दु ख म समभागी हूं एसा अक्षरश मानिये। दुर्गा तो कहती है कि लडकी का चेहरा दिन भर आखो के सामने आया करता है।

पर आपको मैं आश्वासन पत्र क्या लिखू ? आप भक्त हैं आस्तिक हैं। आप अपने ज्ञान भण्डार म से शांति प्राप्त कर ही लेंगे।

आपका
महादेव

६२

१४ जून १९४०

प्रिय महादेवभाई

राजकोट के ठाकुर की मृत्यु का जो सवाद मैंने रेडियो पर सुना वह यह था कि वह शिकार खेलने गये थे और उन्हे एक चीता उठाकर ले गया। दूसरे दिन समाचार प्रसारित हुआ कि उनके हृदय की गति बन्द हो गई थी पर उनका शव मिल गया है। फिर तीसरा सवाद यह प्रसारित हुआ कि वह मचान पर चढ रहे थे कि अचानक उनके हृदय की गति बन्द हो गई। पहला प्रसारण औरों ने भी सुना था। ऐसा मालूम पडता है कि यह हृदय की गति बन्द हो जाने जसा सहज मामला नहीं था। हकीकत जो भी हो मुझे तो यही लगता है कि इस मामले म जसी करनी वसी भरनी वाली कहावत चरितार्थ होती है। पहले वीरावाला और अब यह शख्स। बापू ने ठाकुर की धमपत्नी को समवेदना का तार तो भेजा ही होगा।

कल रात बर्लिन से निम्नलिखित घोषणा प्रसारित हुई

हिन्दुस्तान के सरकारी हलको मे कहा जा रहा है और खास तौर से मद्रास के गवनर ने यह कहा है कि बरतानिया हिन्दुस्तान को आजादी दे भी दे तो वह आजादी ज्यादा अर्से तक कायम नहीं रहेगी क्योंकि अगर जमनी फतहयाब हुआ तो वह हिन्दुस्तान को आजाद नहीं रहने देगा। हम सरकारी हलको और जमन लीडरो की रजामन्दी स इस बात का ऐलान करना चाहते हैं कि अगर बरतानिया न हिन्दुस्तान को आजाद कर दिया, तो फतहयाबी हासिल करने के बाद जमनी का यह कतई इरादा नहीं है कि उसे उसकी आजादी से महरूम कर दिया जाय।

दरहकीकत हिंदुस्तान अदम तशद्दुद के जरिये आजादी की जद्दोजहद म लगा हुआ है। जमनी को उसकी पूरी जानकारी है, और उस फिलहाल जितनी आजादी हासिल है, या जितनी आजादी वह आग चलकर हासिल करेगा जमनी उसे पूरी पूरी क्बूलियत अता करेगा। जमनी और हिंदुस्तान के बाहर भी ताल्लुकात हमेशा से निहायत ही दोस्ताना रहे हैं। और सरकार की यह ख्वाहिश है कि यह दोस्ती न सिफ बरकरार रहे बल्कि उसम इजाफा हो।

यह घोषणा उर्दू म की गई थी और थोडे बहुत हर फेर के बाद उस ज्यो का त्यो दे रहा हू। वास्तव मे घोषणा काफी लम्बी थी मैंने उस काट छाटकर इतना कर लिया है। जमनी के वचनो का भी उतना ही मूल्याकन करना चाहिए जितना हमने इग्लैंड के वचनो का करना सीखा है। यदि बापू कुछ लिखने बठ तो हो सकता है उन्हे यह घोषणा भी काम की लगे।

हिंदुस्तान टाइम्स' के साथ एमरी की मुलाकात कुछ विशेष सहायक नही हुई। वह महान निणयो की बात करता है पर यह भूल जाता है कि दक्षिण अफ्रीका ने आजादी हासिल करने क पहले जो महान निणय' लिया था, वह बोअर युद्ध था और आयरलैंड का महान निणय पिस्तौल की गोलिया थी। पर हम लोगो का अपना महान निणय यह है कि ब्रिटन के दुर्दिनो म उसे व्यस्त न किया जाये। यह हमारी उदारता का परिचायक है। इसके विपरीत खाकसार मुस्लिम लीग के साथ तो मिले-जुले हैं ही, अब ये कानून और व्यवस्था के लिए खतरा बन रहे हैं। इनकी जमनी के साथ साठ गाठ हो तो कुछ आश्चय नही। कितन विरोधाभासवाली बात है कि जो लोग राजभक्ति और वफादारी का दम भरते नही अघात वे सरकार को परेशान करनेवालो म सबसे आगे हैं जबकि जिन लोगो का सारा जीवन उसके साथ मोर्चाबन्दी करते बीता है वे सरकार को किसी प्रकार की परेशानी न हो इस कोशिश म लगे हुए हैं।

पर एमरी की स्पीच का अच्छा अथ भी लगाया जा सकता है। हो सकता है उसके कहने का अभिप्राय यह रहा हो आप लोग शासन की बागडोर अपने हाथो म लीजिए आप और हम दोनो ही देखेंगे कि किस प्रकार स्वतन्त्रता अनायास प्राप्त हो जाती है। वसी स्थिति मे इग्लैंड को उस समय की वस्तुस्थिति को मान्यता देनी ही होगी। पर यदि आप इस बात की हठ पकडें कि शासन विधान पहले आय, स्वतन्त्रता बाद म तो आपको बहुत दिन रुकना पडेगा।

टाउन-हॉल की सभा म सर पुरुषोत्तमदास ने जो स्पीच दी थी, वह तो तुमने पढी ही होगी। मैं तो कहूगा कि उन्होंने अपने मन की बात इतने खुले शब्दो म कहकर बडी दिलेरी का काम किया। इस पर बाद के भारतीय और यूरोपियन

वक्ताओ ने उन्हें आड हाथा लिया था, पर उन्होंने तो दो टूक बात कह डाली थी।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

६३

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रात)
१४ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

लमले का मिले क्या ? मिलने पर क्या होता है लिखियेगा। मिरजा इस्माइल का एक खास आदमी ऊटी से उनका खत लेकर आया था। बाकी तो सब पैडिंग (भराव) था। या तो मेरे साथ मक्अप(होड)करने के लिए प्रेम-कथा थी कहिये पर सूचना यह थी प्रिलिमिनरी कॉफ्रेंस इलेक्टेड (चुनी हुई) होनी चाहिए इसमे कोई शका नही है पर कास्टीटयूएसी (चुनाव क्षेत्र) और उसकी स्ट्रेंग्थ (क्षमता)पहले डिटरमिन (निर्धारित)कर लेना चाहिए। २० २५ से अधिक नही होना चाहिए और उसमे टर्म आफ रेफरे स (सदर्भ शर्त) की सूचना थी। बापू ने तो उसे एक लाइन का जवाब दिया कि आप समझते हैं कि यह कास्टीटयूऐट असम्बली (विधान निर्मातृ सभा)का विकल्प है यह तो कास्टीटयूऐंट असेम्बली क्या करेगी यह निश्चित करने के लिए होनेवाली है। बिचारा बडा निराश होगा जैसा भूलाभाई हुआ होगा। सच बात है कि बापू की कुछ सूचनाए इतनी सीधी सादी मालूम होती हैं कि कई लोग बडी भ्रमणा मे पड जाते हैं। न मालूम टाइम्स वाले इण्टरव्यू (मुलाकात) से कितने लोग कितनी भ्रमणा मे पड होंगे।

आप वह माइनारिटीज (अल्पसख्यक) वाली पुस्तक तो छोडना भूल ही गये। अब भिजवाइएगा। एक और किताब लियोनल कर्टिस की सिविटास डे एक साल से छपी हुई है। बम्बई मे तारापोरवाला या तो थैकर के यहा मिलेगी। उसको तुरत भिजवाइये। अगर न मिले तो एशियाटिक सोसाइटी की लाइब्रेरी मे

तो मिलगी। उसमे लियानेल कर्टिस न कम्युनल इलेक्टोरेट पर इतना सख्त लिखा है, जितना किसी न आज तक नही लिखा है और यह कर्टिस ता डायारकी (द्वितन्त्र) वाला है। बजरग स उसकी तलाश कराकर जरूर भेजियगा। पुस्तकालय म हो तो बजरग कम्युनल इलेक्टोरटवाला रेफरन्स (सदभ) निकालकर टाइप कराकर भेज सकता है। यहा की डाक वहा जनरल पोस्ट आफिस मे चार बजे तक डालनी चाहिए। शिमला स कोई चिट्ठी नही आई है। आपकी सेहत कसी है ? वहा का टेलीफोन नम्बर क्या है ? रामेश्वरजी स प्रणाम।

आपका
महादव

६४

१५ जून १९४०

प्रिय महादेवभाई

हरिजन' की जिज्ञासा पटी म बापू न विरोधाभास क आरोप का उत्तर दत एक नया विरोधाभास खडा कर दिया। बापू कहते हैं मैंन ऊल-जलूल बातें लिख मारी। क्योकि मैं जानता था कि अपन जीवन काल म मुझे अहिंसा के दशन उस मात्रा म नसीब नही होग, जिसकी मुझे अपक्षा है।" इसके बाद वह लिखत है 'मेरा आशावाद कदापि शिथिल नही होगा। कोई भी वज्ञानिक अपना प्रयोग करते समय अधूर उत्साह से काम नही लेता। चमत्कारा का युग बीता नही है। जब तक भगवान हैं चमत्कार भी होते रहेंग।"

अब यह बताओ कि इन दोनो म स कौन सी बात ठीक है ? मेरी अपनी राय तो यह है कि दूसरीवाली बात ही ठीक है। कम-स-कम मुझे तो वही रुचिकर लगी।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

६५

सेवाग्राम (वर्धा होकर)
१५ जून १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके १४ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। बर्लिन रेडियोवाली खबर दिलचस्प है। हमारे पास रेडियो तो है नहीं इसलिए हम अंधकार में रहते हैं कि कहां क्या हो रहा है और कोई क्या कह रहा है। सबसे अच्छा तो यही रहेगा कि बापू को उनकी रजामन्दी की परवाह किये बिना कोई रेडियो भेंट करें।

एमरी की मुलाकात निहायत ही भाडी रही। देवदास ने मुझसे बापू की टिप्पणी भेजने को कहा था पर बापू ने कुछ भी कहना पसन्द नहीं किया। बापू कम से कम आपकी टिप्पणी ही छाप देते क्योंकि वह इतनी खरी और नपी तुली है।

हां मुझे सर पुरुषोत्तमदास की स्पीच अच्छी लगी खास तौर से उसका प्रारम्भिक अंश। बाकी का हिस्सा भी अच्छा खासा है यदि हम इस बात को ध्यान में रखें कि वह किसके पास से आ रहा है।

पता नहीं हमारी अपनी सर्वगुण सम्पन्न कैबिनेट अब क्या करने का इरादा कर रही है? सरकार की ओर से कुछ नहीं आया है और कैबिनेट के पास भी कोई नया सुझाव नहीं है।

यहां कब तक आना होगा?

सप्रेम
महादेव

६६

सेगांव
(वर्धा होकर)
१६ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

लड़ाई की खबरें पढ़कर आदमी का दिमाग चकरा जाता है। ऐसा मालूम होता है कि जल प्लावन की चपेट में हम भी आनेवाले हैं।

कायकारिणी की बठक क बाद अखिल भारतीय चरखा सघ की बठक गाधी सवा सघ की बठक और इसी प्रकार की अ य कई बठकें हाती रहगी, और बापू २२ स पहले छुट्टी नही पा सकेंग। इसलिए आप अपन आने का कायक्रम २९ या उसके बाद रखें तो अच्छा रहेगा।

कल लेथवेट का एक मजेदार पत्र आया। उसम उसने लिखा है कि जमनी स बेतार के तार द्वारा यह समाचार प्रसारित हुआ कि ब्रिटिश सरकार क एजेंट गाधी की हत्या का षडयत्र रच रहे हैं पर साथ ही यह आशका भी प्रकट की है कि कहीं 'इच्छा विचार की जननी' सिद्ध न हो जाय और स्वय जमन एजेंट वसे मन्सूबे न बाध रहे हो, जिसस अग्रजो के खिलाफ घणित प्रचार करने का मौका हाथ लग। इसलिए यह उत्तम होगा कि हर कोई सतकता स काम ले और क्या गाधी यहा पुलिस का अप्रत्यक्ष रूप से तनात किया जाना पस द करेंग ? वाइसराय को वसा ब दोवस्त करने मे प्रस नता होगी।

मैंने ध यवादसूचक उत्तर भेज दिया है। उसम मैंन यह भी लिख दिया कि गाधी को ऐसे किसी ब दोबस्त की जरूरत नहा है, उ हें तो हत्या की धमकी का सामना करते-करते एक युग बीत गया और वे इस नतीजे पर पहुचे कि ईश्वरेच्छा के बिना घास का तिनका तक नही हिल सकता न कोइ हत्यारा किसी के प्राण ल सकता है और न ही कोई हितपी प्राणा की रक्षा कर सकता है। यह स्वय बापू की भाषा थी।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

मैंन यहा एक स प्टिक टक बनवाया है। क्या बजरग बम्बई स अच्छी-सा पास *लीन सीट भिजवान का* ब दोबस्त कर देंगे ? यहा के बाजार मे नही मिली। सीट पचीदा किस्म की न हो, जिसे साफ करन क लिए ऊपर से पानी गिरान की जरूरत पडती है। वही सीधी-सा‍दी सीट हो जिसमे पानी उडेला जा सके।

६७

१७ जून, १६४०

प्रिय महादेवभाई

तुमने लेथवेट को उत्तर म चाह जो लिख भेजा हो, मैं तो यही कहूगा कि उसने जो-कुछ कहा है उसे ध्यान मे रखना ठीक होगा और पूरी चौकसी रखनी होगी। खाकसार कुछ भी कर सकते हैं इसलिए सतर्क रहना जरूरी है और मुझे पूरा यकीन है कि तुम सतर्कता बरत रहे होगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाई
सेवाग्राम

६८

तार

२० जून १६४०

महादेवभाई
सेवाग्राम
वर्धा (मध्य प्रात)

अंग्रेज लोग इग्लैंड से बच्चों को उपनिवेशो म भजने की योजना बना रहे हैं। क्या भारत का कुछ हजार बच्चो को शरणार्थियो की हैसियत से यहा आमंत्रित नही करना चाहिए ? यह बडी मानवता का काम होगा और मनुष्य और भगवान सब सराहना करेंगे।

—घनश्यामदास

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली

६९

सेगाव (वर्धा होकर)
(मध्य प्रांत)
२२ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

रोजर हिक्स का पत्र आया है देखने लायक है। बापू ने अपने लेख में जो हरिजन में छपेगा—'अवर ड्यूटी' (हमारा कर्तव्य) ठीक ही कहा है न कि अंग्रेजों को हमारी मदद की कुछ पड़ी नहीं है। जो वाक्य रोजर ने कोट (उद्धृत) किया है वह उन लोगों की मनोदशा पर पूरा प्रकाश डालता है। सच बात यह है कि हमारे सेन्स ऑफ राइट (अधिकार-बुद्धि) में आसमान-जमीन का अन्तर है।

वह जब मिलने आवेगा, तब और भी पता चलेगा।

आपका,
महादेव

पत्र वापस कीजियगा।

७०

सेवाग्राम
२३ ६ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका टेलिफोन मिलने पर बापू को खबर दी। उनके उद्गार कभी सुनाऊंगा लिखे नहीं जा सकते हैं।

शिमला से जवाब आ गया है। लिखते हैं कि आपके पत्र का उत्तर तुरत न दे सका उसके लिए माफी दें। क्योंकि आप जानते हैं कैसी उलझन में पड़ा हुआ हूं। पर आपकी चिट्ठी एस० ओ० एस० (तुरत) भेज दी है। बस।

आपका,
महादेव

७१

सेवाग्राम
१० जुलाई १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

साथ में जो कुछ भेजा जा रहा है उससे आपको प्रसन्नता भी होगी और आश्चर्य तो होगा ही।

भुसावल में दास्ताने नाम का एक बड़ा अच्छा हरिजन कार्यकर्ता रहता है। उसने वहां एक हरिजन निवास बनाया है। यह एक प्रकार का उद्योग मंदिर होगा जहां वह सपत्नीक जाकर रहेगा। वह स्वयं चितपावन ब्राह्मण है इसलिए उसकी प्रतिष्ठा को तो ठेस पहुंचेगी ही। वह चाहता है कि आप संघ के अध्यक्ष की हैसियत से इस निवास का उद्घाटन करें। बापू की राय है कि यदि आप निमंत्रण स्वीकार कर सकें तो बड़ी बात हो। आपकी उपस्थिति से वहां के मारवाड़ी-समाज को स्फूर्ति मिलेगी। जायेंगे ? जा सकें तो बताइये कौन सी तारीख सुविधाजनक रहेगी।

वाह वाह ! जिन्ना ने मौलाना को कैसा टका सा जवाब दिया है। धृष्टता की हद हो गई। अपने यहां कहा भी है

यदा-यदा मुंचति वाक्यबाण
तदा तदा जाति कुल प्रमाण।

(इन्सान के वाक्य वाणों से उसकी जाति और कुल का पता लग जाता है।)

चार दिन पहले एक पागल गीदड़ ने आश्रम पर धावा बोला और पांच लोगों को काटा। उनमें एक नारायण भी था। हम सब सो रहे थे। रात के ११॥ बजे थे। सबको पागल कुत्ते के काटने पर लगाये जानेवाले इन्जेक्शन दिये जा रहे हैं पर यह पागल गीदड़ का काटना बड़े संकट की चीज है। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि कोई अनिष्ट न हो।

आपका
महादेव

७२

कलकत्ता
१६ जुलाई १६४०

प्रिय महादेवभाई

साथ म दो पत्रो की नक्लें भेजी जा रही है। इनम स एक लाड हैलिफक्स के पास स आया है दूसरा आज शुस्टर ने भेजा है। दोना बापू को रुचिकर लगेंगे। मुझे शुस्टर का पत्र अच्छा नही लगा। और मेरी समझ म यह भी नही आया कि हैलिफक्स को निर्वाचन द्वारा व्यक्तियो को चुनने की बात क्या पसन्द नही आइ। पर य सारी बातें पुरानी पड रही हैं। अब नयी घटनाए होगी, नये गुल खिलेंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

७३

कलकत्ता
१७ जुलाई १६४०

प्रिय महादेवभाई

मेरं बापू के शब्द चित्र' के प्रूफ तुम्हारे पास दिल्ली से सीधे भेज दिये गये थे। उन्हें पढकर अपनी राय बताओ। बापू के जीवन की कुछ अन्य घटनाए भी बना सको तो अच्छा रहे उन्हें पुस्तक मे यथास्थान शामिल कर दिया जायेगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

७४

सेवाग्राम
१८ ७ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

पुस्तक के प्रूफ आ गय हैं। फिर से पूरा पढ रहा हू।

इसके साथ एक कतरन भेजता हू। पढने लायक है। बिडला कालेज म माटे सारी विभाग है क्या ? किसी रोज इसी जीवन म आपके साथ जगदयात्रा करनी है। उसमे पोलेस्टाइन तो है ही पर सोवियत रूस के स्कूल्स भी शामिल करने पडेंग।

मौलाना का कल तार आया था कि 'पूना आपको आना ही है, कब पहुचेंगे ? बापू न उनको जवाब दिया आपने यहा आने का वादा किया था उसका क्या हुआ। अपने वादे का पालन कीजिये। मैं तो हमार काय के लिए ठीक नही समझता कि पूना जाना। मैं नही जाऊगा। —देखें अब क्या होता है।

आपका
महादेव

७५

मेवाग्राम
१६ ७ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

सुश्टर और हैलिफैक्स के खतो में कुछ नही है। पर सरकार न अब तक कुछ स्टेप (कदम) नही लिया है—वीणा आणे वगरह की एक्सपेंडेड काउंसिल (विस्तारित परिषद) बनाने का—इसलिए कुछ आशा लगती है कि कांग्रेस की आफर (प्रस्ताव) को कुछ गम्भीरता से सोच रहे है।

हा पागल सियार भी हैं। और जीवन की आफतो म यह भी एक है, उसका मुझे भी पहले-पहल अभी पता चला। घर मे सोये को अटेक (हमला) करके काटने का तो यह पहला ही किस्सा है।

आपके प्रूफ आते ही मैंने पढना शुरू किया। बल्कि उसका मजा नारायण के साथ पन्कर लेता था। पर कल से नारायण को सख्त बुखार चढा है आज छत्तीस घटे हुए पर १०५ से कम नही होता है। इन्जेक्शन भी ७ दिये गये थे। वह भी कल मे छोडने पडे हैं। स्वदर थोडी चिंता म पडे हुए हैं। पर चिंता से क्या लाभ? चिंता सबकी उस बडे चिता करनेवाले को पडी हुई है, जिसके हाथ म हम सब पास (मोहरे) हैं। काल काल्या भुवन फलके क्रीडति प्राणिशारै —भवभूति का कसा विविड (स्पष्ट) वचन है?

आपका
महादेव

७६

२७ जुलाई, १९४०

प्रिय महादेवभाई,

प्रभुदत्त शास्त्री सेवाग्राम जाकर बापू के दर्शन करना और वहा कुछ दिन ठहरना चाहते हैं। शायद वह अपने भावी कायक्रम के बारे म सलाह-मशवरा करना चाहते हैं। वह अब नौकरी से रिटायर हो रहे है। कृपा करके लिखो कि क्या बापू उनके लिए समय निकाल पायेंगे, यदि हा तो कौन स दिन?

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
वर्धा

७७

सेवाग्राम
२७ ७ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

आज बापूजी को भुसावल क बार म पूछ लिया। बापूजी कहते हैं कि आपका स्वाभाविक सकोच वे समझत हैं परतु सकोच छोडकर और कोई बाधा न हो तो वह काय प्रोत्साहन के लायक है। बहुत कम सच्चे दिल के कायकर्त्ताओ म श्री दास्ताने एक हैं। आपका लिखन के पहले बापू ने उनक साथ यह शत की थी। आपका बुलाने मे आपसे दान प्राप्त करने की उनकी बिलकुल इच्छा न होनी चाहिए। उन्होने जवाब मे लिखा है कि उनकी वह मशा है ही नही। उनकी आपको बुलाने की मशा यह है कि आपके आने से वहा के व्यापारी लोग आश्रम मे अधिक रस लेते रहेंगे। इसलिए आपका वहा जाना इष्ट है। यह बापू का अभिप्राय है। अब आपको कौन सी तारीख अनुकूल होगी मुझे लिखिएगा।

बावला को फिर से बुखार चढा पर कम है। इन्जेक्शन का ही असर होना चाहिए। यह तो राक्षसी इन्जेक्शन है पर न लें तो क्या करें? जोखिम इतना बडा है कि एक्सपरीमेन्ट (प्रयोग) करने का दिल तो कोई बडा प्रयोगशील डाक्टर हो उसीका ही हो सकता है। ईश्वर की कितनी बडी कृपा कि बापू को नही काट खाया। अगर उनको काट खाया होता तो वे सीरम कभी नही लेते और नही लेते तो हमारी मुसीबत का ठिकाना नही रहता।

आपका
महादेव

पुनश्च

एक मजे की बात।

कल कुमारप्पा अ० भा० ग्रामोद्योग सघ का नया माल का रिपोट लेकर आए। उस पर टीका करते हुए बापू ने कहा आपने कोई सरकारी डिपाटमेंट क रिपोट लिखनेवाले के जसा काम किया है। और अपने काम का इतना बडा खयाल देने की कोशिश की है कि उसका कोई जस्टीफिकेशन (औचित्य) नही है। इसक कन्ट्रास्ट (मुकाबले) म बिडलाजी का बिडला कालज का रिपोट देखिए। उसमे कितना सयम सकोच भरा हुआ है। वह एक माडल (नमूने की) रिपोट है। उसे अवश्य पढ जाइये। दोनो भाई उसे पढने ले गये।

७८

कलकत्ता
१ अगस्त ४०

प्रिय महादेवभाई

बापू पर मैं एक नयी पुस्तक लिख रहा हू और उसम देने के लिए कुछ अच्छे चित्रा की जरूरत है। देवदास कहते हैं कि कनु क पास कुछ बढिया चित्र हैं। उनम से कोई आधा दजन चित्र चुनकर मरी पसन्दगी के लिए भेज सको तो अच्छा रहे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

७९

सेवाग्राम
४ ८ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

प्रभुदत्त शास्त्री कौन है ? बापूजी या मैं कभी उनको मिल नही—ऐसा प्रतीत होता है। बापू कहते हैं कि उनका कुछ परिचय दीजिए पीछे लिखा जायगा। क्या व यहा आकर सेगाव मे रहा चाहगे ?

एक महत्त्व के प्रश्न के बारे मे आपकी साहाय्य चाहिए। बापूजी के पास कई दिना स दो बडी शिकायतें आती रही हैं। सरकार अनेक नय वार जाब्स (युद्ध सबधी नौकरिया) निकालकर उनमे यूरोपियना को ही बडी तनख्वाह पर नियुक्त करती है—इतनी बडी कि वे उतनी कभी पाते नही थे। दूसरी शिकायत यह कि लडाई के लिए बलात्कार से पसा इकट्ठा किया जाता है। इन दोना शिकायता के बार मे बापू ने बडे लाट को लिखा था। उनका जवाब तो अच्छा आया है। वह कहता है कि चप्टर एण्ड वस (तफसील) आप कहिए तो मैं कुछ इलाज अवश्य

करूगा। अब उन्हें चप्टर एण्ड वस भेजना है हमारे पास जो-कुछ खत है उसका ता उपयोग हो पर आपके पास भी कुछ मसाला हो तो उसे भेज दीजिए—शीघ्रता से। आपके फेडरेशन (वाणिज्य एव औद्योगिक सघ) ने एक प्रस्ताव इस सबध म पास किया था। प्रस्ताव पर किए गए व्याख्यान मैंने पढे। व्याख्यान तो निकम्म हैं पर उसके मूल मे जो फक्टस (तथ्य) होना चाहिए—मसलन सप्लाई डिपाटमट (रसद विभाग) की पोजीशन (बुनियादी पद) अग्रेजो को दी गई है यह इलजाम है—किनको दी गई, कितन नये जाब क्रिएट(पद बनाए गए) हुए जो नियुक्त किये गए पहले क्या थ इत्यादि हकीकत चाहिए।

पुस्तक के लिए फोटोग्राफ क नमूने भिजवा रहा हू।

नेवले तो इतने पालतू हो गए हैं कि काफी तग करते हैं मेरे घर म हरक कमरे मे आते हैं—खास करके रसोईघर मे—और-और न्यूसेंस (खुराफात) भी कर जाते हैं। बेचारे एक को शायद बिल्ली ने मार डाला ऐसा मालम होता है। एक दिन एक आख नोच ली। दूसरे दिन प्राण लिये। साथ का मोरिस ग्वायर का पत्र देखिए।

आपका
महादेव

८०

कलकत्ता
६ अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई

सर मारिस ग्वायर का पत्र वापस कर रहा हू।

अब उन दो प्रसगो के बारे मे कुछ कहना चाहता हू जो बापू ने वाइसराय के साथ उठाए थे। जहा तक बलात अनुदान प्राप्त करने की बात है मुझे भय है कि मैं निश्चित रूप से कोई दृष्टात नही दे सकता। उत्तर भारत से एक मित्र आए थे वह कह रहे थे कि उनके जिले के कलक्टर ने उन पर भारी पूर्ण दबाव डाला कि वह कोई मोटी-सी रकम दें। पर वह इस चीज को एक शिकायत के रूप मे पेश करने को कदापि तयार नही होंगे। बस अकेले इस उदाहरण को छोड

मैं और कोई उदाहरण नही दे सकता।

रही युद्धकालीन बडे-बडे पदो के सृजन की बात सो ऐसी शिकायते मेरे कानो तक पहुची हैं और मैं इस बारे मे जल्दी ही तुम्हे एक नोट भेजूगा। पर मैं तुम्हें खबरदार किये देता हू कि शिकायत तथा मसाला मौजूद रहते हुए भी बात को बढा चढाकर पेश किया गया है।

प्रभुदत्त शास्त्री के बारे म मेरा कहना यह है कि वह दशन शास्त्र क प्रोफेसर हैं। विद्वान् समझे जाते हैं, और कलकत्ता विश्वविद्यालय मे वर्षों से काम करते आ रहे हैं। पजाब के निवासी हैं। अब रिटायर हो रहे हैं। मुझसे कहते आ रहे हैं कि वह बापू के पथ प्रदशन म रहकर जनता की सेवा करना चाहते हैं। आदमी सच्छिा से ओतप्रोत प्रतीत होते हैं, पर उन्होने जो कुछ कहा है उसे मैंने गम्भीरता पूवक ग्रहण नही किया है। मुमकिन है, उनका जनता की सेवा का अथ बापू के अथ से भिन्न हो। पर उन्होने सेवाग्राम जाकर कुछ दिन ठहरने की बात मुझसे कई बार कही है और तुम्हें उनके बारे म लिखने का बराबर आग्रह करते आ रहे हैं। अब मैं तुम्हें लिख रहा हू। यदि तुम उन्हें वहा कुछ दिन ठहरने की अनुमति दो तो उनके यहा से जाने के पहले मैं उन्हे चेतावनी अवश्य दे दूगा कि उन पर कैसी बीतेगी। हो सकता है वह डर जाए और न जाए। पर यह भी उनके सकल्प की कसौटी होगी। तुम्हारा जवाब आने पर उनसे बात करूगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

८१

कलकत्ता
७ अगस्त, १९४०

प्रिय महादेवभाई

मैंने यह साथ भेजा नोट इडियन चेम्बर आफ कामर्स के सिद्धराज ढढ्ढा से तैयार कराया है। हम जितनी कुछ सूचना इकट्ठी कर सके हैं उस सबका इस नोट में समावेश है। इसे पढ़कर तुम स्वय ही देख लोगे कि यह आरोप कि महत्त्वपूण

स्थान सब-के-सब यूरोपियनों को दिये गए हैं बिलकुल सत्य है। सारा-का-सारा सप्लाई विभाग यूरोपियनो से खचाखच भरा पडा है। कई मदो के शुल्क म भी वृद्धि हुई है पर इसकी सफाई पेश की जा सकती है। मेरी राय म जो असली बात है वह शुल्क आदि की उतनी नही है जितनी यह कि सारी जगहो पर अंग्रेज अधिकारी रखे गए हैं। यदि स्थिति म सुधार वाछित हो तो मेरी समझ मे भारतीय अधिकारियो के लिए जाने स कुछ विशेष अन्तर पडेगा। मैं जानता हूं कि इस समय सप्लाई विभाग बडी फिजूलखर्ची के साथ चलाया जा रहा है। इसलिए यदि कर दाता का पैसा बचाना है तो अनुभवी कारबारी आदमियो को पूरे समय के लिए रखना चाहिए। साथ ही इस बात की भी देखरेख रखनी होगी कि जिन कारबारी आदमियो को अफसर नियुक्त किया जाए उन्ह उन चीजो का जिम्मा न दिया जाए जिनसे व प्रत्यक्ष रूप स सम्बन्धित हो। यदि ऐसा किया जा सके तो लाखो की बचत होगी। पर जब तक केन्द्र म हमारी अपनी सरकार न हो तब तक ऐसा करना सम्भव नही। एक करदाता के दृष्टिकोण स कहू तो मैं तो नही समझता कि भारतीय अधिकारियो के समावेश स स्थिति म कोई विशेष अन्तर पडेगा। हा यदि ठीक ढग के आदमी चुने जाए तो स्थिति अवश्य कुछ सुधरेगी।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

८२

सेवाग्राम
८ ८ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका टेलिफोन आ जाना चाहिए था। दो दफा ट्रक काल आया और फिर कहा कि लाइन बराबर नहीं है। कल ही बापूजी स कहा था कि आपकी सूचना यह है कि राजाजी को बुला लें। बापू न कहा कि जरूर बुला लेंगे। पर उससे उनका भला नहीं होगा। वर्किंग कमेटी के मेम्बर उसका अनर्थ करेंगे और व पास

पोजीशन (गलत स्थिति) म आ जायेंगे।

लकिन बात तो यह है कि मौलाना को भी वाइसराय की चिट्ठी गई है। उनका जवाब तो देना ही है उसके लिए भी इन लोगा का तुरत ही मिलना चाहिए। वाइसराय ने उन्हें लिखा है कि आपको यह नयी व्यवस्था पसद होगी ऐसा आशा करता हू। और आपका जवाब चाहता हू और आप मुनासिब समझे तो आप किसी वक्त मुझ मिल सकत है। मुझे म्यूटवल डट (उपयुक्त तारीख) दीजिए। इसका जवाब मौलाना का दना ता पड़ेगा हा।

राजाजी का कल का खत देखिए। उसम माक (चिह्नित) किये गए हिस्स का अथ मिसरिप्रिजेन्ट ऐक्शन (मिथ्या निरूपण) नही ता क्या ?

आपका
महादेव

८३

सेवाग्राम
१९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

दोना पत्र मिल। उस लम्बे पत्र मे दी हुई हकीकत काफी काम आएगी।

बड लाट को बापू न साफ लिखा हुआ है कि आपका स्टेटमेट बडा अफसोस जनक है उसका प्रकाशित करने की कोइ आवश्यकता नही थी। उसके इम्लीकेशस फीयरफुल (भयानक परिणाम) हैं। दखें उत्तर म क्या लिखता है। अब तक मौलाना साहब तो शात बठे हैं। हमारे पास तो काइ खबर नही है। शायद वह इलाहाबाद स बात मशवरा कर रह हैं।

प्रभुदत्त शास्त्रीजी को यहा का पूरा पूरा खयाल दीजिए—पागल सियार की बात को मत भूलिए और न सापा को—और साथ साथ यह भी कहिए कि अभी मलरिया का काफी जोर है इसलिए व अक्तूबर जब कि मौसम अच्छा हाता है तब आन का इरादा रखें और आने के पहले मुझे एक हफ्ता की नाटिस दें।

आपका
महादव

८४

कलकत्ता
११ अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई

राजाजी का यह पत्र लौटा रहा हूं। ऐसा लगता है कि मैंने फोन पर उनकी बात गलत समझी।

और यह मुझे श्री मेहता ने दिया था। शायद इससे कुछ सहायता मिले।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

८५

कलकत्ता
१२ अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई

यह 'हिंदू आउटलुक' में निकला है। यह पत्र भाई परमानन्द का है। मैं इसे उपालम्भ मात्र समझूं या मानहानि की सामग्री के रूप में ग्रहण करूं, निर्णय नहीं कर पा रहा हूं। जो भी हो, तुम कार्यव्यस्त रहते हो, इससे तुम्हारा थोड़ा बहुत मनोविनोद होगा। इसीलिए इसे साथ रख रहा हूं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

८६

सवाग्राम वधा (सी० पी०)
१४ ८ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

गगनविहारी की लिस्ट (सूची) मिली। वह भी उडा उपयोगी होनेवाला है। बापू जानना चाहते हैं कि क्या वे गगनविहारी का और अगले लिस्ट के लिए श्री ढन्ढा के नाम का उपयोग कर सकते हैं ? यानी वाइसराय का खत म उनक नाम भेज सकते हैं ?

आपका
महादेव

८७

सगाव वर्धा होकर
१४ अगस्त १६४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र और साथ भेजी मानहानिपूण सामग्री भी मिली। य लाग हिन्दुत्व का सिर नीचा करते हैं, पर हमारे कुछ हिन्दू भाई ऐस लोगो की प्रशसा करते नही अघाते। आप पत्र पर मानहानि का मामला क्या नही चलाते ?

आज से मैंने आपकी पठन-सामग्री लगन क साथ हाथ मे लन का निश्चय किया था। अभी तक कइ झमटा म फसा हुआ था। उनम स एक ता नारायण की बीमारी थी और दूसरी उसकी परीक्षा। आप जानते ही हैं मैं कितना अच्छा पिता हू। सो वह शय्या पर पडा रहता है और मुझस अपनी सारी हिन्दी पुस्तकें पढ सुनाने का कहता है। इस प्रकार मैंन उन पुस्तका का दुहरान म मदद की। पर मैंन उस हिन्दी की शिक्षा दन के साथ-ही साथ अपनी शिक्षा भी पूरी कर ली। बात यह है कि मैं स्वभाव स ही विद्यार्थी हू और जब तक जिन्दा हू विद्यार्थी ही बना रहूगा। आपकी पुस्तक भी मैं उसक साथ मिलकर पूरी करन की आशा कर

रहा हू। इससे मुझे यह समझने म सहायता मिलगी कि पुस्तक के कौन कौन स अश साधारण पाठक क लिए बोधगम्य नही हैं। देर लग जाय तो क्षमा करियगा।

आपका
महादेव

पुनश्च

मैंन बापू स फिर कहा था। अन्त म वह वक्तव्य दन को राजी हो ही गए। उनका वक्तव्य और भी लम्बा हाता पर वह बोल वसा करूगा ता मुझे गहर पानी मे पठना पडेगा और तब वाइसराय क वक्तव्य की धज्जिया उडाये बगर न रह सकूगा। और ऐसा मैं करना नही चाहता।

जो पत्र साथ मे रख रहा हू कवल आपके मनोरजन के लिए। आपके पुत्र ईमानदारी स ओतप्रोत है ईश्वर की बडी कृपा है।

म०

८८

कलकत्ता
१७ अगस्त १९४०

प्रिय महादवभाई

जहा तक दत्ता का सम्बध है उसका नाम इण्डियन चेम्बर आफ कामस के एक सेक्रेटरी की हैसियत से अवश्य दिया जा सकता है। पर मेहता का कहना है कि उन्होने जो नोट भजा है वह वास्तव म उनकी कृति नही है बल्कि एक मित्र न दी है इसलिए उन्हे अनर्जित यश कमान म सकोच है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाई
सेवाग्राम

८९

सेवाग्राम
१८ अगस्त १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

कल यहां दास्तान आए थे। अगर आपके लिए सितम्बर ही सुविधाजनक रहेगा तो वह सितम्बर के लिए भी तैयार हैं। पर उनका कहना है कि बारिश के कारण उत्सव सुचारु रूप से सम्पन्न नहीं हो पाएगा। इसलिए अक्तूबर की कोई तारीख रहे तो अच्छा हो। वहां से आप अजन्ता भी जा सकते हैं। कृपा करके लिखिए कि क्या अक्तूबर आपके लिए सुविधाजनक रहेगा ?

मेरे एक मित्र डा० भास्कर पटेल हैं। उन्होंने बम्बई प्रेसिडेंसी में हिंदुस्तान को-आपरेटिव इंश्योरेंस कम्पनी में मेडिकल रेफरी की जगह के लिए आवेदन पत्र दिया है। असली कांग्रेसी हैं, कई बार जेल जा चुके हैं और कांग्रेस का बहुत काम किया है। वह जर्मनी के एम० डी० एडिनबरा के एम० आर० सी० पी० और इंग्लैंड के टी० डी० डी० हैं इस समय बम्बई के जे० जे० अस्पताल में यक्ष्मा के लेक्चरार हैं। बड़े लगनवाले चिकित्सक हैं और काम बड़ी खूबी के साथ निबाहेंगे, इसमें संदेह की गुंजाइश नहीं है। क्या आपके लिए डा० विधान और नलिनी बाबू से इनकी सिफारिश करना सम्भव होगा ? वह हमारे इतने काम आ चुके हैं और सो भी बगैर पैसा कौड़ी लिये। इनकी सिफारिश करने में मुझे जरा भी संकोच नहीं है। मैं नलिनी बाबू को खुद ही लिखता पर मुझे बापू के सहयोगी की स्थिति में रहकर ऐसा करना जंचा नहीं। आप कुछ करेंगे, तो उसका अधिक प्रभाव भी होगा। सहायता कर सकें तो अवश्य कीजिए। पर यदि आप किसी कारणवश वैसा न करना चाहें तो मैं समझ जाऊंगा।

सप्रेम
महादेव

बापू ने मौलाना को एक पत्र भी लिखा है जो सम्भव है किसी दिन समाचार पत्रों म भी आ जाय। यदि नही छपा, तो आप जब यहा होगे तब दिखाऊगा।

जिन डॉ० पटेल की बाबत मैंने आपको लिखा है उनका नाम डा० भास्कर पटेल है। बहुत सम्भव है सरदार ने आपस डॉ० नाथूभाई पटेल की चर्चा की हो जो डा० भास्कर पटेल से सीनियर तो हैं पर उनम देश भक्ति की भावना का सवथा अभाव है जो भास्कर मे पाई जाती है। न वह उतने लोकप्रिय ही हैं। भास्कर मादक द्रव्य निषेध बोड म भी थे और उसके एक शक्तिशाली स्तम्भ थे। उसके पास जमन डिग्री थी। यहा के पुरानी चाल के डाक्टरो ने उस डिग्री को मान्यता नही दी इसलिए उन्होने एडिनबरा जाकर एम० आर० सी० पी० की डिग्री ली। यक्ष्मा म विशेषज्ञता प्राप्त की और टी० डी० डी० का डिप्लोमा लिया, जो भारत म बहुत कम डाक्टरो के पास मिलेगा। वह अन्य डाक्टरो की अपेक्षा कुछ जूनियर है पर चूकि वह जूनियर हैं इसलिए उन्हे बाहरी प्रैक्टिस भी लेनी पडी जिसकी अन्य डाक्टरो को जरूरत नही थी, क्योकि उनकी आय वसे ही काफी है। यदि मेरा और आपका बम्बई म कभी साथ हुआ, तो मैं भास्कर को आपसे मिलाऊगा। उनकी सुपुत्री रामेश्वरभाई के यहा अध्यापन काय करती हैं।

आपका
महादेव

९३

कलकत्ता
२० अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई,

भाई परमानन्द का यह पत्र वास्तव म है तो उन्ही का पर वह उसके सपादक नही हैं। पत्र की कोई अधिक खपत नही है। पत्र के खिलाफ मामला दायर किया गया तो उसस परमानन्द का कुछ नही बिगडेगा। इसलिए मैंने इस विषय को लेकर माथापच्ची न करना ही ठीक समझा।

बहुधा बापू की भाषा स विरोधाभास निकलता है। बापू अपने ताजा लेख म कहते हैं 'मैंने महाभारत का भौतिक शरीर धारण किये स्त्री पुरुषो के जीवन के रूप मे कभी ग्रहण नही किया। उसमें कवि ने सत्य और असत्य, हिंसा और

अहिंसा तथा याय और अ याय के बीच अनवरत द्वद्व का वणन मात्र किया है।' मगर दूसरे ही वाक्य म वे कहते हैं महात्मा व्यास ने यह प्रदर्शित किया है कि इस युद्ध म विजेता विजित जसा ही रहा है। यदि लडाइ याय और अ याय के बीच थी तो विजता याय भी विजित अ याय जसा ही क्योकर रहा ?

अधिकारियो को 'एक कदम आगे की एक प्रति भेजने को कह देना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सवाग्राम

९४

२८ अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ अगाथा के पत्र की नकल रख रहा हू। पत्र म भारतीय विद्यार्थी सघ क बार मे आवश्यकता से अधिक सामग्री है जबकि भारतीय स्थिति के बारे म जो कुछ है नही के बराबर है। इस सघ को रुपया भेजन को जी नही करता। पर बताओ बापू का इस बारे म क्या विचार है ?

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

९५

सेवाग्राम, वर्धा
२९ अगस्त १९४०

प्रिय लाड लिनलिथगो

आपके २२ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। मैंने जो याद दिलाई थी वह इस चिन्ता का सबूत थी कि कही पत्र गलत हाथो म न पड जाय।

मेरा मानसिक क्लेश गहरा होता जा रहा है। हाल की घटनाओं ने मुझे चकित कर दिया है। बलात धन सग्रह करने और मोटी तनख्वाहे देने के बारे म मेरी शिकायत आपके सामने है ही। मुझे आशका है कि स्वच्छन्दतापूर्वक विचार व्यक्त करने पर शीघ्र ही कठोर पाबन्दी लगा दी जायगी। असगतिपूर्ण विचार व्यक्त करने की अनुमति नही रहेगी। शायद युद्ध अन्य किसी प्रकार से नही लड जा सकते। युद्ध न्याय इतना घिनौना जो है इसका एक कारण यह भी है।

यदि यही स्थिति रही और काग्रेस अशक्त बनी रही तो वह शन शन दम तोड देगी।

राजनीति के क्षेत्र म आपके शब्दो ने मुझे भयभीत कर दिया है। मुझे स्वीकार करना पडता है कि उनम स कुछ का आशय मैं नही समझ पाया हू।

काग्रेसियो मे और मुझमे पहले जो घोर विचार वभिन्य था वह अब दूर हो गया है। उनकी समझ म आने लगा है कि उनका पहले से ही यह निणय कर लेना एक गलत काम था कि राज काज मना के बिना नही चलाया जा सकता। जहा तक काग्रेस का सम्बन्ध था समूचे ससार के लिए वह निराशाजनक बात थी। यदि आपको काग्रस के इस भीतरी इतिहास की जानकारी मे दिलचस्पी हो तो आपको अवश्य जानकारी दी जा सकेगी।

यदि मैं ब्रिटिश सरकार की सहायता नही कर सकता तो मैं उसे परेशान भी नही करना चाहता। पर मेरी यह अभिलाषा आत्महत्या की सीमा पर पहुचकर ठिठक जायेगी।

पर कोई कदम उठाने के पहले मैं आपके सामने अपना दिल और अपना दिमाग खोलकर रख देना चाहता हू ताकि यदि मैं अधकार म होऊ तो आपसे प्रकाश की उम्मीद करू। अतएव यदि आपको लगे कि हमारी भेंट का कुछ सुफल निकलेगा तो कृपा करके मुलाकात की तिथि की सूचना तार द्वारा दे दें। मैं १५ तारीख म पहले भेंट की बात सोचता हू क्योकि उस दिन कायकारिणी की बठक होनेवाली है। यदि हमारा मिलना १३ तारीख मे पहले कुछ इस प्रकार हो कि उस तारीख तक मैं वर्धा लौट सकू तो अच्छा रहेगा। यदि आप अपने-आपको असमजस मे पाए अथवा अन्य किसी कारणवश न मिलना चाहें तो तार भेजने की कोई जरूरत नही है। मैं आपकी खामोशी का यह अथ लगाऊगा कि मैंने जो जो प्रसग छेडे हैं उनके बारे मे आप मुझसे मिलने म असमथ हैं। इसका कोई गलत अथ मेरे मन म नही आयेगा। इन दिनो जबकि आपके सामने पहाड जसा काम पडा है मैंने आपका ध्यान इस ओर बटाया, इसके लिए आप क्षमा करेंगे यह उम्मीद है। आपसे मुलाकात की पहल करने का मेरा एक उद्देश्य यह है कि मल-

मिलाप के लिए जो-कुछ शक्य हो किया जाए जिससे निर्णय लेने में गलती न हो और दूसरा यह है कि आखिरी कदम उठाने से पहले मैं आपके सामने अपना मामला पेश कर सकूं।

भवदीय
मो० क० गांधी

९६

कलकत्ता
३१ अगस्त १९४०

प्रिय महादेवभाई,

आशा है मेरी पुस्तक के अंतिम प्रूफ एक हफ्ते में तैयार हो जायेंगे। यदि पुस्तक २ अक्तूबर को प्रकाशित होना है तो तुम प्राक्कथन शीघ्र भेजो।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

९७

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
३१-८-४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

पुस्तक पढ़ चुका। अब मेरी सूचनाएं लिखना शुरू करूंगा। क्या उसमें अलग अलग प्रकरण नहीं बनेंगे? बनने चाहिये। अगर हमारा देहली में मिलना हो तो साथ बैठकर काम समाप्त कर सकते हैं। नामल टम स (मामान्य समय) होत, तो

मैं एक दो दिन कलकत्ता भी आ जाता।

बडे घर पर चिट्ठी गई है। कल उनके हाथ म पहुचेगी या तो परसो क्योकि कल इतवार है। जवाब मगल को आना ही चाहिए। आप सोम की शाम को या मगल की सुबह टेलिफोन कीजियेगा ताकि मैं यहा स निकलने की तारीख बता सकू—यानी उनका जवाब जो तार स मागा है तब तक आ जाय। इकार तो नही कर सकता है। बापू न बडा दद भरा पत्र लिखा है और समय रहा तो आप देहली आयेंग न ? जिस दिन हम यहा स चलें उसकी अगली शाम को आप वहा से चलेंगे तो पर्याप्त होगा।

आपका
महादेव

पुनश्च

अगाथा की चिट्ठी देखी। मुझे भी श्रद्धा नही है कि स्टूडेंटस यूनियन (छात्र सघ) को कुछ दिया जाय। पर बापू से पूछकर लिखगा।

६८

वाइसराय भवन
शिमला
२ सितम्बर, १६४०

प्रिय मिस्टर गाधी

आपका मत्रीपूण पत्र पाकर बडी प्रसन्नता हुई, अनेकानेक धन्यवाद। मैं आपकी बात पूरी तरह समझ पाया हू यह मैं निश्चयपूवक नही कह सकता और यदि मैं ऐसा नही कर सका होऊ तो भी मैं यह तो जानता ही हू कि आप मेरी भूल सुधार देंगे और मुझे क्षमा करेंगे। आपने अपना विचार स्पष्ट करने के लिए इतना प्रयास किया इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हू। मुझ यह जानकर दु ख हुआ कि सरकार की नीति के बारे मे अथवा मैंने जो-कुछ कहा उसके अभिप्राय को लेकर आपका सशय बना हुआ है। मैं आपके इस कथन की कि 'यदि मैं ब्रिटिश सरकार की सहायता नही कर सकता तो उसे त्रस्त करने की भी मेरी इच्छा नही है' हृदय से सराहना करता हू। सम्राट की सरकार का मैंने अपनी समझ स सम्यक

विवेचन कर दिया था, और आपके सशय को ध्यान म रखता हू तो मुझे यह सोच कर परिताप होता है कि मौलाना अबुल कलाम आजाद ने काग्रेस द्वारा औप चारिक उत्तर दिये जाने से पहले अपने मित्र के साथ आकर मुझस मिलन के दिय गये अवसर का उपयोग नही किया। मैं यह आशा लगाए बठा था कि यदि वह ऐसा करते तो उसस काग्रेस का उत्तर तैयार करने म भी सहायता मिलती और वह अपनी स्थिति को क्षति पहुचाए बिना मेरे सामने वे सारे मुद्दे स्पष्ट कर लेते जिनके बार मे उनका अनिश्चय बना हुआ है। यदि वह मुझसे मिल लते तो मैं स्थिति पर पूरा प्रकाश डालन की भरसक चेष्टा करता। मौलाना के नाम मरे ४ अगस्तवाले पत्र ने भी जो अब प्रकाशित हो चुका है इस आशा और अभि लाषा को भली भाति स्पष्ट कर दिया है कि मेरे वक्तव्य की परिधि के भीतर रहकर काग्रेस तथा अन्य दल केंद्रीय सरकार तथा युद्ध परिषद के सचालन मे मेरे साथ सहयोग करने को प्रस्तुत हो जायेंगे और यदि मैं यह कहू कि मुझ इस बात का कितना अधिक खेद है कि उन्होंने वसा करन की अनिच्छा प्रकट की तो मुझे विश्वास है कि आप मेरी नेकनीयती पर शक नही करेंगे। वास्तव मे मेरा वह वक्तव्य सम्राट की सरकार के इस हार्दिक प्रयत्न का सबूत है कि प्रगति के माग म जो खाई मौजूद है उस पाटा जा सके और एक समान उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त विभिन्न दलो मे उत्तरदायित्वपूण और फलप्रद पारस्परिक सहयोग स्थापित हो सके साथ ही वह सहयोग इस कोटि का हो कि उसके द्वारा विभिन्न दलो के स्वाभाविक शातिपूण राजनतिक काय को अथवा उन दलो की राजनैतिक स्थिति को किसी प्रकार का आघात न पहुचे।

२ आपके पत्र से मुझे यह विचार करने को प्रोत्साहन मिलता है कि सम्भव है गलतफहमी ही हो और मुझे आपस मिलकर बेहद खुशी होगी क्योकि तब हम दोनो अपनी चिर परिचित मत्रीपूण भावना तथा स्पष्टवादिता के साथ भावी स्थिति पर विचार कर सकेंगे। वसी भेंट का दिन और समय आप स्वय निश्चित कीजियेगा। साथ ही, मैं यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हू कि मेरा वक्तव्य और भारत सचिव की स्पीच सम्राट की सरकार की निर्धारित नीति का सम्यक प्रति निधित्व करते हैं। साथ ही यदि मैं यह भी कहू कि मौलाना स भेंट करन की मेरी तत्परता का जैसा उत्तर दिया गया उसके प्रकाश मे भेंट की यह पहल इस बार मेरी ओर स नही हुई है।

॰ जिन मामलो का आपने जिक्र किया है उनकी बाबत मैं आपको अलग से लिखूगा। अब तक मुझे जो रिपार्टें मिली हैं उनसे तो यही लगता है कि जिन बातों का जिक्र किया गया है उनम से कम-स कम कुछ तो निराधार

अथवा अतिशयोक्तिपूर्ण अवश्य हैं। जो भी हो, यह प्रसग महत्त्वपूर्ण होते हुए भी इतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना वह दूसरा प्रसग जिसका हम दानो स सीधा सम्बन्ध है।

भवदीय,
लिनलिथगो

६६

सवाग्राम वर्धा
६ सितम्बर १९४०

प्रिय लार्ड लिनलिथगो,

मेरे २९ अगस्त के पत्र का तत्परतापूर्वक उत्तर देने के लिए धन्यवाद। आपका तार भी मिल गया था। तुरत भेंट की तारीख देने मे आपके सकोच को मैं समझता हू।

इस पत्र-व्यवहार के फलस्वरूप मैं जब कभी मिलने आऊ तो यह घोषणा तो की ही जायगी कि भेंट की माग मैंने की थी। ऐसा प्रतीत होता है कि अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की हाल ही मे होनेवाली बठक के बाद मुझे आपके साथ अपनी भेंट का अनुरोध दुहराना होगा। वास्तव म मैं आपके साथ बातचीत करने से पहले किसी प्रकार की गलतफहमी न रह जाए इस बारे म पूरा समाधान किये बगर कोई कदम नही उठाना चाहता।

मुझे अच्छी तरह मालूम था कि आपके वक्तव्य तथा भारत-सचिव की स्पीच सम्राट की सरकार की निर्धारित नीति के प्रतीक-मात्र थे। यदि ऐसी बात न होती तो जिस ढग की नीति बरती जा रही है उसकी उपादेयता के बारे म मैं आपके सामने अपना सशय अवश्य रखता और जो घटनाए नित्यप्रति घटित हो रही हैं उनके फलस्वरूप अपने उत्तरोत्तर बढते हुए असतोष के कारणों का अवश्य व्यक्त करता। यदि काग्रेस लक्ष्यहीन होकर भटकता रहे तो मुझ उसकी चिन्ता नही है और जो नीति अमल म लाई जा रही है यदि उसके आधारभूत कारण साधारण मनुष्य के लिए बोधगम्य होते, तो उन सबके मैं सरकार के साथ मोर्चेबदी की बात ही सोचता। पर जिस महान् सस्था को मैं केवल इस कारण नियत्रण म रग

हुए हू कि इस सकट की वेला म सम्राट की सरकार को किसी प्रकार की परशानी न हो उसकी उपक्षा मैं असहाय भाव से नहीं देख सकता। मैं अपने बारे म यह कहलाना कदापि पसन्द नहीं करूगा कि खोखली नतिकता के बहाने मैंन काग्रेस को प्रतिरोध के बिना नष्ट हो जाने दिया। बस, यही विचार मुझे बेचन किये हुए है।

रही मौलाना साहब की आपसे भेंट करने की अनिच्छा की बात सो मैंने तो असदिग्ध रूप से यही समझा था कि आपने उनके सामन दो विकल्प रखे थे या तो वह आपस मिल लें या यदि वह चाह ता आपको लिखित उत्तर भेज दें। वास्तव म उन्हें विकल्प आपने स्वय प्रदान किय थे। पर आपको लिखित उत्तर भेजने से पहले उन्होंने यह जानना चाहा था कि क्या वह घोषणा की चर्चा करने को स्वतत्र रहेंग, और जब उन्हें नकारात्मक उत्तर मिला तो स्वभावतया ही उन्होंने आपका समय नष्ट करना उचित नही समझा। मैंने वस्तुस्थिति को जिस रूप म ग्रहण किया है और जिस ढग म मैं आपके सामने पश कर रहा हू उसके प्रकाश म क्या आपको यह उचित नही जचता कि उन्होंने आपस भेंट न करके ठीक ही किया है ?

यदि जरूरी हुआ ता युद्ध प्रवृत्तियो के लिए बलात धन सग्रह करने तथा ऊचे वेतन पर नियुक्तिया करन के प्रसग को मैं एक अलग पत्र मे उठाऊगा। इस बीच आप मेरी शिकायतो की ओर इतना ध्यान दे रहे हैं इसके लिए मैं आपका आभारी हू।

भवदीय
मो० क० गाधी

१००

सवाग्राम वर्धा होकर
८ सितम्बर १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

माधव कल रात यहा पहुचे, मेर ही पास ठहर हैं। उन्हें पूरा आराम पहुचान का प्रयत्न रहेगा सम्भव है सफल भी हो जाऊगा।

पुस्तक के लिए प्राक्कथन और सुझाव भेजन मे देर हो गयी। अब भेज रहा

हू। यदि आप जयती के दिन पुस्तक प्रकाशित न कर पाए, तो मैं चाहूगा कि मैंने जो थोडे-बहुत सुझाव दिय है उनका समावेश किया जाए। इससे पहले नही भज सका इसका मुझे दु ख है। पर आशा है अब भी बहुत विलम्ब नही हुआ है।

मरे प्राक्कथन का जिस प्रकार चाहे रूपान्तर कर डालिये—कम से-कम मेरी भाडी हिन्दी का तो अवश्य शुद्ध कर लीजिए या वसा करने का भार किसी सक्षम आदमी के सुपुर्द कर दीजिए जिससे भाषा परिमार्जित रूप धारण कर सके।

हम लोग ११ को बम्बई क लिए रवाना हो रहे है। मैं माधव के हाथ जरूरी खतो कितावत की नकलें भेजगा।

प्राक्कथन और सुझाव अलग डाक से जा रहे हैं। पहुच की खबर दीजियेगा।

सप्रेम
महादेव

१०१

सेवाग्राम, वर्धा
६ सितम्बर १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने पाण्डुलिपि अपनी लिखावट म ही भेजी। उसी म रामनारायण चौधरी क पेंसिल से सशोधन है। अब आप और जो सशोधन करना चाहे कर लें। पर अच्छा तो यही रहेगा कि भाडी होते हुए भी भाषा मेरी ही रखी जाए। माधव भी काम आ रहे हैं। उन्होने पूरा का पूरा मूल नकल कर डाला जिसे वह अपने साथ ले जा रहे हैं। उन्होने हिन्दी मे अनुवाद भी काफी मात्रा म किया।

आपका
महादेव

१०२

कलकत्ता
१० सितम्बर १९४०

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हारा प्राक्कथन और तुम्हारे सुझाव सब मिल गय।

मैं पुस्तक को विभिन्न अगो म अवश्य बाटूगा। प्रूफ भी बडी सावधानी के साथ पढे जाएगे। जहा तक सम्भव होगा, न तो सस्कृत उद्धरणा म और न हिन्दी कथावस्तु मे किसी प्रकार की त्रुटि रहने दी जायेगी। तुमने जितने सुझाव दिय हैं उन सबका समावश तीसर प्रूफ मे कर दिया जायगा। य तीसरे प्रूफ भी आने ही वाले हैं। काका कालेलकर ने भी कई एक सुझाव दिय थे कई तो तुम्हारवाले सुझावा स मिलत जुलते है। तुमने बछडा मारने की कफियत भिन्न रूप मे दी है। विचित्र बात तो यह है कि काका कालेलकर न भी वसी ही दलीलें पेश की। मैंने उनस कहा कि मैंने जा मम ग्रहण किया वह यह था कि कोई स्थायी रूप स अनासक्त नही रह सकता, पर निणय लेने के क्षणो म अनासक्त जैसा आचरण करना सम्भव है। पर तुम्हारी दलील म बल है इसलिए मैं उस अश को बदलूगा। यह सच है कि मैंने कई मामला मे बापू को अपनी समझ स ही देखा है और मैंने जा मम ग्रहण किया वह शायद बापू को ग्राह्य न हो। पर मैं बापू को एक स अधिक बार बता चुका हू कि यदि वह स्वय अपन आपका समझाने उठें तो भी उनकी भाषा जटिल ही रहेगी इसलिए सबसे अच्छा तो यही रहेगा कि मैं अपनी ही दृष्टि स उन्हे देखू। बापू मान गये थ। पुस्तक के प्रकाशित हो जान क बाद एक-न एक दिन बापू से जिज्ञासा करूगा कि मैंने उन्हे समझन म अक्ल से काम लिया है या नही। वह उत्तर म जो-कुछ कहग, सा सुनने की चीज होगी।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ दसाई,
सवाग्राम

१०३

सेवाग्राम वर्धा
११ सितम्बर, १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

जो कुछ साथ जा रहा है अपनी कहानी स्वय कहेगा। भगवान ही जाने आगे क्या होनेवाला है। पर हमे तो मंगल की ही आशा और कामना करनी चाहिए।

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

प्राक्कथन अच्छा लगा न ? दिल की बात बताइये क्योकि आपकी सम्मति का मेरी दृष्टि म बडा मूल्य है।

म०

१०४

तार

वर्धागज
२१ सितम्बर, १९४०

घनश्यामदास बिडला
मारफत लकी
कलकत्ता

तुम्हारी हिसार की जमीदारी म माठ गाव म फूलसिहजी हरिजनो के कुए क लिए अनशन कर रहे है। तुम्हार हस्तक्षेप से ही उनके प्राण बचेंगे ऐसा मुझे बताया गया है। कीमती जान है। हरिजनो के लिए कुआ खुदवाने का मुसलमान और हिन्दू जाट मिलकर विरोध कर रहे हैं। यह पूरा कुआ प्राय जनता के चन्दे से ही खुदवाया गया था और विरोध न होता तो अब तक काम पूरा हो जाता।

—गाधी

१०५

तार

कलकत्ता
२२ सितम्बर १९४०

महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम
वर्धा (मध्य प्रात)

छाजूरामजी बीमार हैं, पर उन्होंने भगतजी को तार द्वारा ताकीद कर दी है कि कुए का काम पूरा किया जाए। जरूरत हो तो अपने पसे से और हो सके तो जाटो की रजामन्दी से, अन्यथा सरकार की मदद से। मैंने भगतजी को अनशन छोडने का तार दिया है। छाजूरामजी ने वचन दिया है अच्छे होते ही मोठ को रवाना हो जाएगे। मैंने श्यामलाल को भी तार भेजा है कि अब वह भगतजी का अनशन त्यागने को राजी करें। अब भगतजी का छाजूरामजी को अपना वचन पूरा करने का अवसर देना चाहिए।

—घनश्यामदास

१०६

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
४-१०-४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

मैं यहा अटका हुआ हू। उर्मिलादेवी का कहना है कि वह डिप्टी पुलिस चीफ स मिली थी। उसने उन्हें सुझाया है कि यदि कृष्णकुमार पुलिस कमिश्नर को लिख भेजें कि धीरेन की गिरफ्तारी से काम ठप्प हो गया है तो वह उसकी रिहाई की सिफारिश कर देगा। इसलिए मैंने चिट्ठी का मजमून तयार किया और चिट्ठी भेज दी गई है। उर्मिलादेवी ने यह भी बताया है कि पुलिस चीफ आज दार्जिलिंग स लौटेगा इसलिए मैं उसमे मिलू। पर वह अभी तक नही लौटा है। ईश्वर ने चाहा

१०३

सेवाग्राम वर्धा
११ सितम्बर १६४०

प्रिय घनश्यामदासजी

जो कुछ साथ जा रहा है अपनी कहानी स्वय कहेगा। भगवान ही जाने आगे क्या होनेवाला है। पर हम तो मगल की ही आशा और कामना करनी चाहिए।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

प्राक्कथन अच्छा लगा न ? दिल की बात बताइये क्योकि आपकी सम्मति का मेरी दृष्टि मे बडा मूल्य है।

म०

१०४

तार

वर्धागज
२१ सितम्बर १६४०

घनश्यामदास बिडला
मारफत लकी
कलकत्ता

तुम्हारी हिसार की जमीदारी मे मोठ गाव मे फूलसिहजी हरिजनो के कुए के लिए अनशन कर रहे हैं। तुम्हारे हस्तक्षेप से ही उनके प्राण बचेंगे ऐसा मुझे बताया गया है। कीमती जान है। हरिजनो के लिए कुआ खुलवाने का मुसलमान और हिन्दू जाट मिलकर विरोध कर रहे हैं। यह पूरा कुआ प्राय जनता के चन्दे से ही खुदवाया गया था और विरोध न होता तो अब तक काम पूरा हो जाता।

—गाधी

१०५

तार

कलकत्ता
२२ सितम्बर, १६४०

महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम
वर्धा (मध्य प्रांत)

छाजूरामजी बीमार हैं, पर उन्होंने भगतजी का तार द्वारा ताकीद कर दी है कि कुए का काम पूरा किया जाए। जरूरत हो तो अपने पैसे से, और हो सके, तो जाटों की रजामन्दी से अन्यथा सरकार की मदद से। मैंने भगतजी को अनशन छोड़ने का तार दिया है। छाजूरामजी ने वचन दिया है अच्छे होते ही मोठ को रवाना हो जाएंगे। मैंने श्यामलाल को भी तार भेजा है कि अब वह भगतजी को अनशन त्यागने को राजी करें। अब भगतजी को छाजूरामजी को अपना वचन पूरा करने का अवसर देना चाहिए।

—घनश्यामदास

१०६

८ रायल एक्सचेंज प्लेस,
कलकत्ता
४.१०.४०

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं यहां अटका हुआ हूं। उर्मिलादेवी का कहना है कि वह डिप्टी पुलिस चीफ से मिली थीं। उसने उन्हें सुझाया है कि यदि कृष्णकुमार पुलिस कमिश्नर को लिख भेजें कि धीरेन की गिरफ्तारी से काम ठप्प हो गया है, तो वह उसकी रिहाई की सिफारिश कर देगा। इसलिए मैंने चिट्ठी का मजमून तैयार किया और चिट्ठी भेज दी गई है। उर्मिलादेवी ने यह भी बताया है कि पुलिस चीफ आज दार्जिलिंग से लौटेगा इसलिए मैं उससे मिलूं। पर वह अभी तक नहीं लौटा है। ईश्वर ने चाहा

ता दार्जिलिंग जाना हागा। ईश्वर क चाहन की बात इसलिए लिख रहा हू कि मैं गगाप्रसाद के साथ दार्जिलिंग जानेवाला था पर उसका कहना है कि रेल के डिब्बे म सीट खाली नही है। मैं उससे कह रहा हू कि एक सीट तो होगी ही, मैं उसके नौकर की हैसियत से साथ हा लूगा। पर भला आदमी मेरी बात सुनी-अनसुनी कर रहा है। जो भी हा, यहा इतजार करने स कोई फायदा नही है। यदि मुझे ख्वाजा सर नाजिमुद्दीन स मिलना ही है, तो उस दार्जिलिंग की चोटिया पर धूप कपूर की अचना दूगा।

कवी द्र रवीन्द्र के दशन किय थे। अभी बन रहग एसा लगता है। जीवट के आदमी है, दस वष और टिकना चाहत है।

सप्रेम,
महादव

१०७

तार

कलकत्ता
८ अक्तूबर, १६४०

घनश्यामदास बिडला
पिलानी

दार्जिलिंग म खाली हाथ वापस आना पडा। कल वर्धा लौट रहा हू। लिखूगा।

—महादव

१०८

पिलानी
६ १० ४०

पूज्य बापू

श्री कृष्णदास गाधी की हरिजन म छपी टिप्पणी क बार म मैंन आपसे जिक्र किया था। आपन कहा था इस पर कुछ लिख भेजा। इसलिए लिख भेजता हू। मैंन इस आशय म लिखा है कि आप इस एक पत्र की तरह छापेंगे और इसका

उत्तर स्वयं लिखेंगे।

खादी के पक्ष में मेरे पास आर्थिक दलीलें कम हैं। मेरी उसमें अमर्यादित भक्ति नहीं है। इसलिए मैंने खादी के पक्ष की दलीलों का कोई उल्लेख नहीं किया है। पर आपके लिखने के लिए, मेरा खयाल है, यह मसाला ठीक है। उचित लगे तो इसका प्रयोग करें।

'हरिजनसेवक' के लिए समय समय पर लिखने की कोशिश अवश्य करूंगा।

मैं ३-४ दिन बाद दिल्ली पहुंचूंगा।

विनीत
घनश्यामदास

पुनश्च

खादी के पक्ष की दलीलें मैंने अपने लिए केवल आध्यात्मिक रखी हैं, इसलिए वे सर्व-साधारण पर लागू नहीं हो सकतीं।

संलग्न

गलत अंकों का सुधार आवश्यक

१५ सितम्बर के 'हरिजन' में २८८वें पृष्ठ पर 'महाराष्ट्र खादी पत्रिका' में श्री कृष्णदास गांधी के लेख का कुछ अंश दिया गया है। उसमें यह बताया गया है कि विदेशी व देशी मिलों द्वारा बने, मिल के कते और हाथ से बुने एवं शुद्ध खादी के—इस प्रकार चार तरह के कपड़ों की कुल खपत सारे हिंदुस्तान में करीब ६३३ करोड़ गज की है। इसमें विदेशी वस्त्र का हिस्सा ६३ करोड़, देशी मिलों का ४०८ करोड़, हाथ के करघों का १६० करोड़ और खादी का कुल १। करोड़ गज है। देशी मिलें रुपये में साढ़े दस आने कपड़े की आवश्यकता की पूर्ति करती हैं, विदेशी कपड़ा रुपये में डेढ़ आना, हाथ के करघे रुपये में चार आने से कुछ कम और खादी एक रुपये में केवल १/२ पाई के करीब। इसलिए वह सकते हैं कि इस देश के कपड़े की आवश्यकता पूरी करने में खादी का स्थान अत्यंत नगण्य है।

आगे चलकर श्री कृष्णदास गांधी कहते हैं कि इस ६३३ करोड़ गज कपड़े की कुल कीमत २०० करोड़ होगी। यदि इसमें से हम रुई और रंगाई का खर्च काट दें, तो दूसरे शब्दों में यह १२० करोड़ रुपया हमारे बारह करोड़ ग्रामीणों के पेट में जायगा। इसके बजाय यदि मिलें तमाम कपड़े को बुनें तो ४० करोड़ तो मजदूरों और अन्य लोगों की तनख्वाह में लगेगा, बाकी ८० करोड़ या तो पूंजीपतियों की जेब में या मोटे-मोटे पाप-कर्म में या फिर प्रचार और

कोयलो म खच होगा। यदि १२० करोड ग्रामीणा की जब म जाय तो १ करोड २० लाख मजदूरो की आमद १०) प्रति वष बढ जायेगी।

मुझे भय है कि यह सारी-की-सारी अक गणना गलत है। खादी की महिमा क लिए अनेक जोरदार तक और दलीलें उपस्थित है। इसलिए अज्ञानवश भी गलत अको के आधार पर खादी की पुष्टि सचमुच खादी की महिमा नही बढाती। सम्भव है कि सही अको के आधार पर अतिम निष्कष खादी के पक्ष म ही निकले। लेकिन गलत अकों के आधार पर दीवार खडी करने का प्रयत्न और भी घातक बन जाता है।

इतने सही अक देना कि जो आना पाई तक सही हा असाध्य प्रयत्न है। पर करीब करीब सही अक तो मिलो के उत्पादन क सम्बन्ध म दिये ही जा सकत हैं और वे अक हमारी बहस के लिए पर्याप्त हैं।

मिलो के कपडे की कीमत औसतन सवा दो आने स अढाई आने गज तक की मानी जानी चाहिए। यह कीमत ४० चौडे कपडे की है जो २० और ३० नम्बर क सूत से बना हो। रगे हुए छपे हुए या अन्य इस तरह के कपडे की कीमत इसस ऊची होगी पर ये ऊचे दाम रग या छपाई के कारण होंगे जो खादी और मिल के कपडे दोना पर समान रूप से लागू होते हैं। इसलिए खादी और मिल क कपड की तुलना के लिए कोरे कपडे का दाम ही प्रस्तुत करना होगा। कोरे कपडे का दाम इन दिनो करीब सवा दो आने गज है और यदि हम यह मान लें कि हमारी तमाम आवश्यकता हमे मिलो द्वारा पूरी करनी है तो फिर ६३२ करोड गज कोरे कपड की कीमत २०० करोड रुपये नही कुल ६० करोड होती है। इस समय विदेश मे जा कपडा आ रहा है उसकी कीमत की जकात चुकाने के पहले वह भी करीब सवा दो आने गज ही होता है—इसलिए सवा दा आने गज कीमत मानने मे कोई आपत्ति नही दिखाई देती।

श्री कृष्णदास गाधी ने जहा २०० कराड की कीमत कूती उसकी जगह यदि कुल ६० करोड ही कीमत हो जसी कि वस्तुस्थिति है तो बहुत-सी दलीलें अपन आप निबल पड जाती हैं।

पर इस ६० करोड का बटवारा कस होता है यह भी जरा समझने लायक बात है। नीचे की तालिका स यह स्पष्ट हो जाएगा

इन सब चीजो की कल्पना सामने रखकर ही हम खादी के गुणो की तुलना मिल से करनी चाहिए। जिस नक्शे को भविष्य के लिए मैंने अपने दिमाग में खीचा है उसके अनुसार मजिल पर पहुचने के बाद पूजीपति की जब में घिसाई को छोड कर ५ ६ करोड से ज्यादा नही जा सकता। और माड स्टार, मशीन इत्यादि भी स्वदेश में बनने पर १ से १ ५ करोड और पूजीपति की जब मे जाएगा। इस तरह एक दृष्टि से बिलकुल आर्थिक दृष्टि से समस्या इतनी ही है कि मिलो को कायम रखने में योजना समाप्ति के बाद पूजीपति की जब में ५ से ७ ५ करोड जाता रहेगा। आज पूजीपति की जेब में घिसाई को छोडकर ५ ६ करोड से ज्यादा नही जाता। मिल लगभग ५ ५ लाख मनुष्यो को मजदूरी देती हैं ऐसा सरकारी आकडे हमे बताते हैं। इनको सही मान लें तो औसतन मजदूरी एक मनुष्य की ३५ रुपये आती है। पर चूकि औसतन मेरे ख्याल में २५ रुपये से ज्यादा नही है इसलिए मेरा मानना है कि मिलो में कारीगर और अन्य सारे श्रमिको की सख्या सात लाख के करीब है।

मैंने ऊपर जो तालिका दी है उसमें प्रत्येक मिल के अपने हिसाब से कई अको में रद्दोबदल की गुजाइश है। मसलन किसी मिल में रुई का खर्च प्रतिशत ज्यादा है और किसी का मजदूरी का ज्यादा पर मुनाफा मैंने जो कूता है वह असलियत से ज्यादा कूता है ऐसा मेरा अनुमान है। मिलो की आज की कीमत १०० करोड की मानी जानी चाहिए। कम-से कम ऐसी हालत में घिसाई और मुनाफा १० प्रतिशत तक वाजिब माना जाय तो १० करोड के करीब होगा। यह एक दिलचस्प हिसाब होगा। यदि कोई १९३८ ३९ के दो सालो के मिलो के कुल मुनाफे को जोडकर देखे कि कितना मुनाफा हुआ है तो मेरा अनुमान है कि वह मुनाफा मेरी कूत से कम निकलेगा।

मिलो के पक्ष का चित्र तयार करने का मेरा इरादा नही था पर मुझे लगता है कि श्री कृष्णदासजी के गलत अको का खडन शायद ऐसी ध्वनि पैदा कर कि मैं मिलो की हिमायत करता हू। यह लाचारी है। पर यदि खादी की आर्थिक दृष्टि से पुष्टि करनी है तो हमे चाहिए कि मिलो के पक्ष का चित्र भी हम अपने सामने रखें और फिर खादी को इस तुलना मे विजयी साबित करें। पर ऐसा चित्र तो अधिकारी सस्थाए ही दे सकती हैं जसे कि बम्बई या अहमदाबाद की मिल मालिको की सभा। जो हो हर हालत में श्री कृष्णदासजी के अको का सुधार अनिवार्य था।

१०६

सेवाग्राम (वर्धा होकर)
१० अक्तूबर १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

ख्वाजा सर नाजिमुद्दीन वाइसराय से भी अधिक शिष्टता के साथ पेश आया अपने यहां खाना खाने की दावत दी मुझे कोई सात घण्टे दिये पर अपनी बात पर अड़ा रहा। कलकत्ते का सी० आई० डी० विभाग बिलकुल लीचड़ लगता है। उन लोगों का दावा है कि धीरेन अव्वल दर्जे का शैतान है आपके यहां नौकरी करते हुए भी वह अनुशीलन दलों की गुप्त बैठकों में भाग लेता रहा जहां छिप-छिपकर हथियार जमा करने की साजिशें की जाती थीं। धीरेन ने इस आरोप को बिलकुल झूठा बताया है। जब मैंने इस आरोप की चर्चा की तो वह आग-बबूला हो गया। आज सर नाजिमुद्दीन को जो पत्र लिख रहा हूं उसकी नकल इस पत्र के साथ रख रहा हूं। देखें क्या होता है। बापू कहते हैं कि वह इस मामले का अन्त तक पीछा करेंगे।

जल्दी में

आपका ही
महादेव

संलग्न सर नाजिमुद्दीन को लिखे पत्र की नकल

सेवाग्राम (वर्धा होकर)
१० अक्तूबर १९४०

प्रिय सर नाजिमुद्दीन

आपने दार्जिलिंग में इतना समय दिया इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। साथ ही मैं इसका भी अहसान मानता हूं कि आपने श्री धीरेन्द्र मुखर्जी के खिलाफ जिन आरोपों की खबर दी गई है उनका आपने मुझे निचोड़ बताया। आपने मुझे श्री सुभाषचंद्र बोस तथा श्री धीरेन्द्र मुखर्जी से भेंट करने की अनुमति दी इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूं। पर इस बात का मुझे खेद है कि आपके साथ मेरी भेंट का अंत गतिरोध के रूप में हुआ न आप मेरा समाधान कर सके न मैं आपका। पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि मैं पहले से किसी प्रकार की धारणा बनाकर हरगिज नहीं आया था और श्री धीरेन्द्र मुखर्जी के साथ अपनी भेंट के

दौरान मैंने उन सभी आरोपो की चर्चा की जो उन पर लगाये गये हैं, हा मैंने उनका विवरण नही दिया क्योंकि आपने मुझे वैसा करने को मना कर दिया था। उनके साथ अपनी भेंट के परिणामस्वरूप मैं उनकी निर्दोषिता के बारे मे और भी दृढ विश्वास लेकर वापस लौटा हू। मेरा अनुरोध है कि उनके साथ मेरी जो बातचीत हुई आप उसकी विस्तृत रिपोर्ट का अध्ययन करने के लिए आवश्यक समय अवश्य निकालें। मुझे इस बात का खेद है कि आपने कुछ नामो की चर्चा न करने की ताकीद कर दी थी जिससे मैं सब प्रकार के कडे बन्धन मे जकडा रहा। यदि वह ताकीद न रहती तो वार्ता और भी अधिक निश्चयात्मक होती।

अब मैं श्री धीरेन्द्र मुखर्जी के खिलाफ लगाये उस आरोप को उठाता हू कि अपनी रिहाई के बाद और श्री बिडला के यहा काम करने तक उनका क्या क्या आपत्तिजनक कार्य रहा।

उन्होंने यह स्वीकार करने मे जरा भी हिचकिचाहट नही दिखाई कि वह इलाहाबाद गये थे एक बार नही जैसा कि आपको बताया गया है बल्कि तीन बार। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि वह लखनऊ और राजशाही भी गये थे।

वह इलाहाबाद अपने रुग्ण पिता तथा अपने भाई से मिलने गये थे। आपको बताया गया है कि उनके भाई कम्युनिस्ट हैं। वास्तव मे वह पिछले १८ वर्षों से वकालत करते आ रहे है। वहा श्री धीरेन्द्र मुखर्जी के और भी रिश्तेदार हैं जिनसे वह भेंट करने वहा गये थे। इस बात से वह साफ इन्कार करते हैं कि वहा उन्होंने किसी सदेहजनक आदमी से भेंट की। हा उनके घर पर एक आदमी अवश्य आया था जिसका नाम सुधाशु मुखर्जी है और जो हाईकोर्ट के भूतपूर्व जज सर एल० जी० मुखर्जी का भतीजा है। यह सत्य है कि वह भी कभी नजरबन्द रह चुका है पर उसने राजनीति से अपना नाता बहुत दिनो से तोड रखा है। अब दूकान करता है और अपने भाई के पास कुछ बिलो का रुपया वसूल करने आया था।

श्री धीरेन्द्र मुखर्जी लखनऊ गये थे और वहा से एक गाव गये, जहा श्री नरेन्द्रदेव द्वारा आयोजित एक ग्रीष्मकालीन पाठशाला चलाई जा रही है। श्री नरेन्द्रदेव ने वहा विद्यार्थियो को सम्बोधित करने के लिए उन्हे आमंत्रित किया था। यदि सी० आई० डी० ने उनकी वहा दी गई दो या तीन स्पीचो की रिपोर्ट पेश की होगी तो आपको पता चलेगा कि उन्होंने समाजवाद को सम्भव बनाने के लिए अहिंसा की उपादेयता पर जोर दिया था। श्री धीरेन्द्र मुखर्जी को शीतकालीन पाठशाला मे स्पीच देने को भी बुलाया गया था पर उन्होंने निमत्रण स्वीकार नही किया क्योंकि तब तक उन्होंने राजनीति से नाता तोडने का निश्चय कर

लिया था।

वह राजशाही एक युवा-परिषद को सम्बोधित करने के लिए गये थे पर वहा उन्होने क्या कहा इसका उन्हे स्मरण नही है। परिषद सवसाधारण के लिए खुली हुई थी और यदि उन्होने कोई महत्त्वपूण बात कही होगी तो पुलिस रिपोट मगा कर देखी जा सकती है।

उनके काय का अन्तिम चरण हाजरा पाक की एक सभा तथा दक्षिण कान्फरेंस मे दिय गये भाषण है। आपको जो रिपोट मिली है, उसम बताया गया है कि उन्होन अपना स्पीच म स्वयसवको की तथा धन की अपील की जिसम कान्फरेंस सफल हा सके। स्वागत-समिति के अध्यक्ष की हैसियत स उन्होन जो भाषण दिया था वह बिलकुल औपचारिक ढग का था और उससे ऐसी कोई बात प्रकट नही होती जिससे यह लगता हो कि श्री नरीमान की तथा उनकी राजनतिक विचार धारा म किसी प्रकार का सामजस्य है। यहा मैं यह भी कह दू कि जहा तक मुझे मालूम है श्री नरीमान ने ऐसी स्पीच कभी नही दी जिसस हिंसा को बढावा मिलता हो।

मैंन नाम बताये बिना उनसे पूछा कि क्या उन्होने इस अवधि मे कभी किसी भूतपूव आतकवादी स भेंट की थी। उन्होंने बताया कि जब वह दिल्ली गाधीजी तथा मुझस मिलने आय थे, तो उनकी भेंट श्री शचीन सान्याल मे अवश्य हुई थी वह गाधीजी को एक पुस्तक भेंट करना चाहते थ, पर उन्हें दिल्ली शीघ्र ही छोडनी थी और गाधीजी से मिलना तब तक सम्भव नही हो पाया था इसलिए गाधीजी को पुस्तक भेंट करने का काम उन्होंने श्री धीरेन्द्र मुखर्जी के सुपुर्द कर दिया। उसके बाद उनकी श्री शचीन सान्याल से कभी बातचीत नही हुई।

इस अवधि म श्री धीरेन्द्र मुखर्जी विभिन्न काग्रेस-समितियो के सदस्य रहे। वह प्रान्तीय काग्रेस-समिति की प्रबन्धकारिणी तथा अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी क भी सदस्य थे पर जब स उन्होने श्री बिडला को यह वचन दिया कि वह राज नीति स कोई सरोकार नही रखेंगे तब से उन्होने अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी की बठको म भाग लेना बन्द कर दिया था। श्री धीरेन्द्र मुखर्जी ने मुझे बताया कि 'सेठ बिडला के यहा नौकरी करने से तीन महीने पहले मैंने सकल्प ले लिया था कि मैं राजनीति मे भाग लेन की बात सोचूगा भी नही, क्योकि मैं एक-साथ दोनो के प्रति वफादार नही रह सकता था। मैंने तो बगाल प्रान्तीय काग्रेस समिति की प्रबन्धकारिणी तक म भाग नही लिया। हा, यह बात अवश्य है कि यदि मैं इमसे त्यागपत्र दे देता तो अधिक बुद्धिमत्ता का काम करता।

मैंन उनसे बार बार पूछा कि श्री बिडलाजी के यहा काम शुरू करन के बाद

मे उन्होने अनुशीलन-दल अथवा अन्य किसी भी दल की गुप्त या खुली बैठक मे औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से कभी भाग लिया। उन्होने जोर देकर कहा मैंने किसी भी बैठक म भाग नही लिया। रही अनुशीलन दल की बात सो उस दल के प्रोग्राम या नीति म मेरी कभी आस्था नही रही।'

मैंने पुन जिज्ञासा की कि यह कहा गया है कि आपने आपत्तिजनक व्यक्तियो से भेंट की और उनके साथ विचार विमश किया। उनका उत्तर है कि 'सरकार का अभिप्राय जिन लोगो से है उनस मिलने के लिए मैं अपने घर तक से नही निकला। मैं कई भूतपूव नजरब दो के यहा ब्याह शादी और यज्ञोपवीत के अवसरा पर भी जान बूझकर दूर रहा ताकि मेरे ऊपर उनके साथ सक्रिय रूप से सम्पक बनाये रखने का आरोप न लगाया जा सके। मैं यह स्वीकार करता हू कि उनम से कुछ लाग मेरे घर 'राम राम—श्याम श्याम करने अथवा यह पता लगाने के लिए आये थे कि क्या मैं उनके लिए काम-काज दिलाने का बन्दोबस्त कर सकता हू। वास्तव मे एक भूतपूव नजरबन्द मेर घर मेरी गिरफ्तारी के बाद पहुचा था और उस मा ने मेरी गिरफ्तारी की बात बताई तो उसे आश्चय हुआ और निराशा भी। गुप्तचर विभाग का जो अफ्सर आधी रात गय मेरे घर मुझ गिरफ्तार करने पहुचा था उसने कहा था धीरेन बाबू आपको पकडने का आदेश पाकर मुझ आश्चय हुआ क्योकि मैं जानता हू कि आपने राजनीति से बहुत पहले से नाता तोड रखा है।

अन्त म श्री धीरेन्द्र बाबू ने कहा मुझे यह देखकर आश्चय और व्यथा दोना हो रहे हैं कि गुप्तचर विभाग के लाग मेरे पीछे पड हुए हैं और मेरे ऊपर झूठे इल्जाम लगा रहे है। यदि सर नाजिमुद्दीन चाहें ता मैं खुद उनके सामने हाजिर होकर वह मुझसे जो कुछ जानना चाहें उन्हें खुशी खुशी बतान को तयार हू। मुझे सबसे अधिक व्यथा इस बात की है कि मुझे बापूजी तथा घनश्यामदासजी को दिये गये अपने वचन का उल्लघन करने का दोषी ठहराया जा रहा है।

मैंन श्री धीरेन्द्र बाबू का बडी बारीकी के साथ इम्तिहान लिया और परिणाम स्वरूप मरी यह धारणा और भी दृढ हो गई है कि वह निर्दोष हैं और आपको जो इत्तिला मिली है वह भ्रामक है।

उन्होने जिस प्रकार सारे आरोपो का पूणतया खण्डन किया है, उसे ध्यान म रखकर आप उन्हें मुक्त कर देंगे ऐसी मेरी आशा है। उन्हे जो काम मिला है उससे वह इतना भर कमा लेते हैं जिससे उनकी माता का भरण-पोषण और सेवा शुश्रूषा हो सके। काम-काज से छुट्टी पाने के बाद उनके पास जो समय बचता है वह केवल अपनी माता के पास बने रहने के लिए पर्याप्त है। यह बात प्राय

असम्भव है कि वह आखों में धूल झोंककर अपनी माता के प्राण सकट में डालेंगे और उन्होंने गाधीजी का विडलाजी का तथा मेरा जो विश्वास प्राप्त किया है उससे हाथ धोयेंगे।

पर यदि यह पत्र मात्र उनकी रिहाई के लिए यथेष्ट न समझा जाए, तो मेरा अनुरोध है कि जब आप कलकत्ता लौटें, तो जिन पुलिस-अधिकारियो ने उनके खिलाफ ऐसी इत्तिलाए दी हैं उन्हें बुलाकर उनका इम्तिहान लें और उसके बाद कृपा करके धीरेन बाबू को भी बुलवाकर स्वय पूछताछ करें। आप चाहे तो सच्ची बात का पता लगाने मे आपकी सहायता करने के लिए मैं खुद खुशी-खुशी कलकत्ता आ जाऊगा। मुझे यकीन है कि एक बार यह समाधान होने के बाद कि वह निर्दोष हैं आप उन्हें एक दिन भी हिरासत में रखना पसद नही करेंगे।

भवदीय,
महादेव देसाई

११०

१३ अक्तूबर १६४०

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे सेवाग्राम से भेजे पत्र के लिए धन्यवाद।

यह जानकर क्षोभ हुआ कि तुम असफल रहे। पर हम लोग इस मामले को जारी रखेंगे तो मुझे भरोसा है कि अत में सफलता हाथ लगेगी।

वर्धा से कोई ताजा खबर नही आई है पर कोई कह रहा था कि उसने रेडियो पर सुना कि बापू वाइसराय को एक और पत्र लिख रहे हैं।

मैंने 'हरिजनसेवक' के लिए हिन्दी में एक छोटा-सा लेख भेजा था। वास्तव में वह लेख नही सम्पादक के नाम पत्र था।

मैं शीघ्र ही दिल्ली के लिए रवाना हो रहा हू। वहा से काम-काज के सिलसिले में दौरे पर निकल पडूगा। नवम्बर के मध्य तक बम्बई पहुचने का

विचार है, उसके बाद भुसावल जाऊंगा। कलकत्ते से लौटते समय वर्धा में उतर पड़ूंगा।

आशा है आप सब लोग सानन्द हैं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

१११

तार

सेवाग्राम
१७ १० ४०

वाइसराय के निजी सचिव
वाइसराय शिविर

देखता हूं कि सेंसर ने मेरे वक्तव्यों में से वे अंश काटने शुरू कर दिये हैं, जिन्हें वे आपत्तिजनक समझते हैं। यह केन्द्र द्वारा निर्धारित नीति के अनुसरण में किया जा रहा है अथवा स्थानीय कारवाई मात्र है, यह मैं नहीं जानता। मैं ऐसी कोई चीज जारी नहीं कर सकूंगा जिसमें मेरी सहमति के बगैर काट छांट की जायगी। खतरा स्पष्ट है। वाक्यों में से महत्त्व के शब्द कम कर देने से अर्थ का अनर्थ सम्भव है। यदि काट छांट का सिलसिला जारी रहा तो शनैः शनैः हरिजन की सामग्री के साथ भी वही होगा। यदि सरकार की नीति निश्चित रूप में मालूम हो जाए तो मैं तदनुसार अपना कार्यक्रम तय करूंगा। यदि मुझे अबाध रूप से लिखते रहने की छूट रहेगी तभी मैं कुछ लिख सकूंगा। शीघ्र उत्तर की अपेक्षा है।

—गांधी

११२

तार

नयी दिल्ली
१६ १०-४०

गाधी
वर्धा

१७ तारीख के तार क लिए धन्यवाद। दिल्ली लौटने तक उत्तर देना स्थगित रखा था। यहा सम्बद्ध विभागो से मालूम हुआ कि आपके प्रेम वक्तव्यो का सेंसर करने का कोई आदेश जारी नही हुआ है।

—वाइसराय का निजी सचिव

११३

सेवाग्राम वर्धा
२० १० ४०

प्रिय लार्ड लिनलियगो,

आपके तार के लिए अत्यन्त आभारी हू।

मैं यह आशा लगाये बैठा था कि जो निर्देश दिये गये थे वे केवल स्थानीय थे। आपको तार भेजने के बाद मुझे पता चला कि समाचार एजेंसियो को खबरदार कर दिया है कि वे जिस प्रकार अब तक मेरे सदेशो का वितरण करती आ रही थी अब ऐसा न करें बल्कि उन सारे सदेशो को दिल्ली हेड क्वाटर सेंसर के लिए भेज दें और सेंसर होने से पहले उन्हें प्रसारित न करें।

इस पत्र के साथ मैं एक ऐसे नोटिस की नकल भेज रहा हू, जो रजिस्टर्ड प्रकाशन-सस्थाओ को प्राप्त हुए हैं। इस समय मेरी कडी देख रेख मे सविनय अवज्ञा व्यक्तिगत रूप से की जा रही है। मैं इससे सम्बद्ध घटनाओ की जानकारी बनाये रखना चाहता हू। जो नोटिस जारी किये गये हैं उन्हें ध्यान मे रखते हुए मैं स्थानीय प्रेस मे कोई चीज छापने के लिए भेजने मे शकित हू, क्योकि यदि वैसा करू, और प्रेस मेरी सामग्री छापने को तैयार हो जाय, तो वह दण्ड का भागी

होगा। इसी कारण मैं कोई वक्तव्य प्रकाशन के लिए भेजने में संकोच कर रहा हूं। ऐसे सार्वजनिक वक्तव्य भेजने का मेरा एकमात्र उद्देश्य यही रहा है कि आंदोलन व्यवस्थित रूप धारण किये रहे और विशुद्ध अहिंसापूर्ण रहे। यही उसका अपेक्षित रूप बच रहा है। ट्रेड यूनियन के रुख के बारे में मुझे यकीन नहीं था पर उसके अध्यक्ष मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि मेरी सहमति के बगैर किसी प्रकार का राजनैतिक आन्दोलन आरम्भ नहीं किया जायगा।

श्री विनोबा भावे के प्रवचन बड़े ही उच्चकोटि के होते हैं। वह जो-कुछ कहते हैं, उसकी रिपोर्ट देने की जिम्मेदारी मैंने महादेव देसाई को सौंप दी है। विनोबा पक्के नियंत्रणवादी हैं और कठिन-से-कठिन निर्देशों का भी अक्षरशः पालन करने में पीछे नहीं हटते। उन्होंने पहला भाषण पहले से तैयारी किये बगैर दिया था, वह मुझे नहीं रुचा। वह एकांतवास करते हैं, इसलिए मेरे और आपके बीच हुए पत्र व्यवहार का उन्हें ज्ञान नहीं था। इसलिए उन्होंने पूरा अभिप्राय ग्रहण नहीं किया था। मैंने तुरन्त उनके पास सूचना भेजी कि हमारा आचार विचार हमें सिखाता है कि हम अपने प्रतिपक्षी के कथन का उदार से उदार अर्थ ग्रहण करें। उन्होंने एक सभा में भाषण देकर यथेष्ट मात्रा में परिमार्जन किया है। उन्होंने कल जो कुछ कहा, आला दर्जे का भाषण था। उनका विशेष जोर रचनात्मक कार्य पर है और सविनय अवज्ञा को लेकर वह अधिक माथापच्ची नहीं करते यदि करते भी हैं, तो उसे अपने तक ही सीमित रखते हैं। यह नहीं कहते फिरते कि दूसरे भी वैसा ही करें। मैं ये सारी बातें अन्य कांग्रेसियों और जनता के समक्ष बराबर रखते रहना चाहता हूं इस प्रकार उन्हें शिष्टता बरतने और अहिंसा का ठीक-ठीक आचरण करने की शिक्षा-दीक्षा मिलती है। यद्यपि हम और आप इस समय युद्धरत हैं तथापि हम उस विधि विधान का पालन अवश्य करना चाहिए जो मानव-जाति के हिस्से में आया है। पर अन्तिम निर्णय तो आप ही करेंगे। मैं तो केवल फरियाद कर सकता हूं।

आपका
मो० क० गांधी

११४

तार

वर्धा
२१ १० ४०

महामहिम वाइसराय,
नयी दिल्ली

'हरिजन' को १८ तारीख का एक नोटिस मिला है कि विनोबा के सत्याग्रह के बारे में कोई भी सामग्री प्रेस परामर्शदाता दिल्ली से स्वीकृति लिये बिना न छापी जाए। मैं कहने का साहस करूंगा कि यह प्रेस की स्वतंत्रता का गम्भीर हनन है। आशा है यह भारत सरकार की निर्णीत नीति का प्रतीक नहीं है। मेरी यह आशा आपके १६ तारीख के कृपापूर्वक भेजे गये तार पर आधारित है जिसका मैं पत्र द्वारा उत्तर दे चुका हूं।

—गांधी

११५

वाइसराय भवन,
नयी दिल्ली
२४ १०-४०

प्रिय मिस्टर गांधी,

मैंने आपके २० अक्तूबर के पत्र पर पूरी तरह विचार किया है और मैंने आपका २१ तारीख का तार भी देखा है। मैंने अपने १६ १० ४० के तार में जो कुछ कहा, उसकी पुष्टि बाद में हुई। आगे जांच पड़ताल करने और स्वयं आपने जो कागज-पत्र भेजे हैं उनसे इस बात की पुष्टि होती है कि केन्द्रीय सरकार ने सेंसर सम्बन्धी कोई आदेश जारी नहीं किया है। केवल इतना हुआ है कि स्थानीय संपादकों को स्वयं उन्हीं के हित में कह दिया गया है कि वे लोग कोई भी ऐसी सामग्री हवाले के लिए भेज दिया करें जो राजद्रोहपूर्ण जंचे और जिसके प्रकाशन के फल स्वरूप उन्हें भारत रक्षा कानून की गिरफ्त में आने की जोखिम नजर आये। मुझे बताया गया है कि यह दस्तूरी कारवाई है जिसके द्वारा प्रेस को संदिग्ध मामलो

म उचित परामश दिय जान की व्यवस्था है।

२ अपन ढग का सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलान म स्वतत्र रहन की आप की अभिलापा को मैं समझ सकता हू और यह बात भी मरे ध्यान म है कि इसके निमित्त आपको समाचार पत्रा के माध्यम से सवसाधारण तक पहुचने के माग मे किसी प्रकार का बन्धन पसद नही है। आप मुझम अपनी इस बात का विश्वास चाहत हैं कि आपने जो आन्दोलन छेड़ा है यदि उसके सचालन म आपको सारी सुविधाए उपलब्ध नही रही तो यह आन्दोलन अपेक्षाकृत अधिक भयकर रूप धारण कर सकता है। पर आपकी अभिलाषा तो है ही कि यह आन्दोलन अपने घोषित उद्दश्य मे सफल हो और वह उद्देश्य इसके सिवा और कुछ नही है कि जन साधारण को भारत के युद्ध प्रयत्नो मे किसी भी तरह का सहयोग न दन के लिए तयार कर लिया जाये। फलत मैं यह समझन म असमथ हू कि आपको जो सुवि धाए दी जाएगी वे मात्र इसी उद्देश्य की सिद्धि के काम मे लाई जाएगी। आप अपनी इस योजना की पूर्ति म मरे सहयोग की अपक्षा करते हैं इसलिए मरे लिए यह आवश्यक हो गया है कि जिस प्रकार मैंने गत सितम्बर मास म आपके साथ अपनी वार्ता के दौरान स्पष्ट कर दिया था उसी प्रकार अब भी स्पष्ट कर दू कि इस देश म सम्राट की सरकार क प्रतिनिधि की हैसियत स मेरा तथा स्वय भारत सरकार का इस देश की सुरक्षा कायम रखने का उत्तरदायित्व निभान म मैं कुछ निश्चित कदम उठाने को बाध्य हू। मैं इस बार मे किसी प्रकार के सदेह की गुजाइश कसे रहने दू कि ऐसा काई काय जिसका परिणाम युद्ध प्रयत्नो क लिए साघातिक हो और जो कानून का उल्लघन करता प्रतीत हो कानून को चुनौती के रूप म ग्रहण नही किया जायेगा और उसके साथ तदनुसार नहा निपटा जायेगा। ऐसा करता हू तो मैं अपने कत्तव्य से पराङमुख समझा जाऊगा। अत मेरे लिए अथवा भारत सरकार के लिए कम काय से नेत्र मूदे रहना हमे सौंपी गई जिम्मेदारियो को निभाने से बचे रहने के तुल्य होगा। आपक और भारत सरकार के बीच इस बात को लेकर टकराव हुआ है कि ऐस काय को जिसके द्वारा युद्ध प्रयत्निया का धक्का लगने की सम्भावना है किस हद तक छूट दी जा सकती है। इसका मुझे दुख है। पर कसी छूट एक सीमा तक ही दी जा सकती है इसके आगे यह अनिवाय हो जाता है कि यहा की सरकार इग्लड की सरकार तथा साम्राज्य क भीतर के अय देशा की सरकारें उस तरह की स्थिति स निपटने के लिए कानून की शरण लें। इसके सिवा और कोई चारा बाकी नही रहता।

भवदीय
लिनलिथगो

११६

तार

नयी दिल्ली
२४ १० ४०

मिस्टर गाधी
वर्धा

आपका २१ तारीख का तार मिला। मैंने गृह विभाग स पता लगाया है कि 'हरिजन' तथा अन्य सभी पत्रों को जो निर्देश भेजा गया है वह आदेश न होकर परामर्श मात्र है जैसा कि आपके २० अक्तूबर के पत्र के साथ आये नोटिस से स्पष्ट है। आपके पत्र का अलग से उत्तर दे रहा हू। ऐसा निर्देश जारी करने का एकमात्र उद्देश्य सम्पादकों के हितों की रक्षा करना है क्योंकि राज्य विरोधी सामग्री के प्रकाशन से वे भारत रक्षा कानून की ३८वीं धारा की गिरफ्त में आ सकते हैं।

—वाइसराय

११७

तार

वर्धा
२५ १० ४०

महामहिम वाइसराय
नयी दिल्ली

२४ तारीख के तार के लिए धन्यवाद। उससे व्यथापूर्ण आश्चर्य हुआ। यदि परामर्श का उल्लघन दण्डनीय हो तो वह आदेश के समान ही है। यदि वह परामर्श मात्र होता, तो उसे नोटिस का रूप देना अनावश्यक था। जिस कानून के अन्तर्गत सम्पादकों को अपने अपने पत्रों का सम्पादन करना होता है उसकी जानकारी उन्हें अवश्य रहती होगी। ऐसी परिस्थिति में मैं उन तीनों पत्रों का प्रकाशन स्थगित कर रहा हू जिनके लिए मैं जिम्मेदार हू। मैंने एक प्रेस वक्तव्य

जारी किया है यदि उसका सेंसर न हुआ हो तो उसे आपने देखा ही होगा। यदि प्रकाशन पुन आरभ करने की गुजाइश मर लिए छोडी गई तो स्थगन उठा लिया जाएगा। यदि ये साप्ताहिक मत्रीपूर्ण प्रतीत न हो तो इनके प्रकाशन की इच्छा नही है। ये पत्र मैत्री की भावना से ओत प्रोत हैं भले ही वे निर्भीक आलोचना से भरे रहते हो और सविनय अवज्ञा तक का प्रतिपादन करते हो।

—गांधी

११८

सेगाव (वर्धा होकर)
२६ अक्तूबर १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

तो बापू के तार का जवाब सरकार का ताजा आदेश है। वाइसराय का पत्र भी लगभग यही बात कहता है। हमारा हाल का काय कानून की गिरफ्त को दावत देगा। कानून की गिरफ्त —यह एक नयी चीज सीखने को मिली और जा उत्तर गया है उसे अतिम ही समझना चाहिए। यदि अब पत्रो की पहुच तक न आये तो मुझे आश्चय नही होगा।

हरिजन' बन्द हो गया मेरा काम धधा छिन गया। बापू का दिमाग किस दिशा म काम कर रहा है सो तो कहना कठिन है पर वह अधिक आदमियो को जल भेजना नही चाहते ऐसा निश्चित सा प्रतीत होता है। जो नया सरकारी आदेश जारी हुआ है उसके परिणामस्वरूप कोई भी सावजनिक काय नही हो सकेगा। मुझे तो लगता है कि वे शायद जवाहरलाल का नाम तक विनोबा के उत्तराधिकारी के रूप म प्रकाशित नही होने देंगे।

मद्रास के सत्यनारायण की एकान्त अभिलाषा है कि दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के वार्षिक समारोह का सभापतित्व आप करें। बापू का कहना है कि आपको निमन्त्रण स्वीकार कर लेना चाहिए। आशा है आपको किसी प्रकार की आपत्ति नही होगी। आप दक्षिण भारत तो अवश्य हो आये होंगे पर वहा हिन्दी प्रचार काय देखने का आपको अवसर नही मिला होगा। वे लोग वहा ठोस काम म लगे हुए हैं।

सप्रेम
महादेव

११६

सवाग्राम, वर्धा
२६ १० ४०

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारा लेख मुझे बहुत अच्छा लगा। कृष्णदास को दिया। उसका उत्तर ऐसा ही अच्छा नही है, लेकिन उसे पढकर समय मिलने से प्रत्युत्तर भेजो। अब हरिजनसेवक' का ता बध हुआ। लेकिन मुझ उसकी क्या दरकार ? मैं तो सत्य जानना चाहता हू। हरिजनसेवक' का इतनी शीघ्रता स बध करना होगा ऐसा मैंने सोचा नही था, लकिन सल्तनतो की भी गहन गति रहती है ना ?

बापु क आशीर्वाद

आपका लख भी भेजता हू बुक पोस्ट से जायगा, उस वापस कीजिए।

१२०

सवाग्राम (वर्धा हाकर)
(मध्य प्रात)
२८ १० ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू तो अतिम कदम लेंगे, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। क्योंकि यह आखिरी नोटिफिकेशन (विज्ञप्ति) तो असह्य है और लिनलिथगो के आखिरी पत्र म तो मर्यादा भी नही है। उनके लिए पत्र लिखा जा रहा है और वर्किंग कमेटी (काय समिति) के सदस्यो को भी। मैं ता किंकर्तव्यविमूढ हू मुझे यह विकेरियस सफरिंग (प्रतीकात्मक आत्मपीडा) की कल्पना कभी नही रुची। उससे औरो को अन्याय होता है। पर बापू थोड सुनेंगे ? कल मुझे जो कुछ कहना हो कहने की इजाजत दी है परन्तु उसका कोई परिणाम आनेवाला नही है। जवाहर कल आ रहा है। यह देवदास को दिखाइयेगा। मैं तो टलिफोन करनेवाला था पर पीछे लिखने का ही निश्चय किया। अब तारीख ता निश्चित नही है।

हम एक बात कर सकते हैं क्या ? या तो आप टेलिफोन से चर्चिल होर

आदि को तार दे दें कि यह गेगिंग आर्डिनन्स (दम तोडनेवाला कानून) बापू को अंतिम कदम लेने को मजबूर करेगा। मुझे तो भाषा अभी नही सूझती है पर देवदास को बुलाकर आप ड्राफ्ट (मसौदा) कीजिए। दूसरी सूचना यह है कि शिवराव को बुलाकर मेन्चेस्टर गार्जियन का ऐसे भाव का तार लिखवाइये। बापू ने काल हीथ को एक तार दिया है पर उसमे इस बात का कोई जिक्र नही है। उसमे सिर्फ इतना है कि यह ताजा कानून तो दम तोडनेवाला कानून है और इससे अहिंसा को कुचला जा रहा है।

आप जो उचित समझें करें।

आपका
महादेव

१२१

सेवाग्राम वर्धा
३० १० ४०

प्रिय लार्ड लिनलिथगो

आपके २४ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

पत्र के प्रथम परे के बारे मे मेरा कहना यह है कि आपने जिस नोटिस की चर्चा की है उसकी प्रतिक्रिया मेरे ऊपर क्या हुई यह तो मै आपको लिख ही चुका हू।

दूसरे पर ने मुझे अवाक कर दिया। यदि आपकी भाषा को सीधे सादे शब्दो मे रखा जाये, तो आपका कहना यह है कि यदि मैंने ठीक ठीक आचरण नही किया तो मुझे दण्ड दिया जायेगा। मुझे चेतावनी की जरूरत नही थी। न मैं उसकी कोई परवाह करता हू। आपने जिस ढग की भाषा का प्रयोग किया है, उससे पता चलता है कि आपने अपने अभिप्राय को अग्रेजी भाषा मे अधिक से-अधिक मृदुल रूप मे प्रस्तुत किया है साथ ही वैसी भाषा को व्यवहार मे लाने मे आपको अपने पद की मर्यादा का भी ध्यान रहा है।

पर मैं आपकी धारणाओ के लिए कतई तयार नही था। मैंने यह कभी नही कहा कि मैं सविनय अवज्ञा आदोलन का सचालन अपने ही ढग से करना चाहता हू और इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए समाचार पत्रो के माध्यम से जन साधारण तक अपनी पहुच के मार्ग मे किसी भी प्रकार के प्रतिबध के खिलाफ हू। आप मेरे वक्तव्य से स्वय ही देख लेंगे—इसकी नकल भेज रहा हू—कि मैंने यह दावा किया

है कि सविनय अवज्ञा को समाचार पत्रों के माध्यम के उपयोग की जरूरत नहीं है। यह वक्तव्य आपका पत्र मुझ तक पहुंचने के पहले ही प्रकाशित हो चुका था। वस्तुत यदि सविनय अवज्ञा अपनी सफलता के लिए उसी सरकार पर निर्भर करती हो जिसके खिलाफ वह की जा रही है तो वह निहायत ही घटिया किस्म की सविनय अवज्ञा होगी और जिस उद्देश्य की सिद्धि के लिए की गई हो, उसके लिए नितान्त अशोभनीय होगी। सविनय अवज्ञा का उद्देश्य आत्मपीडन द्वारा प्रतिपक्ष का हृदय-परिवर्तन करना है।

इसके बाद आप कहते हैं 'आप मुझसे अपनी इस बात पर विश्वास करने की अपेक्षा रखते हैं कि आपने जो आंदोलन छेड़ा है, उसके संचालन में आपको सारी सुविधाएं उपलब्ध नहीं रहीं, तो यह आन्दोलन अपेक्षाकृत अधिक भयंकर रूप धारण कर सकता है। पर आपकी यह अभिलाषा है ही कि यह आन्दोलन अपने घोषित उद्देश्य में सफल हो और वह उद्देश्य इसके सिवाय और कुछ नहीं है कि जनसाधारण को भारत की युद्ध प्रवृत्तियों में किसी प्रकार का सहयोग न करने को तैयार कर दिया जाये। मेरे पत्र में तो ऐसी कोई बात नहीं है जिससे आपको यह धारणा बनाने का अवसर मिले। वास्तव में वह पत्र लिखने का मुख्य उद्देश्य ही नजरअन्दाज कर दिया गया है। वह उद्देश्य यही था कि आप अहिंसाव्रत के पालन किये जाने की दिशा में मेरी असाधारण सतर्कता को सहानुभूति की दृष्टि से देखें, और इस बात को विशेष रूप से ध्यान में रखें कि इस उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त ही मैंने आन्दोलन चुने हुए व्यक्तियों तक ही सीमित रखा है। मुझे यह भरोसा था कि इस ध्यान में रखकर यह घोर आपत्तिजनक आर्डिनेंस जारी करने से आप बाज आयेंगे। अब आपने वैसा करके स्वयं को अन्याय के कठघरे में खड़ा कर लिया है। यह आर्डिनेंस पास करके आपने संसार को बता दिया है कि आप भारत के जरिये केवल जनमत का गला घोटकर ही युद्ध कर सकते हैं। मैं यह आशा लगाए बैठा था कि आपको रजवाड़ों, पैसेवालों और व्यापारियों से जो सहायता मिल सकती है उसी से आप सन्तुष्ट हो जायेंगे। वे लोग मेरे अथवा कांग्रेस के प्रभाव की परिधि से परे हैं।

मुझे यकीन है कि आप भारत की तुलना ब्रिटेन के साथ करने से बच रहेंगे। ब्रिटेन में आप लोगों के पास पार्लियामेंट है जिसके द्वारा राष्ट्र काम करता है। वहां आपको ऐसे अधिकार प्राप्त हैं जो भारत ने नहीं ब्रिटेन ने प्रदान किये हैं और जो संसार भर में इतने अधिक लोगों पर एक अकेले व्यक्ति को अन्यत्र कहीं उपलब्ध नहीं हैं। मुझे आशा थी कि आप उन अधिकारों का उपयोग संयम

वहा इतने दिनो तक टिका रहा था जिसस किसी को यह कहने का मौका न मिल कि मैंने आपके लिए कोई माग नही छोडा । फिलहाल मेरी इस आशा पर तुषार पात हो गया है । यकीन मानिए मैंने जो कदम उठाये हैं उन्हें उठात समय मुझे आपका और आपके लोगो का ध्यान बराबर बना रहा है क्योंकि कुछ भी नही हू तो मैं उनका हितपी ही । एक दिन ऐसा आयगा जब आप मेरे इस उदगार की साथकता देखेंगे, भले ही आप इस समय वसा न करें ।

पर आपने इस समय जो फसला दिया है मैं उसे स्वीकार करता हू । मैं आदोलन का सचालन लुक छिपकर नही करना चाहता साथ ही मैं यह भी नही चाहता कि अहिंसा की हिंसा हाती रह और मैं हाथ पर-हाथ रखे बठा रहू । इस लिए मैं एकमात्र वही चीज दे सकता हू जो मरी सामथ्य मे है—अर्थात अपन प्राण । मैंन आपको उपवास की सम्भावना की बात बता दी थी—वह उपवास आमरण भी हो सकता है और दीघकालीन भी । मैं भगवान के पथ प्रदशन की बाट जोह रहा था कि अब मेरा क्या कत्तव्य है । मैं उस स्थिति को टालने की भरसक चेष्टा कर रहा हू पर शायद वसा सम्भव न हो । जब मैं अतिम निणय लूगा तो आपको मेरे पास से एक और पत्र मिलगा ।

पडित जवाहरलाल नेहरू मर पास थे । मैंन उन्ह अगला सविनय अवनाकारी कदम की दावत दी थी । वह राजी हो गये थे । आपका आर्डिनेंस उसके बाद आया और अब उपवासवाली प्ररणा जोर पकडती जा रही है । उपवास क बारे मे उनका कोई निश्चित मत नही है । उनका विचार है और मैं उनसे इस बारे म सहमत हो गया हू कि जिस अवना की बात सोची गई है पहले उस मूत रूप दे दिया जाये, उसक बाद उपवास की बारी आये । अत अब बिलकुल अगला कदम उनके द्वारा की गई सविनय अवना होगा । ज्या ही तारीख और जगह के बारे मे निणय हो चुकेगा मैं आपको खबर दे दूगा ।

आशा है आप इस पत्र स रुष्ट नहा होग । मैंन यह पत्र एक मित्र की हैसियत से एक मित्र का लिखा है न कि सव-साधारण सदस्य की हैसियत स वाइसराय को । मैंने यह पत्र इश्तहारबाजी के लिए अथवा आपक ऊपर एक मुहरा चलान क लिए कदापि नही लिखा है । आपकी रजामन्दी के बिना मैं न यह पत्र प्रकाशित करूगा न हाल म मरे आपक बीच हुई बातो कितावत का कोई अश ही प्रकाशित करूगा ।

भवदीय

मो० क० गाधी

१२२

२ नवम्बर, १९४०

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा २६ तारीख का पत्र मिल गया था। देवदास ने मुझे उनके नाम तुम्हारा पत्र दिखाया था।

बापू ने दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार-सभा के उत्सव का सभापतित्व मुझे ग्रहण करने को कहा है सो समझा। तुम कहते हो मैं समझता हूं आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। पर यदि मुझे दक्षिण जाने का आदेश न दें तो मुझे बडी निवृत्ति मिलेगी। मुझे ऐसे उत्सवों में भाग लेने के प्रति घोर अरुचि रही है। इसके कई कारण हैं। जब १९३१ में चुनाव लडा था तो मुझे पूरे ४० दिन सफर में रहना पडा था और अलग-अलग जगह एक एक दिन में ७ या ८ सभाओं में भाषण देने पड़े थे। बस, तभी से सभाओं में भाग लेने का जोश खरोश हमेशा के लिए जाता रहा है। मेरा सचमुच का विश्वास है कि मैं ऐसे कामों के उपयुक्त नहीं हूं। मैं बापू की इच्छा का कदापि उल्लंघन नहीं कर सकता किन्तु मुझे अपने ही दायरे में रहने दो। मेरा ख्याल है कि मैं शांत और विधायक-कार्य के लायक ही हूं। पर यदि मुझे सभा मंच पर खड़ा कर दिया जाय तो मैं यन्त्र की भांति आचरण करूंगा और हो सकता है कि ऐसा करने से मैं ईर्ष्या की भावना भी जाग्रत करूं। यह पत्र पढ़ने के बाद मुझे यकीन है कि बापू मेरी कठिनाई समझ लेंगे और मुझे इससे छुटकारा दिला देंगे।

मैंने दास्तान को लिखा है कि मैं आ रहा हूं। देखूं मुझे वह कितना पसंद आता है।

मुझे खादी के आंकडों की बाबत बापू का एक और पत्र मिला है। उसका जवाब बाद में दूंगा।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

१२३

वाइसराय भवन,
नयी दिल्ली
२ नवम्बर १९४०

प्रिय मिस्टर गांधी

महामहिम ने आपके ३० अक्तूबर के पत्र के लिए मुझे आपको धन्यवाद देने के लिए कहा है।

भवदीय
जे० जी० लेथवेट

मिस्टर मो० क० गांधी

१२४

६ नवम्बर १९४०

प्रिय महादेवभाई

मुझे बापू के सम्भाव्य उपवास से भय हो रहा है और इस उपवास का मर्म ग्रहण करने में मैं अपने आपको असमर्थ पा रहा हूं। बापू ने कहा था कि वह जेल जाने से बचे रहेंगे क्योंकि यदि वह जेल गये तो सरकार को बेहद परेशानी होगी। यह जाहिर है कि उनके उपवास से उसे और भी अधिक परेशानी होगी। इसलिए वह सरकार को परेशान न करने की अभिलाषा के साथ उपवास करने की बात का कैसे ताल मेल बैठाते हैं ? मैं जानता हूं कि उनकी परेशान न करने की नीति हमारे दैनिक अस्तित्व पर अवलम्बित है। बापू ने विनाश से बचने के निमित्त सत्याग्रह का सीमित मात्रा में ही आश्रय लिया है। उन्होंने यह नीति केवल इस लिए अपनाई जिससे यदि सरकार को परेशानी हो भी तो अधिक न हो। फिर यह *सबसे बढ़कर परेशानी पैदा करनेवाली बात क्यों सोची गई ? उपवास करने में* हमेशा जोखिम रहती है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ईश्वर न करे यह उपवास बापू के प्राण ले ले पर यदि ऐसा हुआ तो ब्रिटिश सरकार सदैव के लिए अभिशप्त हो जायेगी और दोनों देशों के बीच जो कटुता उत्पन्न होगी उसे दूर

करना असम्भव हो जायगा। प्रश्न के इस पहलू को भी ध्यान मे रखना आवश्यक है।

एक और प्रश्न पर मैं बापू के उत्तर की आशा करता हू। बापू ने सत्याग्रह का स्वय नेतृत्व इसलिए नही किया कि वह जेल नही जाना चाहते यह तो ठीक परतु क्या इसका अर्थ यह है कि वह 'हरिजन' म लिखना भी नही चाहते थे? क्योकि वसा करने स उन पर मुकदमा चलाया जा सकता था? बोलने और लिखने म भेद करने स काम नही चलेगा। यदि मैं जेल जाने म बचने के लिए बोलने से बचू तो मुझे जेल जाने स बचने के लिए लिखना भी बन्द कर देना चाहिए क्योकि एस विषयो पर लेखनी उठाये बगैर रहा ही नही जा सकता, जिनके फलस्वरूप मुकदमा चलाया जा सकता है। क्या मेरी यह प्रतीति ग्रहण करना निर्भ्रान्त होगा कि बापू ऐसी कोई बात बोलना या लिखना नही चाहते थे जिनके द्वारा कानून का उल्लघन हो? यदि ऐसी बात हो तब तो 'हरिजन' का प्रकाशन बन्द करना बिलकुल अनावश्यक था क्योकि जहा तक 'हरिजन' का सम्बन्ध है नोटिस उस पर लागू नही होना।

एक और प्रश्न उठ खड़ा होता है। बापू का इरादा है कि अहिंसा का प्रत्यक्ष कार्य हृदय परिवर्तन के रूप मे साबित हो। आत्म पीड़न से यह कदापि सिद्ध नहो होता है। पर यदि आत्म-पीड़न निश्चित रूप से परेशानी पदा करने के अलावा व्यक्तिगत राग विराग उद्दीप्त करने का भी साधन बनता है तो वह अहिंसात्मक कहा रहा? शायद उपवास का उपयोग प्रतिपक्षी को विवश करने के साधन के रूप म भी किया जा सकता है नही भी किया जा सकता। कुछ स्थितियो म प्रतिपक्षी को विवश करना ही उद्दिष्ट रहता है। शायद ऐसी कोई बात हो कि नैतिक दबाव के द्वारा आक्रमणकारी को आक्रमण के पक्ष स अलग किया जा सकता हो। पर यदि वह सम्भव भी हुआ तो उससे प्रतिपक्षी का हृदय परिवर्तन होने से रहा। हृदय परिवर्तन के लिए यह आवश्यक है कि प्रतिपक्षी को परेशान करने की भावना स सर्वथा मुक्त रहकर आत्म-पीड़न किया जाए। जिसके खिलाफ उपवास किया जा रहा हो उस हृदय परिवर्तन की आवश्यकता की प्रतीति करानी चाहिए। उसके निकट यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि जो व्यक्ति उपवास कर रहा है वह महज तपश्चर्या के लिए कर रहा है और प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से उसका प्रतिपक्षी को परेशान करने का कोई इरादा नही है। २१ दिनवाला हरिजन-उपवास शायद उस कोटि का था। हिन्दू मुस्लिम दगो के सिलसिले म किया गया उपवास भी इसी श्रेणी म आता है। इधर साम्प्रदायिक निर्णय के खिलाफ किया गया उपवास तथा राजकोट के प्रसगवाला उपवास—ये दोनो ही उपवास बिलकुल

दूसरी कोटि के हैं। राजकोटवाले उपवास मे केवल हृदय परिवर्तन ही उद्दिष्ट था।

पर यह सब मेरा अपना लगाया हुआ अर्थ है। पता नही बापू इस बारे मे क्या कहेगे। और यह सभाव्य उपवास किस कोटि म रखा जाएगा? क्या यह उपवास से दबाव डालन के निमित्त होगा या विशुद्ध तपश्चर्या होगी? मेहरबानी करके यह पत्र बापू को पढ-सुनाने के बाद इस विषय म मेरे अज्ञान को दूर करो।

सप्रेम
घनश्यामदास

१२५

दिल्ली की प्रेस कान्फरेंस मे महादेव देसाई का भाषण

१० नवम्बर १६४०

आज यहा आपके सामने खडे होकर आपके सौजन्य व कृपा भाव की अपेक्षा करने का मुझे क्या अधिकार है यह मैं नहा जानता। मैं किसी ऐसे समाचार पत्र का मनेजर स्वत्वाधिकारी अथवा सपादक नही हू जो पूर्व भारत अथवा पश्चिम भारत के समस्त पत्रो की पाठक सख्या के योग स अधिक पाठक सख्या का दावा करता हो। मैं हरिजन नामक एक छोटे से साप्ताहिक का सम्पादक मात्र हू—या था—और सो भी सौजन्य के नाते। क्योकि पत्र के असली सम्पादक स्वय गाधीजी थे, जिनकी अनुमति के बगर इस साप्ताहिक म एक पक्ति तक नही छप सकती थी। उस पत्र का प्रकाशन अब बन्द हो गया है—किन परिस्थितियो म बन्द हुआ है यह मेरे खयाल स आपको थोडा बहुत विदित ही होगा। थोडा बहुत मैं इसलिए कह रहा हू कि समार को उस पत्र-व्यवहार का ज्ञान नही है जो सरकार के साथ हुआ और जिसके फलस्वरूप पत्र को बन्द करन का फसला करना पडा। पर मैं आपको इतना तो बता ही दू कि गाधीजी न पत्र स्वत ही बन्द किया और एक सत्याग्रही अथवा एक ईसाई मतावलम्बी के इस सिद्धान्त के पालनस्वरूप बन्द किया कि यदि कोई तुमसे कुर्ता मागे, तो बनियान भी उतार कर दे दो, और अपने साथ एक कोस दूर जाने को कहे, तो दो कोस जाओ। इस कोटि के पत्र के प्रतिनिधि के नाते मैं इस अवसर पर उस दो हजार वर्ष पुरान

उदबोधन के मम का बखान करन का लोभ सवरण नही कर सकता जिसके अनुसार बुराई का सामना बुराई स करन का निषेध है। पर मैं एसा करत हुए हसों म बगुला-जसा प्रतीत होने लगू, तो कोई आश्चय नही होगा।

पर आप खातिरजमा रहिये। मैं यहा कोई युद्ध विरोधी स्पीच देने खडा नही हुआ हू यद्यपि मैं यह खुल दिल स स्वीकार करता हू कि मर रोम राम मे उस अभिशाप स लोहा लन का सकल्प भरा हुआ है, जो सभ्यता के लिए खतरा बनकर प्रकट हुआ है। और जो इस धरातल पर स सदिच्छा और शाति को नि शेष करने पर तुला हुआ है। न मैं आपको यह बताने आया हू कि गाधीजी का मानस दिन रात चौबीसो घण्टे किस चिन्ता स व्याकुल रहता है। वह चिन्ता इसके सिवा कुछ नहीं है कि इस आडे समय म ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश शासकों की किस रूप मे सहायता की जाय यद्यपि वह जानते हैं कि वे उन्हें अपना शत्रु समझते हैं।

मैं यहा एक विनम्र पत्रकार की हैसियत से आपके दुखड और आपकी कठिनाइयो म हाथ बटान आया हू। साथ ही मैं यहा एक सत्याग्रही की हैसियत स भी आया हू, ताकि आपके समक्ष एक सत्याग्रही का केस रख सकू और आपका समथन प्राप्त कर सकू।

इस कान्फ्रेंस के चेयरमैन महोदय ने खबर दी है कि सरकार ने आपत्तिजनक विज्ञप्ति वापस ले ली है। यह खुशी की बात है। सरकार ने आखिरकार यह अक्लमदी का काम किया इसके लिए मैं उसे मुबारकबाद देता हू। पर आप इस भुलावे म मत रहिये कि जितन कुछ की जरूरत थी वह कर दिया गया है। प्रेस परामशदाता अब भी बना ही हुआ है, और आप सबको इतने सारे मित्रो ने बता ही दिया है कि वह क्या कुछ कर रहा है। मैं बात को बिलकुल घटाकर कहू तो भी मुझे यह तो कहना ही पडेगा कि वह जिस कोटि के परामश दे रहा है, उससे और अव्यवस्था उत्पन्न हो गई है। सभापति महोदय आपने पडित जवाहरलाल की गिरफ्तारी पर दिया गया राजाजी का वह बढिया वक्तव्य प्रकाशित किया और सरदार वल्लभभाई का भी वक्तव्य छापा। पर बम्बई के पत्रो ने उन्हें प्रकाशित नही किया क्योंकि प्रेस-परामशदाता ने उन्हें पास नही किया था। लाड लिनलिथगो की अवधि बढाने के विषय पर आप एक लेख लिखते हैं। उस मद्रास म हजारो पाठक पढ़ते हैं पर जब एक सवाददाता उसे तार द्वारा भेजता है तो उसका एक महत्त्वपूण अश अय पत्रो म छपने से रह जाता है क्योंकि प्रेस परामशदाता उसका प्रकाशन उचित नही समझता। हडतालो की बात लीजिए। आपको उनकी चर्चा करने का अधिकार नही है। पर सरकार के एक पृष्ठपोषक

सार समुद्री तारा पर कठोर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। इस प्रतिबन्ध से सत्य की रक्षा होती है अथवा नही होती सो तो मै नही जानता पर इतना अवश्य जानता हू कि इसके द्वारा सरकार की करतूतो का पर्दाफाश होने से बच जाता है। यदि वे समझे बैठे हो कि असलियत के बेनकाब होने से शत्रु को सहायता मिलेगी तो भले समझे रहें। पर वे यह भूल जाते हैं कि उनकी दमन-नीति और मुह पर ताला लगानेवाले आर्डिनेन्स से शत्रु को कही अधिक सहायता मिलती है। क्योकि यदि शत्रु को मालूम पडा जैसा कि उसे मालूम पड ही गया है कि पण्डित जवाहरलाल को बर्बरतापूर्ण दण्ड दिया गया है और गाधीजी उपवास कर सकते हैं—तो वह ससार को बता सकेगा कि ब्रिटेन यह युद्ध भारत का सहयोग प्राप्त करके नही लड रहा है बल्कि उसके चुने हुए वक्ताओ की आवाज बन्द करके और उन्हे जेलो मे ठूसकर लड रहा है।

हमे यह भी बताया जाता है कि हम ब्रिटेन की कठिनाइयो से अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं। यह हमारी कृतघ्नतापूर्ण मानहानि है। यदि वैसी कोई बात होती तो हम हद दर्जे की सकुचित सविनय अवज्ञा आरम्भ करने के लिए पूरे एक वर्ष तक क्या रुके रहते ? यदि हम सरकार को परेशान ही करना होता तो हम वैसा हजारों तरीके अपनाकर कर सकते थे। श्री थाम्पसन भारत के मामलो की बहुत ईमानदार और दो टूक आलोचना करते हैं। उन्होने अपनी पुस्तक एनलिस्ट इडिया फार फ्रीडम मे यही बात कही है। शायद आप सबको यह पता नही है कि कुछ हलको मे गाधीजी को सरकार को परेशान न करने का बतगड बनाने का दोषी ठहराया जा रहा है। यदि हम सरकार को परेशान करना होता तो हम व्यापक सविनय अवज्ञा आन्दोलन छेड देते। हमसे कहा जा सकता है कि यदि वैसा कुछ किया जाता तो जलियावाला बाग की पुनरावृत्ति होती। पर जिस देश मे भुखमरी और रोग से लाखो इन्सानो की जानें जाती हैं उसमे दो चार जलियावाला बागो की क्या गिनती है ? यदि हम सरकार को परेशान करना होता तो हम सेना मे विद्रोह फैला सकते थे शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले कल-कारखानो मे बेचैनी फैला सकते थे। परन्तु गाधीजी ने अपने घोषणा पत्र मे कहा काग्रेस का शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले कल-कारखानो अथवा सैनिक बैरको का घेरा डाल कर वहा जो कुछ हो रहा है उसे रोकने का कोई इरादा नही है। उनका तो मात्र यही कहना है कि हमे भारतवासियो को यह बता देने का अधिकार है कि यदि वे अहिंसापूर्ण साधनो से स्वराज्य प्राप्त करना चाहते हैं तो उन्हें इस युद्ध कार्य मे ब्रिटेन के साथ सैनिक सहयोग करने से बचे रहना चाहिए।

इस सन्दर्भ मे मैं गाधीजी तथा जवाहरलाल के बारे मे दो एक बातें बता दू

तो अच्छा रहेगा। मेरा कहना यह है कि गांधीजी के पास सेना में असंतोष की भावना फैलाने के अवसरों का अभाव नहीं है। अभी उस दिन की बात है कि जब गांधीजी एक स्टेशन पर हरिजन कोष के लिए चन्दा इकट्ठा कर रहे थे, तो एक ताजा रंगरूट उनके पास पहुंचा, अपनी जेब खाली की और बोला कि गांधीजी के कहने भर की देर है वह बात-की बात में अपनी वर्दी उतार फेंकेगा। पर गांधीजी ने उसे वैसा करने से रोक दिया। जवाहरलाल भी ऐसे ही एक अवसर से लाभ उठा सकते थे, पर उन्होंने वैसा करने से इन्कार कर दिया। एक अंग्रेज सैनिक अफसर उनके पास आश्चर्यजनक इस्तीफा लेकर आया जो उसने अपने कमांडिंग अफसर के लिए तैयार किया था। वह पंडित जवाहरलाल से सलाह लेने आया था कि क्या करना उचित रहेगा। उन्होंने उसके साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट की पर उसे खबरदार कर दिया कि उसे ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जो सैनिक कायदे कानून का उल्लंघन करता मालूम दे, अन्यथा उसे संगीन नतीजा भोगना पड़ेगा। वह नवयुवक जोखिम उठाने को तैयार था पर जवाहरलाल ने उसे जल्दबाजी में कोई कदम उठाने से रोक दिया। उसी जवाहरलाल को सम्राट की सरकार ने चार साल की सजा के योग्य समझा है! इस बर्बरतापूर्ण दण्ड के बारे में क्या कहा जाय! पर यदि आप उनके अदालती बयान का अध्ययन करें तो आपको लगेगा कि जिन स्पीचों के लिए उन पर मामला चलाया गया था उनकी तुलना में यह बयान कहीं अधिक कठोर था। इसके अलावा उस बयान में वही सब-कुछ था जो गत वर्ष के सितम्बर मास के कार्यकारिणी के प्रस्ताव में कहा गया है। पर इसकी चर्चा तो मैंने प्रसंगवश कर दी।

यदि हमारा सरकार को परेशान करने का इरादा होता, तो हम तरह तरह के बहिष्कारों का सिलसिला शुरू कर देते, जिससे सरकार के लिए अपना काम चलाना मुश्किल हो जाता। यदि गांधीजी सरकार को परेशान करना चाहते तो हरिजन के स्तम्भ बलात वसूल किये गये चंदे की कहानियों से भरे रहते जिससे जनता को पता चलता कि किस प्रकार डरा धमकाकर सताकर और हौवा दिखाकर रुपया ऐंठा जा रहा है। इस ढंग की जो चिट्ठियां हमारे पास पहुंच रही हैं उनसे हमारी फाइल कई इंच मोटी हो गई है। उदाहरण तो असंख्य हैं पर मैं केवल दो उदाहरणों का उल्लेख करके ही संतोष कर लूंगा। साथ ही मैं यह भी कह दूं कि यह प्रकाशन के निमित्त नहीं है और मैं यह चाहूंगा कि जो-कुछ मैं कहने जा रहा हूं आप लोग उसका उपयोग न करें। एक उदाहरण तो एक जमींदार का है जिससे डर दिखाकर युद्ध-कोष के लिए पचास हजार रुपये ऐंठे गये। पहले तो उसकी बन्दूक का लाइसेंस जब्त किया गया, फिर उस पर मामला चलाने की

धमकी दी गई। उसने पचास हजार रुपये अदा कर दिये तब कहीं जाकर उसे धन से बैठने दिया गया। अभी उस दिन मुझे कुछ ऐसे देहातियों की करुणाजनक कहानी मालूम हुई जिन्होंने अपनी सम्पत्ति और ढोर डंगर बेचकर युद्ध-कोष में रुपया दिया था। अब उन्होंने जिला मजिस्ट्रेट की अदालत में रुपया वापस किये जाने की दरख्वास्त की है क्योंकि वे फाके कर रहे हैं। लोगों को कड़कती धूप में खड़े किये जाने के भी दृष्टान्त हैं। एक आदमी को युद्ध-कोष के लिए रुपया इकट्ठा करनेवाले निर्मम अधिकारी को सन्तुष्ट करने के लिए अपनी पोती के गहने बेचने पड़े। इस मामले में ब्रिटिश भारत भी उतना ही बुरा है जितने रजवाड़े। हां रजवाड़ों की प्रजा की दशा शायद और भी गई-बीती है। रजवाड़ों से खबरें आई हैं कि लोगों को मारा पीटा गया तथा उन्हें अन्य प्रकार की शारीरिक यंत्रणाएं दी गई। सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया जा चुका है पर गांधीजी ने जान-बूझकर एसे मामलों को प्रचार का विषय नहीं बनाया है।

यदि गांधीजी चाहते तो हरिजन के स्तम्भ देश भक्ति के नाम से की गई सेवाओं और मोटी तनख्वाहोंवाली नौकरियों के रूप में जो लूट जारी है उसकी कहानियों से भर देते। कुछ समय पहले लन्दन के न्यू स्टेट्समैन एंड नेशन ने एक लेख प्रकाशित किया था जिसमें ब्रिटिश कैबिनेट की कुनबापरस्ती का पर्दाफाश किया गया था। न्यू स्टेट्समैन एंड नेशन ने जिस आजाद खयाली से काम लिया गांधीजी ने वह तक बरतना उचित नहीं समझा। वह चाहते तो और भी बहुत-कुछ कर सकते थे पर वह बराबर आत्म संयम का परिचय देते रहे और अहिंसा तथा परेशान न करने की नीति का अनुसरण करते रहे।

मैं समझता हूं कि हम पर शत्रु की सहायता करके सरकार को परेशान करने और ब्रिटेन की दुरावस्था से लाभ उठाने की कोशिश करने का जो आरोप लगाया है, उसे खालिस कृतघ्नतापूर्ण लांछन साबित करने में मैं सफल हुआ हूं। बन्धुगण यदि मैं आपको अपनी बात का विश्वास दिलाने में सफल हुआ हूं तो आप लोग इस आरोप के भूत को दफना दीजिए। यदि मैं आपका समाधान करने में असफल हुआ होऊं तो मैं आपको सेवाग्राम आने की दावत देता हूं ताकि आप गांधीजी से दिल खोलकर बात कर सकें। मैं श्री आर्थर मूर को खास तौर से दावत देता हूं कि वह सेवाग्राम आकर गांधीजी के साथ विचार विमर्श करें। अभी तक श्री मूर से बढ़कर ईमानदार पत्रकार मेरे देखने में नहीं आया है और मुझे यकीन है कि जहां हम एक बार उन्हें अपनी बात का विश्वास दिलाने में सफल हुए कि वह सरकार का विश्वास दिलाने की दिशा में कुछ उठा नहीं रखेंगे।

यदि आप लोग इस लांछन का यथोचित उत्तर देंगे, तो हमारे मुंह पर ताला

लगानेवाले इन आर्डिनेन्सो के खिलाफ अपने विरोध को अधिक प्रभावोत्पादक बना सकेंगे। इन आर्डिनेन्सो का रच मात्र भी औचित्य नही है। हमे बताया जा रहा है, 'इन आर्डिनेन्सो मे कोई असाधारण बात नही है। हमने अपने शासन विधान का स्थगित किया है और जिन स्वतन्त्रताओ का उपयोग हम सदियो से करते आ रहे थे, उन्हे हमने तालाए-ताक रख दिया है। मैं समझता हू कि आप लोगो म से हर किसी को एलान कर देना चाहिए कि भारत के साथ ब्रिटेन की तुलना नही की जा सकती। वहा उन लोगो की अपनी सरकार है, उनका शासन विधान स्वनिर्मित है यदि वे समर्झे कि शासन विधान को स्थगित करना देश के हित म है तो उन्हें वैसा करने का पूरा अधिकार है। यहा हमारे पास वसी कोई भी चीज नही है। यहा हम खुल्लम खुल्ला एकतन्त्र के अधीन हैं और हम एक एसे युद्ध म घसीटा जा रहा है जिसके साथ हमारा कोई वास्ता नही है। और जब हम अपनी स्वतन्त्रता के लिए लडते हैं, तो हम गम्भीर परिणाम भुगतने की धमकिया दी जाती हैं। ब्रिटेन मे पोस्टर लगे हुए हैं स्वतन्त्रता खतरे म है उसकी पूरी शक्ति के साथ रक्षा करो। पर हमे बताया जा रहा है कि यह युद्ध घाव हमारे लिए नही है। वहा भी आर्डिनेन्स हैं, पर वे आर्डिनेन्स आत्म-त्याग के हेतु अर्पित हैं। हमारे लिए वही आर्डिनेन्स हमारे मुह पर ताला ठोकने के रूप म लगाये गये हैं। ब्रिटेन के साथ हमारी तुलना करके वे लोग प्रचण्ड ग्रीष्म मे ब्रिटेन को शीतकालीन ओवरकोट लादने-जैसा काय कर रहे हैं। ऐसा तो होने से रहा।

फिर वस्तुस्थिति भी दूसरे ढग की है। न तो ब्रिटेन म और न साम्राज्य के अन्य किसी देश मे ही इस कोटि के आर्डिनेंस जारी हैं और यदि हैं तो उनका जिस कठोरता तथा निष्ठुरता के साथ यहा पालन किया जाता है वहा नही किया जाता। डेली वर्कर के खिलाफ एक मामले म एक ब्रिटिश विचारक के लिए ही यह कहना सम्भव था कि अपने विचार व्यक्त करना भले ही वे विचार अधिकाश को लोकप्रिय न हो बेहूदा हो अथवा भ्रान्तमति के प्रतीक हो एक ऐसा अधिकार है जिसकी रक्षा करने के निमित्त औरो की तरह मुझे भी वेतन मिलता है।' श्री डी० एन० प्रिट के मुह से निकले इन उदगारो के साथ मेरी पूर्ण सहमति है कि 'जो विचार इने गिने लोग ही व्यक्त करते हैं जो लोकप्रिय नही हैं जो विचार अधिकाश मानव-समाज के विचारो से टक्कर लेते हैं विशेषकर युद्धकालीन भावावेशपूर्ण वातावरण मे, इस अदालत का खास तौर से ऐसे ही विचारो की रक्षा करने को तत्पर रहना चाहिए। जो विचार अधिकाश मानव समाज के विचारो से टक्कर लेते हैं —इस वाक्य को खास तौर म नोट कर लीजिए। यदि एक ब्रिटिश विचारक को यह प्रतीत हुआ कि उसे एसे ही विचारो

की रक्षा करने का वचन मिलता है तो ऐसे विचारों की रक्षा करना, जो भारत में इने गिने आदमियों द्वारा नहीं बल्कि अधिकांश भारतवासियों द्वारा व्यक्त किए जाते हैं कितना अधिक आवश्यक है ?

और दक्षिण अफ्रीका में डॉ० दादू के वकील श्री ब्लूम ने कहा था यदि यूरोपियनों को विद्रोह का उद्बोधन करने तथा भावी स्टाम ट्रूपरों (हिटलर की एक अर्द्ध सैनिक टुकड़ी) की बात करने की अनुमति है यदि गैर यूरोपियन लोग बराबरी के दर्जे की माग उठायें जबकर खिलाफ आवाज बुलन्द करें वोट देने के अधिकार की माग करें तो क्या बेजा है ? पर दक्षिण अफ्रीका में विद्रोह की बात करना और भावी स्टाम ट्रूपरों की चर्चा चलाना *शत्रु की सहायता करनेवाला* काय करार नहीं दिया जाता है और सरकार को परेशान करनेवाला काम नहीं *माना जाता बशर्ते कि वैसा करनेवाले यूरोपीय हों।* और जहा उधर एक ओर युद्धकालीन अशोभनीय बबरता से काम लिया जा रहा है इधर अहिंसा का प्रचार करने के जन्मसिद्ध अधिकार से हमें वंचित रखा जा रहा है उसे शत्रु की सहायता करनेवाला काय बताया जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका में यूरोपीय समाचार पत्र जो चाहें लिखें गांधीजी के सुपुत्र द्वारा सम्पादित इडियन ओपिनियन को वैसा कुछ करने की स्वतत्रता नहीं है। पर जनरल स्मटस की सरकार के साथ न्याय किया जाए तो यह तो कहना होगा कि जैसे जबान पर ताला डालनेवाले आर्डिनेंस यहा मौजूद हैं और उनकी अवहेलना करने पर पाच वष के कारावास जैसी बबरतापूर्ण व्यवस्था यहा है वहा वैसी कोई बात नहीं है। वहा इतना भर अवश्य किया जाता है कि इडियन ओपिनियन' के अकों में जो आपत्तिजनक समझे जानेवाले लेख प्रकाशित होते हैं उन्हें जब्त कर लिया जाता है। यहा अधिकारी लोग चाहें तो ऐसा ही कर सकते हैं।

ब्रिटेन और भारत की परिस्थितियों में भेद रखा खींचनेवाला एक पहलू और भी है। जैसा कि मैं बतला चुका हूं ब्रिटेन की केबिनेट में इतनी तो समझ है ही कि उन लोगों ने विचार व्यक्त करने पर पाबंदी नहीं लगाई है। वहा शत्रु की *सहायता देनेवाली खबर भी एक समाचार के रूप में प्रकट होती है।* उदाहरण के लिए लंदन टाइम्स में छपा कि कनाडियन सेनाएं फ्रास के लिए रवाना हो चुकी हैं। *यहा हमारे पत्रों में ऐसी खबर के प्रकाशित होने की कोई गुंजाइश नहीं है।* हमारे समाचार पत्र तो युद्ध सबधी उतनी ही सच्ची झूठी खबरें छापते हैं जो सरकार अथवा अद्ध सरकारी समाचार एजेंसी *प्रसारित करती है। हमारे निरीह* समाचार पत्र विदेश स्थित संवाददाताओं की खर्चीली व्यवस्था का भार उठाने में असमथ हैं। इसलिए शत्रु के लिए सहायक समझी जानेवाली खबरों पर पाबंदी

लगान म क्या तुक है ? और इतने पर भी यादी रहुत औचित्यपूर्ण पाबन्दी के खिलाफ लदन की नागरिक स्वतत्रता की राष्ट्रीय परिषद न काचे हॉल मे आवाज बुलन्द की। ईवनिंग स्टण्डर्ड' के सपादक श्री फ्रैंक ओवेन न कहा हम पहले डफ कूपर तथा सर जान एण्डसन से निपटें, तभी हम हिटलर से निपटने मे समथ हो सकेंगे। हम बोलने की, लिखने की, आपस मे विचार विमश करने की पूरी आजादी होनी ही चाहिए। हम उन स्त्री पुरुषो के पास सदेश भेजने की आजादी होनी चाहिए जो अन्यत्र जजीरा म जकडे पडे हैं। गाधीजी की अग्रजा के नाम अपील इग्लड तक तार द्वारा भेजने की अनुमति केवल इस कारण दी गई थी कि उस समय उन्हें मित्र समझा जा रहा था। अब उन्हे शत्रु समझा जा रहा है और जब उस दिन उन्होने एक ब्रिटिश समाचार पत्र के सवाददाता के साथ मुलाकात की तो सेंसर न उसे निषिद्ध करार दे दिया।

इस सदभ म मैं एक सत्याग्रही का मुद्दा भी पश कर दू तो ठीक रहेगा क्योकि उससे यह पता चलेगा कि वह आखिर चाहता क्या है ! मैं समझता हू मैं यह जतलाने मे सफल हुआ हू कि ब्रिटेन तथा दक्षिण अफ्रीका म जितनी आजादी है उससे अधिक की कामना मैं नही करता। मैंने जो ब्रिटिश निणय उद्धत किया है, वह नतिक अन्त करण स प्रेरित युद्ध विरोधी और राजनतिक अन्त करण स प्रेरित युद्ध-समथको के बीच किसी प्रकार का भेद नही करता। उक्त निणय ने यह बात असदिग्ध रूप से प्रतिपादित कर दी है कि ईमानदारो के साथ व्यक्त किया गया विचार भले ही लोकतत्र के लिए अपाच्य हो वसा विचार व्यक्त करने की आजादी की रक्षा करनी ही चाहिए। दक्षिण अफ्रीका म तो इस आजादी न और भी उग्र रूप धारण कर रखा है। मैं आपको यह तो बता ही दू कि हमारे ऊपर यह आरोप लगाना कि हम युद्ध प्रयत्नो को रोक रहे हैं हमारी मानहानि है। हम तो रगरूट भर्ती करने के तम्बुओ के पास भी नही फटकते न हम शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले कल-कारखानो का घिराव ही करते हैं और गाधीजी ने यह स्पष्ट घोषणा कर दी है कि हमारा वसा करने का कोई इरादा भी नही है। जो स्वेच्छा से युद्ध म सहायता करना चाहता है करता रहे हम उसके काय-कलाप म बाधा नही डालेंगे। हम जिस ढग के काय कलाप म बाधा डालेंगे वह है डरा धमकाकर यातना देकर और दबाव डालकर रुपया ऐंठना, और हम अपने देश वासियों को यह बता देना चाहते हैं कि यदि उन्हें अहिंसात्मक प्रणाली से स्वराज्य हासिल करना है तो उन्हे इस युद्ध म ब्रिटेन के साथ सनिक सहयोग नही करना चाहिए। हम अपन दशवासियो को युद्धजन्य प्रवृत्ति की छूत स बचाए रखना चाहते हैं। क्या यह कोई बेजा बात है ? अभी उस दिन एक एस अंग्रेज से मिलने का

की रक्षा करने का वचन मिलता है तो उन विचारों की रक्षा करना जो भारत में इने गिने आदमियों द्वारा नहीं बल्कि अधिकांश भारतवासियों द्वारा व्यक्त किए जाते हैं कितना अधिक आवश्यक है ?

और दक्षिण अफ्रीका में डा० दादू के वकील श्री ब्लूम ने कहा था यदि यूरोपियनों को विद्रोह का उदबोधन करने तथा भावी स्टाम ट्रूपरों (हिटलर की एक अर्द्ध सैनिक टुकड़ी) की बात करने की अनुमति है यदि गैर यूरोपियन लोग बराबरी के दर्जे की माग उठायें जमकर खिलाफ आवाज बुलन्द करें वोट देने के अधिकार की माग करें तो क्या बेजा है ? पर दक्षिण अफ्रीका में विद्रोह की बात करना और भावी स्टाम ट्रूपरों की चर्चा चलाना शत्रु की सहायता करनेवाला काम करार नहीं दिया जाता है और सरकार को परेशान करनेवाला काम नहीं माना जाता बशर्ते कि वैसा करनेवाले यूरोपीय हों। और जहा उधर एक ओर युद्धकालीन अशोभनीय बर्बरता से काम लिया जा रहा है इधर अहिंसा का प्रचार करने के जन्मसिद्ध अधिकार से हमें वंचित रखा जा रहा है उसे शत्रु की सहायता करनेवाला काम बताया जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका में यूरोपीय समाचार पत्र जो चाहें लिखें गांधीजी के सुपुत्र द्वारा सम्पादित इंडियन ओपिनियन को वैसा कुछ करने की स्वतन्त्रता नहीं है। पर जनरल स्मटस की सरकार के साथ न्याय किया जाए, तो यह तो कहना होगा कि जबान पर ताला डालनेवाले आर्डिनेंस यहा मौजूद हैं, और उनकी अवहेलना करने पर पाच वर्ष के कारावास जैसी बर्बरतापूर्ण व्यवस्था यहा है वहा वैसी कोई बात नहीं है। वहा इतना भर अवश्य किया जाता है कि इंडियन ओपिनियन के अकों में जो आपत्तिजनक समझे जानेवाले लेख प्रकाशित होते हैं उन्हें जब्त कर लिया जाता है। यहा अधिकारी लोग चाहें तो ऐसा ही कर सकते हैं।

ब्रिटेन और भारत की परिस्थितियों में भेद रखा खींचनेवाला एक पहलू और भी है। जैसा कि मैं बतला चुका हूं ब्रिटेन की कैबिनेट में इतनी तो समझ है ही कि उन लोगों ने विचार व्यक्त करने पर पाबंदी नहीं लगाई है। वहा शत्रु को सहायता देनेवाली खबर भी एक समाचार के रूप में प्रकट होती है। उदाहरण के लिए लदन टाइम्स में छपा कि कनाडियन सेनाएं फ्रांस के लिए रवाना हो चुकी हैं। यहा हमारे पत्रों में ऐसी खबर के प्रकाशित होने की कोई गुजाइश नहीं है। हमारे समाचार पत्र तो युद्ध सबधी उतनी ही सच्ची झूठी खबरें छापते हैं जो सरकार अथवा अर्द्ध-सरकारी समाचार एजेंसी प्रसारित करती है। हमारे निरीह समाचार पत्र विदेश स्थित सवाददाताओं की खर्चीली व्यवस्था का भार उठाने में असमर्थ हैं। इसलिए शत्रु के लिए सहायक समझी जानेवाली खबरों पर पाबन्दी

लगाने में क्या तुक है ? और इतने पर भी थोड़ी बहुत औचित्यपूर्ण पाबंदी के खिलाफ लंदन की नागरिक स्वतन्त्रता की राष्ट्रीय परिषद ने काक्स्टन हॉल में आवाज बुलन्द की। ईवनिंग स्टैण्डर्ड के सम्पादक श्री फ्रैंक ओवेन ने कहा हम पहले डफ कूपर तथा सर जान एण्डर्सन से निपटें तभी हम हिटलर से निपटने में समर्थ हो सकेंगे। हमें बोलने की, लिखने की, आपस में विचार विमर्श करने की पूरी आजादी होनी ही चाहिए। हम उन स्त्री पुरुषों के पास संदेश भेजने की आजादी होनी चाहिए जो अन्यत्र जंजीरों में जकड़े पड़े हैं।" गांधीजी की 'अंग्रेजों के नाम अपील' इंग्लैंड तक तार द्वारा भेजने की अनुमति केवल इस कारण दी गई थी कि उस समय उन्हें मित्र समझा जा रहा था। अब उन्हें शत्रु समझा जा रहा है और जब उस दिन उन्होंने एक ब्रिटिश समाचार पत्र के संवाददाता के साथ मुलाकात की तो सेंसर ने उसे निषिद्ध करार दे दिया।

इस संदर्भ में मैं एक सत्याग्रही का मुद्दा भी पेश कर दूं तो ठीक रहेगा क्योंकि उससे यह पता चलेगा कि वह आखिर चाहता क्या है। मैं समझता हूं, मैं यह जतलाने में सफल हुआ हूं कि ब्रिटेन तथा दक्षिण अफ्रीका में जितनी आजादी है उससे अधिक की कामना मैं नहीं करता। मैंने जो ब्रिटिश निर्णय उद्धृत किया है वह नैतिक अन्तःकरण से प्रेरित युद्ध विरोधी और राजनैतिक अन्तःकरण से प्रेरित युद्ध-समर्थकों के बीच किसी प्रकार का भेद नहीं करता। उक्त निर्णय ने यह बात असंदिग्ध रूप से प्रतिपादित कर दी है कि ईमानदारी के साथ व्यक्त किया गया विचार भले ही लोकतन्त्र के लिए अपाच्य हो वैसा विचार व्यक्त करने की आजादी की रक्षा करनी ही चाहिए। दक्षिण अफ्रीका में तो इस आजादी ने और भी उग्र रूप धारण कर रखा है। मैं आपको यह तो बता ही दूं कि हमारे ऊपर यह आरोप लगाना कि हम युद्ध प्रयत्नों को रोक रहे हैं हमारी मानहानि है। हम तो रंगरूट भर्ती करने के तम्बुओं के पास भी नहीं फटकते, न हम शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले कल-कारखानों का घिराव ही करते हैं और गांधीजी ने यह स्पष्ट घोषणा कर दी है कि हमारा वैसा करने का कोई इरादा भी नहीं है। जो स्वेच्छा से युद्ध में सहायता करना चाहता है करता रहे हम उसके कार्य कलाप में बाधा नहीं डालेंगे। हम जिस ढंग के कार्य-कलाप में बाधा डालेंगे वह है डरा धमकाकर यातना देकर और दबाव डालकर रुपया ऐंठना और हम अपने देशवासियों को यह बता देना चाहते हैं कि यदि उन्हें अहिंसात्मक प्रणाली से स्वराज्य हासिल करना है तो उन्हें इस युद्ध में ब्रिटेन के साथ सैनिक सहयोग नहीं करना चाहिए। हम अपने देशवासियों को युद्धजन्य प्रवृत्ति की छूत में बचाए रखना चाहते हैं। क्या यह कोई बेजा बात है ? अभी उस दिन एक ऐसे अंग्रेज से मिलने का

सयोग हुआ जो शांतिवादी कदापि नही है। वह बोला 'मैं जब स्वदेश लौटूगा, तो सेना म नाम लिखाऊगा क्योकि वहा हम लोग अपनी स्वतत्रता अक्षुण्ण रखने के लिए लड रहे हैं। पर यहा जो चीज मुझे असह्य प्रतीत हो रही है वह यह है कि एक ओर तो तरह तरह के उपायो का अवलम्बन करके युद्ध प्रयत्न जारी हैं और दूसरी ओर स्वतत्रता का गला घोटा जा रहा है।

आप लोगो के जिम्मे जनता के अधिकारो की रक्षा का काम है इसलिए सत्याग्रही की इस आधारभूत स्वतत्रता के लिए मोर्चाबन्दी आप ही कर सकते हैं। यदि आप यह प्राप्त कर लेते हैं तो सरकार व निग न सत्याग्रही की समस्या रह जाती है न राजनतिक व दी की और न युद्ध प्रयत्नो म बाधा डालने की ही। मुझे इस बात का पक्का यकीन है कि आप यह काय भार अत्यन्त प्रभावी ढग स उठा सकेंगे क्योकि इधर आप लोग इस स्वतत्रता का प्रतिपादन कर रहे हैं उधर आपको दुनिया भर की झूठी खबरें चिरन्तन सत्य के रूप म पकडाई जा रही हैं। यदि सरकार म कृतज्ञता लेश मात्र भी शेष है तो वह आपको स्वतत्रता प्रदान करने को बाध्य है। आशा है आप इस काम को हाथ म लेंगे और तब इस गति रोध का भी अन्त हो जाएगा। यह आपका महान योगदान होगा। आशा है आप यह योगदान करेंगे। मैं आपकी सफलता की कामना करता हू।

आपने मेरे प्रति जो सौजन्य प्रदर्शित किया और मेरी बात जिस धय के साथ सुनी मुझे विश्वास है कि मैंने आपके इस सौजन्य और उस धय का दुरुपयोग नही किया है।

१२९

सेवाग्राम, वर्धा
११ नवम्बर १९४०

प्रिय श्री लेथवेट

आपके ७ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

इस पत्र के लिए कोई कफियत देने की जरूरत नहीं है। समाचार पत्रो के प्रति सरकारी रवय की प्रतिक्रिया मे मैंने सरकार और काग्रेस के बीच चल रहे वतमान सघष के बारे मे सावजनिक रूप से वक्तव्य देना बन्द कर दिया है और अपनी योजनाओ को गोपनीय रखने का मेरा कोई इरादा नही है। फलत जब

तक वाइसराय महोदय मना न कर दें, मैं बीच-बीच मे आपको पत्र लिखता रहूगा।

मेरा यह इरादा था कि सविनय अवज्ञा को दो-तीन चुने हुए व्यक्तियों तक ही सीमित रखू और यदि वैसी प्रेरणा मिली और आवश्यकता प्रतीत हुइ तो उसकी पूर्ति असीमित उपवास से करू। पर मेरे उपवास के विचार से कार्यकारिणी के सदस्यो मे बडी बेचैनी फैल गई है। जगह-जगह से भाति भाति के लोगो और सहकर्मियो के तार आने लगे कि मैं उपवास का विचार त्याग दू। मुझे लगा कि यदि मुझे उपवास नही करना है तो पन्डित जवाहरलाल क खिलाफ सरकार की कारवाई के उत्तर म मेरे लिए कुछ-न कुछ करना आवश्यक है। जैसा कि मैंने अपने ० सितम्बरवाले पत्र म कहा था मैं इस आशा को अपनाय रहूगा कि सरकार के लिए काग्रेस की स्थिति के अनुरूप अपनी नीति को कार्यान्वित करना सम्भव होगा। मैं इसी भरोसे अब तक सयम से काम लेता आ रहा था कि सरकार की ओर से इस सकेत का वाछित उत्तर मिलेगा। पर ऐसा नही हुआ। मुझे कोई शिकायत नही है शिकायत करनी भी नही चाहिए। अब अपनी योजना मे हेर फेर की बात आपको बता देना आवश्यक हो गया है।

परिवर्तित योजना यह है कि अब विभिन्न वर्गों से छाट छाटकर सक्षम व्यक्तियो को सविनय अवज्ञा के लिए चुना जाएगा। फिलहाल जिन वर्गों का इस काय के निमित्त चुना गया है उनम कार्यकारिणी क सदस्य रहेंगे विधान सभाओ के सदस्य रहगे अखिल भारतीय काग्रेस कमटी के सदस्य रहेग तथा कुछ अन्य लाग भी रहेंगे। मुझे लगा कि पडित जवाहरलाल क साथ जो बरताव हुआ है और साथ ही जिस प्रकार श्री अच्युत पटवर्द्धन का, जिन्होंने अहिंसा म अपनी आस्था की घोषणा कर दी है गिरफ्तार किया गया है उसके बाद इस वर्ग के व्यक्तियो की यदि उनकी अहिंसा की भावना और रचनात्मक कार्यविधि म आस्था कसौटी पर खरी सिद्ध हो चुकी हो तो सविनय अवज्ञा करने म रोके रखना मेरे लिए उचित नहा होगा।

इस पत्र क साथ मैं उस निर्देश पत्र की नकल भेज रहा हू जो मैंने काग्रेसियो के नाम जारी किया है। कृपा करके उसे वाइसराय महोदय को दिखा दें।

मैं वाइसराय का ध्यान एक अन्य बात की ओर भी आकर्षित करना चाहता हू। मेरे पुत्र देवदास ने मेरे पास गृह-सचिव द्वारा कतिपय सम्पादकों के साथ की गई मुलाकात का ब्यौरा भेजा है। उस भेंट के दौरान माननीय गृह-सचिव ने कहा बताते हैं कि 'मिस्टर गाधी का उद्देश्य सरकार की युद्ध प्रवृत्तियो को ठप्प करना और इस प्रकार हिटलर की सहायता करना है।' यदि सर रजिनाल्ड ने सचमुच

ये उदगार व्यक्त किये हैं, तो मैं केवल इतना ही कहूँगा कि वह भ्रम में हैं। मेरा दावा है कि मैंने अब तक जो-कुछ भी कहा है उससे सर रजिनाल्ड की विलक्षणोक्ति का किसी भी रूप में प्रतिपादन नहीं होता। वस्तुत मैंने पडित जवाहरलाल ने तथा प्राय उन सभी असहयोग काग्रेसियों ने जिन्हें जेल भेजा जा चुका है ऐसा बार बार कहा है कि हम हिटलर की मदद नहीं करना चाहते। न मैंने कभी भी यह कहा है कि मैं सरकार की युद्ध प्रवृत्तियों को ठप्प करना चाहता हूँ। हाँ मैंने यह अवश्य कहा है कि हममें से जो लोग युद्ध में आस्था नहीं रखते अथवा जो वर्तमान युद्ध को ब्रिटिश साम्राज्यवाद की रक्षा के निमित्त लडा जानेवाला युद्ध समझते हैं वे अपना दृष्टिकोण अहिंसात्मक ढग से जनता के सामने रखने को स्वतंत्र हैं। वास्तव में जिस चीज से हिटलर तथा ब्रिटेन के शत्रुओं को सहायता मिलेगी वह है सरकार की नितात उत्तरदायित्वशून्य दमनकारी नीति। इसमें गिरफ्तारियाँ और दण्ड भी शामिल हैं जिनका कोई औचित्य नहीं है। मैं कम-से कम यह तो आशा करता ही था कि चोटी के आदमी औचित्य और न्याय से काम लेंगे और मेरे जैसे विनम्र जन सेवकों के मुँह से ऐसी बातें कहलाने से बाज आयेंगे जो उन्होंने कभी नहीं कही थीं।

भवदीय

मो० क० गांधी

१२७

नयी दिल्ली

११ ११ ४०

पूज्य बापू

श्री कृष्णदासजी का उत्तर मैंने पढा कुछ ज्यादा उसके उत्तर में लिखने का नहीं है। विशेषकर मिल के कपडे की कीमत के सम्बन्ध में उनको गलतफहमी है। इसलिए मैंने एक मिल का हिसाब भी भेज दिया है। उस मिल को साधारण तौर से कपडे के कारखानों का प्रतीक माना जा सकता है। बाकी तो ऐसे आकडे बावन तोला पाव रत्ती *की सीमा तक सही नहीं हो सकते।*

पुराने लेख मेरा नया उत्तर और कपडे के नमूने अलग डाक से जा रहे हैं।

विनीत

घनश्यामदास

सलग्न श्री घनश्यामदासजी का उत्तर

बिड़ला काटन एड स्पिनिंग मिल्स लिमिटेड दिल्ली

(१) कीमतो म ५ प्रतिशत कमीशन नही जोडा गया है। य कीमतें मई १९४० की बाजार दर पर आधारित हैं।

(२) इन कीमतो को वतमान मूल्य स्तर पर लाने के लिए इनमे १० प्रतिशत और जोडना होगा।

(३) इन कीमतो म लगभग १३ प्रतिशत और जोडना होगा जो बीचवाला का लाभ और मिल स ग्राहक तक पहुचान म होनेवाले खच से सम्बधित है।

(अ) मनेजिंग एजेंटा कपडा बेचनेवाले एजेंटो तथा दलालो के निमित्त ५ प्रतिशत।

(आ) औसतन तीन बिचौलिया के लिए ८ प्रतिशत।

(४) ये सारी कीमतें ४० इच चौडाई के कपडे के लिए हैं।

(५) ४० इच चौडे कपडे की औसतन कीमत मई १९४० म सवा दो आने फी गज थी जिसम कमीशन शामिल नही था।

(६) इस समय जो बढिया किस्म का कपडा तयार किया जा रहा है मई १९४० म उसका उत्पादन नाम मात्र का था।

७ ११-४०

११ नवम्बर १९४०

दो चीजो की हम तुलना करन बठें तो निष्पक्ष तुलना के लिए यह आवश्यक है कि दोनो चीजो को समतल रखकर हम तुलना करें। रात को आकाश मे हम तारे देखते हैं तो यद्यपि कइ तारे सूय म कई गुना बडे हैं तो भी व हमारी आखो को सूय की अपेक्षा अत्यन्त छोटे छोटे दिखाई देते हैं। यह इसलिए कि सूय हमार निकट और तारागण अत्यन्त दूर है। सूय और तारा के स्थूल शरीर को समान स्थिति मे रखना असम्भव है पर यदि हमे निष्पक्ष तुलना करनी है तो दोनो को कल्पना म तो हमे समतल स्थिति म रखना ही होगा। ऐसा नही करेंगे तो हम यह गलती से मान बठेंगे कि तारे छोटे हैं और सूय बडा है।

इसी तरह खादी और मिल क कपडे की तुलना करनी है तो या तो कोरी

खादी से कोरे कपडे की तुलना करें या मिल के सुपर फाइन कपडे की तुलना सुपर फाइन खादी से करें। सूत के नम्बर का भी प्रश्न उठता है। पर इसको तो मैं तुलना के क्षेत्र से बाहर निकाल देता हू। ४० न० से ऊचे मिल के सूती कपडे के मुकाबले मे ४० न० की खादी काफी महगी उतरेगी। इसलिए सूत के नम्बर को जान बूझकर इस तुलना मे बाहर निकालकर खादी की थोडी-सी तरफदारी कर ली है। पर दूसरी बातें मसलन कोरा कपडा और कपडे का प्रकार भी हम तुलना के क्षेत्र से बाहर रखेंगे तो जो सार निकलेगा वह ठीक नही होगा। इसी तरह कपडे की वितरण पद्धति को भी सामने रखना होगा। चरखा सघ की आज की स्थिति देखकर तुलना करनी होगी। और यदि खादी की आदर्श कल्पना करनी है तो मिलो की भी फिर आदर्श कल्पना करनी होगी। चाहे उस कल्पना मे पूजीपति को कोई स्थान न मिले और तमाम मिलें राष्ट्र की सम्पत्ति मान ली जायें। मेरा खयाल है कि खादीवाले हर हालत मे मिलो के प्रतिपक्षी हैं चाहे मिलें व्यक्तियो की सम्पत्ति मानी जायें या राष्ट्र की। इसलिए तुलना मिल पद्धति और खादी पद्धति की ही होनी चाहिए। तुलना करने के पहले हम दोनो का समान स्तर पर रख लें। कोई यह न कहे कि सूर्य और तारागण को यदि हम समान स्तर पर नही ला सकते तो फिर कल्पना मे हम दोनो को समान मान भी लें तो व्यावहारिक लाभ क्या होगा ? यह सही है पर खादी और मिल के कपडे पर यह लागू नही होता क्योकि खादी और मिल के कपडे दोनो को समान स्तर पर हम न केवल कल्पना मे बल्कि व्यवहार मे भी ला सकते हैं।

श्री कृष्णदास ने खादी पक्ष की सारी अच्छी दलीलो का सहारा लिया दीखता है मसलन लोग सादे बनकर भद्दा-सद्दा जो कपडा बिना ढग-ढाचे का मिले उसे पहनें घर मे कातें गाव मे बुनें गाव में ही रगे और न कोई दुकानदार और न व्यवस्था की जरूरत हो। आज की आदर्शच्युत खादी को कल्पना द्वारा आदर्श पर सिंहासनारूढ कराकर फिर आज की आदर्शच्युत मिलो से मुकाबला किया है। यह ठीक नही है। क्यो न मिलो को भी फिर हम आदर्श के सिंहासन पर बैठाकर खादी के साथ उसकी तुलना करें ? आदर्श पर बैठाने के लिए यह करना होगा कि सारे देश मे वे मिलें केन्द्रित न हो एक जगह उनका जमाव न होने पाये कच्चा माल भी विकेन्द्रित रीति से प्राप्त हो रुई राष्ट्रीय सम्पत्ति हो, मजदूरो की तनख्वाह उनके रहन-सहन आदि का नियत्रण राष्ट्र करे। बाहर की रुई से कोई कपडा न बुने महीन सूत के लिए यही रुई पैदा की जाये। इस तरह दोनो को आदर्श सिंहासन पर आरूढ करके फिर हम तुलना करें या फिर दोनो की आज की गिरी हुई दशा की तुलना करें।

आज की गिरी हुई दशा की तुलना करने मे खादी ज्यादा महगी साबित होगी, क्योकि खादी का टिकाऊपन मिल के कपडे के मुकाबले कम है। व्यवस्था खच ज्यादा , मोटी जाडी तो वह है ही। महीन सूतवाली खादी अत्यधिक महगी है। खादी यदि टिकाऊ नही होगी तो देश को कपडे के लिए अन्त म ज्यादा खच करना पडेगा और खादी ज्यादा महगी साबित होगी इसे नही भूलना चाहिए।

एक प्रश्न उठाया गया है कि २। आन गज कोरे कपडे की कीमत सही भी हो, तो आखिर म ग्राहक के पास पहुचते पहुचत तो कीमत बढ ही जाती है। इसलिए प्रस्तुत विषय तो यह है कि जनता कपडे पर क्या खच करती है न कि मिलवाले के घर म क्या कीमत पडती है। पर फिर खादी का भी तो इसी तरह हिसाब लगाना चाहिए। पर खर दोना को समान स्तर पर स्थापित करन की दलील तो मैं दे ही चुका हू। अब इसका पिष्ट-पषण नही करना है। पर श्री कृष्णदास की जानकारी के लिए कोर रग धुल विविध प्रकार के कपड ग्राहक के पास पहुचत पहुचते किस दाम म पडत हैं इसका औसत हिसाब भी दे देता हू।

मई १९४० म हमारी एक मिल ने औसतन दो आने ४॥ पाई मे कपडा बेचा। उसम रगीन कपडे धुल कपड विविध किस्म के सब तरह के कपडा का समावश है। इन कपडा के नमून भी मैं भेज रहा हू। इन सब पर दाम लिख दिये गय हैं। य दाम ४० चौडे कपडे के हैं। मिल और ग्राहक के बीच करीब ३ बिचौलिये और हैं और उनका मुनाफा भी जोड दें तो करीब १३ प्रतिशत होता है। इस हिसाब स ग्राहक का मई सन १९४० म करीब २ आने सवा आठ पाई प्रतिगज दाम देने पडे। इसक मान यह हुए कि हिन्दुस्तान की खपत के कुल कपडे की कीमत १९४० के मई माह म—यदि तमाम कपडा अर्थात ६३३ करोड गज मिलो म बनाया जाता ता—एक करोड छह लाख रुपया होता। इसम रगाई धुलाई बीच बिचौलियो की आढत दलाली मुनाफा सारा आ गया है। रेल का किराया नहा आया है। रेल का किराया औसतन ४ प्रतिशत पडता है पर ये सब चीजें हम जोडते हैं तो खादी म भी इन्हें जोडना होगा। खादी आदश स्थिति मे पहुच जायेगी, तब भी कपडे का किराया नही तो रुई का किराया तो लगगा ही। बगाल पूर्वी यू० पी० बिहार उडीसा और अन्य ऐस कई प्रान्तो को रुई अन्य प्रान्तो स मगानी होगी। इस सारी कीमत म से जा रकम मिल मालिक के अलावा दुकानदार आढतिये दलाल या गाव के महाजन की जेब म जाती है उसे अपव्यय मानना है या ता शुद्ध सेवा का मेहनताना मानना है यह तो अपने अपने मत की बात है। आदश कल्पना मे भी छोटे दुकानदार को कोई स्थान नही रहेगा ऐसा मान ना कठिन लगता है।

जो हो कुल कपडे की असल कीमत भी तो मैंने दे दी है। अब जो भी निष्कर्ष निकालना हो निकाला जाय। ध्यान रहे इन दिनो कपडे के दाम कुछ चढ गये हैं। मैंने जो दाम दिये हैं वे मई १९४० के दामो के आधार पर हैं। लडाई से पहले इससे भी काफी कम दाम हो चले थे लडाई के बाद धीरे धीरे रुई और कपडे दोनो के दाम बढे हैं शायद और भी बढें।

विनीत
घनश्यामदास

१२८

[गाधीजी द्वारा ११ नवम्बर १९४० को श्री जे० जी० लेथवेट को लिखे पत्र का टेलिफोन पर प्राप्त साराश]

सरकार ने प्रेस के सबध मे जो कारवाई की है, उसके उत्तर मे मैंने किसी प्रकार का वक्तव्य देना मुल्तवी रखा है। मैं अपनी योजनाओ को गोपनीय नही रखना चाहता हू। जब तक महामहिम वाइसराय स्वय मना न कर दें मैं उन्हें पत्र लिखता रहूगा। मैं यह आशा लगाये बैठा था कि सत्याग्रह दो या तीन व्यक्तियों तक ही सीमित रखना यथेष्ट होगा उसके बाद यदि मैं देखता कि सीमित अथवा असीमित उपवास करना जरूरी है तो वैसा भी करता। पर कार्यकारिणी उपवास की सम्भावना से स्तब्ध रह गई है। मुझे लगता है कि कार्यकारिणी की बात मानू और जवाहरलाल के सबध मे सरकार ने जो कारवाई की है उसका किसी न किसी रूप मे उत्तर दू। मेरा सयम सरकार के प्रत्युत्तर पर निर्भर करता था जैसा कि मैंने अपने ३० सितम्बर के पत्र मे इगित कर दिया था।

अपने परिवर्तित रूप मे अब योजना यह है कि खास-खास वर्गों से सत्याग्रही छाटे जायें। इस समय जिन वर्गों मे से सत्याग्रही लिये जायेंगे, वे विधान-सभाओ और कार्यकारिणी के सदस्य हैं। मुझे लगा कि पडित जवाहरलाल नेहरू के साथ जो तौर-तरीका बरता गया उसी समय अच्युत पटवर्द्धन की गिरफ्तारी हुई उसके बाद अब कार्यकारिणी की इस अभिलाषा की कि सविनय अवज्ञा का क्षेत्र विस्तृत किया जाए पूर्ति होनी चाहिए बशर्ते कि सत्याग्रह मे भाग लेनेवाले मेरी कसौटी पर खरे उतरें। मैं काग्रेसियों को जो निर्देश भेज रहा हू उसकी एक प्रति इस पत्र के साथ भेजी जा रही है।

मेरे पुत्र देवदास ने सर रजिनाल्ड मक्सवेल के साथ अपनी बातचीत का ब्यौरा भेजा है जिसम उन्होंने यह कहा बताते हैं कि मैं हिटलर की सहायता करने को आतुर हू। मैं केवल इतना ही कह सकता हू कि यह बिलकुल गलत बात है। सर रजिनाल्ड के इस विचित्र कथन का कोई औचित्य नही है। हम लोग हिटलर की सहायता करने के इच्छुक नही हैं। मैंने यह कभी नही कहा कि मैं सरकार की युद्ध प्रवृत्तियो को ठप करना चाहता हू पर जो लोग युद्ध कर्म म अथवा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के इस युद्ध म आस्था नही रखते उन्हें अपने विचारो का प्रतिपादन करने की स्वतत्रता होनी चाहिए। हिटलर को जिस चीज म सहायता मिलेगी वह तो वतमान उत्तरदायित्वशून्य दमन-नीति का अनुसरण है।

१२६

महादेव देसाई की दिल्ली डायरी के कुछ अश

१

११ ११ १९४०

खुफिया विभाग के डाइरेक्टर जनरल श्री पत्रिल और गृह विभाग के अतिरिक्त सेक्रेटरी सर रिचार्ड टोटनहाम स भेंट हुई।

भोजन क समय टोटनहाम की बातचीत मे राजनतिक प्रसग नही उठा। उसन बताया कि कुछ समय पहले तक वह सेना विभाग का सक्रेटरी था और वर्षों पहले मद्रास सिविल सर्विस म एक जूनियर पदाधिकारी था। अकले मक्सवेल का छोडकर बाकी सारे गृह विभाग म मद्रास सिविल सविस के लोग छाये हुए हैं। उदाहरण के लिए कानरान स्मिथ थान और खुद टोटनहाम। उसने बापू के वक्तव्यो और लेखो की चर्चा करत हुए जानना चाहा कि यह सब व स्वय लिखत हैं या बोलकर लिखाते हैं। जब मैंने उसे बताया कि बापू न अपन कुछ महत्त्वपूर्ण वक्तव्य बोलकर लिखाये हैं उदाहरण के लिए १९३१ की सुलह के बाद वाला वक्तव्य—जिसे उन्होंने एक विराम या अद्ध विराम का हेर फेर किये बगर प्रकाशनाथ जारी किया है तो वह ताज्जुब म रह गया। वह बोला 'मुझम इतना अधिक ध्यान केन्द्रित करने की सामथ्य नही है और मैं वक्तव्य कभी बोलकर नही लिखा सका। जब लखा का जिक्र आया और मैंने बताया कि बापू अपन लख

मुख्यत अपने मौन दिवस—सामवार—को लिखत हैं तो उसने कहा मैं समझता हू इस मामले म यदि हम सब उनका अनुकरण करें तो बड़े फायदे मे रहे। क्या ही अच्छा हो यदि ससार भर म हफ्ते का एक दिन मौन दिवस घोषित कर दिया जाये तो हमारे तनाव के अधिकाश कारणा का अत हो जाये। 'वह मुझे पुराने ढग का अफसरशाह प्रतीत हुआ—कोमल भावनाआ स शून्य और कठोर।

भोजन के बाद पक्लि आया और मरे पास बठ गया। उसने कहा कि वह मुझसे लेथवेट के माध्यम स परिचित है। उसन राजनीति के क्षेत्र से बाहर की बातो की ओर पुस्तको की चर्चा की एव ऐस व्यक्तियो का जिक्र छेडा, जिनका राजनीति से कोइ लगाव नही था। उसकी वार्ता का ढग अत्यत परिष्कृत और रोचक था। इसके बाद उसने पूछा क्या महात्मा के लिए अब हरिजन का प्रकाशन पुन आरम्भ करना सम्भव होगा ?

मैं उम्मीद तो है पर निश्चित रूप से नही कह सकता। मैंने अपने एक सहकर्मी से फोन पर बात की थी और मेरे विचार म गाधीजी मेरे वापस लौटने तक कोई निणय नही लेंगे। जिस भाषा म शासन की विनप्ति प्रकाशित हुई है, वह अत्यत आपत्तिजनक है। पर मैं मानता हू कि वह हरिजन पर लागू नही होती। पर मान लीजिए 'हरिजन पुन प्रकाशित हो तो क्या आप इतना भर ही करके रुक जायेंगे ?

पक्लि क्या करना चाहिए ?

मैं क्या यह गतिरोध दूर करने का कोई उपाय नही है ?

पक्लि इस समय ? मिस्टर गाधी से पार पाना बडा कठिन है। मैंने उनकी नेकनीयती मे कभी शक नही किया पर कभी कभी वह स्वय ही अपना खण्डन करते प्रतीत होत हैं। वह इस बात की ओर ध्यान देते दिखाई देते हैं कि उनके वक्तव्या और कार्यों का क्या अनिवाय परिणाम होगा। वह परेशान करना तो नही चाहत पर वह जो कुछ कहते या करते हैं उसस परेशानी अवश्य होती है।

मैं इस प्रसग को मैंने कल अपनी एक स्पीच म छेडा था। उसकी रिपोट की एक नकल आपके पास भेज दूगा। गाधीजी सेना या शस्त्रास्त्र निर्माण करन म लगे हुए श्रमिको को तो सम्बोधित करने से इकार करते आ रहे हैं फिर वह विचार व्यक्त करने की आजादी की माग पर अडे रहने-मात्र से सरकार को किस रूप म परेशान करते हैं ?

पक्लि सो ता मैं देख रहा हू पर प्रचार काय का प्रभाव दूरगामी है।

मैं दूरगामी हो सकता है पर वह इतनी दूर तक कदापि नही पहुच पायगा कि उसका रजवाडा पसेवालो और युद्ध म रुचि रखने वालो से मिलनेवाली सहायता पर प्रभाव पडेगा। गाधीजी की अपील उन लोगा तक नही पहुच पायेगी।

पक्लि जो बात मुझे सबसे अधिक व्यग्र और चकित कर रही है वह यह है कि जो शख्स पिछले १६ महीना से हमारा सहायक सिद्ध होता रहा अब उसने विपरीत दिशा मे मुह कर लिया है।

मैं मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हू। आप जो बात कह रहे हैं क्या वह मनोवज्ञानिक दृष्टि से सम्भव है? आप किसी आदमी की नेकनीयती पर शक नही करते और उसकी ईमानदारी के कायल हैं और यह भी स्वीकार करते हैं कि वह चीजा का आध्यात्मिक मूल्याकन करने की क्षमता रखता है। सक्षेप मे, आप उसे अपना सहायक समझते हैं। क्या ऐसे आदमी के लिए सहसा सहायक होने से मुह मोडना सम्भव है? मेरी समझ म यह मनोवज्ञानिक दृष्टि से असम्भव है।

पकिल वह भ्राति म पडकर वैसा कर सकता है।

मैं नही इस धारणा म कही मौलिक भ्राति है।

पकिल फज करिये मिस्टर गाधी जिस स्वच्छदता की माग कर रहे हैं वह उन्हे दे दी जाती है तो इसकी क्या गारटी है कि विशाल जन समुदाय उस स्वच्छदता का दुरुपयोग नही करगा?

मैं यदि आप यह मानते है कि भूतकाल म गाधीजी सयम से काम लेने की दिशा म बडे उपयोगी सिद्ध हुए तो भविष्य मे भी वह अपने वसे ही प्रभाव का उपयोग करेंगे, इस बारे मे आपका समाधान होना चाहिए। सब कुछ विश्वास और अविश्वास पर निभर करता है।

पक्लि यह खुशी की बात है कि आप मक्सवेल और टोटेनहाम से बात कर रहे हैं। इस मामले म यही दो आदमी महत्त्व के हैं। आपको मालूम ही है कि मक्सवल की तबीयत ठीक नही है और साथ ही उन्हे कई एक सविनय अवज्ञा-आन्दोलनो से निपटना पडा था। इसका उनके स्वास्थ्य पर काफी बुरा प्रभाव पडा है।

मैं मैं जानता हू कि मैं जब कभी उनसे मिला वह क्लात और चिन्तित

प्रतीत हुए। पर आशा है आप उनकी रुग्णता का सारा दोष हमारी दुष्टता के मत्थे नही मढेंगे।

पकिल नही नही हरगिज नही। मगर मैं आपको मनोविज्ञानवाला पहलू बताना चाहता था। वह बहुत खीजे हुए हैं और उनमे कुछ कुढन भी पैदा हो गई है।

ये बातें होते होते रात के ११ बज गये। हम लोग उठ खडे हुए। टोटेनहाम श्रीनिवासन के साथ आया। श्रीनिवासन ने कहा शायद महादेव ठीक खबर देंगे। क्या महादेव क्या जवाहरलाल ने अपनी गोरखपुरवाली स्पीच मे यह कहा था कि सेना मे भर्ती मत होओ और रुपया पैसा मत दो ? अर्थात क्या उन्होने सत्याग्रही चुने जाने से पहले यह कहा था ?

मैं मैं तो ऐसा नही समझता। उन्होने ऐसा नही कहा होगा। उन्होने अदालत म लगभग ऐसी ही बात कही थी।

टोटेनहाम पर मैंने सरकारी रिपोर्टें देखी हैं। हा श्री नेहरू ने उन रिपोर्टों को चुनौती अवश्य दी थी।

मैं आपने उनका बयान तो देखा ही होगा। उन्होने उस बयान म जो कुछ कहा क्या अपनी स्पीचो म उससे कुछ अधिक कहा होगा ?

टोटेनहाम हा उन्होने कहा था।

मैं आपने अदालत का फैसला देखा है ? क्या उसमे अधिक घटिया चीज कभी आपके पढने म आई है ?

टोटनहाम हा इस मामले मे मैं आपसे सहमत हू। फैसला बहुत घटिया किस्म का रहा और जो दण्ड दिया गया उससे हम सब हक्के-बक्के रह गये थे।

श्रीनिवासन आपको दण्ड घटाने की दिशा मे कुछ न-कुछ अवश्य करना चाहिए।

मैं मेरा उससे कोई सरोकार नही है। मेरे विचार मे उन्हें दोषी करार देना एक गलत काम हुआ। उनके बयान से यह पता लग जाता है कि उन्होने अपनी स्पीचो म क्या कहा होगा और उन्होंने अपने बयान मे उससे अधिक कुछ नही कहा जो हम गत वर्ष के सितम्बर मास से कांग्रेस के प्रस्तावो मे कहते आ रहे हैं।

सुबह साढे दस बजे इगलिश आया। उसने कहा कि वह मेरी स्पीच का उपयोग करेगा। उसने आज सुबह जो कुछ कहा, उससे उसके स्काट-सुलभ हठीलेपन का पता चलता है। उसने कहा कि हम लोग जिस स्वच्छदता का दावा कर रहे हैं वह इग्लैण्ड के लोगो तक को नसीब नहीं है वहा यदि कोई आदमी हमसे कहने

लाग कि फौज में भर्ती मत होओ और रुपया पैसा मत दो तो उसे जेल में ठूंस दिया जायगा।

मैं शांतिवादी ऐसा कर रहे है। 'पीस यूज' ऐसा कर रही है। रही युद्ध के खिलाफ आवाज उठानेवालो की सख्या की बात सो उनकी सख्या के थोडे होने का एकमात्र कारण यह है कि यह लडाई आप लोगो की लडाई है और आप लोग आजाद हैं। पर यहा यह लडाई हमारी लडाई कदापि नही है इसे हमारे ऊपर लादा गया है। दोनो स्थितियो में आकाश पाताल का अतर है।

इगलिश आपने जिस अदालती फैसले का जिक्र किया है उसमे केवल इतना ही कहा गया है कि श्री नेहरू ने अदालत के सामने अपने बयान में जो-कुछ कहा उसे कहने का उन्हे अधिकार था पर यदि वह वही बात सर्व साधारण के सामने खुल्लम-खुल्ला कही जाय तो वह आपत्तिजनक मानी जायगी।

मैं हैरत है। दोनो प्रकार के अधिकार एकसमान हैं अतर केवल वस्तु स्थिति का है क्योकि इग्लैड एक स्वाधीन देश है और वहा कम्युनिस्टो को छोड और किसी के लिए राजनैतिक आधार पर युद्ध के खिलाफ आवाज बुलद करने का मौका नहीं है पर अदालत का निर्णय वैसा अधिकार प्रदान करता है। परन्तु दक्षिण अफ्रीका में तो जो स्पीचें दी जा रही हैं, वे आग के शोले उगल रही हैं। उनके बारे मे आपका क्या कहना है ?

२

१२ ११ ४०

टाटनहाम ने बताया कि उसे मैक्सवेल ने मुझसे यह बतलाने को कहा है कि यदि मुझे कोई बात कहनी है तो टोटेनहाम को कह दू और बाद में यदि मुझे ऐसा लगे कि मैक्सवेल से मिलने की जरूरत है तो मैं उससे मिल सकता हू पर असम्बली के काम-काज के कारण उसके पास समय का अभाव है।

टोटेनहाम ने मेरी स्पीच और विनोबा पर लिखे गये मेरे लेख को मनोयोग से पढा। मैंने दोनो ही उसके पास भेज दिये थे। मेरा यह विचार कि इग्लैड मे किसी भी शांतिवादी को जो चाहे कहने की स्वतन्त्रता है बशर्ते कि वह अपने कार्य-क्षेत्र से शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले कारीगरो तथा सैनिको को अलग रखे उसके

लिए एक नयी बात थी। उसने पत्र-व्यवहार पर भी नजर घुमाई और अब उसने चाहा कि मैं विशेषरूप से उसे समझाऊं। उसे अपना विचार समझाने में कोई आधा घण्टा लगा। इसके बाद उसने कहा

मैंने यह समझ रखा था कि शस्त्रास्त्र निर्माण करनेवाले का उल्लेख दृष्टांत के रूप में था एकमात्र उनको ही उद्घोषणा की परिधि के बाहर रखने के रूप में नहीं था पर पत्र से पता चलता है कि मिस्टर गांधी इन दोनों का उल्लंघन करने की छूट अपने तक सीमित न रखकर दूसरों के लिए भी चाहते हैं।

मैं — आपने उनका ताजा वक्तव्य नहीं देखा है। इसके बाद मैंने बापू के सविनय अवज्ञा संबंधी वक्तव्य के कुछ अंश पढ़कर सुनाये।

टोटनहाम — तो उन्होंने अपनी स्थिति में हेर-फेर किया है।

मैं — नहीं पत्र-व्यवहार से यह स्पष्ट है कि वह यह छूट सिद्धांत रूप में सबके लिए चाहते हैं।

टोटनहाम — अब समझा। आपने राजनैतिक आपत्तिकर्त्ताओं और अंतःकरण से प्रेरित आपत्तिकर्त्ताओं में जो भेद किया है वह मैंने पहले नहीं समझा था। पत्र व्यवहार उन लोगों में जो सभी युद्धों के विरुद्ध हैं और उनमें जो इस युद्ध के खिलाफ हैं भेद करता है। ठीक है और जो-कुछ कहना है कहिए। आपने इंग्लैंड और भारत में जो भेद किया है वह भी मैं देख रहा हूं।

मैं — और भारत और दक्षिण अफ्रीका में जो भेद है उसे भी ध्यान में रखिये।

टोटेनहाम — पर आप यह तो मानते ही हैं कि कानून एकसमान है ?

मैं — कानून एकसमान हुआ कर उसे अलग-अलग तरीकों से अमल में लाया जाता है। दक्षिण अफ्रीका में यूरोपियन लोग खुल्लमखुल्ला विद्रोह तथा स्टाम ट्रूपरों की टुकड़ियों का आयोजन करने की बात कर सकते हैं। दक्षिण अफ्रीका में तो कानून भी भिन्न प्रकार का है। वहां स्मट्स ने हर्टजोग की पार्टी को ध्यान में रखकर कानून को अधिक लचीला बना रखा है। वहां जो कानून लागू है उसके अंतर्गत सरकार की युद्ध संबंधी सारी नीति को धिक्कारने का अधिकार प्रदान कर दिया गया है। हां युद्ध संबंधी किसी विशिष्ट कारवाई को धिक्कारने का अधिकार नहीं है।

टोटेनहाम — कृपा करके मुझे इन बारीकियों में मत ले जाइये। मैं जो बात नोट कर रहा हूं वह यह है कि जब कोई यूरोपियन कानून का उल्लंघन

करता है, तो उसका बाल बाका नही होता।

मैं ठीक है आपने इतना तो नोट कर लिया फिलहाल मैं इससे सतुष्ट हो जाऊगा। साथ ही यह बात भी है कि यदि वहा कोई भारत वासी कानून का उल्लघन करने का दोषी ठहराया जाता है तो उसे या तो २५ पौण्ड जुर्माने की सजा मिलती है या एक महीने के कारावास की। इस निणय के खिलाफ अपील दायर की गई है और सम्भव है सुप्रीम कोट निणय को रद्द कर दे।

टाटनहाम अच्छा ऐसी बात है! अब मैं आपसे यह जानना चाहूगा कि मिस्टर गाधी सहसा अपना रवया क्या बदल डालते हैं। युद्ध के प्रारम्भ म उन्होने बिना शत सहयोग की बात कही थी और सबने उनके इस कथन का स्वागत किया था। वाह! बूढे गाधी ने तो कमाल का काम किया।' उसके बाद मोदेबाजी और राजनतिक पैंतरेबाजी का दौर शुरू हुआ और अब सविनय अवज्ञा की बारी है!

[इस पर मैंने टोटनहाम को बताया कि आरम्भ मे बापू ने जो रवया अख्तियार किया था वह इस विश्वास को लेकर किया था कि इग्लड भारत के साथ न्याय करेगा। मैंने कहा कि उस अवसर पर भी बापू ने वाइसराय के सामने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनका अभिप्राय नतिक सहयोग मात्र से है। ऐसा उन्होने राजनैतिक प्रेरणा से अनुप्राणित काय कारिणी के विरोध के बावजूद किया था, क्योकि उसे यह भरोसा नही था और वह इग्लड द्वारा असदिग्ध घोषणा की माग पर अडी हुई थी। पर इग्लड ने बापू के इस सद्भावपूर्ण सकेत का समुचित उत्तर नही दिया। फिर वाइसराय की घोषणा आई और एमरी ने वक्तव्य दिया। यही सब होता रहा। बापू पूरे एक साल तक रुके रहे। अब कही जाकर उन्होने व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा का श्रीगणेश किया है और सो भी सीमित क्षेत्र म ही रहकर।]

टाटनहाम पर वस्तुस्थिति यह है कि उन्होने नतिक सहयोग का वचन दिया। अब वह नतिक सहयोग तक प्रदान करने को तयार नही हैं। उन्होने जो नैतिक सहयोग का वचन दिया था कोई शत लगाये बिना दिया था। अब वह वसा नतिक सहयोग देने से इकार कर रहे हैं।

मैं अगर आप अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अधिवेशन के बाद 'न्यूज क्रानिकल' के प्रतिनिधि को दिये गये उनके वक्तव्य को एक बार पढ जायेंगे, तो आपको जितना कुछ बता सका हू उससे कही अधिक स्पष्टता के साथ सारी बात आप समझ जायेंगे। (टाटेनहाम ने वह वक्तव्य पढा।)

टोटेनहाम तो यह बात है! अब समझ मे आ गया। उन्होने एक वर्ष के भीतर देख लिया कि इग्लैड ने औचित्य से काम नही लिया। इसी कारण उनके रवये मे परिवर्तन हुआ है।

मैं बिलकुल यही बात है। उन्होने भरोसे की भावना के साथ प्रारम्भ किया था। वह भरोसे की भावना आमूल नष्ट हो गई है।

टाटेनहाम ठीक है। अब मैं यह जानना चाहूगा कि मिस्टर गाधी यह किस प्रकार कहते हैं कि वह युद्ध प्रयत्नो को ठप नही करना चाहते।

मैं ऐसा उन्होने स्पष्ट शब्दो मे कहा है। आपने वाइसराय के नाम उनका पत्र देखा है?

टोटेनहाम नही तो।

[मैंने वाइसराय के नाम बापू के पत्र का वह अश पढ सुनाया जिसमे उन्होने कहा था कि सरकार को रजवाडो, पैसेवालो और युद्ध मे रुचि रखनेवालो से जो सहायता मिलती है उसीसे सतुष्ट रहना चाहिए। काग्रेस का उन लोगो पर कोई प्रभाव नही है।]

टाटेनहाम यह तो है पर यदि वह प्रभाव डालने मे समर्थ हो जायें तो प्रभाव डालेंगे ही! सामर्थ्य न सही अभिलाषा तो है ही।

मैं ठीक है ऐसा ही समझ लीजिए। पर उनमे सामर्थ्य होती और यदि वह समस्त भारत को अपने साथ लेकर चल सके होते तो जिस ढग से आप उनका प्रतिरोध अब कर रहे हैं उस ढग से कदापि न करते। वस्तुस्थिति यह है कि आपको इस समय जो सहायता मिल रही है उसे आप स्वेच्छापूर्वक दी गई बता सकते हैं। गाधीजी उस सहायता को स्पर्श तक करना नही चाहते पर आपको ऐसी सहायता भी तो मिल रही है जो स्वेच्छापूर्वक नही दी जा रही है बल्कि डरा धमकाकर यातनाए देकर और बलपूर्वक प्राप्त की जा रही है। बस गाधीजी इस कोटि की सहायता के खिलाफ आवाज उठाना चाहते हैं। मैं यह भी कहना चाहूगा

कि जो लोग सहायता कर रहे हैं और जो किसी प्रकार यह समझ बठे हैं कि उन्हें सहायता करनी ही चाहिए उनके काय म किसी प्रकार की विघ्न-बाधा न डालन के मामले मे गाधीजी कितन सचेत है। यदि वह चाह तो बिडला-बन्धुओ को सहायता देन स रोक सकते हैं पर उन्होंने वैसा कभी नही किया बल्कि वसी सहायता देने की इजाजत तक दी है। [मने दो एक अन्य उदाहरण भी पश किये।]

टोटेनहाम यह बडे सतोप की बात है।

मैं और क्या मैंने आपका यह नही बताया कि विनाबा तक न अपनी पहली स्पीच मे जिसे आप हिंसात्मक बताते हैं यही बात कही है?

टोटेनहाम खुद उन्हान यह कहा था।

मैं हा उस स्पीच म उन्होने यही कहा था कि यदि उनके लिए लोगो को फौज म भर्ती होने से राक सकना सभव होता तो भी वह वसा न करते। उन्होने कहा था कि वह तो सभा मच से ही अपील करके सतुष्ट हैं।

टोटेनहाम मुझे मालूम है।

मैं क्या आप इतन स सतुष्ट नही हैं?

टाटेनहाम लोग बाग दुनिया भर की बेहूदा बातें करते रहने का स्वतत्र है, कोइ उनकी बात की ओर कान नही देता। पर जब आप इस ढग की अपील करते है आप उनसे सहायता करने को नही कहत और यहा आप अनपढ जनता के सामने बोलते हैं तो उनका प्रभावित होना स्वाभाविक है।

मै आपने विनोबा और जवाहरलाल की स्पीचें देखी ही हैं। क्या आपको उनमे ऐसी कोइ बात लगती है? आपको यह भी मालूम हाना चाहिए कि पिछले एक वष म जवाहरलाल न सकडा स्पीच दे डाली होगी और तिसपर भी वह जन साधारण का प्रभावित नही कर पाय।

टाटेनहाम आपके कहने का शायद यह अभिप्राय ह कि यदि मिस्टर गाधी का प्रभाव मौजूद न रहता तो जवाहरलाल इससे बहुत पहल जल भज दिय जात।

मैं ऐसा ही समझिय। आप लागा ने उन्ह इतना क्रुद्ध कर दिया था

मैं — अगर आप अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के बाद 'यूज आनिवल' के प्रतिनिधि को दिये गये उनके वक्तव्य को एक बार पढ जायेंगे तो आपको जितना कुछ बता सका हू उसमे कही अधिक स्पष्टता के साथ सारी बात आप समझ जायेंगे। (टाटेनहाम ने वह वक्तव्य पढा।)

टाटनहाम — तो यह बात है! अब समझ मे आ गया। उन्होने एक वर्ष के भीतर देख लिया कि इंग्लैड ने औचित्य से काम नही लिया। इसी कारण उनके रवैये मे परिवर्तन हुआ है।

मैं — बिलकुल यही बात है। उन्होने भरोसे की भावना के साथ प्रारम्भ किया था। वह भरोसे की भावना आमूल नष्ट हो गई है।

टाटनहाम — ठीक है। अब मैं यह जानना चाहूगा कि मिस्टर गाधी यह किस प्रकार कहते हैं कि वह युद्ध प्रयत्नो को ठप नही करना चाहते।

मैं — ऐसा उन्होने स्पष्ट शब्दो मे कहा है। आपने वाइसराय के नाम उनका पत्र देखा है ?

टाटनहाम — नही तो।

[मैंने वाइसराय के नाम बापू के पत्र का वह अश पढ सुनाया जिसमे उन्होने कहा था कि सरकार को रजवाडो पैसे वालो और युद्ध में रुचि रखनेवालो से जो सहायता मिलती है उसीसे सतुष्ट रहना चाहिए। कांग्रेस का उन लोगो पर कोई प्रभाव नही है।]

टाटनहाम — यह तो है पर यदि वह प्रभाव डालने मे समर्थ हो जायें तो प्रभाव डालेंगे ही! सामर्थ्य न सही अभिलाषा तो है ही।

मैं — ठीक है ऐसा ही समझ लीजिए। पर उनमे सामर्थ्य होती और यदि वह समस्त भारत को अपने साथ लेकर चल सकें होते तो जिस ढग से आप उनका प्रतिरोध अब कर रहे हैं उस ढग से कदापि न करते। वस्तुस्थिति यह है कि आपको इस समय जो सहायता मिल रही है उसे आप स्वेच्छापूर्वक दी गई बता सकते हैं। गाधीजी उस सहायता को स्पर्श तक करना नही चाहते पर आपको ऐसी सहायता भी तो मिल रही है जो स्वेच्छापूर्वक नही दी जा रही है बल्कि डरा धमकाकर यातनाए देकर और बल पूर्वक प्राप्त की जा रही है। बस गाधीजी इस कोटि की सहायता के खिलाफ आवाज उठाना चाहते हैं। मैं यह भी कहना चाहूगा

मैं मानता हू, नही हुई। पर आपने जो भारत को उसकी सहमति के बगैर एक युद्धरत देश करार दे दिया यह मत्र उसीका परिणाम है।

टाटनहाम म आपसे सहमत हू और मैं यह स्वीकार करता हू कि वसा करना एक गलती थी। पर आप लोग भी तो एक बात पर कायम नही रहे। आपकी शिकायत यह थी कि भारत को उसकी रजामदी हासिल किये बगर लडाई मे ढकेल दिया गया। बाद मे इस शिकायत को आधार बनाकर आप सौदेबाजी करने लगे।

म जब मैं आपको साफ-साफ बता चुका हू कि काग्रेस युद्ध के दौरान पद ग्रहण करने की इच्छुक नही है तो सौदेबाजी का सवाल ही कहा उठता है? और यदि सौदेबाजी की बात ही ली जाय तो मैं कहूगा कि जो लोग बराबर सौदेबाजी मे लगे रहते हैं उन्हे दूसरो पर कीचड उछालने से बाज आना चाहिए पर आप कही गाधीजी पर तो सौदेबाजी करने का आरोप नही लगा रहे हैं?

टाटनहाम नही, कदापि नही पर मेरी यह धारणा अवश्य है कि वह देख रहे थे कि काग्रेस का प्रभाव नष्ट हो रहा है और उसके हाथ मे अधिकार निकल गया है फलत उन्होने यह आन्दोलन खडा किया।

मैं तो फिर उन्हे देशव्यापी आन्दोलन छेडकर लाख पचास हजार आदमियो से जेलें भरने से कौन रोक सकता था?

टाटेनहाम ऐसा करना आपके लिए सम्भव नही है। इस समय भी कुछ सौ आदमी जेलो मे हैं।

मैं कुछ-हजार।

टोटेनहाम यह आपकी भूल है। कुछ-हजार आदमियो पर मुकदमे भले ही चलाये गये हो पर जेलो मे १२०० से अधिक नही हैं।

मैं यदि आप यह स्वीकार करते हैं कि कुछ-हजार आदमियो को दण्डित किया गया तो मुझे और अधिक कुछ नही कहना है। मुझे यह देखकर हैरानी हो रही है कि आप यह बात नही समझ पा रहे हैं कि गाधीजी ने अहिंसा और परेशान न करने की भावना से प्रेरित होकर स्थिति को काबू मे रखा है और जेलें भरने से बचे रहे हैं। यदि वह चाहते तो ऐसा कर सकते थे।

टाटनहाम तो इस सीमित व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा से उन्हें क्या हासिल

कि इसके सिवा उनके पास और कोई चारा ही नहीं था।

टोटेनहाम पर वह एक साल पहले भी ऐसा कर सकते थे।

मैं आपके कहने का तो यह मतलब हुआ कि हम जो साल भर रुके रहे यह हमारा कसूर था।

टोटेनहाम नहीं मैं तो सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप राजनैतिक चाल चलते आ रहे हैं।

मैं और आपकी धारणा है कि इस समय भी गांधीजी राजनैतिक चाल चल रहे हैं ?

टोटेनहाम *अब तक वह एक चाल में नाकामयाब रहे और यह उनकी दूसरी चाल है।*

मैं आप ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहें तो कीजिए पर आप वस्तु स्थिति की ओर से आंख मूंदे हुए हैं। आप यह भूल जाते हैं कि कांग्रेस राजनैतिक पैंतरेबाजी को कभी की तिलांजलि दे चुकी है। उसे गद्दी हासिल करने की ख्वाहिश नहीं है। मैं आपको यह बता देना चाहता हूँ कि अकेले गांधीजी की अहिंसा ने उसे यह त्याग अपनाने को बाध्य किया है। मैं यह भी बता दूं कि उपवासवाला विचार कोई अनोखा नहीं है। बहुत पहले जब उन्होंने देखा कि कार्यकारिणी जिस प्रवृत्ति से अनुप्राणित है यदि उसे चुनौती नहीं दी गई तो समूचा देश हिंसा की भावना से ओतप्रोत हो जायगा तो उन्होंने उपवास की सम्भावना की चर्चा की थी क्योंकि उन्हें लग रहा था कि यदि देश में हिंसा की प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा तो *पिछले २० वर्षों का सारा काम मटियामेट हो जायेगा। वैसी* स्थिति में जीवन उनके लिए भार सा लगने लगेगा।

टोटेनहाम सो तो मैं समझा पर यदि मैं यह कहूं कि कार्यकारिणी में ऐसे आदमियों का समावेश है जो *अपना* मुखौटा बदलते रहते हैं तो कोई अप्रतिष्ठा की बात नहीं होगी।

मैं आप लोग भी तो ऐसा ही करते हैं। पर द्रष्टव्य बात यह है कि कार्यकारिणी ने जान-बूझकर गांधीजी की यह सलाह मान ली है कि युद्ध के दौरान पद ग्रहण न किया जाए और उसकी एकमात्र मांग यही है कि *उसमें बोलने की स्वतंत्रता न छीनी जाय।*

टोटेनहाम यह सब तो मेरी समझ में आ गया पर इससे राजनैतिक समस्या कैसे हल हुई ?

मैं मानता हू, नही हुई। पर आपने जो भारत को उसकी सहमति के बगैर एक युद्धरत देश करार दे दिया यह सब उसीका परिणाम है।

टोटेनहाम मैं आपसे सहमत हू और मैं यह स्वीकार करता हू कि वैसा करना एक गलती थी। पर आप लोग भी तो एक बात पर कायम नही रहे। आपकी शिकायत यह थी कि भारत को उसकी रजामदी हासिल किये बगैर लडाई मे ढकेल दिया गया। बाद मे इस शिकायत को आधार बनाकर आप सौदेबाजी करने लगे।

मैं जब मै आपको साफ-साफ बता चुका हू कि काग्रेस युद्ध के दौरान पद ग्रहण करने की इच्छुक नही है तो सौदेबाजी का सवाल ही कहा उठता है? और यदि सौदेबाजी की बात ही ली जाय तो मैं कहूगा कि जो लोग बराबर सौदेबाजी मे लगे रहते है उन्हे दूसरो पर कीचड उछालने से बाज आना चाहिए पर आप कही गाधीजी पर तो सौदेबाजी करने का आरोप नही लगा रहे है?

टोटेनहाम नही, कदापि नही पर मेरी यह धारणा अवश्य है कि वह देख रहे थे कि काग्रेस का प्रभाव नष्ट हो रहा है और उसके हाथ मे अधिकार निकल गया है फलत उन्होने यह आन्दोलन खडा किया।

मैं तो फिर उन्हें देशव्यापी आन्दोलन छेडकर लाख पचास हजार आदमियो से जेलें भरने से कौन रोक सकता था?

टोटेनहाम ऐसा करना आपके लिए सम्भव नही है। इस समय भी कुछ सौ आदमी जेलो मे हैं।

मैं कुछ हजार।

टोटेनहाम यह आपकी भूल है। कुछ-हजार आदमियो पर मुकदमे भले ही चलाये गये हो पर जेलो मे १२०० से अधिक नहीं हैं।

मैं यदि आप यह स्वीकार करते हैं कि कुछ-हजार आदमियो को दण्डित किया गया तो मुझे और अधिक कुछ नही कहना है। मुझे यह देखकर हैरानी हो रही है कि आप यह बात नही समझ पा रहे हैं कि गाधीजी ने अहिंसा और परेशान न करने की भावना से प्रेरित होकर स्थिति को काबू मे रखा है और जेलें भरने से बच रहे है। यदि वह चाहते तो ऐसा कर सकते थे।

टोटेनहाम तो इस सीमित व्यक्तिगत सविनय अवज्ञा से उन्हे क्या हासिल

होगा ?

मैं आत्मसतोष। इस प्रकार वह अपनी अहिंसा को मूर्त रूप दे सकते हैं और जो लोग उनके-जसे विचारो के हैं उन्हें भी वसे ही आत्म सतोष की अनुभूति हो सकती है।

टाटनहाम आपके कहने का आशय यह है कि वह ऐसा अपनी विरोध भावना प्रकट करने के लिए कर रहे हैं ?

मैं हा ऐसा कहिए अपने विरोध का सार्वेतिक रूप देने के लिए।

टाटनहाम विरोध किस चीज के खिलाफ ? बातचीत की असफलता क खिलाफ ?

मैं युद्ध म इच्छा के विपरीत घसीट जान क खिलाफ।

टोटेनहाम प्रारम्भ मे यही कारण था पर बाद म इसने गौण रूप धारण कर लिया।

मैं आपको यह कहन का दुस्साहस कस हुआ ? सारे उपद्रव की जड यही मुख्य पहलू है।

टोटेनहाम फज कीजिए विचार व्यक्त करने की स्वतत्रता प्रदान कर दी जाय तो क्या वैसा करने से युद्ध प्रवत्तियो को धक्का नही लगेगा?

मैं यदि हम देश भर मे हजारो सभाए करन मे जुट जायेंगे तो थोडा बहुत धक्का लग सकता है। इन सभाओ से निपटने के दौरान आपका समूचा शासन-काय ठप हो जाएगा। पर यहा फिर वही भरोसे की भावना स काम लेने का प्रश्न उठ खडा होता है। गाधी जी अपनी स्वतत्रता का उपयोग किस रूप म करेंगे, इस बार म आपको उन पर भरोसा करना होगा। चूकि हमे अपन इस अधिकार से वचित कर दिया गया है इसलिए इस अधिकार की माग ने इतना प्रबल रूप धारण कर रखा है। जब वह अधिकार वापस द दिया जाएगा तो उसका आपत्तिजनक ढग स प्रयोग नही होगा। कभी झण्डा लकर निकलन क अधिकार की बात पर सत्याग्रह हुआ करत थ। जब समझौते के फलस्वरूप यह अधिकार दे दिया गया तो उस अधिकार का भूले भटके उपयोग हुआ हो तो भले ही हुआ हो।

टाटनहाम ताली दोनो हाथो स बजती है। आप लोगो ने भी तो हमारे ऊपर भरोसा करना छोड दिया है। मैं यह नही कहता कि हमने आपको वसा करने का कारण प्रदान नही किया—हमने गत महायुद्ध म

आपसे जो वचन दिये उन्हें हमने पूरा नहीं किया। पर यह युद्ध एक खौफनाक शक्ल में आया है और आप यकीन मानिये कि इस लड़ाई के खत्म होते-न होते हमारी विचार शैली में क्रांति आ जायेगी। भरोसा करने से ही भरोसा मिलता है।

मैं पर यदि आप मान सकते हों कि गांधीजी परेशान न करने की नीति को एक मन्त्र की भांति अपना लेंगे जैसा कि उनके कुछ आलोचक कहते नहीं अघाते हैं तो समझौता होने के बाद वह अपनी नीति का अधिक सफलतापूर्वक व्यवहार में ला सकेंगे।

टोटेनहाम पर उससे शासन सम्बन्धी गतिरोध का अंत किस प्रकार होगा?

मैं समझौता हुआ तो गतिरोध असम्भव बनकर रह जाएगा। वातावरण तयार दिखाई देगा। जहां यह अड़गा रास्ते से हटा कि शासन-सम्बन्धी मामलों पर भी बातचीत आरम्भ हो सकती है।

टोटेनहाम मैं वाइसराय की आलोचना नहीं कर रहा हूं पर यदि वह शुरू शुरू में ही प्रांतों के सारे मुख्य मन्त्रियों और सारे विधायकों को अपना विश्वासभाजन बना लेते तो रजामन्दी के बिना युद्ध में घसीटे जानेवाली बात इतना तूल न पकड़ती।

मैं आपकी बात से मुझे खुशी हुई। अब कांग्रेस के साथ समझौता करने के बाद आप ऐसा कर सकते हैं।

टोटेनहाम पर देसाई साहब आप चाहते हैं कि विनोबा की सारी स्पीचें पत्रों में छपें। वैसा होगा तो क्या युद्ध विरोधी प्रचार जोर नहीं पकड़ेगा?

मैं समाचार पत्र इस समय युद्ध के अनुकूल जितना प्रचार कर रहे हैं वैसी स्थिति में युद्ध के प्रतिकूल भी उतना ही कर पायेंगे। पत्र सर रिचार्ड टोटेनहाम की स्पीच अक्षरशः क्यों छापें और विनोबा की स्पीच क्यों न छापें? उन्हें निष्पक्ष रहना है। समाचार पत्र सिकन्दर हयातखां के घोर साम्प्रदायिक उद्गार क्यों छापें और जवाहरलाल जो-कुछ कहें उसे छापने से क्यों पीछे हटें?

टोटेनहाम सो तो ठीक है पर विनोबा के पूरे-के-पूरे भाषण छाप जाने की हठ पकड़ने में जिस नीयत का सबूत मिलता है वह एकदम निर्दोष प्रतीत नहीं होती।

मैं ऐसा कैसे?

टोटेनहाम आपने अपने पत्र में बताया है कि आपने गांव में सभा क्या की

आप नाटकीय प्रदर्शन मे क्यो दूर रहे आदि। जब ऐसी बात है तो आप प्रकाशन क्यो चाहते हैं ?

मैं आपके सामने एक सुझाव रखू ? आप हमे खुले तौर पर युद्ध विरोधी प्रचार करने की पूरी छूट दे दीजिए। मैं इस बात पर राजी हो जाऊगा कि हमारी स्पीचें पत्रो मे न छापी जायें। बोलिये क्या कहते हैं ?

टाटेनहाम मैं कौन होता हू ? मैं तो एक सेक्रेटरी-मात्र हू। मुझे कोई अधिकार नही है। मुझे आपसे जो-कुछ मालूम हुआ है वह मैं अपने चीफ के सामने जाकर रख दूगा। मैं आपको यह भी बता दू कि मुझे वाइसराय और मिस्टर गाधी का पत्र-व्यवहार देखने तक की सुविधा नही है।

मैं मगर सेक्रेटरी लोगो के लिए बहुत कुछ शक्य है। मैंने आपसे जो कहा है यदि आपने उसे हृदयगम किया है तो एक सर्वसम्मत फार्मूला तैयार करने मे कठिनाई नही होनी चाहिए।

टाटेनहाम जहा महारथियो ने मुह की खाई वहा हमारी क्या बिसात है ?

मैं ऐसी बात नही है। महारथी लोग दुनिया भर की चिन्ताओं मे निमग्न रहते हैं। उन्हे इतना समय कहा है ? हमारे जैसे मामूली लोग किसी विषय पर घटो व दिनो विचार विमर्श कर सकते हैं और अत मे एक दूसरे को समझने की भावना दिखला सकते हैं। आपने मुझे पूरे ढाई घटे का समय दिया यह प्रसन्नता की बात है। अब आपको और अधिक नही थकाऊगा। पर आज गाधीजी के पास मे एक और पत्र आ गया होगा और उसके बाद सम्भव है विचार विमर्श का नया दौर शुरू हो। मैं हमेशा तैयार हू जब चाहे बुला लें। इस बीच सर रेजिनाल्ड से भी बातचीत कर लीजिए। हम दोनो की बातचीत की जो रिपोर्ट लथवेट के पास भेजें उसकी एक प्रति मेरे पास भी भेजने की कृपा कीजिएगा जिससे मुझे वही बात न दुहरानी पड़े।

बाजार की अफवाहो पर भी चर्चा चली। मैंने पूछा— आप जानते हैं बापू ने घबराहट को फैलने से रोकने का क्या तरीका अपनाया है ?'

टोटेनहाम मैं न जानूगा तो कौन जानेगा ? उनकी सहायता बडे काम की साबित हुई।

मैं   अब आपको लगने लगा है कि उन्होंने सहायता देना बंद कर दिया है तो आपने उनका साथ छोड दिया है। आपका आचरण तो यह है कि सेव का अच्छा अच्छा हिस्सा तो खा लिया और सडा हिस्सा काटकर जहा तहा फेंक दिया। पर मानव सत्र तो है नहीं। यदि आप समझते हैं कि स्थिति को काबू म रखने म गाधीजी के प्रभाव का उपयोग है, और उस प्रभाव का काम म लाने के जो लाभ होंगे, उनकी सख्या और मात्रा हानियो की सख्या और मात्रा म अधिक प्रमाण म है, तो आप उन्हें अपने खिलाफ भूलकर भी मत कहिये। उनम जो त्रुटिया है जो खामिया हैं उन सबके साथ ही आपको उन्हें ग्रहण करना होगा।

टोटेनहाम   आपकी बात समझा और हमारी सारी वार्त्ता का निचोड भी यही है।

३

१२-११ ४०

मक्सवेल ने मुझे जो पत्र लिखा था उसम उसने कहा था कि काम-काज की बात तो मुझे टाटेनहाम से करनी चाहिए पर वह यह चाहेगा कि मैं उसके घर मिलने जाऊ जिससे पुरानी जान पहचान ताजा हो सके। इसलिए मैं सध्या के समय उसके घर पहुचा। यह जाहिर था कि टोटेनहाम ने उसे तब तक नही बतलाया कि मैं उससे मिल चुका हू। मैंने मक्सवेल से कहा कि टोटेनहाम दोनो की बातचीत का जो विवरण तयार करेंगे वह मुझे दिखा देंगे। जरूरत हुई तो वह मुझे फिर बुला भेजेंगे।

मक्सवेल ने बातचीत का आरम्भ युद्ध से किया और कहा कि उसके कारण मन पर क्या बीत रही है। बोला आप अन्दाजा नही लगा सकते। मेरा बडा लडका फौज मे है। छोटे लडके की आयु अभी १६ वष की है। वह एक ऐसे स्कूल म है जिस पर तीन दिन पहले बम गिरे थे। पत्नी युद्ध सम्बन्धी काम मे लगी हुई है ओषधि के लिए जडी बूटी इकट्ठा कर रही है। वे लोग एक ऐसे स्थान पर ठहरे हुए हैं जहा रोज बम-वर्षा होती ह। कोई नही कह सकता कि किस पर क्या गुजरेगी।

मैं   मैं जानता हू मैं थोडा-बहुत अन्दाजा लगा सकता हू।

आप नाटकीय प्रदर्शन से क्यों दूर रहे आदि। जब ऐसी बात है तो आप प्रकाशन क्यों चाहते है ?

मैं आपके सामने एक सुझाव रखू ? आप हमे दिल खोलकर युद्ध विरोधी प्रचार करने की पूरी छूट दे दीजिए। मैं इस बात पर राजी हो जाऊगा कि हमारी स्पीचें पत्रो म न छापी जायें। वालिय क्या कहते हैं ?

टाटेनहाम मैं कौन होता हू ? मैं तो एक सक्रेटरी मात्र हू। मुझ कोई अधिकार नही है। मुझ आपसे जो कुछ मालूम हुआ है वह मैं अपने चीफ के सामने जाकर रख दूगा। मैं आपको यह भी बता दू कि मुझ वाइसराय और मिस्टर गाधी का पत्र व्यवहार देखने तक की सुविधा नही है।

मैं मगर सक्रेटरी लोगो के लिए बहुत-कुछ शक्य है। मैंने आपसे जो कहा है यदि आपने उसे हृदयगम किया है तो एक सवसम्मत फामूला तयार करने म कठिनाई नही होनी चाहिए।

टोटेनहाम जहा महारथियो ने मुह की खाई वहा हमारो क्या बिसात है ?

मैं ऐसी बात नही है। महारथी लोग दुनिया भर की चिताओ मे निमग्न रहते हैं। उन्ह इतना समय कहा है ? हमारे जस मामूली लोग किसी विषय पर घटा व दिना विचार विमश कर सकते हैं और अत म एक दूसरे को समझने की भावना दिखला सकते हैं। आपने मुझे पूरे ढाई घटे का समय दिया यह प्रसन्नता की बात है। अब आपको और अधिक नही थकाऊगा। पर आज गाधीजी के पास से एक और पत्र आ गया होगा और उसके बाद सम्भव है विचार विमश का नया दौर शुरू हो। मैं हमेशा तयार हू जब चाहें बुला लें। इस बीच सर रेजिनाल्ड से भी बातचीत कर लीजिए। हम दोनो की बातचीत की जो रिपोट लथवेट के पास भेज उसकी एक प्रति मेरे पास भी भजने की कृपा कीजिएगा जिससे मुझे वही बात न दुहरानी पडे।

बाजार की अफवाहो पर भी चर्चा चली। मैंने पूछा— आप जानते हैं बापू ने घबराहट को फलने से रोकने का क्या तरीका अपनाया है ?'

टोटेनहाम मैं न जानूगा तो कौन जानेगा ? उनकी सहायता बडे काम की साबित हुई।

मैं अब आपका लगन लगा है कि उन्होंने सहायता देना बंद कर दिया है तो आपने उनका साथ छोड दिया है। आपका आचरण तो यह है कि सेब का अच्छा अच्छा हिस्सा तो खा लिया और सडा हिस्सा काटकर जहा-तहा फेंक दिया। पर मानव सेब ता है नहीं। यदि आप समझते हैं कि स्थिति को काबू म रखने म गांधीजी के प्रभाव का उपयोग है, और उस प्रभाव को काम म लाने के जो लाभ होंगे, उनकी सख्या और मात्रा हानियों की सख्या और मात्रा म अधिक प्रमाण म है, तो आप उन्हें अपने खिलाफ भूलकर भी मत कहिये। उनमें जो त्रुटियां हैं जो खामियां हैं उन सबके साथ ही आपको उन्हें ग्रहण करना होगा।

टोटेनहाम आपकी बात समझा और हमारी सारी वार्त्ता का निचोड भी यही है।

मक्सवेल तो इस समय हमारा सारा ध्यान इस प्रश्न पर लगा हुआ है कि युद्ध का अत कैसे किया जाए और उस एक दिन भी अधिक जारी रहने से कैसे रोका जाए ?

मैं मैं यह भी जानता हू आप प्रेसवालो को यह बता चुके है। पर आप की इस उक्ति से गाधीजी को तथा हम सब लोगो को घोर व्यथा हुई है वह यह है कि गाधीजी अपने आन्दोलन के द्वारा युद्ध प्रयत्नो को धक्का लगा रहे हैं और इस प्रकार हिटलर की सहायता कर रहे हैं।

मक्सवेल सो मैं जानता हू। पर यदि आप उनके काय के परिणामो की ओर ध्यान दें तो यह निष्कर्ष निकालने से कैसे बच पायेंगे ? मैं जानता हू कि वह हिटलर की सहायता नही करना चाहते पर इसका और क्या परिणाम होगा ?

मैं इस बात पर हम दोनो सहमत हैं कि युद्ध का शीघ्रातिशीघ्र अत हो और उसे एक दिन भी अधिक जारी न रखा जाए। सारा सवाल इस बात का है कि यह उद्देश्य किस प्रकार सिद्ध हो। आपका कहना है कि युद्ध का अत केवल एक ही प्रकार से हो सकता है। हमारा कहना है कि यह दूसरे प्रकार से भी सम्भव है। एक दूसरे की बात को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

मक्सवेल पर यदि आप भारत को युद्ध से अलग रहने को तयार करने म सफल हो जायेंगे तो क्या हिटलर के हाथ मजबूत नही होगे ?

मैं पर वास्तविकता यह है कि हम सफल नही हो रहे हैं। यदि समूचा भारत गाधीजी की बात सुनता तो आप उसका प्रतिरोध कदापि न करते आप भारत पर युद्ध न लादते और वह जो कह रहे हैं उसे ध्यान से सुनते।

मक्सवेल आपकी बात मेरी समझ मे नही आई।

मैं आप देख ही रहे हैं कि हम सारे भारत को अपना दष्टिकोण समझाने म असमर्थ रहे हैं। जसा कि गाधीजी ने कहा है रजवाडे पसेवाले और युद्ध म रुचि रखनेवाले वग। पर हमारा कोई प्रभाव नही है। जो लोग हमारा पथ प्रदशन चाहते हैं उनका कोई विशेष वर्ग नही है। बस हम उन्ही को सम्बोधित करके सतोष कर रहे हैं। इस श्रेणी के लोगो को युद्ध-काय म हाथ बटाने को बाध्य किया जा रहा है और हम इस जोर जबरदस्ती को रोकना चाहते हैं।

मक्सवेल इस काय के लिए आपको लाड लिनलिथगो से बढिया वाइसराय ढूढे

नही मिलता। उन्होंने रिश्वत या मजबूर करने के खिलाफ कठोर कदम उठाये हैं।

मैं उठाये होंगे पर ऐसी घटनाएं तो रोज ही हो रही हैं। हमारी फाइल इस सम्बन्ध में दिन पर दिन मोटी होती जा रही है।

मैक्सवेल क्या आपको पक्का भरोसा है कि आपको जो बातें बताई गई हैं वे सब सच्ची हैं?

मैं अतिशयोक्ति सम्भव है कई बातें मनगढ़त भी हो सकती हैं पर अधिकांश घटनाएं सच ही हैं। हमने जिन घटनाओं की ओर वाइसराय का ध्यान आकृष्ट किया है वे छान-बीन करके सत्य पर आधारित पायी गई हैं। जब हम शिमला में ही थे तो हमारा ध्यान एक कमीनी घटना की ओर दिलाया गया। हमने सम्बन्धित आदमी से पूछताछ की। वह इम्पीरियल बैंक का एक जिम्मेदार अधिकारी है और जानता था कि वह क्या कह रहा है। उसके पास लिखित प्रमाण है और यदि उसका मामला वाइसराय के सामने पेश किया जाए तो भी वह पीछे हटनेवाला इन्सान नही है।

मैक्सवेल यह तो आपने ठीक ही किया पर इस मामले को लेकर आपने प्रचार कार्य क्या शुरू कर दिया?

मैं उन लोगों की रक्षा करना अन्य प्रकार से सम्भव ही नही था। लोगों को पीटा और डराया धमकाया जा रहा है हम ऐसी सारी की सारी घटनाएं तो वाइसराय तक नही पहुंचा सकते।

मैक्सवेल पर आप इन लोगों से यह क्या कहते फिरते हैं कि युद्ध कोष में पैसा मत दो और फौज में भर्ती मत होओ। जो लोग देना चाहते हैं या जो लोग भर्ती होना चाहते हैं उन्हें आप क्या रोकते हैं?

मैं हम तो नही रोकते। मैं आपको ऐसे उदाहरण दूंगा जब लोगों ने गांधीजी की जानकारी में रुपया दिया। बिड़ला की ही बात लीजिए। हमारे ही आश्रम के एक नवयुवक ने जो इंजीनियर है हमसे लिखकर पूछा कि क्या वह अपनी सेवाएं नियमों के अन्तर्गत सरकार को दे सकता है? गांधीजी का उत्तर था कि यदि वह चाहे तो सेना में जा सकता है।

मैक्सवेल यह जानकर बड़ी खुशी हुई। मगर ब्रह्मदत्त जैसे नारे लगाता रहा है उसका क्या परिणाम होगा? (वह ब्रह्मदत्त की फाइल उठाकर सम्बद्ध नारे पढ़कर सुनाता है।)

मैं जो लोग इस नारी के मुताबिक आचरण करना चाहेंगे, करेंगे। जो नहीं करना चाहेंगे नहीं करेंगे। मैं अपने गाव म हू। फेरा लगाता हू। लोगों की भीड जमा हो जाती है। मैं उनसे क्या कहू ? मैं तो उनसे अपने जी की बात ही कहूगा। और मैं जानता हू कि इस भीड म ऐसे भी लोग हैं जो मेरे कहने के बावजूद अपने हित-साधन के लिए पैसा देना चाहते होगे। जिन्होने पैसा दिया भी होगा वे मेरी सलाह मागने शायद ही आय बहुत सम्भव है वे मुझसे दूर ही रहना चाह।

मैक्सवेल अच्छा-अच्छा। मेरी समझ म मिस्टर गाधी के लिए यह करना उपयुक्त होगा कि जिस प्रकार उन्होने प्रत्येक अग्रेज के लिए एक घोषणा पत्र जारी किया था उसी प्रकार वे अपने देशवासियो के लिए भी एक घोषणा पत्र तैयार करें और उसम अपनी स्थिति पर प्रकाश डालें। मेरी ओर से मिस्टर गाधी को यह सदेश दीजिए।

मैं यदि गाधीजी एकान्तवास करते होते तो आपकी सलाह कारगर होती। पर लाखो-करोडो नर नारी उनके पथ प्रदर्शन के लिए लालायित रहते हैं और उन्हें प्रति दिन हर घडी उनका पथ प्रदर्शन करना होता है। ऐसी अवस्था म वह क्या करें ?

मैक्सवेल यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर हर कोई अपने स्तर पर देगा। इस महान् सकट की वेला म हम सबका क्या कर्त्तव्य है ? अहिंसा म मेरी भी आस्था है पर मेरा यह भी विश्वास है कि अहिंसा का युग तभी आयगा जब विश्व आत्मपरिष्कार के अग्निदाह से निकलेगा। इस बीच हम सहायता करने मे लगे रहना चाहिए अपने कर्त्तव्य से मुह नहीं मोडना चाहिए। मिस्टर गाधी को मेरी ओर से यही सदेश दीजिए।

मैं जरूर दूगा। वह आपकी भावनाओ की बडी कद्र करते हैं और वह आपसे भी ऐसी ही अपेक्षा करते हैं। पर उनकी कार्यप्रणाली भिन्न है। वह आपको सहन करते हैं आप उनके प्रति सहिष्णुता का आचरण कीजिए।

मैक्सवेल सहिष्णुता मौजूद है पर हमारे देश म क्या हो रहा है उसकी ओर से उदासीन रहना तो हमारे लिए सम्भव नहीं है।

कुछ देर तक इसी लहजे म बातचीत चलती रही। मैंने दो टूक बात कह दी कि 'एक सीधा-सा प्रश्न करना चाहता हू। क्या आपने काग्रेस के साथ समझौता न करने की ठान ली है ? यदि ऐसी बात हो,

ता व मारी दलीलें बेमानी हैं।

मैक्सवेल नहीं ऐसी कोई बात नहीं है।

मैं तो फिर एक ऐसा फार्मूला तयार कीजिए, जो दोनो पक्षों को ग्राह्य हो। यह असम्भव काय नहीं है। मैं समझता हू, जीओ और जीने दो के सिद्धान्त पर उभय पक्ष सहमत हैं और आपने जो कुछ बातें कही हैं उनसे भी आशा बधती है कि एक फार्मूला तयार हो सकता है।

मैक्सवेल पर महाशय आप मुझे इस मामले से अलग रखिये। यह वाइसराय का क्षेत्र है इसलिए आप अपना यह सुझाव लेथवेट को दें तो अच्छा रहेगा।

४

१२ ११ ४०

आज दोपहर के बारह बजे लेथवेट से मिलने गया और १-४० तक उसके पास ही रहा। उसे बापू का ताजा पत्र मिल गया था वह उसके सामने ही रखा था। उस पर चर्चा करते हुए उसने कहा मिस्टर गाधी को यह सदेश पहुचा दीजिए कि हम लोगों को उनके पत्र पाकर हमेशा खुशी होगी। मैंने श्री बिडला से भी कह दिया था कि बस तकनीकी तौर में हम एक-दूसरे के साथ युद्ध मे भले ही रत हों हमारे आपसी सबध सदव की भाति ही मैत्रीपूर्ण रहेगे। वाइसराय मेरे माध्यम से उत्तर भेजकर भले ही रिवाजी तौर-तरीके से काम ले रहे हों पर इस बात का यकीन रखिए कि मिस्टर गाधी के पास से जो भी चीज आयेगी वाइसराय से पास तुरत पहुचा दी जायगी और उन्हें इस बात की खुशी है कि मिस्टर गाधी उनको पूरी जानकारी बनाए हुए हैं। मैं आपको यह भी बता दू कि यह बात जानकर कि उपवास टल गया है हमने कितने चैन की सास ली, यह मैं कुछ इस लिए नहीं कह रहा हू कि महात्माजी की हम कितनी कद्र करते हैं बल्कि इसलिए भी कि वे काग्रेस के सवस्व हैं।'

मैं शुक्रिया। पर यदि आप मुझे और गाधीजी को यह बतलाने का मौका देंगे कि वह केवल काग्रेस के लिए ही नहीं बल्कि सरकार के लिए भी कितने मूल्यवान हैं तो हम अवश्य यह बतलाएगे। वास्तव में उन्हें इस बात का बडा दु ख है कि जब कभी वह कोई कदम स्वय अग्रेजों के हित में उठाते हैं तो उनके काय के गलत अथ लगाए जाते हैं और

उन्हें उनका शत्रु समझा जाता है। उस दिन श्री पक्लि से मैं कह रहा था कि ।

लेथवेट मुझे इस बात की खुशी है कि आप इन सब लोगों से मिल लिये हैं। मैं यही चाहता था कि वे आपका परिचय प्राप्त करें।

मैं हां, मुझे भी इस बात की खुशी है कि मैं श्री पक्लि से मिल लिया। वह बड़े खरे आदमी हैं, बेलाग बात कहते हैं। मुझे वह बहुत अच्छे लगे। उन्होंने कहा कि उन्हें यही हैरानी है कि जो शख्स पिछले १६ महीनों से सरकार की इतनी सहायता करता रहा, अब उसने सहायता देने में क्यों मुंह मोड़ लिया। उत्तर में मैंने जो-कुछ कहा वह यह था। (यहां मैंने उसे वह सब कह सुनाया जो मैंने पक्लि से कहा था।) आशा है, आप मेरा अभिप्राय समझ गए होंगे।

लेथवेट मैं सब कुछ अच्छी तरह देख रहा हूं। वास्तव में यह सब मिस्टर गांधी के पत्र के उत्तरार्द्ध में है। उन्होंने सर मैक्सवेल के उस वक्तव्य की चर्चा की है जिसमें उन्होंने उनके सम्बन्ध में टिप्पणी की थी। इस सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं है कि मिस्टर गांधी ने एक से अधिक बार यह बात दोहराई है कि उनका सरकार के युद्ध-प्रयत्नों को ठप करने का कोई इरादा नहीं है। उनकी नेकनीयती में कोई शक नहीं है। पर वह जो कुछ कर रहे हैं उसका नतीजा क्या होगा? उनका लाखों करोड़ों स्त्री-पुरुषों पर जितना प्रभाव है उसे ध्यान में रखा जाए तो इस बात की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह जो कुछ कहते हैं या करते हैं तथा विनोबा भावे और जवाहरलाल जैसे उन्हीं के द्वारा चुने गए लोग जो कुछ कहते या करते हैं उससे जन-समुदाय का प्रभावित होना अनिवार्य है।

मैं मेरे विचार में इस प्रश्न का उत्तर गांधीजी ने अपने पत्रों में अच्छी तरह दे दिया है। वह कह चुके हैं कि उनका कांग्रेस पर जो प्रभाव है उससे रजवाड़े, पैसेवाले तथा युद्ध में रुचि रखनेवाले वर्ग अछूते रहेंगे। (यहां मैंने बिड़ला तथा उन अन्य लोगों का जिक्र किया जिन्हें गांधीजी ने युद्ध-प्रयत्नों में भाग लेने से नहीं रोका है। मैंने उस सैनिक की भी चर्चा की जो वर्दी उतार फेंकना चाहता था। मैंने उस आश्रमवासी विद्यार्थी की बात भी बताई जिसे बापू ने अपनी इच्छानुसार जैसा चाहे करने की इजाजत दे दी थी।)

लेथवेट हां, हां, श्री बिड़ला ने खुद मुझे यह बात बताई थी। यह महात्मा के

चरित्र क अनुरूप ही है। पर आप जानत है कि श्री बिडला के लिए अपना निणय आप करना सम्भव हो सकता है लेकिन गावो के लोग सीधे सादे होते हैं और मिस्टर गाधी जो कुछ कहते हैं करने को तयार हो जाते हैं।

मैं इस सबध मे भी गाधीजी न अपनी सीमाए स्वय निर्धारित की है। न वे न काग्रेस ही गोला बारूद बनाने के कारखाना या फौजी बरका का घिराव करेंगे और लोग बाग जो-कुछ करना चाहे उह वसा करने देंगे।

(इस प्रसग पर गाधीजी के नाम वाइसराय के लिख पत्र को लेकर काफी बातचीत हुई, जिससे उस पत्र के मम के बारे म किसी प्रकार की गलतफहमी न रह।)

लथवेट विनोबा के बारे मे आपने जो लेख लिखा था उस पत्र से ही मुझे लगा कि उस पत्र व्यवहार के कुछ अशों को लकर कठिनाई पैदा हो सकती है। अब मैं आपसे उनकी सफाई कराना चाहता हू। (दफ्तर से पत्र व्यवहार मगाया गया और इस बीच लथवट न कहना जारी रखा) कभी-कभी महात्माजी का अभिप्राय समझने म हम कठिनाई होती है और उह हमारी बात समझने म भी कठिनाई मालूम होती है। अच्छा हुआ आप आ गए। जब खतो किताबत के जरिये एक-दूसरे की असली मशा को समझना मुश्किल दिखाई पडे तो आपसी बातचीत बडे काम आती है।

मैं आप ऐसा कहते हैं यह खुशी की बात है, पर मैं तो उनके विचार की रूपरेखा-मात्र ही प्रस्तुत कर सकता हू और मैं आपसे यह बात नही छिपाऊगा कि मुझे यहा आने म डर लग रहा था और मैं मन-ही मन काप रहा था।

लथवेट नही नही ऐसी बात मत कहिए। क्या आपको इस बारे म कोई शका थी कि मैं आपकी बात ध्यान देकर सुनूगा ?

मैं इस बाबत न तो मुझे और न गाधीजी को ही कोई शका है। मुझे तो यह आशका हो रही थी कि कही मैं गाधीजी का दृष्टिकोण पूरी तरह पश न कर पाया तो! मन गाधीजी से भी यही बात कही थी पर उन्होंने मुझे ढाढस बधाया और मैं आ गया।

लथवेट मैं आपको यह बता दू कि 'हरिजन' म आपके जितने लेख निकलते हैं उन्हें मैं बडे ही मनोयोग स पढ़ता हू उतने ही मनोयोग से जितने मैं

मिस्टर गांधी के लेख पढ़ता आया हूं। मिस्टर गांधी के दृष्टिकोण और दार्शनिक विचारों का जितनी स्पष्टता के साथ आप प्रतिपादन कर सकते हैं उससे अधिक स्पष्टता के साथ वैसा करनेवाला कोई और है तो मैं उससे परिचित नहीं हूं। (वकर वाइसराय और बापू के पत्राचार की फाइल लाता है। लेथवेट उस पर ध्यानपूर्वक निगाह दौड़ाता है सांप्रदायिक और सीमित शब्दों के भेद को समझने में कठिनाई का संकेत करता है और कहता है यह एक ऐसी बात है जिसके बारे में वाइसराय को स्वयं निर्णय करना होगा।)

मैं वास्तव में इसी वाक्य को लेकर गांधीजी और मेरे बीच मतभेद उत्पन्न हुआ और गांधीजी को लगा कि उसका अभिप्राय स्पष्ट करने के लिए महामहिम को लिखा जाए। पर उनको कुछ ऐसा समाधान हुआ कि उन्होंने वाक्य का अभिप्राय और अधिक स्पष्ट करने के लिए वाइसराय को परेशान करना जरूरी नहीं समझा और मुझे और विनोबा दोनों को बहुत सारी बातें सुननी पड़ीं। पर अब इस बार मैं मेरा स्पष्ट मत है कि अन्तिम पत्र संदेह की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। उसमें यह कह दिया गया है कि जिस बात में आपको बचे रहना है वह है उन दो वर्गों की वफादारी में दखल देना। गांधीजी का कहना है कि यह सीमित स्वतंत्रता राजनैतिक आधार पर आपत्ति करनेवाले को उपलब्ध है। पर आपने यह रिआयत केवल शांतिवादी को दी है राजनैतिक आधार पर आपत्ति करनेवाले को नहीं दी है।

लेथवेट आपकी दलील समझा। तो आप लोग शांतिवादी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं राजनैतिक वर्ग का नहीं। शांतिवादी सभी प्रकार के युद्धों के खिलाफ हैं। दूसरे वर्ग में वे लोग हैं जो राजनैतिक आधार पर इस युद्ध के खिलाफ हैं। पर राजनैतिक आधार में तो सभी तरह की बातें आ जाती हैं।

मैं मेरी आपत्ति दोनों आधारों पर है, हो सकता है कि नैतिक आधार उसमें प्रमुख हो। पर शांतिवादी को दुहरी शिकायत है—नैतिक आधार पर स्थित शिकायत और राजनैतिक आधार पर स्थित शिकायत जबकि राजनैतिक आधार पर आपत्ति करनेवाले को केवल एक शिकायत है। आपत्ति का राजनैतिक आधार यह है कि भारत को उसकी इच्छा के विरुद्ध युद्ध में घसीटा गया और उसे सहायता देने को मजबूर किया गया। उसकी शिकायत का एक आधार

ससार अहिसा का व्रत ले। पर गाधीजी जानते है कि ससार उसे ग्रहण नही कर रहा है।

लेथवट अच्छा अच्छा अब समझ मे आया। मिस्टर गाधी जो कुछ कर रहे है एकमात्र अहिंसात्मक उद्देश्य से प्रेरित होकर कर रहे हैं।

मैं आपने बात बिलकुल नपे तुले ढग से पेश कर दी। अब मैं आपको उपवास के बारे मे भी कुछ बता दू। आप जानते ही हैं कि यह कोई नयी बात नही है, गाधीजी की शिमला-यात्रा से पहले से ही चल रही है। उन्होने यह बात सबसे पहले काग्रेस की कार्यकारिणी के सामने रखी। गाधीजी का कहना था कि यदि राष्ट्रीय सरकार का सुझाव मान लिया गया तो भारत अहिंसा मार्ग से विचलित होकर युद्धरत राष्ट्र के रूप मे बदल जाएगा। और यह एक ऐसा मार्ग था जिस पर चलने का विचार मात्र उनके लिए अरुचिकर था।

लेथवट आपकी बात समझ मे आ गई। पर अब प्रचार के परिणामो के प्रसग पर फिर से चर्चा कीजिए।

मैं जरूर जरूर मैं यहा आपसे घण्टा क्या दिनो तक बात करने के लिए तैयार होकर आया हू।

लेथवट शुक्रिया। आप कहते हैं कि मिस्टर गाधी सेना को सम्बोधित नही करना चाहते। अब फर्ज कीजिए मिस्टर गाधी इलाहाबाद अथवा जमशेदपुर से २५ मील की दूरी पर व्याख्यान दे रहे हो उनकी आवाज इलाहाबाद मे तैनात सैनिको और जमशेदपुर के शस्त्रास्त्र के कारखाने के कारीगरो के कानो मे पडना अनिवार्य है। और वाइसराय ने मिस्टर गाधी के साथ अपनी बातचीत के दौरान जयप्रकाश की स्पीच की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया था। मिस्टर गाधी ने यह तो स्वीकार किया कि वह स्पीच अहिंसाव्रत के अनुरूप नही रही पर साथ ही यह भी कहा कि जयप्रकाश ने जो कुछ कहा उसे वह कहने का अधिकार था।

मैं जयप्रकाश की स्पीच के बारे मे मुझे केवल इतना ही कहना है कि गाधीजी ने वाक् स्वातन्त्र्य को सिद्धान्त के रूप मे मान्यता दी है पर जैसा कि वह अपने वक्तव्य मे स्वय कह चुके है इस अधिकार का प्रयोग न वह खुद करेंगे न काग्रेस करेगी।

लेथवेट यदि जयप्रकाश को रिहा कर दिया जाए तो वह भी नही करेंगे?

मैं आशा तो ऐसी ही है क्योंकि जयप्रकाश काग्रेसी है और गाधीजी ने

जोर देकर कहा है कि चरखा और गोले बारूद के कारखानो का घिराव करने का काग्रेस का कोई इरादा नही है।

गाधीजी और जवाहरलाल की स्पीचो के बारे म आपने जो कहा सो तो मै समझा, पर मैं आपको यह बताना चाहूगा कि आपको किस ठोस चीज से टक्कर लेनी है। हम लोग इस घोर प्रचार के युग मे रहते हैं। मैं घोर प्रचार इसलिए कह रहा हू कि आपको पता नही है कि देश म किस तरह की अफवाहो का बाजार गम है। गावो म कई दिनो तक यह खबर फैली रही कि राजा गद्दी छोड कर कनाडा भाग गया है। विनोबा ने इस अफवाह का खडन किया। अभी उस दिन मुझे एक ऐसे आदमी स मालूम हुआ जिसने फौज की एक स्पेशल म यात्रा करनेवाले एक सनिक से बात की थी। उसने बताया कि एक भारतीय रेजीमट के ७५ सनिको को गोली से उडा दिया गया। मैंने उससे कहा यह बकवास है ऐसी अफवाह फलाने स बाज आओ। आप हमे वाक स्वातत्र्य प्रदान करेंगे तो ऐसी अफवाहो और आशकाओ का मूलोच्छेदन करने म आप हमारी सहायता करेंगे।

लथवेट आप कहते है कि इन आशकाओ का निवारण करके आप युद्ध प्रयत्नो म सहायता करेंगे।

मैं मुझे यह ज्ञान नही था कि आप व्यग्य का सहारा भी लेगे।

लथवेट नही नही। आपके दिल को चोट पहुची हो तो क्षमा करें। अब मुझे याद करने दीजिए कि मैं क्या कह रहा था। टेलिफोन की घण्टी बज उठी जिससे मेरे कथन का तारतम्य टूट गया था।

मैं आपने कहा था— 'तो आप इन आशकाओ का निवारण करके युद्ध प्रयत्नो मे सहायता करेंगे।'

लथवेट क्या मैंने यह कहा था ? जाइए मैं अपना अभिप्राय स्पष्ट कर दू। मेरे कथन का आशय यह था कि आप इन आशकाओ का निवारण करके युद्ध प्रयत्नो म सहायता करना चाहते हैं।

मैं आप बात को इस रूप म पश करना चाहे तो कर सकते है। हम सत्य

है और बर्लिन रेडियो जो-कुछ कह रहा है वह भी आपसे छिपा नही है। रेडियो कितने आदमी सुनते हैं। आप सारे के-सारे रेडियो सेट तोड डाले तभी अफवाहें फलना बन्द हो सकता है। अत आपको प्रचार से नही बिदकना चाहिए। आपको इस बात म समाधान होना चाहिए कि गाधीजी न गोला बारूद तयार करनेवाला को सबोधित करेंगे न सिपाहियो को। १९२१ की एक घटना याद आ गई। जब मुहम्मद अली और शौकत अली को फौज और सरकारी अमले की वफादारी को बरगलाने के अभियोग म गिरफ्तार किया गया था। उनकी गिरफ्तारी के बाद गाधीजी ने एक ऐलान जारी किया जिस पर कोई ५० नेताओ ने हस्ताक्षर किये थे। इस ऐलान की लाखो प्रतियां बाटी गइ। ऐलान मे सनिको से खुल्लमखुल्ला कहा गया था कि अग्रेजो की गुलामी छोड दो। यदि गाधीजी का वसा इरादा होता और यदि वह शरारत पर उतर आते और परेशान न करने की नीति का परित्याग करके वैसा ही कोई ऐलान जारी कर देते तो उन्हे कौन रोकनेवाला था ?

लेथवट आपकी बात समझा। पर आप जानते ही है कि जवाहरलाल को जेल मे डालने का हमारा कोई इरादा नही था।

मै फिर भी आपने किया तो वही क्यो ?

लेथवट देखिए उन्होने गोरखपुर जिले म भडकानेवाला व्याख्यान दिया था। वहा चौरीचौरा म उपद्रव हुआ था।

मै क्या आपको इसका पक्का यकीन है कि उन्होने अदालत म जो बयान दिया अपनी स्पीच म उससे कुछ अधिक कहा था ?

लेथवट मैं हा या ना म जवाब नही दे सकता। जो वस्तुस्थिति है मौजूद है।

मैं मेरा सुझाव है कि उन्होने वसा कुछ नही कहा होगा। वह ७ तारीख को सत्याग्रह करनेवाले थे और तब वह युद्ध म भाग न लेने का उद्बोधन अवश्य करते। पर आपको उन्हे पकडने की जल्दी पडी थी। आप ७ तारीख तक नही रुक पाए। बस गाधीजी इसीको समुचित प्रत्युत्तर की भावना का अभाव कहते हैं।

लेथवट समुचित प्रत्युत्तर की भावना। देखिए कुछ क्रिया होती है फिर उसकी प्रतिक्रिया होती है और इस दिशा म हम दोनो ही दोषी हैं। आप कहते हैं हमने यह किया हम कहते हैं आपने यह किया और यह दुष्चक्र गतिशील हो जाता है। स्पीच के बारे म हम असलियत का पता

नही है। मैं इस बार म आपस पूणतया सहमत हू कि उनका वक्तय हद दर्जे का सयत और नपा-तुला है। पर उनकी स्पीच का जा विवरण मिला है, वही उपलब्ध है। आप कानून की अवहलना करेंग ता इसका नतीजा भुगतने के लिए भी तयार रहिए।

मैं हम आपस इतना भर करन को कहते हैं कि आप इस कानून का काया पलट कर डालिय, जिसस न हम इस ढग की स्पीचें देने का स्वतन्त्र रहे और न सरकार विरोधी उत्तेजन का अवसर उपस्थित हो। आपका दा बातो के बार म अपने दिमाग से सशय सदह की भावना निकाल देनी होगी। काई स्वेच्छापूवक भर्ती होना चाह ता क्या उसकी इस इच्छा की पूर्ति मे किसी तरह की रुकावट डाली जा रही है? क्या आप बलात लादी गई चेष्टाआ का अत करने का तयार हैं? मैं सर रजिनाल्ड मक्सवल से कह रहा था कि यदि हम इस नुक्ते पर सहमत हा जायें ता कोई ग्यवहाय फामूला तयार करना असम्भव नही होगा। पर उन्होने इस झमेल म पडना नही चाहा और मुझ आपस मिलन का कहा। उन्होने जा-कुछ कहा उस पर मैं साच विचार करने म लगा हुआ हू। विचार करक एक फामूला तयार किया जाए तो कसा रहे?

लथबट कह डालिये।

मैं नही, नही, मुझे इसम कुछ सकाच है। गाधीजी ने मुझ इसका अधिकार नही दिया है यह मरे ही दिमाग की उपज है। आपसे मिलने जाने के कुछ क्षण पहले हो मैंने यह सब कागज पर नोट किया था।

लटबट इसकी एक नकल दीजिए। इसस न आप किसी तरह के बधन म पडेंग न मै पडूगा। पर उस पर विचार करन मे क्या बुराई है?

(मैंने उन्हे पढकर सुनाया)

लथबट इसकी नकल मुझे जरूर दीजिए हम दोनो किसी भी प्रकार के बधन से मुक्त रहगे। आपको आशा है कि मिस्टर गाधी इस मान लेंगे?

मैं हा, है तो। पर मैं यह भी स्पष्ट कर दना चाहता हू कि सम्भव है यह उन्हे नामजूर हा और वह इसके लिए मुझे बुरी तरह आडे हाथा भी लें। वसा हुआ तो मुझे आपको यह बताने म तनिक भी सकोच नही होगा कि इसके लिए मुझे गाधीजी म क्या कुछ सुनना पडा। तब इस सारी बात का अत समझ लेना हागा। आप फामूले को फाडकर फेंक देंगे और सारी बात को दिमाग से निकाल देंगे।

लेथवट पक्की रही। आपने अपने मसौदे मे राजनतिक शब्द का जो प्रयोग किया है इससे मेरी घिग्घी बध गई है। (हरिजन के बारे म चलते चलाते बातचीत क प्रसग म मुझे बापू का सदेश दने का अवसर मिल गया।) मैंने कहा गाधीजी न कहा है कि मैं आपको बता दू कि जब तक आप यह न चाहेगे कि हरिजन पुन प्रकाशित हा अर्थात जब तक सरकार को यह प्रतीत नही होने लगेगा कि हरिजन' का भी कुछ उपयोग है तब तक वह उसे प्रकाशित करने की बात नही सोचेंगे। यदि सरकार की ऐसी धारणा हा तो विनप्ति के बावजूद गाधीजी हरिजन' का प्रकाशन पुन आरम्भ कर देंगे। बस उन्हाने यही कहा था। मैं आपको एक बात और भी बता दू। यदि हरिजन' निकलता रहता ता बापू हिटलर और मुसालिनी के नाम खुली चिट्ठिया प्रकाशित करने की बात सोच रहे थे जिनम वह उनस कहते कि उन्होंने यह बीभत्स काण्ड आरम्भ करके अपने ऊपर कितनी भारी जिम्मवारी न ली है। वह उनम मानवता के नाम पर इस नरहत्या का अत करने की अपील करत। पर आपने सारा गुड गोबर कर दिया।

लेथवट हस पडा। उसन मुझे अगले दिन २॥ बजे पुन आने का कहा। बडी गमजोशी के साथ शुक्रिया अदा किया। मैं चलने लगा तो उसने बापू की चिट्ठी पर एक बार फिर निगाह दौडाई। मैंने कहा एक दत्य की सामथ्य रखना अच्छा है पर उसका प्रयाग एक दत्य की भाति करना अच्छा नही है। आपका पक्ष अपेक्षाकृत अधिक सबल है।

लथवेट नही आपका पक्ष अधिक सबल है।

मैं इस बात को लेकर बहस नही करेंगे। मैं यह कहने जा रहा था कि आपके सकल्प करने भर की देर है यह सारा गडबड घोटाला बात की-बात म खत्म हो जाएगा। तीन हजार आदमी जेला म पडे है और आपका उनका कोई खयाल नही है। गाधीजी ने इन्ह काग्रेस के प्रतिनिधियो के रूप म भेजन का विचार किया था। यदि वे सब लाग जा काग्रेस क लिए बालत हैं जलो म चुपक स बद कर दिए जाए तब तो गर काग्रेसिया के लिए हमारे खिलाफ शिकायत करने को कुछ रह ही नही जाएगा। पर आप लोगा क लिए स्थिति दूसरी हा जाएगी। इन लोगा की गिरफ्तारी स युद्ध प्रयत्ना म अवश्य बाधा पडेगी।

इसके बजाय आप हम छूट क्या नहीं दे देते न उससे आन्दोलन खड़ा होगा न कष्ट होगा।

५

१४ ११ ४०

लथवेट म ३ बजे मिला। उसने कहा 'अभी समस्या का समाधान होता दिखाई नहीं दे रहा है। रही वाइसराय के पत्र के उस विवादग्रस्त वाक्य की बात आपने उसका जो अर्थ लगाया है उसके संबंध में यदि मिस्टर गांधी खुद वाइसराय से सफाई करा लेते तो उत्तम होता। फिर भी आप मुझे पत्र लिखिए और मैं उत्तर में स्पष्टीकरण कर दूगा। उसका मिस्टर गांधी ने जो अर्थ लगाया है और आपने जो अर्थ लगाया है इन दोनों में मैं आपवाले अर्थ को अधिक पसन्द करता हू। फिर भी मैं यह मामला कानून विशारदों के निर्णय पर छोड़ने का विचार कर रहा हू। मिस्टर गांधीवाला अर्थ मुझे इस कारण ग्राह्य नहीं है कि एक संभावित रंगरूट भी उतना ही रंगरूट है जितना रजिस्टरशुदा रंगरूट। इंग्लैंड में कानून क्या है सो तो मुझे नहीं मालूम पर मेरी समझ में यदि कोई किसी को फौज में भर्ती न होने को कहे तो उसके खिलाफ कानूनी कारवाई की जायेगी। शस्त्रास्त्र निर्माण के कल कारखाने में काम करनेवाले की बात ही लीजिए। कोई आदमी उस कारखाने में काम भले ही न करता हो, पर यदि वह वहां काम करने में सक्षम है और यदि उससे कोई कहे वहां जाकर काम मत करो तो मैं इसे गलत बात समझूगा। फर्ज कीजिए कोई साधारण कारखाना है पर उसमें गोलों का खोल बनाने की क्षमता है और किसी दिन उसे सरकार अपने हाथ में ले सकती है आप यदि किसी कारीगर को वहां जाकर काम करने से रोकेंगे तो आपका यह कानून सम्मत काम नहीं होगा। पर इस मुद्दे का स्पष्टीकरण आवश्यक है।

मैं और ब्रिटेन तथा भारत में जो भेद है, उससे आप अप्रभावित रहेंगे ?

लथवेट इस भेद से इस वस्तुस्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता कि एक भीषण युद्ध जारी है।

मैं और आपका अर्थ यह है कि राजनैतिक विरोधी को अपना विश्वास व्यक्त करने तक की स्वतंत्रता नहीं है ?

लेथवेट मैं इसका तत्काल तो उत्तर नहीं दे सकता पर मेरी धारणा यह है कि बात कुछ ऐसी ही है। सारे मामले के स्पष्टीकरण की जरूरत है। मिस्टर गांधी को लिखने का कष्ट करने की जरूरत नहीं, आप ही

लिख भेजें।

मैं क्या आपको मालूम है कि न्यायमूर्ति स्टेवल ने जिस निर्णय को मैंने उद्धृत किया है उसमें यह कहा गया है कि सभी प्रकार के विरोधियों को अपना विश्वास व्यक्त करने की स्वतंत्रता है?

लेथवेट हो सकता है कि उस निर्णय के बाद कानून अपेक्षाकृत अधिक कठोर बना दिया गया हो। मुझे भय है कि हम एक भारी कठिनाई का सामना करना पड रहा है। मैंने आपकी स्थिति को समझने की भरसक कोशिश की है पर सारी चीज क्या व्यावहारिक रूप धारण करेगी मुझे इस बात को भी तो ध्यान में रखना है। हम लोग किसी भी प्रकार के युद्ध विरोधी प्रचार की अनुमति नहीं दे सकते।

मैं मैंने कल जो कैफियत दी थी उसका आप पर कोई प्रभाव नहीं पडा?

लेथवेट नहीं आपकी कैफियत को बुद्धि स्वीकार नहीं करती।

मैं मेरी इस बात से आपका समाधान नहीं हुआ कि जिन तीन वर्गों की मैंने चर्चा की थी वे हमारी पहुच के बाहर है? जैसा कि आप कहते है वे लोग अपने निजी बुद्धि विवेक से काम लेते हैं। यदि उन्हें अछूता छोड दिया जाये तब तो आपको सतुष्ट हो जाना चाहिए।

लेथवेट पर उन लोगो के बारे मे आपका क्या कहना है जिन्हें आपने सभी श्रेणियों से बाहर रखा है? उनका उद्बोधन करके आप भारी उत्पात खडा कर सकते है। कम-से-कम उनका नैतिक स्तर तो आप दोयम दर्जे का मानते ही हैं।

मैं पर आप भी तो उनके साथ भारी उत्पात कर रहे है। हर जिले का अपना निराला ढग है। इलाहाबाद का कलेक्टर सतर्कता से काम ले रहा है और वहा डराने धमकाने की वारदातें कम होती हैं। पर गोरखपुर में तो त्रास का वातावरण मौजूद है उसका अत कैसे किया जाए?

लेथवेट मूल बात यह है कि हम इस युद्ध में विजय प्राप्त करनी है और सारी रुकावटों को पार करना है। हम सब पर यही नैतिक जवाबदारी है।

मैं इसका एक अच्छा खासा उत्तर है जीयो और जीने दो।

लेथवेट मैं बहस खडी नहीं करना चाहता पर यदि आप समझते हैं कि जहा तक युद्ध का सबध है आपका प्रचार यदि प्रभावशून्य है तो आप प्रचार करते ही क्यों हैं?

मैं अपना अस्तित्व कायम रखने के लिए। एक ओर युद्ध प्रयत्नो पर कोई ठोस प्रभाव नही पडा है पर दूसरी ओर यदि हम अपने विचार स्वातन्त्र्य के अधिकार का प्रयोग न करें तो अपना गला खुद घोट लेंगे।

लेथवेट पर देश में अहिंसा का कुछ विशेष समर्थन नही हुआ है।

मैं यदि ऐसी बात है, तो हमारी उपेक्षा कीजिए।

लेथवेट नही विशेष समर्थन नही हुआ है कहने मे मेरा यह अभिप्राय कदापि नही है कि हम उसकी उपेक्षा करते हैं। लोगो की अहिंसा में आस्था हो या न हो वे मिस्टर गाधी की बात तो सुनते ही हैं। गाधीजी कहते हैं यह काम मत करो और वे वह काम नही करते है। और पण्डित नेहरू द्वारा किसानो और विद्यार्थियो के उद्बोधन की भी कल्पना कीजिए।

मैं मेरी तो धारणा थी कि मैंने आपकी इस दलील का उत्तर कल दे दिया था।

लेथवेट हा आपने रेडियो की बात कही थी। पर रेडियो का लोगो के दिमाग पर स्थायी प्रभाव नही पडता है। इसके विपरीत गाधीजी और जवाहरलाल-जैसे आदमियो की बात का प्रभाव स्थायी होता है।

मैं मैं तो कहूगा कि हमारे प्रचार कार्य का जितना प्रभाव पडता हो उसके मुकाबले बर्लिन रेडियो के शरारत भरे प्रचार का असर कही ज्यादा गहरा होता है। हम लोग शरारत पर तो उतारू हैं नही। पर भारत में एक सौ रेडियो सेटो का प्रभाव उसी अनुपात में पचास गुना होता है। उस प्रचार को रोकना आपकी सामर्थ्य के बाहर है।

लेथवेट मैं जानता हू कि आप ऐसा दृष्टिकोण अपनायेंगे। मगर हम कानून का उल्लघन अथवा उसकी रचमात्र भी अवहेलना सहन नही कर सकते।

मैं इसीलिए तो हम कहते हैं कि आप या तो यह कानून रद्द कर दीजिए या उसमे ऐसा संशोधन कीजिए कि हम अपना विचार आजादी के साथ प्रकाश में ला सकें।

लेथवेट बस यही हम लोगों को एक भारी कठिनाई का सामना करना पड रहा है।

मैं मैं जानता हू कि आप इस प्रश्न पर गम्भीर रूप से विचार कर रहे हैं आप कहते है कि युद्ध प्रयत्न स्वेच्छापूर्वक हो। किसी को फौज में

भर्ती होने का मजबूर नही किया जाए किसी से जबरन पसा नही वसूला नाए। क्या आप इसके लिए रेडियो से प्रसारण करन के लिए तयार हैं ? इससे हमारी पाजीशन पर क्या प्रतिक्रिया होगी इस बार मे मैं कोई जोर नही लगाऊगा। पर क्या आप इसके लिए तयार है ?

नेथवेट (बहुत देर तक खामोश रहने के बाद) आपकी कायशीलता का हमारे युद्ध प्रयत्ना पर चाहे सीमित-सा ही असर पडे पर उमसे हमारे अस्तित्व को खतरा तो पैदा होता ही है।

मैं मेरा कहना है कि उमस आपके अस्तित्व को जितना खतरा पैदा होता हागा उससे कही अधिक खतरा हम उस अधिकार स वचित रखे जान से होता है।

लथवट बस यही बात है। अब अपने मसौद की बात उठाइय। मैं स्वीकार करता हू कि आपन सरकार की स्थिति के साथ सामजस्य स्थापित करने की भरमक कोशिश की है पर मैं गोला-बारूद के कल कार खाना म काम करनवालो के बारे म अपनी कठिनाई आपको समझा चुका हू। फिर राजनतिक विरोधिया की बात लीजिए। आप जानते ही हैं कि इन लोगा म सत्याग्रही भी हैं गर सत्याग्रही भी हैं। इन सबके भाषणा पर नियत्रण रखना आपके लिए असम्भव होगा।

मैं गाधीजी ने अपन निर्देश मे राजननिक आपत्ति की सीमा निर्धारित कर दी है। मेरी समझ म नही आता कि आप साम्राज्यवाद के नाम मात्र से क्यो बिदकते हैं और इस कथन स क्यो भडकते हैं कि यह युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है। आपको खीज क्यो होती है ? सर होमी मोदी जस सरकारपरस्त व्यक्ति तक का कहना है कि साम्राज्यवाद का जनाजा निकल चुका है। लगभग आधा दक्षिण अफ्रीका इस युद्ध क खिलाफ है क्योकि यह साम्राज्यवादी युद्ध है। आज सुबह मैं नाइटी थ सैंचुरी का दक्षिण अफ्रीका पर एक लख पढ रहा था। आपके लाभाथ उसके कई उदधरण ले आया हू। वहा युद्ध विरोधी प्रचार-काय स युद्ध प्रयत्ना को गहरा धक्का लग रहा है क्योकि श्री पाइरो क नेतृत्व म उसने उग्र रूप धारण कर रखा है। तिस पर भी वहा यह प्रचार काय जारी रखने दिया जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका और भारत मे ही कितना अतर है ! मैं इस स्थिति को उसके तकसिद्ध निष्कष तक नही ले जाना चाहता क्योकि मैं एक ऐस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व कर रहा हू जो अहिंसक युद्ध का सचालन कर रहा है।

लिथवेट (हमको) और साथ ही यह भी अच्छा ही है कि श्री बिड़ला जैसे तटस्थ लोग मौजूद हैं, जिन्होंने हमारे साथ अपना सम्पर्क बनाये रखा है।

मैं मेरे कहने का आशय यही था कि युद्ध के किसी भी दौर में समझौते की बातचीत सम्भव हो सकती है। दोनों पक्ष लड़ाई बंद कर दें। हम अपना आंदोलन स्थगित कर दें आप लोग अंधाधुंध गिरफ्तारियां बंद कर दें। मैं 'अंधाधुंध' शब्द का जान बूझकर इस्तेमाल कर रहा हूं। आपने देखा ही होगा कि गांधीजी ने कहा है कि आपकी ओर से समुचित उत्तर नहीं मिल रहा है। श्री पटवर्धन और श्री राका-जैसे आदमियों की गिरफ्तारी देखिए। इन लोगों ने युद्ध विरोधी वक्तव्य कदापि नहीं दिए होंगे, क्योंकि वे सत्याग्रही हैं और गांधीजी के निर्देश के बिना वैसा कदापि नहीं कर सकते थे।

लेथवेट इन मामलों के बारे में मेरी जानकारी नहीं है। अभी फाइलें मेरे पास तक नहीं पहुंची हैं।

मैं विदा लेने से पहले दो एक बातें और कहूंगा। हम उपवास के बारे में और गांधीजी के काम से हिटलर को अप्रत्यक्ष सहायता मिलने के बारे में बात कर रहे थे। मैं आपको यह बता देना चाहता हूं कि जिन कारणों से बाध्य होकर गांधीजी को लम्बा उपवास करना पड़ेगा उनमें से एक यह भी है कि यदि हिटलर यहां आने में सफल हुआ तो उसका मुकाबला करने की सामर्थ्य का हमारी जनता में सम्पूर्ण अभाव और नैतिक पतन भी शामिल है।

लेथवेट यह तो बड़े मजे की बात रही।

मैं दूसरी बात हरिजन के संबंध में है।

लेथवेट हां हरिजन के प्रश्न का मुझे उत्तर देना है। बात यह है कि मिस्टर गांधी को इस बाबत खुद फैसला करना है। वह या आप कानून की अवहेलना न करें बाकी तो सब ठीक ही है।

मैं आप शायद जानते होंगे कि १९३० में कानून की अवज्ञा करके हमने यंग इंडिया प्रेस की बलि दी थी। इस बार गांधीजी का वैसा करने का इरादा नहीं है इसलिए उन्होंने 'हरिजन' का प्रकाशन बंद कर देना ही ठीक समझा। हम चाहते तो वैसा कर सकते थे। हमारा अपना प्रेस है। पर गांधीजी अवज्ञा को उस सीमा तक नहीं पहुंचाना चाहते क्योंकि वह सरकार को परेशान करना नहीं चाहते।

लथवेट यदि वह इसी नीति का अवलम्बन युद्ध प्रयत्नों में भाग न लेने के संदर्भ में करते, तो कितना अच्छा होता।

मैं हम इसीलिए तो आपसे इस कानून को रद्द करने या उसमें हेर-फेर करने को कह रहे हैं।

लथवेट सारी कठिनाई इस बात की है कि जिस सीमित मात्रा में आप हमें परेशान करते हैं उससे हमारे युद्ध प्रयत्नों को और हमारे अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाता है।

मैं बस उतना ही जितना हमारे अस्तित्व का पैदा होता है, उससे अधिक नहीं। पर मैं इस बहस को और आगे नहीं बढ़ाऊंगा। मैंने अपना कथन समाप्त कर दिया। मैं तो अब भी यही कहूंगा कि मैंने आपसे जो-कुछ कहा है उसे ध्यान में रखें और उस पर गम्भीरता के साथ विचार करें। आप जब चाहें मुझे बुला भेजिए। मैं सदैव आने को तैयार पाया जाऊंगा।

लथवेट धन्यवाद। आपने जो कुछ कहा है मैं उसे ध्यान में रखूंगा। पर आप जानते ही हैं कि आपने जो खौफनाक प्रचार जारी कर रखा है उससे हमारी कठिनाइयां दिन पर दिन बढ़ती ही जायेंगी।

मैं आपके लिए कुछ हजार आदमियों को जेल भेजना कोई अर्थ नहीं रखता। आप उन्हें जेल में उन सबको रख सकते हैं वहां ३२०० कैदियों को रखने लायक स्थान है। पर एक बात यह है—हमारे सारे प्रचार का युद्ध प्रयत्नों पर उतना प्रभाव नहीं पड़ेगा जितना इन लोगों को जेलों में रखने पर पड़ेगा। मैं यह बात सच्चे दिल से कह रहा हूं कि अगर हम वह आजादी मिले जो हम चाहते हैं तो उससे आपके युद्ध प्रयत्नों में सहायता मिलेगी जितना कि आप कर रहे हैं। सारा सवाल जीने और जीते रहने देने का है। पर जो ढर्रा चल रहा है उसे ऐसे ही चलने दिया गया तो उससे कटुता की जो फसल तैयार होगी वह न आपके लिए कल्याणकारी होगी न हमारे लिए। जाने से पहले मैं अपना एक विचार और पेश करता जाऊं। आप लोग साम्राज्य की बात कहते हैं और यह दावा करते हैं कि भारत उसका एक अंतरंग भाग है और भी न जानें क्या क्या कहते रहते हैं। इस युद्ध की समाप्ति पर समार की क्या रूप रेखा होगी यह न मैं जानता हूं न आप जानते हैं। पर मैं अपने हृदय के पूरे योग के साथ आपसे यह कह देना चाहता हूं कि यदि आप गांधीजी की मर्जी अथवा यदि उसे

बिलकुल घटाकर कहा जाए तो उनके मंत्री के दावे का अपनी योजनाओं का अंतरंग भाग बनायेंगे तो फायदे में रहेंगे। एक दिन आएगा जब आप उन्हें अधिक अच्छी तरह समझेंगे। इस समय तो वह जो कुछ कह रहे हैं या कर रहे हैं उसका मर्म आपकी समझ में नहीं पैठ रहा है। पर यह बात याद रखिए कि स्थिति पर काबू रखने की दिशा में उनका असीम प्रभाव आपको जितना लाभ पहुंचा रहा है उसके मुकाबले में उनके विरोध से उत्पन्न होनेवाली असुविधा का महत्त्व नहीं के बराबर है। मुझे इतना ही कहना था।

१३०

अहमदाबाद जाते हुए
१५-११-४०

प्रिय घनश्यामदासजी,

क्या आपने मि० मारिस ग्वायर को मसौदा दिखाया था? मुझे भूलाभाई ने फोन पर बताया कि आपने दिखाया था और उसे देखकर वह भयभीत हो गया। मुझे उससे कोई आशा नहीं है। पर मामले को आगे बढ़ाते रहिये। बापू ने मेरे वार्तालाप के सम्यक विवरण का पारायण किया। अभी आपको उसकी आखिरी किस्त भेजनी है, जो मैंने ट्रेन में तयार की है। बापू के एलची का काम मैंने इतनी अच्छी तरह निभाया, इससे बापू बड़े खुश हुए।

उर्मिलादेवी धीरेन की रिहाई की चेष्टा के लिए जमीन-आसमान एक कर रही हैं। उन्होंने उसे १५ दिन के परोल पर रिहा कराया है, जिसमें वह हममें सम्पर्क स्थापित कर सके। वह यह वचन देने को तैयार है कि (१) फैक्टरी का बंगला तयार होते ही धीरेन वहां चला जायगा, (२) सरकार उससे जो-कुछ करने को कहेगी, वह करने को तत्पर रहेगा, आदि। रिहाई के लिए यह कीमत बहुत अधिक है। बापू के आदेशानुसार मैंने उर्मिलादेवी को तार देकर ऐसा कोई वचन न देने की ताकीद कर दी है। मैंने उन्हें बता दिया है कि नलिनी बाबू और देवीप्रसाद खेतान ने सहायता करने का वचन दे दिया है और आप गवर्नर से मिलेंगे। यदि ये प्रयत्न विफल सिद्ध हों, तो उर्मिलादेवी को उसे जेल में देखकर ही संतुष्ट हो जाना चाहिए। क्या ठीक है न?

सप्रेम
महादेव

१३१

सेवाग्राम
१५ ११ ४०

प्रिय घनश्यामदासभाई

पू० बापू के आज्ञानुसार मैं आपको लिख रही हू ।

वे कहते हैं कि आपने कुछ रुपया सटीक रामायण के लिए कलकत्ता में दिया था। वे किताबें अगर मिल सकें तो बापू को ५० प्रतियों की आवश्यकता है। लेकिन बापू कहते हैं कि वे यह नहीं चाहते कि आप रुपया खर्च करके ५० प्रतियां उन्हें भेजें। न हो तो न सही। शायद अब यह किताबें अप्राप्य हो गई हैं।

आपकी तबियत अच्छी होगी। बापू अच्छे हैं। काम का तो कोई अन्त ही नहीं।

महादेवभाई आज आयेंगे तो वहां की खबर मिलेगी। मैं बिलकुल निराश नहीं हू। ईश्वर के हाथ में सब काम है और बापू ईश्वर भक्त हैं। सब ठीक होगा।

आपकी बहन
अमृतकौर के प्रणाम

१३२

अहमदाबाद से वर्धा वापस लौटती ट्रेन से
१८ ११ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

मनुभाई त्रिवेदी एक बड़ा होनहार डाक्टर है। सब तालीम वीएना में और जर्मनी में पाई है परन्तु परदेशी डिग्री हमारे प्रांत में रजिस्टर नहीं हुई है इसलिए उन्हें काम चलाने में बड़ी दिक्कत पड रही है। बाल रोग और बाल-स्वास्थ्य उनका खास विषय है। हमारी मिलों में या श्री पदमपतजी की मिल में उनका अच्छा उपयोग हो सकता है। बापू उन्हें अच्छी तरह जानते हैं। उनके पिता तो हमारे बहुत पुराने दोस्त हैं और हमारे काम में कई सालों से बहुत सहायता दे

रह हैं। नरहरिभाइ, ठक्कर बापा सब मनुभाई को पहचानते हैं। आप उन्हें मिलें और उनका उपयोग कहा हो सकता है देखें और अगर हो सके तो उपयोग कर लें। यू० पी० म और बगाल मे परदशी डिग्री रजिस्टर होती है एसा मेरा खयाल है।

कुछ घटा के लिए अहमदाबाद आया और सरदार को विदा देकर वापस जा रहा हू।

आपका
महादव

१३३

२१ नवम्बर १९४०

प्रिय महादवभाइ

लेथवेट के साथ तुम्हारी जो मुलाकातें हुई हैं उनके विवरण की आखिरी किस्त का इन्तजार कर रहा हू।

मैंने मसौदा सर मारिस ग्वायर को दिखाया था। उन्होंने कोई टीका टिप्पणी नहीं की और वह अपने पास रख लिया कहा कि उसका कोई उपयोग हो सका तो करेंगे। इसलिए अब तुम्हें उसकी एक और प्रति भेजनी होगी।

मैं अभी सेवाग्राम नहीं आ रहा हू। अभी हाल ही में तो मिलना हुआ था। पर कलकत्ता जाने और लेथवेट से भी एक बार फिर मिल लेने के बाद यदि मुझे सेवाग्राम आना ठीक जचा तो वहा आऊगा। मुझे यहा सब-कुछ देखने-सुनने से तो एसा लगता है कि यह व्याधि अपना प्रकोप पूरा करके रहेगी।

यह जानकर खुशी हुई कि मूर काफी प्रभावित होकर लौटा है। मैं तो यह भी कहूगा कि बापू को वाइसराय के साथ सम्पर्क बनाए रखना चाहिए। यह लडाई अपने ढग की निराली होगी। लडाई भी जारी रहेगी पारस्परिक सम्पर्क भी बना रहेगा सौहार्द सौजन्य भी बरता जाता रहेगा। इस तरह अहिंसा के लिए अनुकूल वातावरण तयार होगा।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

१३४

२५ नवम्बर, १९४०

प्रिय महादेवभाई,

मैं अहमदाबाद से कल वापस लौटा। वहा हम लोगो ने साबरमती आश्रम के ट्रस्टियो की बैठक बुलाई थी। साथ ही हरिजन-सेवक संघ की प्रबंधकारिणी की बैठक भी हुई थी।

मुझे आश्रम के बारे मे विशेष रूप से कुछ कहना है। आश्रम में जो काम हो रहा है उसका मैंने मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। खादी-संस्था और गोशाला को छोड़ वहा और जो-कुछ हो रहा है वह होने-न होने के बराबर है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि आश्रम को हरिजन सेवक संघ के सुपुर्द जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया गया था वह सिद्ध नहीं हुआ है।

कई एक ऐसी कठिनाइया हैं जिन्हें हल करना आवश्यक है। उनमें से एक कठिनाई बालिका विद्यालय को लेकर है। बालिकाए न विद्यालय में भर्ती हो रही हैं न छात्रावास में ही रहने को तैयार हैं, क्योंकि हमारी पाठ्य-पुस्तिकाए विश्व विद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्य क्रम के अनुरूप नहीं हैं। मेरी धारणा है कि जहा तक हरिजनो की शिक्षा का सम्बन्ध है, बापू को इस बात का आग्रह नहीं है कि विश्वविद्यालय के पाठ्य क्रम से वह भिन्न रहे।

इसके अलावा कार्यकर्त्ता गण आर्थिक उत्तरदायित्व लेने से बेहद डरते हैं क्योंकि दक्षिणामूर्ति में नरहरिभाई को तीखा अनुभव हो चुका है।

यहा मैं एक ऐसी योजना पेश कर रहा हू, जो मैं देखता हू, कार्यकर्त्ताओं को पसंद है। वह योजना यह है कि दिल्ली की उद्योगशाला की कोटि का एक उद्योग मन्दिर आश्रम में भी शुरू किया जाय, पर इसमें केवल बालिकाए ही रहें। श्रीमती नेहरू ऐसा एक उद्योग मंदिर दिल्ली में भी खोलना चाहती थी, पर मुझे वह विचार नहीं जचा, क्योंकि मैं ऐसी कोई संस्था चलाने की आवश्यक क्षमता अपने लोगों में निश्चयपूर्वक नहीं पा सका। पर मैं समझता हू कि ऐसी संस्था के लिए गुजरात बिलकुल उपयुक्त स्थान रहेगा। वहा महिला कार्यकत्रियो का अभाव नहीं रहेगा और यदि नरहरिभाई पर आर्थिक जिम्मेवारिया नहीं लादी जायेंगी तो उन्हें ऐसी संस्था के सुचारु संचालन का भरोसा है।

तुम जानते ही हो कि माधव का रुपया वहा है ही और मैंने नरहरिभाई को वचन दिया है कि हम केन्द्र से ८०००) दे सकेंगे। १०० बालिकाओं की संस्था का

व्यय भार उठाने के लिए १८०००) की जरूरत होगी। इस रकम मे रहने, खाने कपडे और शिक्षण—सबका खर्चा आ गया। केन्द्र से ८०००) की प्राप्ति होती रहेगी, और इतनी ही रकम म्यूनिसिपैलिटी तथा सरकार से हासिल की जा सकती है। फलत धन-सग्रह का प्रश्न ही नही उठता।

मैं इस योजना की सफलता के बारे म काफी आशावान हू और नरहरिभाई तथा अन्य लोगो ने भी इसे पसद किया है। ठक्कर बापा मुझसे सहमत हैं। इस लिए बापू की अनुमति मिलने भर की देर है याजना का मूर्त रूप दिया जा सकगा। मैं दिल्ली म एक हजार छात्रो की ऐसी सस्था की कल्पना कर रहा हू वसी ही एक सस्था गुजरात म अर्थात साबरमती म रहे जिसम १००० छात्राए हो। यदि हम ऐसा कर सकें तो यह काफी ठास उपलब्धि हागी। एसी सस्थाओ के भविष्य के बारे म मुझे बडी आशाए हैं। इसलिए यह पत्र बापू को सुना देना और मुझे उनकी स्वीकृति लिख भेजना।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ दसाई
सेवाग्राम

१३५

सेवाग्राम, वर्धा
२७ ११ ४

प्रिय श्री लेथवट

मैं यह पत्र वाइसराय महादय तक पहुचाना चाहता हू और यह भी चाहता हू कि इसम लिखी बातें यदि सम्भव हा ता समुद्री तार द्वारा भारत सचिव के पास भेज दी जायें जिसस वाइसराय जिस रूप म पसद करें उस रूप मे भारत सचिव का ध्यान इस विषय म आकृष्ट किया जा सके।

प्रेस मे छपी खबर के अनुसार भारत-सचिव ने निम्नलिखित उद्गार व्यक्त किये बताते हैं

'मिस्टर गाधी के नेतृत्व म काग्रेस ने अपना असतोष व्यक्त करने के

लिए विस्ता म सत्याग्रह द्वारा कानून की अवज्ञा करने का निश्चय किया है। उन्होंने (अर्थात् मेरे साथियों ने) यह माग की है कि उन्ह भारतवासियों स फौज म भर्ती न होने शस्त्रास्त्र निर्माण करने के कल-कारखानों म काम न करने तथा युद्ध-कोष म रुपया न देने की बात कहने की स्वतत्रता है।'

सिद्धान्त क रूप म तो इस वक्तव्य की सत्यता म इन्कार करना सम्भव नही है पर श्री एमरी अपने श्रोताओं क सामने एक एसा विचार पश कर रहे हैं, जो मरे १४ अक्तूबर १९४० क प्रेस-वक्तव्य क निम्नलिखित उद्धरण स प्रतिपादित नही होता मैं जानता हू कि भारत एकमत नही है भारत म एक एसा पक्ष है जो युद्ध म रुचि रखता है और जो अग्रेजो की सहायता क द्वारा युद्ध कला म दीक्षा लने म विश्वास रखता है। फलत काग्रेस की यह इच्छा नही है कि वह गोला-बारूद क कल-कारखाना अथवा बरको का घिराव करे और लोगो को उन की इच्छा क अनुरूप काय करन स रोक। इसक साथ ही इस घोषणा को भी ध्यान म रखा जाय (जो मरी ईजाद है और जिसका सहारा लेकर सविनय अवज्ञा करनेवाला को जल भजा जा रहा है) कि ब्रिटेन की युद्ध प्रवत्तियो म धन जन द्वारा योगदान करना गलत है। हमारा एकमात्र प्रयत्न अहिंसात्मक प्रतिरोध द्वारा युद्ध का विरोध करना है।

यह कहना बिलकुल गलत है कि हमन स्वच्छापूवक धन-दान करनेवालो को दान करने से रोकने की स्वतत्रता की माग की है। असलियत यह है कि ब्रिटिश सरकार की ओर स धन-सग्रह करन म जोर जबरदस्ती बरती जा रही है और उन लोगो म रुपया वसूल किया जा रहा है जिनकी रुपया देन की इच्छा नही है तथा जो रुपया दन की स्थिति म भी नही हैं।

इसक बाद मैं भारत-सचिव के पडित नहरू के सम्ब ध म व्यक्त किय गय उदगार उद्धत करता हू

विनोबा भाव क बाद पडित नहरू की बारी थी पर उन्होन अपनी स्पीचो म तिथि तथा भाषण की शली दोनो बातो म मिस्टर गाधी के निर्देश का उल्लघन किया। य स्पीचें हिंसा की प्रवृत्ति म ओत प्रोत थी और निश्चित रूप से भडकाने वाली थी और जान बूझकर युद्ध प्रयत्नो मे बाधा डालन क लिए दी गई थी और उनका वसा ही परिणाम भी हुआ। जो भी हो पडित नेहरू को क्या दण्ड दिया जाए यह तय करना अदालत का काम था प्रशासनिक ढाचे का नही। यदि उन्हें वह दण्ड अधिक जचे तो वह अपील कर सकते हैं।

मैं इस वक्तव्य को एक ऐसे व्यक्ति की निष्ठुर मानहानि मानता हू जो जेल क सीखचो मे बद है। उनकी स्पीचो म ऐसी कोई बात नही है जिसस हिंसा की

थोडा भी गंध आती हो। मैं यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हूं कि पंडित नेहरू ने मेरे निर्देश का उल्लंघन किया है। वे मेरे पास सविनय अवज्ञा की तिथि और स्थान के बारे में पूछने आये थे। वास्तव में प्रांतीय सरकार ने व्यतिक्रम किया। मैंने वाइसराय महोदय को ३० अक्तूबर को जो पत्र लिखा था, उसमें मैंने बता दिया था कि सविनय अवज्ञा करनेवाले अगले व्यक्ति पंडित नेहरू होंगे और तिथि और स्थान निश्चित होते ही मैं उन्हें सूचना दे दूंगा। उनके अपने घरेलू प्रबंध करने से पहले ही उनकी यात्रा के दौरान उन्हें गिरफ्तार करके गोरखपुर ले जाया गया और वहां मामला चलाया गया। एक प्रतिहिंसापूर्ण दण्डाज्ञा के आरोप के खिलाफ यह सुझाव पेश करना कि पंडित नेहरू अगर चाहते तो अपील कर सकते थे निष्ठुर परिहास से भी गया-बीता काम है। माननीय भारत सचिव को यह अवश्य ज्ञात रहा होगा कि पंडित नेहरू दण्ड के खिलाफ अपील नहीं करेंगे।

मैं यह पत्र अपना यह क्षोभ व्यक्त करने के लिए लिख रहा हूं कि जिस व्यक्ति के जिम्मे इतने बड़े देश की देखभाल करने का काम है वह सद्भावनापूर्ण प्रतिभा के साथ अपने पद की मर्यादा के सर्वथा प्रतिकूल ढंग से पेश आया है। ऐसा लगता है कि उन शक्तियों के साथ जो ब्रिटिश की मित्र नहीं हैं और न मित्रता की भावना से अनुप्राणित हैं येन केन प्रकारेण दोस्ती गांठने की ठानती हैं और उन लोगों के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया है जो उनके मित्र रहे हैं और बने रह सकते हैं।

मैं यह पत्र मनोव्यथा से पीडित होकर लिख रहा हूं, क्रोध तो है ही नहीं। इसे प्रकाशित करने का मेरा कोई इरादा नहीं है।

भवदीय
मो० क० गांधी

लिए विस्तार में सत्याग्रह द्वारा कानून की अवज्ञा करने का निश्चय किया है। उन्होंने (अर्थात मेरे साथियों ने) यह माग की है कि उन्हें भारतवासियों से फौज मे भर्ती न होने शस्त्रास्त्र निर्माण करने के कल कारखानो मे काम न करने तथा युद्ध-कोष में रुपया न देने की बात कहने की स्वतन्त्रता है।

सिद्धान्त के रूप मे तो इस वक्तव्य की सत्यता से इन्कार करना सम्भव नही है पर श्री एमरी अपने भ्रान्त श्रोताओं के सामने एक ऐसा विचार पेश कर रहे हैं, जो मेरे १४ अक्तूबर १९४० के प्रेस-वक्तव्य के निम्नलिखित उद्धरण से प्रतिपादित नही होता मैं जानता हू कि भारत एकमत नही है भारत में एक ऐसा पक्ष है, जो युद्ध में रुचि रखता है और जो अग्रेजो की सहायता के द्वारा युद्ध कला में दीक्षा लेने में विश्वास रखता है। फलत काग्रेस की यह इच्छा नही है कि वह गोला बारूद के कल कारखानो अथवा बरको का घिराव करे और लोगो को उनकी इच्छा के अनुरूप काय करने से रोके। इसके साथ ही इस घोषणा को भी ध्यान में रखा जाय (जो मेरी ईजाद है और जिसका सहारा लेकर सविनय अवज्ञा करनेवालो को जेल भेजा जा रहा है) कि ब्रिटेन की युद्ध प्रवृत्तियो में धन जन द्वारा योगदान करना गलत है। हमारा एकमात्र प्रयत्न अहिंसात्मक प्रतिरोध द्वारा युद्ध का विरोध करना है।

यह कहना बिलकुल गलत है कि हमने स्वेच्छापूवक धन दान करनेवालो को दान करने से रोकने की स्वतत्रता की माग की है। असलियत यह है कि ब्रिटिश सरकार की ओरसे धन सग्रह करने में जोर जबरदस्ती बरती जा रही है और उन लोगो से रुपया वसूल किया जा रहा है जिनकी रुपया देने की इच्छा नही है तथा जो रुपया देने की स्थिति में भी नही हैं।

इसके बाद मैं भारत-सचिव के पडित नेहरू के सम्बन्ध में व्यक्त किये गये उदगार उद्धत करता हू

विनाश भाव के बाद पडित नेहरू की बारी थी पर उन्होने अपनी स्पीचो में तिथि तथा भाषण की शैली दोनो बातो में मिस्टर गाधी के निर्देश का उल्लघन किया। ये स्पीचें हिंसा की प्रवृत्ति से ओत प्रोत थीं और निश्चित रूप से भडकाने वाली थीं और जान बूझकर युद्ध प्रयत्नो मे बाधा डालने के लिए दी गई थीं और उनका वैसा ही परिणाम भी हुआ। जो भी हो पडित नेहरू को क्या दण्ड दिया जाए यह तय करना अदालत का काम था प्रशासनिक ढाचे का नही। यदि उन्हें वह दण्ड अधिक लगे तो वह अपील कर सकते हैं।

मैं इस वक्तव्य को एक ऐसे व्यक्ति की निष्ठुर मानहानि मानता हू जो जेल के सीखचो मे बद है। उनकी स्पीचो में ऐसी कोई बात नही है जिससे हिंसा की

थाडा भी गध आती हो। मैं यह स्वीकार करन का तैयार नही हू कि पडित नेहरू ने मेरे निर्देश का उल्लघन किया है। वे मेरे पास सविनय अवज्ञा की तिथि और स्थान के बारे म पूछने आये थे। वास्तव मे, प्रातीय सरकार ने व्यतिक्रम किया। मैंने वाइसराय महोदय को ३० अक्तूबर का जा पत्र लिखा था, उसम मैंने बता दिया था कि सविनय अवज्ञा करनेवाले अगले व्यक्ति पडित नेहरू होग और तिथि और स्थान निश्चित होते ही मैं उन्हे सूचना दे दूगा। उनके अपने घरेलू प्रबन्ध करने स पहले ही उनकी यात्रा के दौरान उन्हे गिरफ्तार करके गोरखपुर ले जाया गया और वहा मामला चलाया गया। एक प्रतिहिंसापूर्ण दण्डाना के आरोप के खिलाफ यह सुझाव पेश करना कि पडित नेहरू अगर चाहते, तो अपील कर सकते थे निष्ठुर परिहास से भी गया-बीता काम है। माननीय भारत सचिव को यह अवश्य ज्ञात रहा होगा कि पडित नेहरू दण्ड के खिलाफ अपील नही करेंगे।

मैं यह पत्र अपना यह क्षोभ व्यक्त करने के लिए लिख रहा हू कि जिस व्यक्ति के जिम्मे इतने बडे देश की देखभाल करने का काम है वह सदभावनापूर्ण प्रतिभा के साथ अपने पद की मर्यादा के सर्वथा प्रतिकूल ढग से पेश आया है। ऐसा लगता है कि उन शक्तियो के साथ जो ब्रिटिश की मित्र नही हैं और न मित्रता की भावना से अनुप्राणित है, येन केन प्रकारेण दोस्ती गाठने की ठानली हैं और उन लोगो के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया है जो उनके मित्र रहे हैं और बने रह सकते हैं।

मैं यह पत्र मनोव्यथा से पीडित होकर लिख रहा हू क्रोध ता है ही नही। इसे प्रकाशित करने का मेरा कोई इरादा नही है।

भवदीय
मो० क० गाधी

१३६

नया दिल्ली

३० नवम्बर, १६४०

प्रिय मिस्टर गाधी

वाइसराय न आपके २७ नवम्बर क पत्र क लिए अनक धन्यवाद दन का आदेश दिया है और आपको यह सूचित करने को कहा है कि वह उस भारत सचिव को अविलम्ब भेज रहे है।

भवदीय

ज० जी० लथवट

मिस्टर मा० क० गाधी

१३७

सगाव, वधा

३० ११ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

वापू न नाजिमुद्दीन को तार भेजकर मेर पत्र की याद दिलाई थी। उसका इतन दिन वाद अब यह उत्तर तार द्वारा आया है

मिस्टर देसाई क खत का जवाब देने मे दर हुई माफ कीजियगा। मामला अभी जेर गौर है। दो एक दिन बाद जवाब दूगा।

मैं समझता हू अब इस मामल को आप अपने हाथ म ले लें तो अच्छा होगा। मर पत्र की नकल अपने एक पत्र के साथ आप भेजिए और आप जब कलकत्ता वापस जाए तो उनसे मुलाकात भी कीजिए, यदि तब तक कुछ न हुआ हो तो।

रामनरश त्रिपाठी के पास स यह दु ख भरी चिट्ठी आई है। उनका कहना है कि जिन दा सज्जना के जिम्म जाच पडताल का काम सौंपा गया था वे दोना ही उनके प्रति विरोध की भावना रखते थ—खास तौर म महावीरप्रसादजी जिनके बारे म उन्होंन एक लम्बा पत्र लिख भेजा था और बताया था कि महावीरप्रसाद जी उनके खिलाफ क्यो हैं? मैं इस मामले के गुण दोष क बारे म कुछ नही कहूगा।

मेरा कहना तो केवल इतना ही था कि यदि आप इनके लिए कुछ कर सकें तो अच्छा रहे। खैर जब भेंट होगी तो इनके सम्बन्ध में और अधिक बातें होंगी।

साबरमती के बारे में आपका पत्र बापू को बहुत अच्छा लगा। उन्हें यह देखकर सुख हुआ कि आपने अपनी कामकाजी बुद्धि से मूल व्याधि का पता लगा लिया और आपने इस समस्या का जो हल बताया है उससे उन्हें बड़ा संतोष हुआ है। तो फिर काम में जुट जाइये और साबरमती बालिका आश्रम को बालिकाओं के कलरव से गुंजायमान कर दीजिए।

बापू स्वस्थ हैं पर बेहद थके हैं। एक-दो सप्ताह के लिए कहीं अज्ञात में रहें तो कितना अच्छा हो। उन्हें पूरा आराम मिलना चाहिए पर यह कल्पना असंभव प्रतीत होती है और खूब इच्छा होते हुए भी वह यहां आराम नहीं ले सकेंगे।

सप्रेम
महादेव

पुनश्च

रामायण की पचास प्रतियां मिल गई धन्यवाद।

१३८

सेगांव वर्धा
१ १२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

लथवेट के साथ हुई दूसरे दिन की मुलाकात की रिपोर्ट इसके साथ भेजता हूं।

हमने लथवेट को जो पत्र लिखा था उसमें आश्चर्य हुआ है कि उसने हमारी मुलाकात की गलतफहमी पैदा करनेवाली रिपोर्ट विलायत के लोगों को क्या भेजी है जो पहले से ही काफी गलत खबरें पा रहे हैं। उसे सच्ची हकीकत भेजनी चाहिए। इतना कहकर अपने ही पहले के पत्र के दो फिकरे देकर तार द्वारा एमरी को भेजने के लिए कहा है।

आपका,
महादेव

१३६

सेवाग्राम, वर्धा
२ १२ ४०

प्रिय सर रजिनाल्ड

महादेव देसाई ने दिल्ली में रहकर जो चर्चा की और उसका उन्होंने जो नोट मेरे लिए तैयार किया है उसमें आपका सन्देश भी शरीक है। वह संदेशा इस प्रकार है

अच्छा अच्छा मेरी समझ में मिस्टर गांधी के लिए यह करना ही उपयुक्त रहेगा कि जिस प्रकार उन्होंने प्रत्येक अंग्रेज के लिए एक घोषणा पत्र जारी किया था उसी प्रकार वह अपने देशवासियों के लिए भी एक घोषणा पत्र तैयार करें और उसमें अपनी स्थिति पर प्रकाश डालें। मेरी ओर से मिस्टर गांधी को यह संदेशा दे दीजिए।

मैं बेहद थक गया हूं और इधर कुछ दिनों से मैंने दैनिक काम-काज की मात्रा में बहुत कमी कर दी है। यह उत्तर भेजने में इसी कारण देर लगी। सत्य के प्रतिपादन में आपके संदेशे का चर्चा का विषय बना रहा हूं। आप कितने कार्यव्यस्त और कितने चिंतातुर हैं सो मुझसे छिपा नहीं है। पर सत्याग्रह को सक्रिय रखने का एकमात्र मार्ग यही है कि सत्याग्रही सत्य के अनुसंधान में अहर्निश लगा रहे और उसी के अनुरूप आचरण करता रहे। सत्य के अनुसन्धान की दिशा में अपनी इस प्रगति के दौरान सत्याग्रही के लिए यह दिखाना जरूरी है कि वह अपने प्रतिपक्षी के पक्ष को समझने और उसकी सराहना करने को सदैव तत्पर और आतुर है। आपके संदेश को मैं इसी रूप में ग्रहण कर रहा हूं।

यदि मेरा काम उपदेश देना होता तो आपने मुझे जो सलाह भेजी है, वह ठीक उतरती। पर मैंने अपने जीवनकाल में कभी उपदेश नहीं दिया। मैं तो एक ऐसा कर्मठ सुधारक हूं जो एक ऐसे प्रयोग में संलग्न है जिसका राजनैतिक क्षेत्र में इससे पहले कभी परीक्षण नहीं हुआ था। अतः भूल करने की जोखिम उठाकर भी मैं उस मार्ग पर तब तक चलता रहूंगा जिसे मैंने स्वयं चुना है और जब तक मुझे अपने कार्य के दोषरहित होने के बारे में किसी प्रकार का संशय नहीं है। अपने मिशन को पूरा करने के दौरान मैं सरकार को कम-से-कम व्यस्त करना चाहता हूं। यदि मैं अपने मिशन में सफल हुआ तो उससे भारत तो लाभान्वित होगा ही साथ-ही-साथ ब्रिटेन और शेष संसार भी लाभान्वित हुए बिना नहीं

रहेंगे। और यदि मैं असफल रहा, तो उससे सरकार की कोई क्षति नहीं होगी। इस तर्क को मैं इससे आगे ले जाने में असमर्थ हूँ। सम्भव है, मैंने जो-कुछ कहा है वह तर्क न होकर मेरे कार्य के उद्देश्य का स्पष्टीकरण-मात्र हो और उसका अभिप्राय उस उद्देश्य के प्रकाश में ही जाना जा सके। शेष सारी बात का निर्णय तो समय ही करेगा।

महादेव देसाई ने मुझे आपके प्रियजनों के घमासान युद्ध के बीच में फंसे रहने की बात बताई है। मैं इस बारे में सोचता हूँ कि जो बात आप पर लागू है वह ब्रिटेन के अन्य सुविदित परिवारों पर भी लागू है। उनकी बगल में जा खड़े होने की मेरी कितनी अभिलाषा है। पर मेरे कर्तव्य ने मुझे एक विपरीत दिखाई देनेवाले पक्ष का अपनाने का आदेश दिया है। मैं इस वस्तुस्थिति से सान्त्वना लेकर संतुष्ट हो जाता हूँ कि यद्यपि हम दोनों एक-दूसरे के विपरीत प्रतीत होनेवाले शिविरों में स्थान ग्रहण किये हुए हैं फिर भी मैं उसी लक्ष्य सिद्धि में लगा हुआ हूँ जिसकी आशा ब्रिटिश सरकार ने कर रखी है। साथ ही, मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि ब्रिटिश सरकार ने हिटलरवाद को परास्त करने के निमित्त जो तौर-तरीका अपना रखा है वह कदापि कारगर नहीं होगा यदि होगा तो मेरा ही तौर तरीका होगा।

भवदीय
मो० क० गांधी

१४०

२ दिसम्बर १९४०

प्रिय महादेवभाई

जब मैं कलकत्ता वापस जाऊंगा तो धीरेन के मामले को देखूंगा। दिसम्बर के मध्य तक वापस जाने का विचार है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बापू ने साबरमती सम्बन्धी योजना कार्यान्वित करने की स्वीकृति दे दी है। अब मैं इस काम को हाथ में लूंगा।

अब बापू के स्वास्थ्य की बात। उनका वर्तमान प्रोग्राम तो फिलहाल पूरा हो ही गया है और अगला कदम उठाने तक उन्हें यह देखना है कि उन लोगों पर क्या प्रतिक्रिया होती है तो फिर वे एक पखवाड़े के लिए विश्राम क्यों नहीं कर लेते ? कम-से कम तुम तो उन पर दबाव डालते ही रहो।

रही रामनरेशजी के पत्र की बात सो उन्होंने मुझे भी वैसा ही पत्र लिखा था। पर क्या तुम इस बार म उनका समाधान नहीं करा सकते कि पोद्दारजी अथवा मातण्ड दोनो मे स कोई भी उनके खिलाफ नहीं है ? मेरी समझ म वह दोना क साथ अन्याय कर रहे है। मातण्ड कितना सीधा सादा आदमी है तुम खुद जानते हो। रहे महावीरप्रसादजी सो उनम पर्याप्त न्याय बुद्धि है। जिस चीज न मुझे अपना कत्तव्य निर्धारित करने को प्रेरित किया है वह है हरिजी और पारस नाथजी की सम्मति। ये दोना ही द्वेप भावना स रहित हैं। वास्तव म रामनरेशजी अपने दृष्टिकोण पर इतनी दृढता क साथ कायम हैं—और इस दिशा म मेरी महानुभूति उनके साथ है—कि वह असली बात को समझ नहीं पा रहे हैं और जो असली बात मुझे बताई गई है वह यह है कि हम उनकी उस समय तक सहायता करने मे असमर्थ रहेंगे जब तक घाटा उठाने को तयार न हो। श्रीगोपाल नेवटिया उन्ही का एक शिष्य है पर उसकी भी यही राय है। मुझे यकीन है कि रामनरेशजी की योग्यता का अन्य दिशाओ म उपयोग हो सकता है और होना भी चाहिए। उन्हे अपनी इस धारणा को त्याग देना चाहिए कि उनकी सहायता केवल एक ही प्रकार से की जा सकती है और वह यह है कि हम उनकी पुस्तके ले लें। कम-से कम उनकी सात्वना के लिए तो उन्हे लिख ही दो कि जो-कुछ किया गया है वह द्वेप भावना से पूणतया रहित होकर किया गया है।

भुसावल से लौट आया हू। अजन्ता और एलोरा जाने का भी विचार था—पर जब लोग जलो म ठूसे जा रहे हैं ऐसे समय वहा जाने की इच्छा नहीं हुई। भुसावल का समारोह बडा सुन्दर रहा और मुझे यह देखकर आश्चय मिश्रित आनन्द हुआ कि भुसावल जलगाव और पास पडोस के अचल म मारवाडी लोग ही मुख्यत सामाजिक कार्यों की देखभाल करत हैं। इनम शिक्षित अशिक्षित सभी लोग हैं। और सभी ने समान उत्साह का परिचय दिया। दास्ताने ने तुम्हें लिखा भी होगा। मैंने जो स्पीच दी थी उसका अग्रजी रूपातर बजरग ने किया था और उसे हिन्दुस्तान टाइम्स म प्रकाशनाथ भेज दिया था। इस पत्र के साथ वह भेजी जा रही है तुम्हे रोचक लगेगी ऐसा विश्वास है।

सप्रेम
घनश्यामदास

पुनश्च

मेरी साबरमतीवाली योजना को बापू न स्वीकृति देकर मुझे जिस उत्साह स भर दिया है उसकी तुम कल्पना नहीं कर सकत।

१४१

नयी दिल्ली
७ दिसम्बर १६४०

प्रिय मिस्टर गांधी

मेरे सदेशे का उत्तर देकर आपने जिस सौजन्य का परिचय दिया उसके लिए तथा अपने विचारो से मुझे अवगत कराने मे आपने जो कष्ट उठाया उसके लिए धन्यवाद। आपकी स्पष्टवादिता के लिए मैं अत्यत कृतज्ञ हू। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप विपक्ष मे दिखाइ तो पडते हैं पर वास्तव म हम लोगो का लक्ष्य एक ही है। यद्यपि यह परिताप का विषय है कि उस लक्ष्य सिद्धि के लिए अपनाये गये तौर-तरीको को लेकर हमारे और आपके बीच मतभेद है तथापि मैं यह देखता हू कि आपको अपनी लक्ष्य सिद्धि अपने ही ढग से करने के लिए स्वतत्र छोड देना ठीक रहेगा।

भवदीय
रेजिनाल्ड मक्सवल

१४२

सवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रात)
८ १२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिल गया। लक्ष्मीदास भाई तो चले गये पर नरहरिभाई है। वह कुछ योजना तयार कर रहे हैं। पर वे रहें या न रहें बापूजी चाहते हैं कि आप आ ही जायें यह अच्छा होगा। तारीख तो अब जो आपको अनुकूल हो वही यानी आप अपना बम्बई का काम पूरा करके ही आइये।

आपका,
महादेव

१४३

सेवाग्राम वर्धा
१० १२ ४०

प्रिय श्री लेथवेट

मेरे अन्तराल म जो घटित हो रहा है और जिस रूप म वह प्रकट होनेवाला है उसके बारे म वाइसराय महोदय को जानकारी देन का समय अब आ गया है।

मैं जो भी कोई कदम उठाता हू उस उठाते समय मुझे उन कठिनाइयो का ज्ञान रहता है जिनके दौर से ब्रिटेन की शूरवीर जनता गुजर रही है। यही कारण है कि मैं इतनी धीमी चाल स और बहुत सोच विचार क बाद अगला कदम उठा रहा हू। मेरा यह दृढ विश्वास है कि मैं जो-कुछ कर रहा हू उसके द्वारा मैं ब्रिटिश जनता की भी उतनी ही सेवा कर रहा हू जितनी अपने देशवासियो की। मेरे लिए ऐसा करना तभी सम्भव है जब मैं आन्दोलन का पूणतया अहिंसापूण रखू अथवा उतना अहिंसापूण रखू जितना किसी लावप्रिय आन्दोलन को रखना सम्भव है। पर मैं जानता हू कि अपनी पूण सतकता के बावजूद मुझे सदाकदा धोखा खाना पडता है। पर मैं यह भी जानता हू कि यदि तलपट तयार किया जाए, तो बाकी जमा ईमानदारी के पक्ष म ही निकलेगी। फिर भी मुझे धोखा न खाना पड इसके लिए सबक माग प्रदशन के लिए मैंने आन्दोलन का श्रीगणेश अपने बढिया स बढिया प्रतिनिधि स करवाया जिसे किसी भी रूप म राजनतिक कायकर्त्ता नही कहा जा सकता। मेरा अभिप्राय विनोबा भावे स है। इसके बाद मैंने विशुद्ध राजनताओ का लना शुरू किया पर इतने अधिक व्यक्तियो की सयम शक्ति के बारे म अपना समाधान करना मेरे लिए असम्भव है क्योकि मैं उन सभी के व्यक्तिगत सम्पक म नही हू। मुझे तो राजनतिक सहकर्मियो के प्रमाण पत्रो पर ही सतोष करना पडता है। मेरा विश्वास है कि अधिकाश मे ठीक ठीक आदमियो को ही चुना गया है पर चूकि मैं स्वय सविनय अवज्ञा नही कर रहा हू इसलिए मुझे लगता है कि विनोबा-जसे आदमियो को अधिक सख्या म भेजना वाछनीय रहेगा क्योकि मैं यह जताना चाहता हू कि यह आन्दोलन विशुद्ध राजनतिक आन्दोलन नही है बल्कि उसस अधिक है बहुत अधिक है। इसलिए आज प्यारेलाल नयर गए हैं। वह और महादेव वर्षो स मेरे साथ रहे हैं। सत्याग्रह आत्मशुद्धि और आत्म बलिदान का आन्दोलन है। मेरे पास जो अच्छे स-अच्छे सहयोगी हैं मुझे उनस विदा लेनी होगी। अत समय आने पर महादेव प्यारेलाल का अनुकरण

करेंगे। ऐसे अनेक लोग हैं जिनकी कोई राजनैतिक आकांक्षा नहीं है पर जिन्हें स्वतंत्रता प्यारी है और उससे भी अधिक लाखों-करोड़ों मुसीबतज़दा स्त्री-पुरुष प्यारे हैं। इनमें से अनेक को अभी भेजना बाकी है। इन लोगों को नया कार्यक्रम के उन निर्धारित सस्थाओं को जो चरखा अस्पृश्यता निवारण तथा साम्प्रदायिक मैत्री सम्बन्धी मेरी कसौटी पर खरे उतरेंगे उन्हें सविनय अवज्ञा करने के लिए तैयार किया जाएगा। मैं उन्हें नूतन वर्ष के प्रारम्भ में ही तैयार करने का विचार कर रहा हूं।

मैं इन लोगों की तब तक बलि देता रहूंगा जब तक शासक-वर्ग को भली भांति यह एहसास न हो जाए कि देश में सत्याग्रही लोग एक निश्चित लोकमत का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा देश के असंख्य स्त्री पुरुषों का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। इन लोगों का मिशन शांति का मिशन है जिसे पूरा करने में वे अपना सर्वस्व बलिदान करने को तत्पर हैं। अंग्रेजों की तरह उनके लिए भी यह जीवन-मरण के सिद्धान्त का प्रश्न है यद्यपि वे अंग्रेजों के साथ संघर्ष करते प्रतीत होते हैं। ये लोग अंग्रेजों की भांति ही हिटलरवाद और फासिज्म के खिलाफ हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि जहां ये लोग अहिंसात्मक अस्त्र से काम ले रहे हैं और अंग्रेज लोग हिटलरवाद का विनाश उन्हीं शस्त्रास्त्रों के व्यर्थ प्रयोग द्वारा करना चाहते हैं जिन्हें ताना शाह भी काम में ला रहे हैं। आशा है यह दलील वाइसराय महोदय को नहीं अखरेगी। मैं यह दलील अहिंसात्मक आन्दोलन की उतनी ही सार्थकता और सामर्थ्य का दावा जतलाने के निमित्त पेश कर रहा हूं जितनी कि अंग्रेज अपने हथियारों के लिए पेश करते आए हैं। यह आन्दोलन एक ठोस वास्तविकता है भले ही यह भारत-व्यापी न हुआ हो। इसलिए श्री एमरी का यह कहना गलत है कि यह आन्दोलन सिर्फ एक कृत्रिम आन्दोलन है। जो लोग इतनी बड़ी संख्या में जेल गए क्या उन्हें बन्दी-जीवन प्रिय है? यह समझ पाने के लिए कि काली अथवा भूरी चमड़ीवाले इन्सान के भीतर भी वे ही भावनाएं काम कर सकती हैं जितनी एक सफेद चमड़ीवाले के भीतर काम करती हैं केवल जरा-सी कल्पना चाहिए।

महादेव देसाई ने मेरे लिए जो नोट तैयार किए थे, उनमें उन्होंने आपका यह मतव्य प्रकट किया है कि मुझे 'हरिजन' के बारे में आपके प्रश्न का उत्तर देना है सो मिस्टर गांधी को अपना निर्णय खुद ही करना होगा। बस वह या आप कानून का उल्लंघन करने से बचे रहें।

यदि महादेव की रिपोर्ट सही है तो आपकी यह चेतावनी अनावश्यक थी। कोई गैर-कानूनी आन्दोलन जिसका संचालन स्वयं उसका जन्मदाता कर रहा हो, कानूनी ढंग से कैसे चलाया जा सकता है? पर ऐसी अनेक चीजें कानूनी बनी रहती

हैं, बशर्ते कि सरकार उन्हें कानूनी बना रहने दे। मुझे पक्का यकीन है कि आप मेरे अथवा महादेव के ऊपर ऐसी अनेक चीजों पर मामला चला सकते हैं जो मैं और वह अब तक लिख चुके हैं। अतएव आन्दोलन के दौरान हरिजन का पुनः प्रकाशन तभी हो सकता है जब सरकार की ऐसी इच्छा हो और उसे यह विश्वास हो जाए कि वह एक ऐसा मुखपत्र था जिसके द्वारा भारत व ब्रिटेन की ही क्या सम्पूर्ण मानव जाति की सेवा हो रही थी।

भवदीय
मो० क० गांधी

१४४

वाइसराय शिविर
(कलकत्ता जाते हुए)
१४ दिसम्बर १९४०

प्रिय मिस्टर गांधी

आपके १० दिसम्बर के पत्र के लिए जो मुझे अभी-अभी मिला है धन्यवाद। मैं अविलम्ब इसकी पहुंच भेजता हूं और यह सूचना देता हूं कि उसे वाइसराय के सामने रखा गया और उन्होंने मुझे आपका इसके लिए धन्यवाद देने का आदेश दिया है कि आपने उन्हें अपने विचारों और इरादों से अवगत किया है।

भवदीय
जे० जी० लेथवेट

मिस्टर मो० क० गांधी

१४५

मगाव वर्धा
१६ १२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। आपकी बात ठीक है। मेरे लिए इतना बचाव बहुत है कि आप जस बडे आदमी अपना पता हर हफ्ते या पन्द्रह दिन म बदलते रहें तो मेरे जमा काम म गडा आदमी क्या करे ? पर आपने ठीक लिखा। एडीसन की कथा का मैंने तुरत प्यारेलाल के बारे म जो खत लिखा था उसम उपयोग कर लिया।

कल पहुचनेवाले थे अब परसा पहुचेंगे ता उसका उपयोग कर लेना चाहता हू। शायद अब मुझ बापू निकालेंगे अगरचे मैं कह रहा हू कि न निकालें। बापू की दलीलें मैं समझूगा अपनी भी समझाऊगा। मैं मानता हू कि उनका आधा काम आज मैं कर रहा हू।

बजरग स कहिये कि अगर समय हा तो साथ के पत्र मे लिखी किताबें ले आवें। जेल मे गया तो नान वाइलेन्स इन लिटरेचर (साहित्य म अहिंसा) विषय पर एक लेखमाला लिखने का इरादा है। ये पुस्तकें काम आयेंगी।

आपका
महादेव

१४६

गाधीजी के साथ वार्तालाप पर नोट

सेवाग्राम
१८ १२ ४०
२ बजे मध्याह्न

१ वे लोग अपनी प्रतिनिधि सरकार के परे नहा जा सकते। वास्तविक अधिकार।

२ वाक्स्वातन्त्य। जनता म युद्ध की भावना जाग्रत नही करनी चाहिए।

३ छह सप्ताह अवश्य यदि वे चाहे तो। वाइसराय लिखें।

४ १) महाराजसिंह
   २) पी० टी० (पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास ?)
   ३) कुजरू
   ४) नलिनी
   ५) विजयराघवाचारियर
   ६) अणे
   ७) मिर्जा
   ८) सुलतान अहमद

१४७

सेवाग्राम वर्धा होकर
२१ १२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

इसके साथ जो पत्र भेजा जा रहा है वह आपको चाटकारितापूर्ण प्रतीत होगा हालांकि मैं जानता हू कि आपको चापलूसी नापसद है। दिवाकर एक अच्छा खासा कन्नड विद्वान है बापू के दार्शनिक दृष्टिकोण मे अभिन्न हैं फिर भी उनका प्रशसक है। हिन्दी भी अच्छी तरह जानता है। मैंने उसे अनुमति दे दी है।

आज बापू मुझसे कुछ मिनट बातें करते रहे। उन्होंने कहा क्या तुम्हें घनश्यामदासजी ने बताया था कि मैंने जिस आध्यात्मिक दलील का सहारा लिया था उसकी उन्होंने सराहना की थी ? मुझे तो एकमात्र यही दलील सुहाती है। बापू मुझसे ७ तारीख को जाने को कह रहे हैं। यह केवल आपकी सूचना के लिए है। मैंने आपके बम्बई के पते पर एक पत्र भेजा था जिसमे बजरग की कुछ पुस्तकें भेजने को लिखा था। उस सूची मे टामकाका की कुटिया और जुडवा दीजिए। यदि समय मिला तो साहित्य मे अहिंसा शीर्षक एक लेखमाला तैयार करने का विचार है। आज सुबह जमनालालजी गिरफ्तार कर लिये गए बडी धूमधाम से जेल गए। उन्हें ६ मास का कारावास और ५००) रु० जुर्माने का दण्ड मिला। बडे खुश थे।

आपका
महादेव

१४८

कलकत्ता
२३ १२ ४०

प्रिय महादेवभाई

तुमने मेरे बम्बई के पते पर जो पत्र भेजा था वह रि डाइरेक्ट होकर यहा पहुचा और मैंने पुस्तकों की सूची बजरग को दे दी है। उनमे से कुछ पुस्तकें आज भेज रहा है। बाकी बाद मे चली जाएगी। यह जानकर खुशी हुई कि तुम कुछ लिखने का इरादा कर रहे हो। तुम्हे टामकाका की कुटिया की भी जरूरत है सो समझा। यह पुस्तक तुम्हे शायद हवाले के लिए चाहिए वसे तो तुमने इसे वर्षों पहले पढ डाला होगा।

तुम नागपुर से लौटे थे तभी मैंने तुम्हे सक्षेप मे बता दिया था कि बापू से मेरी क्या बातें हुइ।

बेचारे जमनालालजी! सजा १२ महीने की भी हो जाती तो कोई बात नही थी, पर जो जुर्माना हुआ है इतनी बेरहमी के साथ हुआ है कि उसका भार सहना उनके लिए कठिन हो जाएगा।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने दिवाकर का बापू का कन्नड मे अनुवाद करने की अनुमति दे दी है। देख रहा हू कि मैं जितनी आशा कर रहा था पुस्तक उससे भी कही अधिक लोकप्रिय हो रही है। पर उसकी लोकप्रियता का रहस्य उसका विषय है।

दिवाकर का पत्र लौटा रहा हू।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ
सेवाग्राम

१४६

(महात्मा गाधी का हिटलर को खुला पत्र

वर्धा
२४ दिसम्बर १९४०

' प्रिय मित्र

मैं आपको जो एक मित्र कहकर सम्बोधित कर रहा हूं सो यह मात्र औप चारिकता नही है। मैं अजातशत्रु हू। पिछले ३३ वर्षों से मेरे जीवन की यही पहल रही है कि जाति वर्ण या धर्म का भेद किये बगर समूची मानव जाति की मैत्री उसके प्रति मैत्री का आचरण करके हासिल करू।

मैं आशा करता हू कि आपके पास यह जानने का समय होगा और इच्छा होगी कि मानव-जाति का एक काफी बडा भाग जो विश्व बन्धुत्व के इस सिद्धान्त से प्रभावित रहा है आपके कार्य को किस दृष्टि से देखता है। हम आपके शौर्य तथा अपनी मातृभूमि के प्रति आपके भक्ति भाव में रच मात्र भी सदेह नही है और न हम आपको आपके प्रतिरोधियो द्वारा वर्णित दानव ही समझते हैं। परतु स्वयं आपके तथा आपके मित्रो और प्रशसको के लेखो और घोषणाओ से इस बार में सन्देह करने की गुजाइश नही रह जाती है कि आपके कतिपय कार्य दानवीय हैं और मानवीय मर्यादा के विपरीत हैं विशेषकर मेरे जसे व्यक्तियो की दृष्टि में जो विश्व बन्धुत्व के सिद्धान्त में आस्था रखते है। उदाहरण के लिए चेकोस्लोवाकिया का पद दलन पोलण्ड के साथ किया गया बलात्कार तथा डेनमार्क का निगला जाना। मैं जानता हू कि जीवन सबधी आपके दृष्टिकोण से ये कृत्य सत्कार्य हैं। पर हम लोगो को बचपन से ही यह दीक्षा मिली है कि ऐसे कृत्य मानवीय मर्यादा के लिए अशोभनीय है।

पर हमारी स्थिति विलक्षण है। हम जितने नाजीवाद के खिलाफ हैं उतने ही ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भी खिलाफ है। अन्तर केवल अनुपात का है कि मानव जाति के पचमाश को ऐसे साधनो द्वारा ब्रिटिश प्रभुत्व के अन्तर्गत लाया गया जो विशेष वर्णन की जरूरत नही रखते। हम लोग उसका प्रतिरोध कर रहे हैं पर हम ब्रिटिश जनता को कोई क्षति पहुचाना नही चाहते। हम उन्हे युद्ध-क्षेत्र में पराजित करके उनका कायाकल्प करने की बात नही सोचते। हमारा तो ब्रिटिश प्रभुत्व के खिलाफ एक नि शस्त्र विद्रोह है। हम उनका कायाकल्प करने में

समय हो या नहीं, हम उनके प्रभुत्व का अंत अहिंसापूर्ण असहयोग द्वारा करने को कृतसंकल्प हैं। उनकी प्रणाली के पक्ष में कोई भी दलील पेश करना सम्भव नहीं है। यह तथ्य हमारे इस ज्ञान पर आधारित है कि हरण करनेवाला हरण की हुई वस्तु पर अपना अधिकार तब तक पूरे तौर से जमाने में असमर्थ रहेगा जब तक उसे उस व्यक्ति का जिसकी वस्तु का हरण किया गया है किसी हद तक सहयोग प्राप्त न हो। यह सहयोग स्वेच्छा से भी दिया जा सकता है उसकी इच्छा के विपरीत भी हासिल किया जा सकता है। हमारे शासक लोग हमारी जमीन और हमारे शरीर पर भले ही कब्जा किये रखें, हमारी आत्मा पर वे अधिकार नहीं जमा सकते। वे हमारी जमीन देश के सारे-के-सारे स्त्री पुरुषों का विनाश करके ही अपने कब्जे में रख सकते हैं। यह सच है कि देश के समस्त स्त्री-पुरुष शौर्य की उस सीमा तक न पहुंच पायें और बीभत्स कार्यों के द्वारा विद्रोह की भावना को प्रकट करने लगें पर यह तर्क बेतुका रहेगा। क्योंकि भारत में ऐसे स्त्री-पुरुष काफी संख्या में पाए जा सकते हैं जो हरण करनेवाले के प्रति किसी भांति की कलुषित भावना रखे बिना प्राण न्योछावर करने को तत्पर हैं। साथ ही हरणकर्त्ता के आगे घुटने टेकने को तैयार नहीं हैं—इस तरह वे हिंसा के अनाचार के खिलाफ अपनी स्वतंत्रता को यथेष्ट मात्रा में प्रदर्शन कर सकेंगे। यदि मैं आपसे कहूं कि भारत में ऐसे स्त्री-पुरुष अनपेक्षित संख्या में मौजूद हैं तो आप मेरे इस कथन पर विश्वास कर लीजिए।

' हम लोग पिछली आधी शताब्दी से ब्रिटिश शासन का जुआ उतार फेंकने की कोशिश में लगे हुए हैं। स्वतंत्रता का आन्दोलन जितना प्रबल इस समय है उतना पहले कभी नहीं था। देश की परम शक्तिशाली संस्था, अर्थात भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस उद्देश्य सिद्धि में लगी हुई है। हम लोग अहिंसापूर्ण प्रयत्नों द्वारा इसमें काफी हद तक सफल भी हुए हैं। हम लोग ब्रिटिश शक्ति रूपी संसार की परम शक्तिशाली हिंसा का सामना करने के लिए संगठित हो रहे थे। आपने इस शक्ति को चुनौती दी है। अब देखना है कि इन दोनों में से कौन-सी शक्ति अपेक्षाकृत अधिक संगठित है—ब्रिटिश अथवा जर्मन। हमारे तथा संसार की अन्य गैर-यूरोपीय जातियों के लिए ब्रिटिश प्रभुत्व नहीं चाहिए पर हम ब्रिटिश शासन का अंत जर्मनी की सहायता से कदापि नहीं करना चाहेंगे। हम लोग अहिंसा में एक ऐसी शक्ति खोज पाए हैं जो यदि संगठित हो सके तो संसार की सबसे प्रबल हिंसात्मक शक्तियों के संगठित योग से लोहा लेने में समर्थ होगी इस बारे में हमें कोई संशय नहीं है। जैसा कि मैं कह चुका हूं अहिंसा की प्रणाली में पराजय नाम की कोई वस्तु है ही नहीं। यह प्रणाली तो किसी के प्राण लिये बिना अथवा

किसी का आहत किये बिना करो या मरो के सिद्धान्त की प्रतीक मात्र है। आपने हिंसा के विनाश को जिस पूर्णता तक पहुंचाया है उसकी सहायता लिये बिना ही इस प्रणाली का उपयोग निरन्तर रहकर तथा बिना न्याय पैसे के किया जा सकता है। मैं यह देखकर हैरत म हू कि आप यह नहीं देख पा रहे हैं कि शस्त्रास्त्र की यह तयारी किसी का अपौना नहीं है। यदि ब्रिटिश लोग नहीं तो कोई अन्य शक्ति विध्वंस राय की इस प्रणालि प्रणाली का और अधिक पूर्ण रूप देकर आपके ही हथियार से आपको ही पराजित करने म सफल होगी। आप अपने देशवासियों के लिए कोई ऐसी विरासत नहीं छोड़ रहे हैं जिस पर संसार गर्व कर सके। संसार के लोग क्रूरतापूर्ण कृत्यों की पुनरावृत्ति म गर्व की अनुभूति कदापि नहीं कर पायेंगे भले ही उनका आयोजन अधिक-न अधिक सतर्कता के साथ किया गया हो। फलत मैं मानवता के नाम पर आपसे यह युद्ध बन्द करने की अपील करता हू। आपमें और ब्रिटेन म जिन बातों को लेकर मतभेद है उनका निर्णय एक ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय विचारक मंडल के ऊपर छोड़ दें जिसका गठन आप दोनों मिलकर करें तो आपकी कोई क्षति नहीं होगी। यदि आप युद्ध म विजयी हुए भी तो इससे कदापि यह प्रमाणित नहीं होगा कि न्याय आपके पक्ष म है। उससे तो सिर्फ यही साबित होगा कि आपकी विध्वंसात्मक शक्ति अपेक्षाकृत अधिक बड़ी-चढ़ी है। इसके विपरीत यदि कोई निष्पक्ष अन्तर्राष्ट्रीय विचारक मंडल यथा सम्भव निष्पक्ष रहकर यह निर्णय देगा कि न्याय किसके पक्ष म है तो यह एक सच्ची उपलब्धि होगी।

आप जानते ही हैं कि मैंने कुछ समय पहले प्रत्येक अंग्रेज से यह अपील की थी कि वह मेरी अहिंसात्मक प्रतिरोध की प्रणाली अपनाये। मैंने ऐसा इसलिए किया था कि अंग्रेज लोग जानते हैं कि मैं विद्रोही होते हुए भी उनका मित्र हू। आपके और आपके देशवासियों के निकट मैं बिलकुल अजनबी हू। मैंने प्रत्येक अंग्रेज से जैसी अपील की थी वैसी अपील आपके देशवासियों से करने का मुझमें साहस नहीं है। पर वह अपील आप पर भी उतनी ही लागू होती है जितनी अंग्रेजों पर। मेरा वर्तमान सुझाव अधिक सहज है हालांकि लोग-बाग अभी इससे परिचित नहीं हैं पर यह व्यावहारिक तो है ही।

बड़े दिन की इस ऋतु म संसार की जनता का मानस शांति के लिए छटपटा रहा है और हमने अपना शांतिपूर्ण संघर्ष भी इस वेला म स्थगित कर रखा है। ऐसे प्रयत्न का महत्त्व स्वयं आपकी दृष्टि म भले ही न हो पर यूरोप के लाखों करोड़ों मूक प्राणियों के लिए जो शांति की कामना कर रहे हैं उसका महत्त्व असाधारण सिद्ध होगा। उनकी मनोव्यथा की मूक आवाज मेरे कानों म गूज रही

है। इसका कारण यह है कि पीडितो की मूक आवाज सुन पाने म मेरी श्रवण शक्ति असाधारण है। आपके तथा मुसोलिनी के नाम एक संयुक्त अपील करने का मैं विचार कर रहा था। मैं जब गोलमेज कान्फरेंस म भाग लेने इग्लैड गया था तो वापसी म उनसे मिला भी था। मैं यह आशा लगाए बैठा हू कि मेरी यह अपील उन्हें भी सम्बोधित की गई समझी जायगी। जहा तक उनका सबध है इस अपील म आवश्यक हेर फेर किया जा सकता है।

मैं हू

आपका सच्चा मित्र
मो० क० गाधी'

१५०

गाधीजी से हुई चर्चा पर नोट

२५-१२-४०

मैं गाधीजी के पास दो दिन ठहरा अर्थात १८ और १९ दिसम्बर को। उनका स्वास्थ्य साधारणतया अच्छा है।

उनके पास एस लोगो के पत्रो का ढेर लगा है जो सत्याग्रह करने की अनुमति चाहते हैं। गाधीजी को उन पत्रो का उत्तर देना पडता है। वह प्रत्येक प्रार्थना-पत्र को ध्यानपूर्वक पढते हैं और जिन्हें ठीक समझते हैं उन्ह अनुमति दे देते हैं। मेरी धारणा बनी कि वह सचमुच सरकार को अपने आदोलन के द्वारा कम-से-कम परेशान करना चाहते हैं। उन्ह अधिकारियो की तकलीफ व आराम का भी उतना ही ध्यान रहता है। इसी कारण उन्होंने बडे दिन की छुट्टियो म रविवार को तथा प्रातःकाल ६ बजे स पहले सत्याग्रह करने की मनाही कर दी है।

ऐसा लगता है कि उन्हें पूरी आशा है कि वह अन्त म सरकार को यह विश्वास दिलाने मे सफल होगे कि वह उसे परेशान नहीं करना चाहते। जब कभी लिखने का अवसर उपस्थित होता है वह वाइसराय तथा गृह सदस्य को अपने मन की बात प्रकट करने से नही चूकते। उनमे कटुता का नितान्त अभाव है। इसके विपरीत वाइसराय तथा अपने अन्य अग्रेज मित्रो के प्रति उनमे सौहार्द की भावना कूट-कूटकर भरी है।

लार्ड लोदियन के निधन का समाचार सुनकर उन्हें दु ख हुआ।

मैंने उनसे पूछा कि उनका अगला कदम क्या होगा ? उन्होंने वाइसराय को इस बार में पहले से ही बता रखा है। आन्दोलन का दूसरा चरण अगले ३ महीने तक जारी रहेगा। उस अवधि में कोई दस हजार स्त्री पुरुष जेल जायेंगे। जो भी आन्दोलन में भाग लेंगे उनके नाम छाटने में सतर्कता बरती जायेगी। मैंने जिज्ञासा की कि उसके बाद क्या होगा ? उनका उत्तर था उसके बाद कोई नया कदम उठाया जानेवाला नहीं है यह सिलसिला जारी रहेगा और मैं जितने लोगों को जेल भेज सकूंगा भेजूंगा। कभी कभी मुझे अपने तरुण समाज की मनोवृत्ति को देखकर चिन्ता होने लगती है। मैं जानता हू कि वे लोग उतावले हैं। क्या पता कब वे अल्हडपन का काम कर बैठें पर आन्दोलनों को जीवित तो वे ही रखते है। मैंने कहा कि अब तक तो यही होता आया है कि जब कभी सत्याग्रह अखाडे में उतरे साम्यवाद दृष्टि में ओझल रहा है पर जब सत्याग्रह को कुचल दिया गया तो वह फिर आ धमकता है। गाधीजी ने यह बात स्वीकार की। इसके बाद मैंने कहा कि यदि इस समय आप यह आदोलन शुरू न करते तो पता नहीं क्या अवस्था होती ? क्या काग्रेस के उग्रतावादी और कम्युनिस्ट लोग आपस में गठबधन करके अपेक्षाकृत अधिक उत्पात न करते ? क्या सत्याग्रह को छद्मवेश में भगवान् की देन नहीं समझना चाहिए ? क्या गाधीजी सत्याग्रह को सीमित रूप देकर अपेक्षाकृत अधिक परेशानी से नहीं बचा रहे हैं और साथ ही साथ अपना विरोध भी प्रकट नहीं कर रहे हैं ? गाधीजी का उत्तर था कौन कह सकता है ? सत्याग्रह एक सीमित लक्ष्य को सामने रखकर आरम्भ किया गया है। वह लक्ष्य केवल यही है कि वाकस्वातंत्र्य प्राप्त हो शासनिक समस्याओं से इसका कोई लेन देन नहीं है। मेरा कहना था कि यह भी एक दूरदर्शिता का काम है क्योंकि इस समस्या का समाधान अपेक्षाकृत अधिक सहज है। मेरा अब तक का यही अनुभव रहा है कि गाधीजी जो कदम उठाते हैं उसके पीछे एक से अधिक अभिप्राय रहते हैं।

गाधीजी की एकात अभिलाषा है कि महादेव जेल जायें। मैंने उनसे अपना विचार बदलने का आग्रह किया। कहा कि महादेव के जाने के बाद गाधीजी पगु हो जायेंगे। स्वय महादेव की यह बद्धमूल धारणा है कि गाधीजी के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए उनकी उपस्थिति अत्यावश्यक है। प्यारेलाल जेल में हैं ही। इस लिए महादेव की यही इच्छा है कि उन्हें न भेजा जाए पर गाधीजी सहमत न हुए। उन्होंने कहा यह आदोलन आत्मशुद्धि के लिए है किसी को परेशान करने के लिए नहीं है। इसलिए मुझे अपनी प्रिय-से प्रिय वस्तु का बलिदान करना

चाहिए। मुझे अन्य अनेक सत कार्यों में महादेव की आवश्यकता है इस अवसर पर उसकी उपयोगिता और भी बढ़ गई है पर इसीलिए तो उसे जेल भेजने की और भी अधिक जरूरत है क्योंकि यह बलिदान अधिक महत्त्व का सिद्ध होगा।'
मैंने गाधीजी की बात समझ तो ली पर यह सब-कुछ एक बिलकुल ही भिन्न प्रकार का दृष्टिकोण है। इसमें विरोधाभास की गध आती है लेकिन गाधीजी का दृढ और हार्दिक विश्वास है कि इस प्रकार वह हिटलरवाद से अंग्रेजों की अपेक्षा अधिक क्षमता के साथ लोहा ले रहे हैं। वह हिटलर को लिखने की बात गम्भीरतापूर्वक सोच रहे हैं और कौन जानता है कि अब तक उसके नाम एक पत्र तैयार करके वाइसराय के द्वारा गतव्य स्थान तक पहुंचा भी दिया हो। उन्हें न समझ पानेवाले को तो यही लगेगा कि वह औचित्य अनौचित्य के ज्ञान से शून्य हैं। पर ऐसा वही कहेगा जो उनसे अनभिज्ञ होगा। उनकी नीर क्षीर विवेक की शक्ति वर्तमान में अधिक जागरूक स्थिति में है जैसी पहले कभी नहीं थी।

इसके बाद मैंने उन्हें बताया कि मुझे बम्बई में मालूम हुआ कि सरदार वल्लभभाई तथा अन्य लोग यरवदा जेल में आनन्द से हैं और बड़े आराम से हैं। मैंने उनसे मुलाकात-सबधी कठोर प्रतिबधों की भी चर्चा की और उन्हें बताया कि इस बार मैंने बम्बई के गवर्नर से मुलाकात की थी।

इस अवसर पर देवदास बोल उठे कि मद्रास में स्थिति बिलकुल भिन्न है। वहा राजाजी को कोठरी में बन्द किया जाता है। मुलाकात आधे घटे से अधिक देर तक नहीं हो सकती और मुलाकात के समय सी० आई० डी० मौजूद रहता है। मैंने कहा कि मैं वाइसराय का ध्यान इस ओर आकर्षित करूगा। पर गाधीजी बोले इसमें शिकायत करने की क्या बात है जेल तो जेल ही है वहा सब-कुछ अपनी मर्जी के मुताबिक तो होने से रहा। अगर इस तरह की बातों में छूट बरती जाने लगे तो कारावास कारावास कहा रहा? उनके विचार में सरकार कुल मिलाकर शराफत से पेश आ रही है। सरकार की प्रशसा में उनकी यह बात सुन कर मुझे खुशी हुई कि अच्छे सम्बन्ध बनाए रखना वाछनीय है और उसका अपना मूल्य है।

मैंने गाधीजी से वाइसराय की स्पीच के बारे में अपनी धारणा की चर्चा की। उस समय तक उन्होंने वाइसराय की कलकत्तेवाली स्पीच पूरी तरह नहीं पढी थी। अत देवदास ने उन्हें पढ़कर सुनाई। जब देवदास स्पीच सुना चुके तो मैंने गाधीजी से पूछा कि स्पीच के बारे में उनका क्या खयाल है? बोले बड़ी सहृदयतापूर्ण है पर सब-कुछ ज्यों-का-त्यों है। इसके बाद उन्होंने वाइसराय के साथ अपनी पुरानी मुलाकातों का जिक्र करते हुए कहा वाइसराय को अपने विचारों की

साथकता म गहरा विश्वास है। मैं उन्हे उनकी स्थिति म टस स-मस न कर सका।'
इसके बाद मैंने उन्हें बताया कि मैंने सर रोजर लमले को क्या सुझाव दिया था।
नीचे उसका सार दिया जाता है

समझौते की असफलता की चर्चा करते हुए मैंने कहा कि मेरी तो यह धारणा है कि यह विफलता का कारण आपस की गलतफहमी भी हो सकती है। शुरू शुरू म गाधीजी ने एक बार मुझस कहा था य लोग हमारे ऊपर भी उतना भरोसा क्यो नही करते जितना आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका पर करते हैं ?' मैं जानता था कि इसका सतोषप्रद उत्तर देना मेरी सामर्थ्य के बाहर था। सदेह की भावना दोनो ही पक्षो म काम कर रही है। एक प्रकार स यह स्वाभाविक भी है। यह कितने दुर्भाग्य की बात है कि राजनेता और शासक वग एक दूसरे को इन्सान की हैसियत स नही समझ पाते। मैं पिछले बीस वर्षो म वाइसराया और गवनरो क निकट सम्पक म रहता आया हू। उनम से कई एक मेरे साथ बडे सौजन्य और सहृदयता के साथ पेश आए हैं पर मैं जब कभी किसी वाइसराय या गवनर स मिला राजनीति क अतिरिक्त और किसी विषय पर चर्चा ही नहीं चली। इसक फलस्वरूप मैं अभी तक किसी भी वाइसराय अथवा गवनर को एक इसान के रूप म नही जान पाया हू केवल मात्र शासक क रूप मे ही उनका परिचय प्राप्त कर पाया। सम्भवत यही कारण था कि जब गाधीजी पहली बार लाड इर्विन से समझौते के लिए मिलने गये थे तो उमसे पहले उन्होने उन्हें लिखा था मैं इर्विन नामक व्यक्ति से परिचित होना चाहता हू। यह बडे दोष की बात है कि हम लोग शासको के दशन मानव के रूप म शायद ही कभी कर पाते हो। इसका परिणाम यह होता है कि पारस्परिक सशय सदेह का कुहासा छाया रहता है और एक दूसरे का मत्री का हाथ थामने म सकोच बना रहता है। यह एक अत्यत महत्त्वपूण मनोवैज्ञानिक तथ्य है इसके महत्त्व को कम करके कभी नहीं देखना चाहिए। इसी मनोवृत्ति के वशीभूत होकर समझौते की बातचीत आरम्भ करने मे इतने सकोच स काम लिया गया था। इर्विन गाधी पैक्ट के बाद स जो नीति बरती गई वह मशवरा करने की अवश्य रही होगी पर उसम समझौता करने की प्रवृत्ति का अभाव रहा।

औपनिवेशिक दर्जा देने की तत्परता क बारे म मेरा कहना यह है कि इस सुझाव क प्रति मेरा रवया सदैव उत्साह स पूर्ण रहा है। पर वाइसराय के वक्तव्य पर एमरी की स्पीच स मुझे ऐसा लगा कि जब इसक साथ इतनी सारी शर्तें नत्थी हैं तो इसकी उपलब्धि असम्भव-सी है। एमरी की स्पीच को लेकर जो आलोचनाए हुई उनम स एक आलोचना यह भी थी कि मुसलमानो को कौल-करार रद्द करने

का अधिकार सौंप दिया गया है। इससे गैर-कांग्रेसियों का उत्साह मद पड गया। अनेको को लगा कि किसी एसी स्थिति को ग्रहण करने स ता जिसम कोई प्रगति तब तक सम्भव न हो जब तक मुसलमान राजी न हो यही अच्छा है कि पाथक्य हो जाए। इसके अतिरिक्त मैंने स्वगत यह भी प्रश्न किया कि यदि जिन्ना और गाधीजी म कुछ ऐसा समझौता हो जाए जिसके फलस्वरूप केन्द्र मे राष्ट्रीय सरकार कायम करने का कोई ढाचा खडा हो तो भी क्या वे ऐसे विग्रहकारी वर्गो को अपने अपने सिद्धान्त प्रतिपादित करने से रोक सकेंगे ? इसका उत्तर स्पष्ट ही है। इसलिए क्या वतमान शासनकर्त्ताओ के लिए यह सम्भव नही है कि वे वतमान युद्ध विरोधी नारो को यथार्थवादियो का आचरण मानकर चुप्पी साधे ? युद्ध प्रयत्नों म क्या चीज अधिक बाधक है ? प्रतिष्ठित लोगो को जेलो म ठूसना या उन्हें कुछ नारे लगाते रहने की छूट देना ?

वतमान गतिरोध का अन्त करने के विभिन्न उपायो की चर्चा के दौरान मैंने यह सुझाव पेश किया कि वाइसराय अपनी वतमान कौंसिल समाप्त करके एक ऐसी कौंसिल बनायें जिसम वे लोग हो जो न कांग्रेसी हैं न लीगी है पर जिनका जनता की दृष्टि म आदर-सम्मान है। मुझसे पूछा गया "उदाहरण के लिए वे लोग कौन हो सकते हैं ?" तो मैंने कुछ नाम गिनाए और कहा कि जरूरत पडने पर मैं और भी नाम दे सकता हू।

मैंने गाधीजी से निवेदन किया कि ऐसी पुनर्गठित कौंसिल का एक से अधिक दिशाओं मे उपयोग हो सकता है और वैसा करने से वतमान गतिरोध का अंत तो हो ही जायेगा। मैंने यह दलील पेश की कि यदि हमें राष्ट्रीय सरकार प्राप्त हो गई तो भी कांग्रेस युद्ध प्रयत्नो के साथ कोई सरोकार नही रखेगी। हां यदि वह एक बार फिर गाधीजी के नेतृत्व से वचित होना चाहे, तो बात दूसरी है। पर कांग्रेस के लिए एक बार फिर गाधीजी के नेतृत्व के बिना काम चलाना शायद सम्भव न हो। अत किसी राष्ट्रीय सरकार मे कांग्रेस के शामिल होने का सवाल ही नही उठता। अन्य आधारो पर लीग के लिए भी राष्ट्रीय सरकार म शामिल होने की सम्भावना अलग रखनी चाहिए। तो फिर इन दोनो दलो पर ही निभर रहने की क्या जरूरत है ? यदि जैसा कि सरकार का दावा है वह भारत को उसके लक्ष्य स्थान की ओर ले जाने की दिशा मे सचमुच प्रयत्नशील है तो उस इस सरकार मे देर लगाने की क्या जरूरत है ? मैंने सुझाव दिया कि इस योजना की सफलता अच्छे आदमियो के निर्वाचन पर निभर है एसे आदमियो के निर्वाचन पर जो कांग्रेस अथवा लीग के विश्वास भाजन भले ही न हो पर जिनका न केवल इन दोनो दलो म बल्कि जन साधारण की दृष्टि मे मान-सम्मान है। दूसरी बात

यह है कि सारे महत्त्वपूर्ण विभाग—जसे कानून और व्यवस्था विभाग वाणिज्य व्यापार का विभाग अर्थ विभाग युद्ध-सामग्री की सप्लाई का विभाग रक्षा विभाग रलवे विभाग इन लोगो को हस्तान्तरित किये जायेंगे। गाधीजी को यह सुझाव अरुचिकर नही लगा। उनका कहना था कि यदि इस योजना पर आचरण *करने से केन्द्र म एक प्रकार की प्रतिनिधि सरकार स्थापित हो सके तो वह इस* योजना की सराहना करेंगे। वसी सरकार उत्तरदायित्वपूर्ण भले ही न हो पर उसम जो लोग लिये जाए वे जनता का प्रतिनिधित्व करनेवाले अवश्य हो। उन्हें इस कोटि के स्वतत्र आदमियो को जिनका इन दोनो दलो स सम्बन्ध न हो ढूढ निकालना कठिन काय जचा पर जब मैंने कुछ नाम गिनाए तो उन्होंने कहा कि ये खासे अच्छे व्यक्ति साबित होगे।

गाधीजी मेर इस कथन से सहमत हुए कि युद्धकालीन झझटो म फसे रहने के कारण सम्राट की सरकार के लिए इससे अधिक दूर तक जाना फिलहाल शायद सम्भव न हो। उन्होने कहा कि यदि सम्राट की सरकार इतनी दूर तक भी जा सकी तो उन्हें उसके खिलाफ कोई शिकायत नही होगी। मैंने अपना सुझाव पेश *करते हुए यह बात मान रखी थी कि वाइसराय की कौंसिल मे यदि इस कोटि के* आदमियो का समावेश होगा तो वे लोग न तो राजनेताओ को जेलो म बन्द रखने पर राजी होगे न उनके मुह पर ताला लगाने के लिए राजी होगे। स्मटस हटजोग का मुह बन्द रखने म असमथ रहा और तिस पर भी दक्षिण अफ्रीका की युद्ध चेष्टा अबाध रूप म जारी रही है। उसी प्रकार मेरी योजना के अन्तगत भारत मे भी युद्ध प्रयत्न न केवल जारी रहेगे बल्कि और भी जोर पकडेगे। वाक् स्वातत्र्य अवश्य रहेगा पर एक बार उसकी स्वतत्रता दे देने के बाद उसका दुरुपयोग नही होगा इस बारे म मुझे कोई सन्देह नही है।

गाधीजी की इतनी अनुकूल प्रतिक्रिया के लिए देवदास तयार नही थे। उन्होंने बात के स्पष्टीकरण के हेतु वार्तालाप मे दखल दिया और युद्ध प्रयत्न ? क्या वे *जारी रहेगे ? क्या काग्रेस को यह सहन होगा ? गाधीजी बोले हा होगा।* काग्रेस को तो यह अब भी सहन हो रहा है। जो कुछ होगा स्वेच्छापूवक डरा धमकाकर नही। और वाक स्वातत्र्य तो मिल ही जाएगा। वास्तव मे काग्रेस की असली मशा तो यही है न कि जन साधारण म युद्ध की प्रवत्ति जड न जमा सके वह सरकार को व्यस्त कदापि नही करना चाहती। इसके अलावा आज भी तो भारत भर म युद्ध के विपरीत वातावरण का अभाव है। अब भी ऐसे लोग हैं जो युद्ध की उपादेयता म हार्दिक आस्था रखते हैं। काग्रेस का मिशन तो जनता की शिक्षा मात्र है। यदि काग्रेस कभी सारे देश को युद्ध के खिलाफ कर पाए तो फिर

जनता को युद्ध के लिए विवश करनेवाला कौन रहगा ? पर अभी तो वैसी स्थिति है नहीं। इसलिए यदि युद्ध म रुचि रखनेवाल कुछ लोग युद्ध म भाग लेना चाहें तो हमारे लिए शिकायत करने को क्या है ? '

मैंने कहा कि यदि ऐसा मंत्रि-मण्डल तैयार हो सके तो वह हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की वर्तमान खाई को पाटने मे उपयोगी सिद्ध होगा साथ ही युद्ध के बाद हमारा शासन विधान किस कोटि का होगा तद्विषयक रूप रेखा निर्धारित करने के मामले म भी उसका योगदान मूल्यवान सिद्ध होगा। गाधीजी बोले, 'हा हो सकता है।

मैंने जिज्ञासा की कि यदि किसी उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार ने वाक्-स्वातन्त्र्य प्रदान कर दिया तो क्या उसके दुरुपयोग की कोई आशका है ? उनके विचार म ऐसी आशका का कोई आधार नही है। पर साथ ही उन्होंने कहा कि कानून तो रहेगा ही जो कोई उसका उल्लघन करेगा उसे सजा मिलेगी। कांग्रेस जनता द्वारा कानून की अवहेलना को कदापि सहन नही करेगी।

प्रातो की समस्या ज्यो की-त्यो अटकी रहेगी, पर हम साम लेने का अवकाश मिलेगा, तो अगले कदम की बात भी सोची जायगी।

मैंने सुझाव पेश किया कि अगला कदम उठाने के पहले ६ सप्ताह तक सब कुछ क्या न स्थगित रखा जाए। पर अगला कदम तो उठाया जा चुका है। हा यदि सरकार चाहे तो समय रहते उसे रोका जा सकता है।

—घनश्यामदास

१५१

सेवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
२७-१२ ४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २३ का पत्र मिला। पुस्तकें जो मगाई थीं उन सबको कई वर्षों पहले पढ़ चुका हू पर लिखना हो तो व आंखों के सामने चाहिए। व पुस्तकें मेरे पास नहीं हैं इसलिए मगाई हैं। और भी कई किताबें इस सबध म काम आयेंगी पर उनम स कई मेरे पास हैं।

जान के बारे मे और भी चर्चा हो चुकी है। वक्त आने पर महादेव का जाना है यह तय है।

बापू पुस्तक के बारे मे मैंने भी बहुत सुना। सीतारामजी कहते थे कि खादी भडार म जितनी प्रतिया आइ सब बिक गइ। अब एक कडवा घूट भी लीजिए। परसो यहा श्रीराम शर्मा विशाल भारत वाला आया था। कुछ कटाक्ष म कहने लगा— आपकी भूमिका पढी। ' इतना कहकर चुप रहा। मैंने कहा हा सुनाइये' तो कहा— अच्छा यह सब इनका लिखा हुआ है क्या ? हो तो वे सिद्धहस्त मालूम होते हैं। यह भी सब कटाक्ष म। पीछे कुछ गाधीजी स— 'आपने लिखा है कि वे अलिप्त हैं। क्या एक शख्स जो स्पेक्यूलेटर (सटटेबाज) है जो एक के बाद एक अखबार कटाल (अधिकार) म करता जाता है वह निर्लेप कहा जा सकता है ? मैंने कहा मेरे पास जो सबूत हैं वह आपके पास नही हैं जगत के पास भी नही होगे। वह कहने लगा मैं बहस के लिए नही आया हू मुझे जा शका है आपके पास रख दी। मैंने कहा मैं आपस एक प्रश्न पूछूगा— एक कोटयाधिपति आदमी अगर अपना सब धन और महल छोडकर कल ही यहा आ जाय और ऐसी झोपडी म रहने लगे तो आप निर्लिप्त कबूल करेंगे या नही ? उसने कहा हा। तो मैंने कहा मैं उनको वसे ही मानता हू और मेरे पास सबूत है आपको देने के लिए मैं बधा हुआ नही हू। पीछे कहने लगा मातृभूमि अखबार बिडला चलाते हैं आनन्द बाजार पत्रिका जिसकी ग्राहक-सख्या हिन्दुस्तान के सब अखबारो म अधिक है उसे दबाने के लिए यह निकाला गया। क्या यह उचित था ? मैंने कहा मुझे पता नही।

मुझे बडा धष्ट आदमी मालम हुआ। हिटलरवाला भी बापू ने प्रेस म भेजा। साथ वाइसराय को तार दिया कि उसे पश्चिम म भी तुरत पहुचाइये। तीन राज हुए कोई जवाब नही। मैंने ए० पी० आई० को टेलिफोन किया तब तक तो उसे भी पता नही था। उसने कहा हेल्डअप (रोक लिया गया) है। शाम को टेलिफोन फिर से आया तब कहा सर्वोच्च (हाइएस्ट क्वाटस) स हेल्डअप (रोक लिया गया) है। टेलिफोन पर क्या बताऊ और हमको कहा गया है गाधी का हिटलर को ओपन लेटर (खुला पत्र) देहली प्रस एडवाइजर न पास नही किया।

यह क्या है ? मुझे तो अच्छा नही लगा बडा बुरा लगा। पर बापू को बहुत बुरा नही लगा यह गनीमत है।

आपका

महादेव

१५२

कलकत्ता
२६ दिसम्बर १६४०

प्रिय महादेवभाई,

यहा आने के तुरत बाद मैंने लेथवेट के पास इस आग्रह का पत्र भेजा कि वह वाइसराय महोदय के साथ मेरी मुलाकात का बन्दोबस्त कर दे। साथ ही, मैंने यह भी लिख दिया कि वाइसराय से भेंट करने के बाद मैं उनके साथ भी बातचीत करना चाहूगा। उत्तर मिला कि वाइसराय के साथ मुलाकात की कोई आशा नही है पर वह स्वय मुझसे मिलकर बडा प्रसन्न होगा। मुझे शक हुआ कि पुरानी नीति मे कुछ हेर फेर हुआ है पर लेथवेट से मिलने तक मैंने विश्वास करना ही ठीक समझा।

अगले दिन एस० पी० मित्र वाइसराय से मिलनेवाले थे। एक हफ्ता पहले वाइसराय ने उन्हे बताया था कि वह गाधीजी के साथ मेरे माध्यम से सम्पर्क बनाये हुए हैं। उन्होने मेरा जिक्र करते समय मुझे 'मेरे मित्र श्री बिडला' की उपाधि से अभिषिक्त किया था। इसलिए श्री मित्र ने स्वभावतया ही मुझसे यह मालूम करना चाहा कि क्या मेरे पास वाइसराय के सामने पेश करने को कोई सुझाव है। मैंने उन्हें बताया कि तुमने लेथवेट को एक फार्मूला दे रखा है। यदि वह वाइसराय से उस पर विचार करने का अनुरोध करें तो बडी बात हो। मित्र वाइसराय से भेंट करने के बाद सीधे बिडला पार्क पहुचे। उन्होने बताया कि वाइसराय को किसी भी फार्मूले की याद नही पडती। पर जब श्री मित्र ने कहा कि वह इस बारे मे मुझसे फिर बात करेंगे तो वाइसराय ने उत्तर दिया 'श्री बिडला मेरे मित्र अवश्य हैं पर आजकल वह आन्दोलन की पैसे से मदद कर रहे हैं उनका पैसा है जैसे चाहे खर्च करने का उन्हे अधिकार है पर वह आन्दोलन की आर्थिक सहायता कर रहे है इसलिए फिलहाल मुझे उनसे मिलने मे सकोच हो रहा है।' जब मैंने यह सुना तो मेरे सन्देह की पुष्टि हो गई कि नीति मे हेर फेर हुआ है। फिर भी मैं लेथवेट से मिलने गया।

सामना होते ही मैंने लेथवेट से कहा कि वैसे तो मैं इस गतिरोध को दूर करने के बारे मे कुछ ठोस सुझाव लेकर उनसे बातचीत करने आया था पर सबसे पहले मैं यह बता देना चाहता हू कि वाइसराय ने मित्र से मेरे विषय मे जो कुछ कहा है उससे मेरे दिल को बहुत चोट पहुची है। लेथवेट ने उत्तर दिया

पर यहा तो इसकी खुल आम चर्चा हो रही ह। मैंने कहा खुले आम क्या हो रही है मो तो मुझे नही मालूम पर क्या आपको इस पर यकीन आ गया ?' नही नही आपको यकीन आ गया है। फिर मैंने कहा कि अब जबकि मुझे पता चल गया है कि वाइसराय का मुझ पर भरोसा नही है मैं इस प्रसग को और आगे बढ़ाना नही चाहता। लेथवेट न कहा पर आप काग्रेसवादी तो हैं ही हैं न ? मैंने उत्तर दिया मैं काग्रेसवादी नही गाधीवादी हू। गाधीजी मेरे नजदीक मेरे पिताजी स भी बढकर हैं। उनके सारे लोकोपकारी कार्यों म मेरी गहरी दिलचस्पी है क्या हरिजनोत्थान-काय, क्या खादी प्रचार। गाधीजी न मुझसे किसी राजनैतिक कशमकश म हिस्सा लेन को कभी नही कहा। वाइसराय को अब तक मालूम हो जाना चाहिए था कि मैंन उनके काम आने तथा उनके प्रति वफादार रहन की जितनी कोशिश की है भारतवासियो म अन्य किसी ने इतनी नही की होगी और वाइसराय ने मुझे इसका यह पुरस्कार दिया। यदि वाइसराय किसी प्रकार इस नतीजे पर पहुचे हो कि एक तो मैं उनके पास उनका मित्र बनकर आता हू और दूसरी ओर छिपे छिपे उनके खिलाफ काम कर रहा हू तो वाइसराय का और अधिक समय नष्ट करने की मेरी इच्छा नहा है। वाइसराय ने मेरी ईमानदारी पर शक करके मेरे साथ अन्याय किया है मैं और अधिक नीचा देखने को तयार नही हू।

लेथवेट कुछ हतप्रभ-सा लगा बोला किन्तु अपनी पसन्द के किसी राजनतिक दल के साथ सबध रखने म क्या दोष है ? ' मैंन कहा कोई दोष नही है पर यदि कोई आदमी अपने-आपको बताये कुछ किंतु वास्तव म हो कुछ और ही तो यह अवश्य दोषपूण बात होगी। मैंने वाइसराय को तथा आपको अपने बारे म जानकारी करान की भरपूर कोशिश की है पर पाच वष क सतत प्रयत्न के बाद भी मेरा आप लोगो के साथ अतरग नाता नही जुड पाया। आपको मेरी नेकनीयती पर शुबहा है इसलिए इस तरह का नाता जारी रखन की मेरी बिलकुल इच्छा नही है।

लेथवेट मुझ शान्त करन लगा उसने पूछा हा तो वह ठोस सुझाव क्या है ?' मैंने उत्तर दिया अब किसी भी ठोस सुझाव की चर्चा करने योग्य मेरे भीतर आत्म विश्वास नही रहा है। उसन कहा आप यहा एक मित्र के नाते आते हैं, अथवा एक प्रतिपक्षी के नाते इसस क्या अन्तर पडता है ? मैंने उत्तर दिया, अवश्य पडता है। अगर मैं यहा प्रतिपक्षी क नाते आऊगा तो मेरी बात का अधिक प्रभाव नही पड़ेगा। यदि एक मित्र के नाते आऊ, तभी कुछ प्रभाव पड सकता है। और अब जबकि मुझे मित्र के रूप म ग्रहण नही किया जा रहा है और

अधिक बात करने की मेरी इच्छा नहीं है। उसके विशेष आग्रह पर मैंने बताया कि मैं क्या कहने आया था। उसने मुझे फिर शांत करने की कोशिश की।

वह मुझे अपने दफ्तर के बाहर तक छोडने आया, और बडी शिष्टता बरती। पर मैं खीजा हुआ था। बस, मामला यही खत्म हो गया। वह बोला हम हमेशा मिलकर बातचीत कर सकते हैं।' पर मैंने उसे बता दिया कि वाइसराय द्वारा दुतकार जाने के बाद अब वाइसराय भवन मे मेरे लिए कदम रखना सम्भव नहीं होगा। उससे बात करने का यह अंतिम अवसर है।

मेरे विदा लेने से पहले लथवेट ने मुझसे हिटलर के नाम बापू के पत्र की चर्चा की थी। मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि वह पत्र वाइसराय को भेजने के बजाय बापू ने उसे प्रेस म दे दिया। मेरी समझ म यह ठीक नहीं हुआ। पर बापू अधिक अच्छी तरह जानते है कि क्या करना श्रेयस्कर था। लेथवेट तुम्हे बापू के पत्र के बारे म उसी दिन लिखनेवाला था।

तुम्हें पता ही है कि मैंने बापू के समक्ष वाइसराय का कितना पक्ष लिया और कुछ ऐसा आचरण किया मानो मैं वाइसराय का एलची होऊ, और उसका यह फल मिला। यह मूर्खता नहीं तो और क्या है? पर इतने पर भी बापू को वाइसराय को गलत नहीं समझना चाहिए। क्या पता, वह भी परिस्थितियों द्वारा विवश हो गया हो?

जो भी हो वाइसराय के साथ मेरे ताल्लुक का यह आखिरी दौर था। इन लोगों का मानस कितना जड है मुझे इस पर तरस आता है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाइ
सेवाग्राम

१५३

कलकत्ता
३० दिसम्बर १९४०

प्रिय महादेवभाई

मेरा 'मातृभूमि' से किसी प्रकार का सरोकार है यह मेरे लिए एक नयी खबर है। यह पत्र आनन्द बाजार पत्रिका से होड लेने के लिए निकाला गया है या

सुभाष ने विरोध करने के लिए या मैं नहीं जानता। पर हो सकता है कि दूसरी बात ठीक हो। जो भी हो श्रीराम शर्मा क्या कहता है इससे मुझ को कोई वास्ता नहीं। तुम्हें याद होगा कि मैंने तुम्हें एक बार विशाल भारत की एक कटिंग भेजी थी जिसमें श्रीराम शर्मा ने बापू के एक लेख पर टिप्पणी करते हुए प्रकारांतर से मेरे ऊपर कीचड़ उछाली थी। पर मैं तो इस शख्स की शकल तक से नावाकिफ हूँ न मैं यही जानता हूँ कि यह है कौन।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

म आपने जो कुछ कहा यदि वह आपकी मनोदशा का वास्तविक चित्र है तब तो समझौता एक अधिक कठिन बात लगती है और शायद हम दोनो की भेंट का अभी समय नही आया है। पर इसका निणय तो आप ही करेंगे। मैंन आपको १४ तारीख को जो पत्र लिखा यदि उसे लकर आप मुझे मिलन को बुलायें तो उमस आपकी स्थिति अटपटी हो सकती है यह मैं कभी पस द नहो करूगा। किसी न किसी प्रकार मेरी यह धारणा बन गई है कि अब जब हमारा मिलना हो तो उसका एकमात्र उद्देश्य अतिम समझौता ही रहे। पर इस बारे म मैं स्वय अभी स कसा कोई अनुमान लगाना ठीक नही समझता।

भवदीय,
मा० क० गाधी

१

५ जनवरी १९४१

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा पत्र मुझे अभी-अभी मिला। यह जानकर खुशी हुई कि तुम चाहते हो कि मैं १७ तारीख तक वर्धा पहुच जाऊ। इसके साथ जो पत्र भेज रहा हू यदि उस पत्र के बाद भी बापू कहे कि मुझे २५ को नही, १७ को ही पहुचना चाहिए तो मुझे एक पत्र और लिख भेजना। मैं निश्चित तारीख पर वहा पहुच जाऊगा।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

२

सेवाग्राम

२० १ ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

कमला नेहरू अस्पताल के लिए आपने ५००) रुपये वार्षिक देने को कहा है एसा डा० जीवराज महेता लिख रहे हैं। इस साल का इन्स्टालमेन्ट (किस्त) आप भेज दीजिए।

अनसूया का विवाह सकुशल हो गया होगा। उसके ६०१ रुपये पहुच गए है। उसकी इच्छानुसार उसे हरिजन काय म ले लेंगे।

स्पेक्टर के पत्र पर टाइम्स की टीका देखी? उससे तो कोई सम्भव नही दीखता कि ये लोग अभी रिलेंट (पछतावा) करें। यहा दो दिन से बातें चल रही हैं कि बापू को अरस्ट (गिरफ्तार) करेंगे। कहा जाता है कि हरएक कलेक्टर को पूछा गया है कि महात्मा को पकडने से मूवमेन्ट मस (आन्दोलन ठप) हो जाने की

सम्भावना है या नहीं। पर टाइम्स बापू को अरस्ट (गिरफ्तार) करने की बात न कर उनके अनुयायियों को पकडने की बात करता है। देखें क्या होता है। बापू का पत्र-व्यवहार तो चल ही रहा है।

शायद २६ २७ को मुझे देहली जाना पड़—हिन्दी पत्रकार परिषद के लिए।

आपका
महादेव

३

कलकत्ता
२२ १ ४१

प्रिय महादेवभाई

मैं यह जानकर हैरत में रह गया कि डा जीवराज ने यह कहा है कि मैंने कमला नेहरू अस्पताल के लिए ५०००) वार्षिक दान का वचन दिया था। यदि मैंने वैसा वचन दिया होता तो वह मुझसे यह रकम सीधे मगा सकते थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि कहीं-न कहीं गलतफहमी हुई है। रामेश्वरदासजी आज कल यहीं हैं मैंने सोचा कि हो सकता है डा० मेहता ने उनके द्वारा कही गई बात मेरे द्वारा कही गई समझ ली होगी इसलिए मैंने उनसे भी पूछा पर उनका भी यही कहना है कि उन्होंने कोई वायदा नहीं किया। प्रारम्भ में मैंने कमला नेहरू अस्पताल के लिए काफी मोटी रकम दी थी—याद नहीं पड़ता कितनी। बाद में डॉ० मेहता ने रामेश्वरदासजी से भी कुछ लिया था। कोई साल भर पहले डा० मेहता मुझसे दिल्ली में मिलने आए थे और कुछ दान की याचना कर रहे थे। मैंने कहा कि रामेश्वरदासजी से पूछूगा क्योंकि वह और डॉ० मेहता दोनों ही बम्बई में रहते हैं। उनसे पूछने पर पता चला कि डा० मेहता उनके पास आए थे और उन्होंने २५००)दिये थे। अत मैंने यह बात डा० मेहता से कही। बस स्थिति यही है। फिर यह समझ में नहीं आया कि उन्होंने तुम्हें यह कैसे लिखा कि मैंने ५०००) वार्षिक दान का वचन दिया है। मेरी याददाश्त मुझे इतना धोखा नहीं दे सकती और यदि उसने धोखा दिया है तो कहना होगा कि उसके इलाज की जरूरत है।

तुम दिल्ली जा रहे हो सो मालूम हुआ। बिडला हाउस में ही ठहरोगे न ? यदि ऐसा हो तो देवदास को तार भेज देना जिससे वह सारा इतजाम कर रखे।

वहा इस समय हमम से कोइ नही है इसलिए उन्हे बिडला हाउस मे भी आतिथ्य सत्कार का भार उठाना पडेगा।

और अधिक क्या लिखना है ? हमे भगवान स प्रार्थना करते रहना चाहिए कि वह मगल करे। आश्रम म तो तुम यह कर ही रहे हो।

सप्रम
घनश्यामदास

श्री महादवभाई दसाइ
सेवाग्राम

४

कलकत्ता
२४ जनवरी १६४१

प्रिय महादवभाई,

मित्रो का कहना है कि रुपय म बारह आने सत्याग्रहियो म खोट है। सत्याग्रह आन्दोलन शुरु होने से काफी पहले बापू न बडी कडी शर्तें लगा दी थी। बाद म बापू बारम्बार उन शर्तों को दुहराते रहे। आन्दोलन को शुद्ध रखने की कितनी जरुरत है इस बात पर जोर देते वह कभी नही अघाये। कोई साल भर पहले उन्होन हरिजन' मे लिखा था कि १६३०-३२ के आन्दोलन पर तो उन्होन कडी निगाह नही रखी थी पर अब जब कभी कोई आन्दोलन छिडेगा वह पूरी सतकता स काम लग। तिस पर भी एसा लगता है कि यदि लोगो का कहना सच मान लिया जाय तो आन्दोलन मे अनक दूषित चरित्र के आदमी आ घुसे हैं।

बापू शायद यह कहग कि जब तक किसी क बारे म कोई लाछन प्रमाणित न हो तब तक उसके आश्वासन पर विश्वास रखना चाहिए। पर इसस वस्तुस्थिति म कहा सुधार हुआ ? विनाबाजी को घटिया दर्जे के लोगो के साथ कस नत्थी किया जा सकता है ? पहल जत्थे के लोग हैसियतवाले थे पर दूसरे जत्थे म जो लोग शामिल हुए उनकी न कोई हैसियत थी, न उनमे चरित्र-बल था। कम से कम मुझे तो यही बताया गया है। किसी सदिग्ध चरित्र के आदमी को सत्याग्रही का दर्जा देना खतर से खाली नही है। अवाछित चरित्र के लोगो को महत्त्व मिलेगा, और उनकी साख जमेगी और बाद म वे इस साख का दुरुपयोग करके समाज का

शोषण करने में लग रहेंगे। वास्तव में उनके लिए जेल जाना क्या है समाज के शोषण के लिए सजा का प्रमाण पत्र प्राप्त करना मात्र है।

मुझे यकीन है कि अन्य कितने ही लोगों ने भी बापू को इस बारे में लिखा होगा। मुझे सारी बातों की तो पूरी जानकारी नहीं है पर जब मैंने भले आदमियों के मुंह से यह शिकायत सुनी तो मुझे लगा कि अपने शक शुबहे की बात बापू के सामने रखना मेरा कर्त्तव्य है।

एक बार तो बापू ने यह योजना बनाई थी कि केवल विनोबाजी और पंडित जवाहरलाल इन्हीं दो आदमियों का जेल जाना यथेष्ट होगा। कभी-कभी तो बापू यह तक कहते हैं कि केवल एक सच्चा सत्याग्रही यथेष्ट है। स्वयं बापू का ही कहना है कि वह वन्दों को गिना नहीं करते, तोला करते हैं। यह होते हुए भी फिलहाल तो गिनती का ही प्राधान्य है तोल ने गौण स्थान ग्रहण कर रखा है। यह सब देखकर मुझे मर्मान्तक वेदना हुई और मैं यह पत्र लिखने का लोभ संवरण न कर सका।

श्री एमरी के वक्तव्य में कोई नयी बात नहीं है पर इस ताजे वक्तव्य का आशय ग्रहण करने में अपेक्षाकृत अधिक उदारता बरती जा रही है। उनका वक्तव्य क्या है हम अपना घर ठीक करने की हमारी क्षमता को चुनौती है। सरकार या सरकारी हल्का हमारे आपसी भेद भाव का नाजायज फायदा उठा रहा है। यह तो वस्तुस्थिति है ही कि भेद भाव बना हुआ है और हम लोग उसे दूर करने में अब तक असमर्थ रहे हैं। कारण चाहे जो भी रहे हों यह बात स्वयं सिद्ध है कि जब तक हम आपसी भेद भाव दूर नहीं कर पाएंगे इंग्लैंड हमें सारी राजसत्ता सौंपने को तैयार हो भी जाए तो भी हम कोई राजनैतिक प्रगति नहीं कर पाएंगे। यह असलियत आईने की तरह साफ है।

मैंने वर्धा में भी कहा था और अब फिर कहता हूं कि वह समय आ गया है जब हम मुसलमानों के साथ मनमुटाव दूर करने की नये सिरे से कोशिश करें। मैंने ख्वाजा नाजिमुद्दीन से बात करके देखा था। आदमी कड़े का है हां यह बात अवश्य है कि वह कट्टर मुसलमान है। मैं उसके और मौलाना अबुलकलाम आजाद के बीच मुलाकात कराने की बात सोच रहा था। पर यह मुलाकात होने से पहले ही मौलाना को गिरफ्तार कर लिया गया। मेरी तो अब भी यही धारणा है कि अकेले श्री जिन्ना को छोड़ बाकी कांग्रेसी नेताओं और कई मुस्लिम लीगी नेताओं के बीच कई मामलों में सामंजस्य स्थापित करना सम्भव है।

शायद सरकार भी चाहती है कि किसी प्रकार का अन्तरिम समझौता हो जाय तो अच्छा रहे। अंतरिम समझौते की उपादेयता के बारे में संशय संदेह की

गुंजाइश जरूर है पर इस समय हाथ पर हाथ धर बठे रहना शायद अक्लमंदी का काम न हो। और मेरी यह भी धारणा है कि इंग्लैंड को पूनावाली मांग के आस-पास ले आना सम्भव दीखता है।

इस संदर्भ में बापू की स्थिति बिलकुल भिन्न है उनके निकट पूनावाली मांग की पूर्ति की अपेक्षा युद्ध विरोधी प्रवृत्ति का अधिक महत्त्व है। यदि सरकार पूना वाली मांग को पूरा कर दे तो अधिकांश कांग्रेसी संतुष्ट हो जाएंगे। मैं यह कहने का भी दुस्साहस करूंगा कि बापू अच्छी तरह जानते हैं कि उनकी अपनी स्थिति और मौलाना राजाजी तथा अन्य लोगों की स्थिति के बीच कितना अंतर है। क्या इस अंतर को नजरअंदाज करना बुद्धिमानी होगी? और यदि इस अंतर को ध्यान में रखा जाये तो क्या यह जिज्ञासा असंगत होगी कि यदि सरकार समझौते के माध्यम से पूना की मांग स्वीकार कर ले और एमरी के वक्तव्य का अधिक स्पष्टीकरण संभव हो तो कैसा रहे? मैं तो समझता हूं कि यह सम्भव है। पर इस बारे में बापू को ही निर्णय लेना है। यदि एमरी ने जो-कुछ कहा है उसी के अनुरूप आचरण करने पर वह तुला रहे तो जो कांग्रेसी युद्ध विरोधी प्रवृत्ति में आस्था नहीं रखते पर जिन्होंने यह देख लिया है कि सरकार से कुछ प्राप्ति की आशा करना व्यर्थ है और जो अब मिथ्या भाषण करने पर उतारू हो गए हैं उन्हें लक्ष्यविहीन स्थिति में छोड़ देना क्या ठीक रहेगा? क्या बापू इस मक्कारी को प्रोत्साहन दे सकेंगे?

मैंने अपने सारे संशय संदेह तुम्हारे सामने रख दिये हैं ताकि तुम उन्हें बापू तक पहुंचा दो।

सप्रेम,
घनश्यामदास

५

सेवाग्राम
२५ १ ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। बापू को भी आश्चर्य मालूम होता है कि आपको कमला नेहरू अस्पताल के लिए दान की याद नहीं है। वे कहते हैं कि आपने या तो बापू को ही कहा था या नरगिसबहन कैप्टेन को लिखा था कि आप मौलाना पांच

हजार दगे (६ हजार नही)। मैं नरगिमबहन को भी पूछ रहा हू, और किसकी स्मृति का दोष है यह तलाश कर रहा हू। मुझे ता याद है ही नही क्याकि मैं उस वक्त नही था।

दहली तो मैं नही गया पर स्टैंडिग कमेटी (स्थायी समिति) की मीटिग १ फरवरी को है। उसम मैं कभी नही जाता ह, पर बापू कहते हैं कि वह बडी महत्त्व की बठक है मुझे जाना ही चाहिए। कल एफ० ई० जम्स आया था। करीब *एक घण्टा बापू क साथ बठा। बडी महत्त्व की बातें हुइ। उसकी नीयत* अच्छी लगी, और वह कुछ मदद करना चाहता है। इसलिए उसन मुझे बहुत आग्रह किया कि जब वह देहली जाय तब मैं भी वहा हाजिर रहू। वह २ फरवरी स ७ तक वहा रहेगा और वडे लाट और औरो को भी मिलनेवाला है। बापू के सामन ही उसने कहा कि मैं वहा रहू ता बहुत उपयोग होगा। भगवान जाने क्या है ? किसी न उसको भेजा हो तो भी आश्चय की बात न होगी। इसलिए मैं जाऊगा।

आपका,
महादेव

६

२७ जनवरी १९४१

प्रिय महादेवभाई

कमला नेहरू अस्पताल के बारे म ज्यो ही नर्गिसबेन का नाम मर सामने आया मुझे पुरानी बात याद आ गइ। इस विस्मृति के लिए मैं अपने-आपको दोषी ठहराऊ या तुम्हे ? दोष नि सदह मेरा ही है पर तुम्हारी चिट्ठी स मुझे लगा था मानो मैंने डा० मेहता को वचन दिया हा। या भी मैंन नर्गिसबेन क साथ अपनी बातचीत याद करन की भरसक कोशिश की, पर उन्हे वचन दने की बात फिर भी याद नही पडी। मेरा खयाल है कि जब मैं सेवाग्राम बापू के दशना के लिए गया था तभी नर्गिसबेन न मुझस वसा अनुरोध किया था। मुझे यह ता याद नही कि मैंने क्या वचन दिया था पर इतना अवश्य याद पडता है कि मैंन कुछ वायदा जरूर किया था और जब बापू का रकम की बात याद है ता फिर उनकी बात ही सही है।

यह वचन एक वर्ष के लिए था या हमेशा के लिए ? बापू से पूछकर लिखना क्या मैं बुड्ढा हो चला हू ? मैं तो ऐसा नही समझता। पर तुमने मेरे लिए एक नूतन पृष्ठभूमि प्रस्तुत की और मैंने अपने आपको उल्लू बना डाला।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

७

कलकत्ता
७ फरवरी १९४१

प्रिय महादेवभाई,

मुझे कांति की एक चिट्ठी मिली है जिसकी नकल साथ भेज रहा हू। मैंने उसे ५०) मासिक देते रहने का वचन दिया है अगले तीन महीनों के १५०) भेज दिये हैं। कांति को रुपया भेजने के बाद मुझे लगा कि तुम्हे खबर दे देना उचित होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

८

सेवाग्राम
१० २ ४१

भाई घनश्यामदास

कांति का खत सरल तो है—लेकिन नीति विरुद्ध है इसलिये यह बात कुछ भाई नहीं, लेकिन मैं रखू भी कैसे ? इसलिये मैंने भेजा।

लगा कि तुम्हें जानना भी चाहिये इसलिये अब लिख रहा हू।

बापु के आशीर्वाद

६

सवाग्राम
वर्धा सी० पी०
१९ ७ ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

कृपा पत्र मिला। अभी ता कोई खास काम नही है जिसके लिए आपको यहा आने की तकलीफ दी जाय।

शांति के बारे मे बापू ने कहा कि उसने मागा वह नीति विरुद्ध किया। आपने दिया उसमे नीति भग नही है परन्तु मुझे पहले पूछा गया होता तो मैं कहता कि मदद न दी जाय। पर जो हुआ सो हुआ। अब आप बद भी कैसे करें? और आपसे बद कराने की दूरी तक बापू अपना नियम नही ले जाना चाहते।

बापू का भाषान्तर तुरत ही छपेगा। तयार हो गया होगा। हिंदी की तो दूसरी एडीशन (सस्करण) निकल रही है मुझे प्रस्तावना का प्रूफ दिखाने के लिए मार्तण्ड आया था। मैंने उसमे कोई सुधार नही किया। सिर्फ प्रथम वाक्य बदला क्योंकि जो छपा था उससे मेरे मन म जो भाव था उससे उलटा ही प्रकट होता था।

मूर को अच्छा पत्र लिखा है पर वह मूढ आदमी है। उसका लडका लडाइ म है। इसलिए उसकी दृष्टि बाप (विकृत) हो गई है। कोआपरेटिंग विद हिटलर (हिटलर स सहयोग करना) से तो मुझे सचमुच बहुत ही चिढ हुई। और मैंने जवाब म लेख लिखा है वह कल परसो छपेगा तो बम्बई म आप देखेंगे।

आपका
महादेव

पुनश्च

शांति की शादी की पत्रिका देखकर बडी हसी आई। होस्ट (मेजवान) मे सब पुरुषो के नाम—अशोकवर्द्धन तक—तो बेचारी स्त्रियो ने क्या किया? वे तो शायद पुरुषो म लुप्त हो जाती है क्या?

कमला नेहरू अस्पताल के दान का मामला अब साफ होना है। गोशीबहन का २९ जनवरी का पत्र आज ही मिला। आपके साथ जो बातें हुई थी उसकी सच्ची रिपोर्ट इसम है और उसे ही अब ठीक मानना है।

म०

१०

१७-२-४१

प्रिय महादेवभाई

कमला नेहरू अस्पताल के लिए ५०००) का अनुदान डा० जीवराज मेहता के पास भेजा जा रहा है।

गोशीबेन की चिट्ठी वापस भेज रहा हूं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

११

सेवाग्राम वर्धा
(मध्य प्रांत)
१८-२-४१

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ डा० पी० जे० मेहता के पौत्र श्री मधुसूदन डाक्टर से संबंधित कागजात भेज रहा हूं। इसने और इसके भाई ने इंग्लैंड में शिक्षा दीक्षा प्राप्त की है। भाई टाटा कम्पनी में विमान चालक की हैसियत से खासा अच्छा ७५०) मासिक वेतन पा रहा है। पर यह युवक अभी तक खाली है। यह विद्युत इंजीनियर और मांत्रिक इंजीनियर दोनों ही है और लन्दन के एक प्रख्यात कालेज की सनद हासिल किए हुए है। बापू को लगा कि शायद आप इसके लिए कुछ कर सकें। यदि तुम अपने यहां कोई काम दिला दे सकें तो सूचित करिये।

मुझे एक अन्य मामले में भी आपसे सिफारिश करनी है। छोटूभाई देसाई स्वामी आनन्द के साथ थाना गांधी-आश्रम में काम कर रहा है। वह अपना सारा समय थाना जिले के आदिवासियों और पास पड़ोस के कुछ भंगियों तथा अन्य हरिजनों की सेवा में लगा रहा है। इसका मुख्य कार्य आदिवासियों की सेवा है

इसलिए इससे हरिजन-सेवक सघ के अतगत काम करने को कहना मेरे लिए सम्भव नही है। इधर कई वर्षों से यह इसी सेवा-काय म लगा हुआ है और स्वामी आनन्द किसी-न किसी तरह इसके गुजारे के लायक बन्दोबस्त करते आ रहे है पर अब वैसा करते रहना उनके लिए कठिन प्रतीत हो रहा है। जब तक अपना पूरा समय देनेवाले इस कायकर्त्ता के लिए कुछ नियमित भत्ते की व्यवस्था न हो इसके काम को स्थायी रूप देना सम्भव नही है। साथ ही यह भी कह दू कि यह मेरा भतीजा है। कोई १५ साल पहले इसने स्टेशन मास्टर के पद से त्यागपत्र दे दिया था और उसके बाद रेल कर्मचारी सघ म मणिलाल कोठारी के साथ सेक्रेटरी के रूप मे काम करता रहा था। इसके पास आजीविका के अपने निजी साधन नही हैं। उसके स्त्री दो लडकिया और एक लडका है। कुछ कर्ज भी हो गया है। स्वामी आनन्द का कहना है कि यदि उसके लिए ७५) मासिक की व्यवस्था हो सके और सफर खर्च आदि के निमित्त २५) ऊपर से मिलते रहें तो पर्याप्त होगा। कुछ समय पहले मैंने बापू से चर्चा की थी। उन्होंने कहा था कि हरिजन सेवक सघ की उस निधि म से भत्ता न दिया जाए जो बापू की निश्चित योजनाओं के निमित्त अलग रखी गई है पर मैंने कठिनाई बताई। छोटूभाई की शिक्षा दीक्षा भले ही उच्च कोटि की न रही हो पर आदमी है हिम्मतवाला। पिछले दस वर्षों से दलितों और पतितों की सेवा करता आ रहा है। आपके लिए उसके खर्च की व्यवस्था करना सम्भव होगा या नही यह मैं नही जानता।

सप्रेम
महादेव

१२

सेवाग्राम
२० फरवरी ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

देहली से आ गया। कुछ खास काम तो नही हुआ, पर एक बला आ रही थी टल गई— कुछ समय के लिए। यग के साथ मेरी बहुत बातें हुई। हरिजन फिर निकालने के लिए मुझे बहुत आग्रह किया। बापू के निवेदन नही रोके जायेंगे। जब तक बापू खुद एन्टी वार स्लोगन्स (युद्ध विरोधी नारे) न पुकारें या एन्टी वार

मीटिंग (युद्ध विरोधी सभाए) न करें तब तक उनको नही पकडेंग। और जब उन्हे सत्याग्रह नही करना है तो हरिजन क्यो नही निकालते हैं—यह उनका कहने का सार था। मैंने वह मेरा पुराना ड्राफ्ट (मसौदा) उसे बताया तब कहने लगा इसको तो कोइ भी आदमी स्वीकार कर लेगा—मुझे तुमने पहले यह बताया होता तो मैं स्वीकार कर लेता। लेथवट बडा विचित्र है। उन्होने बडे लाट को यह दिखाया ही नही होगा वह कभी ऐसी चीजें नही दिखाता है। मैंने एक दूसरा ड्राफ्ट (मसौदा) बनाया था। जो हिंदू के एडीटर (सपादक) ने बडे लाट को दे दिया है—वह भी मैंने उसे बताया। उससे भी वह खुश हुआ। दूसरे ही दिन वह बबई जा रहा था—कहने लगा कि मैं ऐसा ड्राफ्ट (मसौदा) गवनर को दिखाऊगा और जो कुछ हो सकता है करूगा। भगवान जाने यह बेचारा कितना कर सकता है।

जेम्स ने तो कुछ नहीं किया। वह तो मुझे कहने लगा थाने मे मिलो लेथवेट से मिलो। मैंने कहा आप उनसे कहें और वे चाहे तो मैं मिलूगा। मैं खुद मिलना नही चाहता हू। मैं काफी मिल चुका हू। वह बडे लाट को शुक्रवार को मिलने वाला था, पर बडे लाट बीमार पड गये, तो सब इगेजमट कैंसल (कायक्रम रद्द) हो गये। इसलिए मैं भी वहा से चल पडा।

डायरी के पन्ने का गुजराती भाषान्तर नारायण कर रहा है। मैं पूरा पूरा देख जाऊगा। उसे अच्छी तालीम मिलेगी। इस साल उसने काफी हिंदी कर ली है। 'कोविद' की परीक्षा मे आया है। अच्छा किया है।

कांति का पत्र मैंने बापू को दिखाया। उन्होंने आज मौनवार होने से आप ही के पत्र पर जो लिखा है आपको देखने के लिए भेज रहा हू।

आपका
महादेव

१३

२६ फरवरी १९४१

प्रिय महादेवभाई,

छोटूभाई सहायता का अधिकारी अवश्य है। उसे आदिवासियो के सेवा काय मे लगाए रखा जाए। खर्च का बन्दोबस्त यहा से हो जायेगा।

मधुसूदन शास्त्री के बारे में जो कागज पत्र मिले हैं, वे मैं माधव को दे दिए हैं। देखें उनकी योग्यता के अनुरूप यहां कोई काम धंधा निकलता है या नहीं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

१४

२   ४१

प्रिय महादेवभाई,

पदमपतजी ने जो लिख भेजा है उसे साथ में रख रहा हूं। वह जो कहते हैं वह विश्वास योग्य है। यह एक आदमी रहा है कि जवान देकर मुकर जाए। पर समाचार पत्रों में पढ़ने को मिला कि उन्होंने अस्पताल के लिए १५०००) दिए हैं। बहुत बढ़िया।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

१५

श्री महादेवभाई देसाई का फार्मूला

नयी दिल्ली
६ मार्च, १९४१

वाणी और लेखनी के द्वारा अपने विचार व्यक्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता से कम कोई भी चीज बापू को संतुष्ट नहीं कर पायगी। वह अपनी जिस आस्था के लिए अब तक जीये हैं और जिसके लिए वह अपने प्राण न्योछावर करने को तैयार रहते हैं उसके फलने फूलने के मार्ग में कोई अड़चन पैदा की जायेगी तो

उन्ह जीवन म काई रुचि नही रहगी।

उनका आन्दोलन युद्ध प्रयत्नो का रोकने के लिए आरम्भ नही हुआ है बल्कि शाति स्थापना के निमित्त आरम्भ हुआ है और वह जिस किसी चीज का युद्ध काय को जारी रखनेवाला समझेंग उसके साथ अहिंसापूवक लोहा लेना अपना अत करण द्वारा प्रेरित कत्तव्य समझते हैं।

उन्होंने अपनी इस स्वतत्रता की जो सीमाए स्वय निर्धारित की हैं यदि उनके भीतर रहकर उन्हे अपना काय जारी रखने की छूट दे दी जायेगी तो सरकार के साथ उनका सारा झगडा खत्म हो जायेगा। सरकार द्वारा भारत को यह स्वतत्रता प्रदान करने भर की देर है उसके बाद वह ससार को यह बताने की स्थिति मे हो जायेगी कि भीतरी झगडा झमेला मौजूद रहते हुए भी जहा तक नाजीवाद स मार्चा लन का सबध है उसे काग्रेस का समथन प्राप्त है। जहा एक ओर युद्ध म रुचि रखनेवाला भारत का एक अग उसके साथ सनिक सहयोग कर रहा है भारत का अहिंसावादी अग भी अहिंसात्मक प्रणाली द्वारा सरकार को सहयोग प्रदान कर रहा है। इस बारे म एक उपयुक्त फामूला सोच निकालने का भार गाधीजी पर छोड देना चाहिए।

शासन सबधी प्रश्न के बारे म बात यह है कि गाधीजी की ऐसी युद्धकालीन कबिनट बनाने म कोई दिलचस्पी नही है जिसका उद्देश्य युद्ध काय जारी रखना मात्र हो। स्वय सरकार यह घोषणा कर सकती है कि चूकि काग्रेस की नीति अहिंसा की है इसलिए वह काग्रेस स कोई ऐसी कबिनट बनाने म योगदान की अपेक्षा नही कर सकती जिसका मुख्य उद्देश्य सेना के माध्यम स युद्ध काय जारी रखना रहेगा। इसलिए उस अन्य ऐस दलो से प्रतिनिधि चुनने होग, जिन्ह काग्रेसियो की तरह युद्ध प्रयत्नो को जारी रखने म आपत्ति नही है। विचार व्यक्त करने की अबाध छूट की घोषणा वतमान परामशदायिनी समिति भी कर सकती है और नये सिरे से बनाइ जानेवाली कबिनट भी कर सकती है।

१६

सरकार की दमन नीति पर महादेव देसाई का नोट

८ ३ ४१

इगलड के एक चोटी के प्रभावशाली पत्र 'न्यू स्टेटसमन' ने भारत की स्थिति का एक ही वाक्य मे सम्यक रूप से व्यक्त कर दिया है। उसका कहना है कि 'भारत ने नैतिक विद्रोह कर रखा है।' सरकार की स्थिति को भी केवल एक वाक्य मे व्यक्त करना सम्भव है—वह यह कि 'सरकार नैतिक विद्रोह से निबटने के लिए अनैतिक साधनो का प्रयोग कर रही है।' इस कथन की विशेषता इस बात का ध्यान मे रखने से भली भाति प्रकट हो जाती है कि दक्षिण अफ्रीका मे जो दल युद्ध मे भाग लेने के खिलाफ है वह वाणी द्वारा तो अपना विरोध व्यक्त करता ही है साथ ही हिंसा वृत्ति भी जाहिर करता है सशस्त्र विद्रोह का सगठन कर रहा है छापा मारनेवाले अर्ध सैनिक दस्ते तयार कर रहा है और नाजी विजय तक की कल्पना कर रहा है। वहा यह सशस्त्र विद्रोह सहन किया जा रहा है। पर जिस नैतिक विद्रोह को माननीय गृह सदस्य साकेतिक विद्रोह की सज्ञा देते हैं और जिसका स्वय श्री एमरी के ही शब्दों मे सरकार की युद्ध चेष्टाओ पर कोई प्रभाव नही पडा है उसे अधाधुध गिरफ्तारी और नजरबन्दी की नीति के द्वारा कुचलने की कोशिश की जा रही है। प्रातो के छह भूतपूर्व मुख्य मत्री तथा लगभग साठ मत्री इस समय जेलो मे पडे हैं।

निर्दोषो को कारावास दण्ड

इनका अपराध क्या है? केवल अत करण को व्यक्त करने की छूट की माग। अधिकाश अवसरो पर युद्ध विरोधी उदगार व्यक्त करने अथवा युद्ध के विरोध मे स्पीच देने से पहले ही कारावास दण्ड दे दिया जाता है। अधिकाश अवसरो पर एक ऐसे निर्दोष नारे के उच्चारण मात्र पर लम्बा कारावास दण्ड दिया जाता है जो एक सम्मति मात्र व्यक्त करता है— सरकार की युद्ध चेष्टाओ मे धन-जन द्वारा सहायता देना अनुचित है। युद्ध का प्रतिरोध अहिंसात्मक ढग से करना ही एकमात्र सराहनीय प्रयत्न है।

एक प्रख्यात कानून विशारद ने कहा है कि यदि महात्माजी उस सत्याग्रहियो की पैरवी करने की अनुमति प्रदान करें तो वह इन सभी दण्डाज्ञाओ को गैर कानूनी साबित करके उन्हे रद्द कराने का जिम्मा लेने को तयार है। यदि जवाहर

लालजी अपनी परवी करने को तयार हो जाते तो उन्ह चार साल का जो कठोर कारावास दण्ड दिया गया है वसा दण्ड देन का किसी भी अदालत को साहस न होता। उन्हें रिहा कर दिया जाता, क्योंकि उन्होंने कोई अपराध नही किया था।

निर्दोष व्यक्तियो के साथ दुर्व्यवहार

य सांकेतिक कहे जानेवाले अपराधो के लिए, जिन्ह म तकनीकी अपराध का नाम देना चाहूगा चार महीने से लेकर चार साल की सजाए दी जा रही है और ५००) से लेकर ५०००) तक जुर्माना किया जा रहा है। विद्रोह ने कितनी गहरी जड जमा ली है इसका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि मध्य प्रात के श्री जक्टकर नामक एक ६५ वर्षीय एडवोकेट ने पाच बार जुर्माने की सजा पाने के बाद भी छठी बार सत्याग्रह किया। वह जुर्माने के रूप मे ५०००)दे चुके थे। अब की बार उन्ह छह मास का कारावास दण्ड मिला।

यद्यपि अपराध एक ही कोटि का है दण्डाज्ञाए अलग-अलग ढग की हैं और बन्दियो के साथ अलग-अलग ढग का बरताव तो किया ही जा रहा है पर जमन और इटालियन युद्ध-बन्दियो के साथ बरताव करन म एकरूपता बरती जाती है। कन्दियो को विभिन्न श्रेणियो म विभक्त करके जले पर नमक छिडका जा रहा है। युद्ध-बन्दियो को श्रेणियो म बाटन का नियम नही है। कई एक प्रातो मे युद्ध विरोधी नारे लगाने अथवा युद्ध विरोधी स्पीचें देने पर गिरफ्तारिया नही होती पर कई अन्य प्राता मे वह सब करने स पहले ही सजा दे दी जाती ह। कुछ प्राता म बदियो को खुल बाजार हथकडी बेडी लगाकर स्टेशन तक ले जाया जाता है। पजाब म मिया इफ्तिखारुद्दीन साहब का, जो हजारो रुपया आयकर अदा करते है एक के बाद एक जेल से दूसरी जेल तक हथकडी लगाकर भेजा गया। सी श्रेणी म रखे गये कदियो को बेडिया डालकर अपमानित किया जा रहा है।

अनक जेलो म जो खाना मिलता है उसम कक्ड पत्थर रहते है वह घटिया किस्म का होता है और गदे ढग मे तयार किया और परोसा जाता है। कन्दियो को बाहर स पकाया भोजन मगाने की मनाही है। मद्रास प्रात म तो वहा के भूत-पूर्व मुख्य मत्री श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचारी तक के साथ यही बरताव किया गया। अचार मुरब्बे आदि तक की गणना पकाए गये भोजन म की गई है। अजमेर की जेल मे श्रीकृष्ण गग को जो शरीर स दुबल हैं चक्की पीसन का आदेश दिया गया। यह आदेश कई दिन लागू रहा। एक बार तो वह बेहोश हो गये।

गर-कांग्रेसी नजरबन्द

गर कांग्रेसी नजरबन्द कैदियो के बारे म मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि

लोगो को तो बिना मामला मुकदमा चलाए ही जेलो मे रख छोडा गया है, और उनकी पीठ पीछे गह सदस्य ने उनके चरित्र पर अत्यन्त अशोभनीय और अभद्र आक्रमण किये है और उन्हें विश्वासघातक बेइमान निकम्मा आदि बताया है।

हाल ही मे श्री जोशी के प्रस्ताव के समर्थन मे अनेक माननीय सदस्यो ने केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभा मे उदगार व्यक्त किये है। इस अवसर पर गह सदस्य ने जो स्पीच दी थी वह सर्वथा मर्यादारहित और अशोभनीय थी। मैं उसका जोरदार शब्दो मे विरोध करने के अतिरिक्त और कुछ नही कहना चाहता।

१७

सेवाग्राम वर्धा (मध्य प्रात)
१३ मार्च १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं यह पत्र रेलगाडी मे लिख रहा हू। यह गाडी मुझे बम्बई ले जा रही है। वहा मैं हरिजन के हिसाब किताब की जाच पडताल करने जा रहा हू जो इस समय घपले मे पडा हुआ है। हो सका तो हरिजन को नये सिरे से चालू कराने की भी व्यवस्था करूगा। बापू ने सारे मामले पर गौर करने के बाद उसे पुन चालू करने का फैसला किया है। आशा है अब कोई नया सकट भुगतने की नौबत नही आयेगी।

श्रीनिवासन से थोडी बहुत बातचीत हुई। उसने जो कुछ कहा उसका बापू के पास एक ही उत्तर था जो उन्होने बडी स्पष्ट भाषा मे और जोरदार शब्दो मे दिया। उन्होने कहा कि यदि समझौते का एकमात्र आधार युद्ध प्रयत्नो मे भाग लेना हो, तो समझौते की कोई सम्भावना नही है। कल कान्फरेंस के बाद शिवराव बापू से एक बार फिर मिलेगा। कान्फरेंस मे जो प्रस्ताव पारित होंगे उन पर बापू की प्रतिक्रिया जानने योग्य होगी। पर उनकी धारणा यह तो है ही कि कान्फरेंस के बूते का कुछ नही है। सप्रू ने लिखा है कि कान्फरेस के बाद वह और उनके सहयोगी बापू और जिन्ना को एक बार फिर लिखकर उनसे कान्फरेंस के प्रतिनिधियो के साथ मिलकर बातचीत करने का आग्रह करेंगे। बापू ने कहा कि उससे कुछ होना-जाना नही है पर यदि उन्हे वैसी बातचीत मे भाग लेने को विवश किया गया तो वह जायेंगे।

अब काम-काज की बात।

(१) जनवरी की छोटूभाई की काय रिपोर्ट साथ भेजी जा रही है। उसे ७५) तथा ऊपर के खर्च के निमित्त २५) देने का जो फैसला किया है वह रकम हर तीन महीने बाद स्वामी आनन्द, गांधी आश्रम आगरा रोड थाना (जी० आई० पी०) के पते पर भेजते रहना ठीक रहेगा। जनवरी से अब तक की तीन महीने की किस्त इस चिट्ठी के पहुंचने के बाद भेज देंगे।

(२) संघ की प्रबंधकारिणी की बैठक इस महीने की २४ तारीख को बुलाने का निश्चय हुआ है। क्या आप चाहते हैं कि मैं इस बैठक में भाग लूं ? ठक्कर बापा १५ को मिलनेवाले हैं। उस भेंट के दौरान आवश्यक मामलों की चर्चा होगी ही। हम लोग २२ तारीख से 'हरिजन' का पुनर्प्रकाशन करने का विचार कर रहे हैं। यदि ऐसा हुआ तो मेरे लिए उस बैठक में आना बहुत कठिन होगा, विशेषकर इसलिए कि इस समय राजकुमारी अमृतकौर भी नहीं हैं।

(३) मैं आपको बता ही चुका हूं कि सेवाग्राम के एक रोगी को इन्जेक्शन देने हरिजन बस्ती तक जाने के लिए सुशीला नैयर को एक कार की जरूरत होगी। जल्दी में था इसलिए बजाजवाड़ी को यह बताना भूल गया कि सुशीला को ले जाने के लिए हर मंगलवार और बृहस्पतिवार को सन्ध्या के ६॥ बजे कार अस्पताल में चाहिए। यह बन्दोबस्त इस महीने के अंत और अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक जारी रखना होगा। रोगी वहां तभी तक है।

आपको यह विवरण भेजकर व्यस्त करते दुःख होता है, पर जीवन का सारा क्रम ही व्यस्तता से ओत प्रोत है। वही नफे में रहता है जो व्यस्त होने से इन्कार कर दे—अर्थात सारे मामले में एक तटस्थ की तरह रहे। मैं जानता हूं कि आपने इस रहस्य का पता लगा लिया है और यह भी जानता हूं कि आप उसी के अनुरूप आचरण भी करते हैं।

बापू की प्रसिद्धि उत्तरोत्तर बढ़ती जा रही है। जिधर जाइये भाग्य लक्ष्मी आपके पीछे लगी दिखाई देती है। थाईलैंड की एक सुशिक्षित महिला ने एक पत्र में पुस्तक की (और कहते लज्जा आती है मेरे प्राक्कथन की) भूरि भूरि प्रशंसा की है। मराठी के एक अच्छे-खासे विद्वान् ने पुस्तक का मराठी अनुवाद करने की अनुमति मांगी है। मैं अनुमति दे रहा हूं।

तीन नौजवान हैं—तीनों ही बहनों और चचेरे भाइयों में से तीन हैं जो पिछले छह महीने से पीछे लगे हुए हैं कि उनके लिए कुछ काम काज का बन्दोबस्त कर दूं। एक बी० एस-सी० आनर्स हैं और दो एल एल० बी० हैं। क्या इन्हें

कहा रख पाना सम्भव है ? बेरोजगारी की समस्या और सब समस्याओ स बडा है।

बापू स्वस्थ हैं—भगवान की दया ह।

सप्रेम
महादेव

१८

१ जनवरी से २२ फरवरी, १९४१ तक छोटूभाई द्वारा किये गये काम का विवरण

हरिजन-काय

(१) थाना म्यूनिसिपलिटी के स्टाफ अफसर न १६ मेहतरा पर एक एक रुपया जुर्माना किया क्याकि दोपहर के भोजन के बाद उन्होने काम शुरू करने म देर की थी। असलियत यह थी कि व दोपहर का खाना खाने क बाद अपने मुकादम का इतजार कर रहे थे। क्याकि काम करन का सामान उसी क साथ था और वही उन्ह देता था। इत्तिफाक स स्टाफ अफसर उधर से निकला और इन महतरा न छिपन की कोशिश की। यूनियन ने इन महतरो की वकालत की जिसके फलस्वरूप उनके जुर्माने उन्हे वापस मिल गये।

(२) कल्याण उपनगर म हरिजनो की तीन बस्तिया है। उनम स एक स ट्रल टैंक के तट पर है और भगीवाडा कहलाती है। दूसरी दक्षिण पश्चिम की ओर है और वह महारवाडी कहलाती है। तीसरी रलव पटरिया क उस पार है और कोलसेवाडी कहलाती है। इस आखिरी बस्ती म कोई ५०० स्त्री पुरुष रहते है वहा पेशाब घर की कोई व्यवस्था नही है हालाकि म्यूनिसिपलिटी २।।) कर वसूलती है उपनगरी से इस हरिजन-बस्ती तक पहुचन के लिए पटरिया पार करन के सिवा और कोई रास्ता नही है। ये रलव पटरिया सख्या म कोई छह होगी। न कोई सडक है न रोशनी का कोई इतजाम है न स्वच्छ जल की व्यवस्था है न मल आदि डालने क लिए कोई निश्चित स्थान है। बस्ती क घरा स दस गज की दूरी पर टट्टी फेंक दी जाती है। जानवरो की लाशें कई-कइ दिन पडी सडती रहती है। पास का स्थान लाशा को जलान या दफनान के काम म आता है और फी लाश १) दना पडता है। पिछल दस महीना मे इन शिकायतो का दूर करान

की कोशिश की जा रही है। अब तक सडक रोशनी टट्टी घरो की व्यवस्था हो चुकी है।

महारवाडी के लोग म्यूनिसिपलिटी में ही काम करते हैं। उन्हें अपनी झोपडियो के लिए जमीन खरीदनी पडी थी। म्यूनिसिपलिटी इन लोगो से सम्पत्ति के अनुपात में कर वसूल करती है जो किराये का ८ प्रतिशत होता है।

तीसरी बस्ती भगीवाडा टैक के तट पर बसी हुई है। यहा पीने के पानी का कोई इतजाम नही है। यहा के अधिकाश लोग म्यूनिसिपलिटी के ही महतर हैं। टैक के पडोस में एक कुआ खुदवाया गया था, पर उसका जल अस्वच्छ निकला और पीने के अयोग्य साबित हुआ। इसका कारण यह है कि आसपास की भूमि पर म्यूनिसिपलिटी की गाडिया शहर का कूडा-कचरा लाकर डाल जाती हैं। म्यूनिसिपलिटीवालो का कहना था कि जो नयी भूमि निकाली गई है वहा सब्जी मार्केट बनाया जाएगा। गत वर्ष यूनियन ने इस मामले को हाथ में लिया था। इस कारण म्यूनिसिपैलिटी इस बात पर राजी हो गई कि जिस भूमि पर झोपडिया हैं, वह जब झोपडीवालो की अपनी सम्पत्ति हो जाएगी तो एक नया कुआ खोदने पर विचार किया जाएगा। तब तक के लिए सवर्ण हिन्दुओ की ओर से भगियो को पानी दिया जाता रहेगा। यह शिकायत और इसी तरह की अन्य शिकायतो को लेकर यूनियन म्यूनिसिपैलिटी के अधिकारियो के साथ बातचीत में लगी हुई है और अधिकारी लोग भी इन शिकायतो पर ध्यान देने को राजी हो गये हैं। इस दिशा में म्यूनिसिपलिटी की लापरवाही का मुख्य कारण यह है कि यहा के निहित हितो में कशमकश चल रही है जिसके परिणामस्वरूप म्यूनिसिपलिटी इतनी बदनाम हो गई है कि सरकार ने उसे समाप्त करने की धमकी दी थी। म्यूनिसिपलिटी के वर्तमान चेयरमैन पर एक पेंशनयाफ्ता चपरासी ने वादा खिलाफी का मामला दायर कर रखा है। चेयरमैन काग्रेसवालो लीगियो और डेमोक्रेटिक स्वराज्य पार्टी के सदस्यो की खुशामद दरामद करके अपने पद पर बना हुआ है।

कुर्ला म्यूनिसिपल कर्मचारी सघ

यहा की म्यूनिसिपलिटी के अधिकाश महतर इस सघ के सदस्य हैं। सघ की रजिस्ट्री होना बाकी है। सात निर्वाचित सदस्यो की एक समिति को यह काम सौंपा गया है। इस सघ का चेयरमैन एक दुर्लभ हरिजन कार्यकर्ता है। बम्बई उपनगर जिला सत्याग्रह-समिति के निर्देश में वह सत्याग्रह करके जेल जा चुका है। म्यूनिसिपलिटी के महतरो को अपने प्राविडेंट फण्ड सम्बन्धी अधिकारो के प्रति सचेत किया जा रहा है। फिलहाल प्राविडेंट फण्ड का लाभ निम्नस्थ श्रेणी के कर्मचारियो को देना अधिकारियो की इच्छा पर निर्भर है।

के महकमे के अधिकारियों ने को ८००० हेक्टर पर ।।) की दर से एक नया कर वसूलना शुरू किया है। जिनके पास हल न हो और जो मेहनत-मजदूरी करते हों उन्हें ।) और =) के हिसाब से कर देना होगा। जो रसीदें दी गई उन पर लिखा था 'युद्ध-सम्बन्धी दानकोष के निमित्त'। ऐसी लगभग २०० रसीदें एकत्र की जा चुकी हैं और कोई २०० बयान लिये जा चुके हैं।

आदिवासी गाडीवान अपनी बैलगाड़ियों में काठ लादकर समुद्र-तट पर पहुंचाते हैं। उनसे २) की गाड़ी रजिस्ट्री के रूप में और १) युद्ध कोष में दान के रूप में वसूला जाता था। इससे इन लोगों को बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ा। ये लोग दिन भर में मुश्किल से ≡) कमा पाते हैं। सबको साहूकारों से ऋण लेना पड़ा। जो रसीदें दी गई उनमें केवल २) रजिस्ट्री और लाइसेंस फीस का उल्लेख था। जो अतिरिक्त १) लिया गया उसके लिए कोई रसीद नहीं दी गई। सार्वजनिक परिवहन विधान के अंतर्गत प्रमाणित रूपकों को इस रजिस्ट्री और लाइसेंस-कर से बरी रखा गया है भले ही वह अपनी आय बढ़ाने के हेतु अपनी बैलगाड़ी भाड़े पर चलाते रहें। रजिस्ट्री-कर केवल उन्हीं पर लागू है जिनकी आजीविका का एकमात्र साधन अपनी बैलगाड़ी भाड़े पर चलाना है।

इन मामलों को थाना और पूना के पुलिस-अफसरों के सामने ले जाया गया और जिला कलक्टर का ध्यान भी इस ओर आकृष्ट किया गया। परिणाम यह हुआ कि यह कर वसूली जिले भर में बन्द कर दी गई। जो रकम वसूली गई है उसकी वापसी पर सरकार गौर कर रही है। महात्माजी को इस मामले की पूरी जानकारी करा दी गई है।

राहत कार्य

शाहपुर तालुके के कसाराघाट के निकट सिरोना नाम के वन स्थित गांव में कोई १२० झोपड़ियां थी। इनमें हरिजन, आदिवासी, मुसलमान आदि लोग रहते थे। गत ३ फरवरी को सुबह के ३ बजे इन झोपड़ियों में आग लगी और पूरा गांव भस्म हो गया। कोई १००००) की क्षति हुई होगी। इस गांव का दौरा करने के बाद लोगों के कष्ट निवारण के हेतु बम्बई और उपनगरों में धन संग्रह किया गया और कोई २०० कपड़े बांटे गये। ४०) बर्तन भाड़े खरीदने के लिए दिये गये। अधिकारियों के पास भी पहुंच की गई और अन्न, वस्त्र और जंगल की लकड़ी का वितरण किया गया।

—प्रधान, थाना-कल्याण कर्मचारी संघ तथा
अवैतनिक मंत्री, आदिवासी सेवा मंडल,
गांधी आश्रम, थाना

१६

१६ माच १९४१

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारे १३ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

यह जानकर खुशी हुई कि 'हरिजन' फिर से निकल रहा है। उस घडी की आतुरता के साथ प्रतीक्षा कर रहा हू। हम सबको आध्यात्मिक सबल की बेहद जरूरत है।

हा, यदि मद्रास न्योता दें तो बापू अवश्य जायें। पर मैं बापू के इस कथन म पूर्णतया सहमत हू कि इस कान्फरेंस म कुछ होना-जाना नही है। पर कम-स कम इस बात का तो सतोष है ही कि मैन गत दिसम्बर मास मे वाइसराय को जो सुझाव दिया था वही सुझाव अब नरम दलवाल स्वतत्र रूप से पश कर रहे हैं। मरी समझ म फिलहाल समस्या का अन्य कोई हल दिखाई नही दे रहा है, पर जब बात यहा तक बढ चुकी है तो अधिकारी वग इस सुझाव की ओर ध्यान देगा इस बारे म मरा सशय ज्यो का-त्या है। पर हम कल्याण की ही कामना करनी चाहिए।

अब तुम्हारी भाषा म काम काज की बातें।

ठाकूभाई की आदिवासियो और हरिजनो के मध्य काय की रिपोट के बारे मे मरी सूचना यह है कि मैं जनवरी फरवरी और माच क लिए ३००) एक-साथ भिजवा रहा हू। बाद म प्रति मास १००) पहुचत रहेंग।

हरिजन-सेवक सघ की प्रबधकारिणी म तुम्हारा भाग लना जरूरी नही है।

सुशीलाबेन के लिए कार की बाबत मैं बजरग स बन्दोबस्त करने को कह रहा हू।

तुम्हारा यह कहना ठीक ही है कि इन समेलो स निर्लिप्त रहकर निबटा जा सक तो इसस अच्छी कोई बात नही है। निर्लिप्त रहकर अर्थात तटस्थ रहकर। मैं अभी उस स्थिति तक तो नही पहुच पाया हू पर तुम्हारा यह कहना सच है कि मैंने बुद्धि विवक की सहायता से इस रहस्य का उदघाटन कर लिया है।

बापू का मराठी अनुवाद तो शायद बर्वे कर रहे हैं न ?

रही उन तीन तरुणो की बात सो मुझ पूरी रिपोट भेजो। मामला कठिन अवश्य है पर मैं सब मिलो को लिखकर पता लगा रहा हू कि उनम स कुछ का

छपाया जा सकता है या नहीं।

'हरिजन' की प्रतीक्षा करता हुआ

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

२०

सेवाग्राम वर्धा
१२ मार्च १९४१

प्रिय श्री यग

वर्धा वापस लौटने पर मैंने गांधीजी से 'हरिजन' दुबारा निकालने के विषय पर हाल के पत्र व्यवहार को लेकर थोड़ी-बहुत बातचीत की थी। श्री श्रीनिवासन भी मौजूद थे और पत्र के पुनप्रकाशन पर जोर दे रहे थे। कुछ सोच विचार के बाद ही यह पत्र लिखा जा रहा है।

पत्र-व्यवहार मे तो 'हरिजन' के पुनप्रकाशन के विचार को प्रोत्साहन देने वाली सामग्री का अभाव-सा ही है पर मेरे और आपके बीच तथा सर रिचार्ड टोटेनहाम और श्री श्रीनिवासन के बीच गैर रस्मी बातचीत से पत्र निकालने के विचार को अवश्य बढ़ावा मिला। श्री श्रीनिवासन तथा स्थायी समिति के अनेक सदस्यों और पाठकों की भी यह एकान्त अभिलाषा रही कि पत्र निकाला जाए। गांधीजी के लिए उनकी इस अभिलाषा की उपेक्षा करना सम्भव नहीं है। अत वह इस नतीजे पर पहुचे हैं कि इतने अधिक आग्रह की उपेक्षा करना शिष्टता के तकाजे के खिलाफ होगा और अनौचित्यपूर्ण भी होगा। अतएव हमने पत्र आगामी २९ तारीख से निकालने का निर्णय किया है।

पर ऐसा करने से पहले मैं यह पुन स्पष्ट कर देना जरूरी समझता हूं कि गांधीजी और मैं सत्याग्रह आन्दोलन के साथ अविच्छिन्न रूप से सम्बद्ध हैं और 'हरिजन' का हमारे द्वारा सम्पादन उस सम्पर्क की छाप और रूप रंग से ओतप्रोत रहेगा। हा यह बात अवश्य है कि सम्पादन मे हमारे सामने एकमात्र यही उद्देश्य

रहेगा कि विश्वव्यापी नर सहार की इस वेला म अहिंसा की लौ जलाई जाये। इसलिए यदि आपको यह लगे कि हमारा हरिजन का पुनर्प्रकाशन न करना ही अच्छा रहेगा तो आपको एक तार भर भेजना है। मैं उसके गलत माने नही लगाऊगा न उसके बारे मे खुल्लमखुल्ला जवाब ही खोलूगा, क्योकि मैने पत्र निकालने के बारे मे अभी तक कोई सावजनिक घोषणा नही की है।

भवदीय
महादेव देसाई

२१

२३ माच, १९४१

प्रिय महादेवभाई

साथ म भेजा पत्र मेरी दिल्लीवाला मिल के एक कायकर्त्ता ने भेजा है। जहा तक मुझे मालम हुआ है वह आदमी शरारती है और म्व सत्याग्रहियो की टोली का सरदार बन बठा है। यह स्वय सत्याग्रह करने की क्षमता रखता है इस बार म मुझे शक है। खर वह तो आप लोगो के तय करने की बात है। मैंने उसे कहला भेजा है कि मैं मिल मे चरखा कनव के स्थान का काई प्रबन्ध नहा करा सकता। पर एसे आदमियो से निबटना तुम शायद ज्यादा अच्छी तरह जानते हो।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

२२

सेवाग्राम
२३-२-४१

प्रिय घनश्यामदासजी

पता नही आप दिल्ली में हैं या नहीं। अगाथा ने एक तार भेजकर बम्बई वाले प्रस्ताव पर बापू की प्रतिक्रिया जाननी चाही थी। बापू ने निम्नलिखित उत्तर भेजा है

बम्बई के सुझाव कांग्रेस को ग्राह्य होते प्रतीत नही होते। मैं खामोश हूं।

जासफ लेटन द्वारा लिखित एक बड़ी सुंदर पुस्तक देखने में आई है सोशल फिलासफीज इन कान्फ्लिक्ट (डी एप्लेटन-सेंचुरी कम्पनी न्यूयार्क)। इसे अवश्य पढ़िये और दो प्रतियां लीजिए एक मेरे लिए। मैंने वह अणे की मारफत दिल्ली असेम्बली लाइब्रेरी से उधार प्राप्त की थी। उसे पूरा पढ़े बगैर वापस करना पड़ा क्योंकि अणे दिल्ली से २६ को रवाना होनेवाले हैं, और लाइब्रेरी के नियम के अनुसार पुस्तकें दिल्ली से बाहर ले जाने की मुमानियत है। पुस्तक दिल्ली में प्राप्य है अथवा कलकत्ते या बम्बई में यह मैं नही जानता पर यदि कहीं भी न मिल सके तो पुस्तक न्यूयार्क से मंगाने लायक है।

रामेश्वरभाईजी की धर्मपत्नी श्रीमती शारदाबाई आजकल यहीं है। उन्होने कल बापू के साथ भोजन किया आज फिर साथ। उनके साथ गोपा भी है। पर यहा बेहद गर्मी है इसलिए मैं तो नही समझता कि वे यहा और अधिक टिकना पसन्द करेंगी। आज शाम को बम्बई लौट रही हैं।

सप्रेम
महादेव

२३

२६ मार्च १९४१

प्रिय महादेवभाई

तुमने जिस पुस्तक का बात कही है उसे प्राप्त करने की कोशिश करूंगा और एक प्रति तुम्हारे पास भेज दूंगा।

हरिजन सेवक संघ के निमित्त तुम्हारे १०००) के चेक का हार्दिक स्वागत।

मेरी समझ में तो तुम्हारा पहली बैठक में आना कोई बहुत जरूरी नहीं था। पर दूसरी बैठक में मैं तुम्हारी उपस्थिति जरूर चाहूंगा। हां, तुम इस अवसर पर पांच हजार का चेक भेज दो तो बात दूसरी है। पर तुम्हारी उपस्थिति का मूल्य उससे भी बढ़कर सिद्ध होगा।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

२४

गोपनीय

गृह विभाग
नयी दिल्ली
२७ मार्च '४१

प्रिय श्री महादेव देसाई,

श्री डेसमंड यंग ने 'हरिजन' के प्रकाशन के बारे में उनके व आपके बीच हुआ पत्र-व्यवहार मुझे दिखाया है। मैं समझता हूं कि इस बारे में भारत-सरकार के रुख का स्पष्टीकरण कर दिया जाय तो सुविधाजनक रहेगा। पहली बात तो यह है कि पत्र प्रकाशन के बारे में सरकार को कुछ नहीं कहना है। पत्र का पुनर्प्रकाशन हो या न हो, इसका निर्णय स्वयं मिस्टर गांधी ही करेंगे, उस निर्णय को किसी भी रूप में प्रभावित करने से सरकार का कोई सरोकार नहीं है। दूसरी बात यह है कि समाचारों और टिप्पणियों के बारे में भारत रक्षा कानून ने जो पाबंदियां लगाई हैं, उनसे आप भली भांति परिचित हैं, और यदि मैं अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से यह कहूं कि इन पाबंदियों के लागू होने के बारे में किसी प्रकार के संकेत की गुंजाइश नहीं है, तो आप मेरे कथन के गलत मानी नहीं लगायेंगे। साथ ही, इस पत्र-व्यवहार से यह नतीजा निकालकर मुझे प्रसन्नता हुई है कि यदि मिस्टर गांधी पत्र पुनः निकालने का फैसला करें, तो ऐसा वह इसी आशा के साथ करेंगे कि उससे सरकार को सहायता मिलेगी, परेशानी नहीं होगी।

भवदीय,
रिचार्ड टोटेनहाम

२७

३१ मार्च १९४१

प्रिय महादेवभाई

श्री डेस्मंड यंग के पत्र और सर रिजाड टोटेनहाम के पत्र में मुझे तो कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं देता। सम्भवत बापू ने अन्तर्दृष्टि से जान लिया होगा कि हरिजन न निकालना ही बुद्धिमानी का काम होगा अस्तु जो होता है अच्छे के लिए ही होता है भले ही कुछ लोग इस दार्शनिक तथ्य में आस्था न रखते हो।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

२८

कलकत्ता
१७ ४ १९४१

प्रिय महादेवभाई

साथ भेजे पत्र का लेखक राम अग्रवाल मेरे यहा काम करता है। वह चाहता है कि उसका पत्र मेरी सिफारिश के साथ बापू के पास भेज दिया जाए। आदमी ईमानदार है बुद्धि का तीक्ष्ण भले ही न हो पर सदभावना और श्रद्धा से परिपूर्ण है।

बापू के लिए इसे सेवाग्राम मे खपाना कहा तक सम्भव होगा सो तो मैं नहीं जानता पर यदि इसे वहा लिया गया तो यह भार जैसा कदापि सिद्ध नहीं होगा। यदि वहा इसके रहने योग्य स्थान मिल सके तो कुछ दिन इसे वहा ठहरने दिया जाये इसमें इसका मंगल होगा।

उनमें कुछ उत्तर हो मेरे पास भेज दोगे तो मैं वह राम के पास भेज दूंगा। प्रसंगवश इतना और कह दूं कि स्वर्गीय गणेशीलाल ने करीब एक महीना पहले आबोहर (पंजाब) में सत्याग्रह किया था जिसमें उन्हें ९ मास का कारावास-दण्ड मिला था।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

२९

सेवाग्राम

२०-८-४१

प्रिय घनश्यामदासजी,

राम अग्रवाल के बारे में आपका पत्र मिला। मैं उन्हें जानता हूं। यह पिछले कई वर्षों से हमें लिखते आ रहे हैं और बीच बीच में थोड़ी-बहुत जानकारी भी भेजते रहते हैं। वह मेरठ के मध्य में आ सकते हैं। यदि आप उन्हें एक हफ्ते पहले मुझे लिख दें तो अच्छा रहेगा।

उस 'हिन्दू' वाले लेख के उद्गम-स्थान के बारे में मेरा अनुमान ठीक उतरा। ऐसा मालूम पड़ता है कि हमारे मित्रों का यह इरादा जरूर था कि जब तक कांग्रेस वाले स्वातन्त्र्य के लिए लड़ाई जारी रखेंगे, बम्बईवाले प्रस्ताव पर विचार नहीं किया जायगा और बम्बई-कांफ्रेंस के कतिपय प्रमुख व्यक्ति इस सुझाव को लेकर बाहर के कुछ कांग्रेसियों के पास पहुंचे भी थे। इस पत्र के पहुंचने से पहले ही आप टाइम्स आफ इण्डिया वाले लेख को बापू का प्रत्युत्तर पढ़ चुकेंगे। उससे उन लोगों पर, जो इस दिशा में प्रयत्नशील हैं, उनका जोश ठण्डा पड़ जायगा। इन लोगों ने यह सारा काम निहायत ही भद्दे ढंग से किया, इसलिए यदि इन्हें मुंह की खानी पड़े तो उन्हीं का दोष है।

दुर्गा धीरे-धीरे स्वस्थ होती जा रही है। उसके पूर्ण स्वस्थ होने में कम-से-कम एक महीना लग देंगे। सारा समाज दुःख में डूबा हुआ है, हर किसी को अपने हिस्से का दुःख उठाना ही पड़ता है।

सप्रेम

महादेव

३०

सवाग्राम
३ ५ ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

दुर्गा की बीमारी का इतिहास सक्षेप म बताता हू

गत ४ अप्रल को उसे ज्वर चढा। साथ ही जोडा म बेहद दद होन लगा। इसके बाद जोडा म सूजन आ गई। दो दिन क भीतर वह अपाहिज हो गई और शय्या तक म हाथ पाव हिलान म असमथ हो गई। पद्रह दिन बेहद पीडा रही। बुखार १०१ से ऊपर नही गया। पद्रहवें दिन वही जाकर बुखार नीचे आया। तेरह दिन पूरा उपवास करती रही। कोई दवा दारू नही हुई। उसके बाद उसे सलिसिटेट की कोई ओषधि देना शुरू किया गया। अभी तो वही ओषधि दी जा रही है। प्रतिदिन बाष्प स्नान कराया गया और नमक के पानी से पेट साफ रखा गया। १२ से १५ औंस सतरे के रस के अलावा अय कोई पौष्टिक पदाथ नही दिया गया। पिछले दो दिनो स उबाली हुई मब्जी दी जा रही है।

जोडा का दद प्राय गायब हो गया है पर दाहिनी टाग की मास पशिया म दद बराबर बना रहा। बिछौन पर थोडा बहुत उठ-बैठ सकती है पर खडी नही हो सकती। अब बुखार बिलकुल नही है नाडी कल तक ८८ थी आज ७४ पर आ गई है। नीद खूब आती है।

बम्बई का एक डाक्टर एक अय रोगी को देखने आया था। उसका कहना है कि इस गठिया क बुखार का एकमात्र कारण दाँतो की खराबी है दाँतो का इलाज होना चाहिए आवश्यक हो तो उह निकलवा दना चाहिए। पर दात अभी मजबूत हैं कोई भी दात नही हिल रहा है। उसका कहना है कि बुखार उतरने के बाद भी तीन सप्ताह तक सेलिसिलेट आषधि देना जारी रखना चाहिए। इसलिए वही इलाज जारी है।

यह पत्र विधान बाबू का दिखाकर उनकी सलाह मागेंगे तो कृतज्ञ होऊगा। जिस जाघ के रग पुट्ठा म पीडा है उस पर बेलाडोना लगाया जा रहा है। बाष्प स्नान स पहले शरीर की मालिश भी कराई जाती ह।

ब्रिटन और ईराक की मत्री भग होन क प्रसग पर दूसरा तारीख क हिंदू' म एक बडा सुदर लेख निकला है। अवश्य पढिये।

आपका
महादेव

३१

कलकत्ता
३ मई १९४१

प्रिय महादवभाई

तुमने मेरा लेख पढा था क्या ? बताओ, कसा रहा और उसन तुम पर क्या प्रभाव छोडा ?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादवभाई दसाई
सेवाग्राम

३२

सवाग्राम
वर्धा, सी० पी०
५ मई, १९४१

भाई घनश्यामदास

हि० (हिंदुस्तान) की आर्थिक स्थिति के बार म तुम्हारा लख मैंने आज खत्म किया। बहुत अच्छा लगा। उसका न्याय होने के लिय उसका सार आरम्भ भी होना ही चाहिय। एस लख और भी चाहिय और उन्ह चोपानिय म छपान चाहिये। उसका अनुवाद होना चाहिय।

बिहार जाने की आवश्यक्ता सिद्ध हान पर जान की मेरी पूण तयारी समझा।

शुस्तर ई का मैं दुबारा पत्र गया। यहा से कोई सूचना की आवश्यक्ता मैं नहीं महसूस करता। हम अपना घर सभाले और साफ करें, समय हमका मदद द रहा है। उन लोगो का आगे बढना ही होगा। कब्जा हमारे हाथ मे आना ही चाहिये। इतना तो करें कि बोलने लिखने दें और सब कदियो को छाड दें। कम्युनिस्टो को भी बगर ट्रायल के नही रख सकते हैं।

बापु क आशीर्वाद

३३

सेवाग्राम
२० मई १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी

इसके साथ रामनरेशजी त्रिपाठी का एक पत्र भेज रहा हूं। मार्तण्ड और वियोगी हरिजी को मेरी सूचना थी त्रिपाठीजी के प्रेस का और पुस्तकों का एस्टिमेट तैयार करें—वह तो प्रेस के साथ सब चीज दे देना चाहते हैं। अब वे सब देख आये और एस्टिमेट बना आये हैं ऐसा मालूम होता है। प्रेस का कब्जा ले लिया जाय तो उन्हें कुछ मदद दी जा सकती है। आपको क्या लगता है? मैं समझता हूं कि इस अव्यवहारशील ब्राह्मण को कुछ सहारा दे सकें तो अच्छा होगा।

इस अमृत बाजार पत्रिका के कारस्पांडेंट (संवाददाता) के गम का तो कोई आधार नहीं दीखता है। यहां कोई पत्र नहीं आया है।

मुझे फिर अहमदाबाद जाना पड़ रहा है। शायद आप आवेंगे तब मैं यहां न भी होऊं। ३० ता० को प्रेस कमिटी के लिये शिमला जाना पड़ेगा। तीसरी चौथी तक वापिस लौटूंगा। आप तब आवें तो?

आपका
महादेव

३४

कलकत्ता
२२ मई १९४१

प्रिय महादेवभाई

वियोगी हरिजी और मार्तण्ड ने अपना रिपोर्ट दे दी है। उनका कहना है कि विशुद्ध व्यावसायिक दृष्टि से दस १०,०००) से अधिक देना में असमर्थ हूं। पर रामनरेशजी २५,०००) मांगते हैं। मैं तुमसे इस बारे में बिलकुल सहमत हूं कि उनकी सहायतार्थ कुछ न-कुछ करना आवश्यक है। मैंने रामनरेशजी को लिख दिया है कि मैं निकट भविष्य में उनसे आने को कहूंगा। उस अवसर पर वियोगीजी और

३३

सेवाग्राम
२० मई १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी

इसके साथ रामनरेशजी त्रिपाठी का एक पत्र भेज रहा हूं। मार्तण्ड और वियोगी हरिजी को मेरी सूचना थी त्रिपाठीजी के प्रेस का और पुस्तकों का एस्टिमेट तयार करें—वह तो प्रेस के साथ सब चीज दे देना चाहते हैं। अब वे सब देख आये और एस्टिमेट बना आये हैं ऐसा मालूम होता है। प्रेस का कब्जा ले लिया जाय तो उन्हें कुछ मदद दी जा सकती है। आपको क्या लगता है? मैं समझता हूं कि इस अव्यवहारशील ब्राह्मण को कुछ सहारा दे सकें तो अच्छा होगा।

इस अमृत बाजार पत्रिका के कारस्पाडेंट (संवाददाता) के गम का तो कोई आधार नहीं दीखता है। यहां कोई पत्र नहीं आया है।

मुझे फिर अहमदाबाद जाना पड रहा है। शायद आप आवेंगे तब मैं यहां न भी होऊं। ३० ता० को प्रेस कमिटी के लिये शिमला जाना पडेगा। तीसरी चौथी तक वापिस लौटूंगा। आप तब आवेंगे तो?

आपका
महादेव

३४

कलकत्ता
२२ मई १९४१

प्रिय महादेवभाई

वियोगी हरिजी और मार्तण्ड ने अपनी रिपोर्ट दे दी है। उनका कहना है कि विशुद्ध व्यावसायिक दृष्टि से वे १०,०००) से अधिक देने में असमर्थ हैं। पर रामनरेशजी २५,०००) मांगते हैं। मैं तुमसे इस बारे में बिलकुल सहमत हूं कि उनकी सहायतार्थ कुछ न कुछ करना आवश्यक है। मैंने रामनरेशजी को लिख दिया है कि मैं निकट भविष्य में उनसे आने को कहूंगा। उस अवसर पर वियोगीजी और

ઇસકા અનુવાદ
હોના ચાહિયે.

બિહાર પ્રાન્તકી
આવશ્યકતા કે લિયે
હોમ રૂલ માંગની
બડી પૂરી તૈયારી
[illegible]

રચનાત્મક કામમેં
રુકાવટ પડ ગયા,
પહલી કોઈ રચના
કી આવશ્યકતા,
સો નહિ પડેગા

સેવાગ્રામ
વર્ધા સી પી

SEVAGRAM,
WARDHA, C P

سیواگرام
وردها-سی-پی

[illegible]

मार्तण्ड को भी बुला लिया जायगा। तब देखूगा कि क्या कुछ करना सभव है।

आज सुबह रामेश्वरजी ने खबर दी कि तुम बबई म हो। आशा है कि दुर्गा बन का इलाज बबइ म सुचारु रूप से हो सकेगा। वास्तव म, तुम्हें उन्ह वहा बहुत पहले ले जाना चाहिए था। पर शायद तुम डा० दास का इलाज आजमाकर देखना चाह रहे थे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

३५

कलकत्ता
२० मई १९४१

पूज्य बापू

साथ म एक पत्र भेज रहा हू, उसे आप ध्यान से पढ जायें। इस पत्र को पाने वाले बम्बइ स्थित श्रीनिवास मिल के मालिक हैं। पत्र लिखनेवाला उनका भाई है। श्रीनिवास मिल के मालिक का नाम श्री गजाधरजी सोमानी है जो अक्सर बम्बई म रहा करते हैं। आजकल कार्यवश यहा आए हुए है। उन्हा को यह अग्रेजी का पत्र उनके बम्बई निवासी भाई ने लिखा है। अग्रेजी तो ऐसी वैसी है पर इसका सार आप खूब समझ लेंगे। जो बातें लिखी हैं वे सत्य हैं तो बडी भयकर बात है। और सच नही है ऐसा मानने का कोई कारण नही है। गजाधर सोमानी और उनके भाई लोग महज व्यापारी हैं। उन्ह राजनीति म या हिन्दू सभा इत्यादि म कोइ खास दिलचस्पी नही है। इसलिए कोई बात बनाकर लिखी गइ है ऐसा मैं नही मानता। इस तरह की कुछ चीज अखबार म भी गइ है। पर यह जन्मभूमि की प्रति देखने से पता लगेगा।

अब इसम क्या करना चाहिए सो आप सोचें। इन लोगो का अखबारो म अपना नाम निकलवाना तो नापसन्द है। पर अपने जान-पहचान के लोगो से इन्होंने यह बातें कही हैं और इस पत्र से पता चलता है कि यह बात बम्बई म फैली भी है।

मुसलमान लोग इस तरह षडयन्त्र करते है यह तो भयानक चीज है ही, पर पुलिस कमिश्नर भी क्या इस चीज म शरीक हो सकता है ? दिल तो यह मानना नही चाहता लम्ली तो निश्चय ही ऐसी चीज म शरीक नही हो सकता।

वाइसराय और लम्ली को क्यो न लिखा जाये ? आप सोचें। आवश्यक चीज समझदार आदमी के हाथ भेज रहा हू।

विनीत
घनश्यामदास

पुनश्च

कहने को यह कहा जा सकता है कि षडयन्त्र करनेवाला मुसलमान नही कोई बदमाश था—शायद एक हिन्दू—जो इस तरह सनसनीखेज टेलिफोन करके इस्माइल नाम के व्यक्ति को फसाना चाहता था। या फिर मुसलमानो का षडयन्त्र तो था पर *पुलिस कमिश्नर का नाम लेकर आततायियो को निर्भय कर देना* चाहता था। जो हो मुझ तो यह पत्र पढकर काफी दुख हुआ। हालाकि किसी के षडयन्त्र स हम तबाह हो जायेंगे ऐसा मैं नही मानता। हमे तो भगवान सुरक्षित रखेगा ही एसी श्रद्धा है।

सलग्न पत्र

श्रीनिवास काटन मिल्स लिमिटेड
डिलस्नी रोड
पा० बाक्स न० १३
बम्बई
२७ मई १९४१

प्रिय भाईजी

आपके पास एक सविस्तार पत्र भेज चुका हू। आशा है आपको मिला होगा। आपका दूसरा पत्र मिल गया था पर हम लोग आपके विस्तृत पत्र का बाट जोह रहे थ। आशा है वसा पत्र कल तक आ जायगा।

यहा दगा चल रहा है और अभी नगर की स्थिति सामान्य नही हुई है। एसा लगता है कि या तो स्थिति पर काबू पाने म कोताही की गई या फिर स्वय अधिकारी लोग ही दगा खत्म होते देखना नही चाहते हैं। वास्तव म इस दूसरी बात की ही अधिक सम्भावना है। हिन्दू मुसलमान दोनो ही मरे हैं पर हिंदुओ

का अधिक प्राण हानि हुई है। पता म पूरी खबरे नही छपती हैं। उपद्रव ग्रस्त इलाका म छुट पुट हमले जारी है। आपके पास 'ज मभूमि की एक प्रति भेज रहा हू जिसम आपको एक विचित्र खबर छपी मिलेगी। यह घटना कल रात हुई। टेलिफान की घटी बजी। हमारे वासुदव न टेलिफान उठा लिया। गलत लाइन जुड गई थी। जा आदमी बाल रहा था, वह इस्माइल नाम के किसी आदमी स बात करना चाहता था। वह हि दुस्तानी मे बात कर रहा था। वासुदेव बराबर हा, हा, कहता रहा। उस आदमी ने सारी बात कह सुनाई। बीच बीच म उस शक हा जाता और वह पूछता, 'आप इस्माइल है न ?' उसन बताया कि कोई ३०० ४०० एक मस्जिद मे जमा है और सुबह ८॥ ६ बजे एक साथ सि धी गली पर हमला बोलेंगे। उसन कहा आप उसस पहले ही यहा आ जाइय। हम सबके टुकडे-टुकडे कर डालेंगे।'

उसने जो सबसे विचित्र बात बताई वह यह थी कि उसने पुलिस कमिश्नर स भी बात कर ली है। हम शुरु म ता विश्वास नही हुआ पर बाद म टेलिफोन की किताब उठाकर देखी तो इस्माइल के नाम स ४१६७६ का टलिफान नम्बर दज मिला। हमन इस मामले का गम्भीर समझकर सभी प्रतिष्ठित लागा का सूचना दना अपना कत्तव्य समझा। सबसे पहल हमन राजा नारायणलालजी पित्ती का फोन किया। उस समय रात के पौने ग्यारह बज थ। उ हे जगाया गया और सारी बात बताई गई।

इसके बाद हमने अपन कुछ मुल्तानी व्यापारिया को भी फोन किया। बात चीत के दौरान पता चला कि उस आदमी न जिस स्थान का नाम लिया था वह मुहम्मद अली रोड के पास पडता है। हि दू महासभा और आयसमाज को भी खबर दी गई। उ हाने तुरत आवश्यक कायवाही की, और पुलिस का सूचित कर दिया गया। पुलिस न तुरत हमस इसकी पुष्टि कराई। मेरा खयाल है कि यह खबर फूट निकलने के कारण गुण्डे कुछ नही कर सके, नही तो न जान कितने आदमी प्राणा स हाथ धा बठत। इन हिन्दू सस्थाओ ने समय रहते पूरी सतकता स काम लिया। यह खबर सारे शहर म बिजली की तरह फल गई है और लोग आतकित है। यह बिलकुल स्पष्ट ह कि यह काम गुण्डो क सगठित गिरोह का है। इन गुण्डा की पीठ पर प्रभावशाली तत्त्व हैं, जा छिप छिप काम कर रह ह। हम इस घटना की बात महात्माजी को लिख भेजना चाहते थ पर पहले हमन आपकी सलाह लना उचित समझा। क्या आप इस मामल का बाबू जी० डी० बिडला तक नही भेज सकते हैं ? वह ऊच-स ऊचे अधिकारिया तक इस मामल का पहुचा देंग। लागो की समझ म यह बात नही आ रहा है कि पुलिस एस सगठित षडयत्र किस

मार हाल देती है और पुलिस को इसकी खबर क्या नहीं लगती है ! हम तो यह र सयोगवश मालूम हो गया था।

आप बागडओ से भी उदारतापूर्वक धन देने को कहें तो ठीक रहेगा, जिससे न्दुओ की रक्षा का प्रबध किया जा सके। ऐसे अवसरो पर ही निजी कोष का रयोग होता है।

हम लोग पूर्णतया सुरक्षित हैं। आप हमारे बारे में बिलकुल फिक्र मत करिये। ने अपनी सुरक्षा का पूरा इतजाम कर रखा है। गद्दी में एक गोरखा है ही। र चौकीदार हमारे बगले पर तैनात है।

और अधिक अगली चिट्ठी मे लिखूगा। आपके तुरत उत्तर की आशा है।

सप्रेम
बी० गोमानी

३६

सेवाग्राम,
वर्धा सी० पी०
३१ मई १९४१

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा पत्र और साथ का मैं पढ गया हू। ऐसी बातो का हम ख्याल तक न करें। मैं तो उस पर कुछ भी नहि करना चाहता हू। हा, अत में तो भगवान हान रेगा वही होगा। तो हम चिन्ता क्या करें ? जो सावधानी रखनी चाहिये रखें, डर छोड। मुझे गुरखा रखने से सतोष नहि होता। उनको रखें लेकिन सब डर छोडें। और हिंसा से या अहिंसा से रक्षा करना सीखें परवश रहकर हम मर जायेंगे, लोग डरपोक हैं इसीलिये ऐसी बातो से डर जाते हैं और डरानेवाले तो जगत में पड़े हि है। इस मौके पर तुमको मेरी यह सलाह है कि हर प्रकार का डर छोड और दूसरो को डर छोडने को कहा जाय। ऐसा हुल्लड चलते ही रहेंगे या मिट सकते है अगर हिंदु सच्चा तरह बहादुर बने ऐसी बहादुरी एक दो दिन मे नहीं आ सकता है ऐसा आपत्ति को समझकर उसका सामना कर सकें तो हम सुरक्षित बन सकते है। हमारे लोग नीति भी छोडते है। वह मुझे चुभता है कमजोर नीति

कसी रखें।

महादेव दिल्ली पहुचेगा।

बापु के आशीर्वाद

३७

कलकत्ता
२ जून १९४१

पूज्य बापू

आपका पत्र मिला। मैंने आपको जो पत्र भेजा था उसमे मुसलमानो के षड यत्र का आभास था और उसमे सरकार की अवहेलना झलकती थी यह चौंकाने वाली बात थी। क्या सरकारी अफसर इतने गिर सकते हैं? ऐसा मान लेना भी मुझे तो पीडा देता है। शायद आप इस सम्बन्ध मे लिखा पढ़ी करेंगे, ऐसा भी माना था। क्योंकि उस पत्र मे लिखी बाते सच्ची हो तो मनुष्यता का काफी ह्रास हो गया है ऐसा मानकर सतोष करना चाहिए। पर आप पर इसका कोई असर नही पडा। क्या इसलिए कि आपका हमारे कर्त्तव्य को छोडकर और किसी चीज पर समय गवाना भी बेकार लगता है?

यहा खाकसार खुलेआम कवायद करते हैं हालांकि कानूनन यह हिन्दू-मुसलमान दोनो के लिए मना है। पर सरकार आख मूदकर बैठी है। एक बात आपने लिखी है इसलिए लिख देता हू। यहा के हिन्दू मारवाडी इत्यादि कोई भयभीत नही हैं। न कोई यहा से दगा के डर के मारे मोहल्ला छोडकर भागते है। सब सावधान है। आप ऐसा सोचते हो कि हम लोग यहा भयभीत है तो यह मन से निकाल दें। यो सबके सिर पर भगवान है जो सरक्षण देता है। पर जब बम्बई मे पहला दगा एक महीने पहले हुआ, तभी यहा कुछ दगे की सम्भावना हो गई थी। पु० कमिश्नर ने काफी डटकर काम किया, और इसलिए गुण्डो ने चुप्पी साधी। पर तभी यह पता लगा कि लोग न तो भयभीत हैं न असावधान हैं। पहले मैंने आपको नही लिखा। पर इस कठिन समय मे आपको यह पढकर शायद सतोष हो इसलिए लिख दिया है। ईश्वर ने चाहा तो यहा बड़ बाजार मे अपनी रक्षा करते हुए लोग अपना नतिक पतन भी नही होने देंगे। ऐसी आशा रखनी चाहिए। बाकी भगवान मालिक हैं।

विनीत,
घनश्याम

३८

सेवाग्राम
वर्धा सी० पी०
४ जून १९४१

भाई घनश्यामदास

मेरे मन पर उस पत्र का कोई असर नहीं पड़ा क्योंकि मुझको उसमें कोई नया अनुभव नहीं था। मैं उस बारे में कुछ लिखना भी तो एक मौका और जूठ बनाने का मैं उनको देता और फायदा कुछ नहि। सिद्धात तो है हि कि अपना कर्त्तव्य को छोड़कर हम और झंझट में न पड़े लेकिन मेरी अनिच्छा के साथ सिद्धांत का कोई सम्बन्ध नहीं था।

कलकत्ते में कुछ भयभीतता नहि है सुनकर मुझे आनन्द होता है। यह अभय के पीछे अगर प्रतिकार करने में मर्यादा है तो बहुत संतोषजनक बात है। हुल्लड़ हि तो शायद बेढंगी दोनों में एक भी मर्यादा के बाहर न जाय तो अच्छा होगा। अन्यथा इसका कल्याण नहीं हो सकता है। आज से हवा बदली है ठण्डा वायु शुरू हुआ है।

बापु के आशीर्वाद

३९

सेवाग्राम
६ जून १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके लेख के बारे में बापू ने लिखा है उसमें अधिक मैं क्या कहूं? आपका सब-कुछ अभ्यासपूर्ण तो रहता ही है। इसको हिन्दी में भी देना चाहिए। मैं सर्वोदय में हिन्दी में देने के लिए सम्पादक को कह रहा हूं।

बाकी दो चीज के बारे में बापू ने खुद लिखकर दिया है वही भेज रहा हूं। मैं समझता हूं कि अगरचे बापू कहते हैं कि आन्टिर को कुछ नहीं भेजा जाय। उनके पत्र के अंत में कुछ सूचना भी अन्तर्गत है। मैं समझता हूं कि इस मतलब

का आप कुछ भेजें

गतिरोध को दूर करने के निमित्त सरकार को सब सत्याग्रहियों और सिक्योरिटी कैदियों को रिहा कर देना चाहिए, और वाक् स्वातंत्र्य प्रदान करना चाहिए। जब तक यह प्रारम्भिक कारवाई नहीं की जायगी गांधी की सदभावना किसी भी ट्रेन के लिए अप्राप्य रहेगी। गांधी पर स्वतंत्रता का दुरुपयोग न करने का भरोसा रखा जा सकता है।'

इतना भेजने में क्या हर्ज है? देखें उसका रिऐक्शन (प्रतिक्रिया) क्या होता है?

आपका
महादेव

पुनश्च

मैं ७ से १० तक अहमदाबाद हूंगा। अंबालाल के यहां टेलिफोन करना हो तो कर सकोगे।

४०

कलकत्ता
२८ जून १९४१

प्रिय महादेवभाई

सर वदूम स्टीवेंस पूर्वी अंचल की सप्लाई-कौंसिल में आस्ट्रेलियन सरकार का प्रतिनिधित्व करते हैं। वह आस्ट्रेलिया के एक प्रांत में ८ साल तक प्रधान मंत्री रह चुके हैं। इससे पहले कई साल तक अर्थ मंत्री रह चुके थे। इनके साथ कलकत्ता में दो बार सम्पर्क हुआ। इनकी स्पष्टवादिता और कई मामलों में इनके उदार दृष्टिकोण से मैं प्रभावित हुआ हूं।

सर वदूम बापू से भेंट करने की इच्छा रखते हैं। अब इनका वर्धा जाने का विचार होगा मुझे लिखेंगे। मैं तुम्हें यह पत्र इसलिए लिख रहा हूं कि जब इनके वर्धा जाने की तारीख निश्चित हो जायेगी तो मैं तुम्हें सूचना दे दूंगा। बापू से इनकी भेंट के समय का प्रबंध करने की कृपा करना। इनके अलावा इन्हें कहां ठहराओगे? जमनालालजी की जगह तो इनके लिए शायद उपयुक्त नहीं होगी। तो फिर या तो सेवाग्राम या सर्किट हाउस। पर तुम खुद ही ठीक लगे कि क्या

करना ठीक रहेगा।

मैं खुद कृष्ण के विवाह के बाद वर्धा आऊंगा। विवाह ३ जुलाई को है।

हरिजन सेवक संघ की प्रबंधकारिणी की बैठक में भाग लेने दिल्ली आओगे ही पर तुम्हारे वर्धा पर काम का इतना भार है कि तुम्हारे आने पर जोर नहीं दे सकता। सुविधा हो तो आ जाना।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

४१

सेवाग्राम
२२ जुलाई १९४१

भाई घनश्यामदास,

बापू अभी पूरी की दो तीन जगह हकीकत लाए हैं। अभिप्राय जो हानि नहिं पहुंचती है निशानी की है।

बछड़ा के बारे में जो दलील की है वह कर सकते हैं लेकिन उसमें मौलिक दोष पाता हूं। रावणादि के वध के साथ यह वध किसी प्रकार मिलता नहीं है। बछड़े के वध में मेरा कुछ स्वार्थ नहीं था केवल दुःख मुक्त करना हि कारण था। रावणादि के वध में तो मौलिक स्वार्थ था पृथ्वी पर भार था उसे हलका करना था उसका संहारक साक्षात रामरूपी ईश्वर था यहां तो संहारक कोई काल्पनिक अवतार न था। मेरा तो कथन यह है कि मेरी हालत में सब कोई ऐसा कर सकते हैं। अंबालाल ने ४० कुत्ता को मेरी प्रेरणा या प्रोत्साहन से मारा। इसमें मौलिक कल्याण था सही, लेकिन इसमें और रावणादि के वध में बड़ा अन्तर है और मैंने तो इन चीजों का अलग अर्थ किया है। उसकी चर्चा यहां आवश्यक थी ज्यादा और कोई समय—आवश्यक समझा जाय तो। भाषा मधुर है कोई जगह दलील की पुनरावृत्ति हो गई है यह काम प्रूफ सुधार में हो सकता था। उससे भाषा के प्रवाह में कुछ क्षति नहीं आती। शायद दूसरे तो इस पुनरावृत्ति को देख भी नहीं सके होंगे।

अब तो तबीयत अच्छी होगी।

बापू के आशीर्वाद

४२

२७ ७ १९४१

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा समय नष्ट अवश्य होगा पर मैं तुमसे ये पत्र पढ़ने का आग्रह किये बिना नहीं रह सकता। मैं ७०००) देने को तयार हूं और यदि सस्ता साहित्य-मण्डल को रुपये की जरूरत हो तो उसे ऋण भी दे सकता हू। पर इस सौदे की तफसील में जाना मेरे लिए कठिन है। त्रिपाठी ने जो शर्तें लगाई हैं वे न मार्तण्ड को अच्छी लगीं न हरिजी को ही।

आजकल देवदास भी यहीं हैं। जिस तरह चाहो मामले का निबटारा कर लेना और अंतिम निर्देश देवदास के मारफत मार्तण्ड के पास भेज देना। उसकी नकल मेरे पास भी भेज देना। एक कहावत है—'कोयले की दलाली में हाथ भी काले मुह भी काला।' ऐसा लगता है कि रामनरेश की सौदेबाजी कोयले की दलाली से कम नहीं है और उसकी कालौंछ ने सबके हाथ काले कर रखे हैं —हाथ क्या, दिमाग तक। ऐसा मालूम पड़ता है कि त्रिपाठी जिस जिसके सम्पर्क में आये उनकी उनके बारे में बुरी धारणा ही बनी अच्छी नहीं।

सप्रेम

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

४३

२८ जुलाई, १९४१

प्रिय महादेवभाई

रामनरेश त्रिपाठी के सौदे के बारे में कोई न कोई फैसला तुरंत हो जाना चाहिए। मुझे क्या कुछ करना है वह भी मुझे लिख भेजो। मेरी समझ में सबसे उत्तम यही रहेगा कि मैं स्वयं उन्हें ७०००) दे दूं तथा शेष १३ ००० के लिए वह मार्तण्ड और हिन्दुस्तान टाइम्स से जिस रूप में ठीक समझें तय करें।

सप्रेम,

घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई

बम्बई

४४

१८४१

प्रिय महादेवभाई

साथ भेजा पत्र अपनी कहानी खुद ही कह सुनायेगा। सच कह दूं तो मुझे यह सब बिलकुल अच्छा नही लगा। मैं पिछले दो वर्षों से इन बाबाजी के बारे में संदेह करता आ रहा हूं। इसका कोई वैध कारण नही बताया जा सकता, पर मैंने इनके कार्य में मदद देना काफी दिनो से बंद कर रखा है क्योंकि उनकी कार्य विधि और कार्य क्षेत्र मुझे उपयोगिता से सर्वथा शून्य लगते हैं। पर यह जो-कुछ हुआ है उसकी तो मैंने कल्पना तक नही की थी।

मैंने तो हनुमानप्रसादजी को उत्तर में लिख भेजा है कि जब तक मुझे पूरा ब्योरा नही मिलेगा तो मैं कुछ नही करना चाहूंगा। इसके अलावा उन्हें खुद भी मालूम रहना चाहिए था कि मेरे लिए कुछ अधिक करना सम्भव नही है। संयुक्त प्रांत के उच्च अधिकारियो पर मेरा क्या प्रभाव हो सकता है ? मुझे तो दाल में कुछ काला मालूम होता है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

४५

६ अगस्त १९४१

प्रिय महादेवभाई

हनुमानप्रसादजी का यह दूसरा पत्र है। अब सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। पर मैं यह नही समझ पा रहा हूं कि क्या किया जा सकता है। कृपा करके दोनो पत्र बापू के सामने रख दो और उनसे पूछो कि मुझे हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा अन्य लोगों को क्या सलाह देनी चाहिए।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बम्बई

४६

जमत निवास
मसूरी
१२ सितम्बर १६४१

प्रिय महादेवभाइ

पता नही इस समय तुम कहा हो पर यह समझकर कि तुम वर्धा लौट आय होग, मैं यह पत्र तुम्हार वर्धा के पते पर भेज रहा हू।

मैं यहा वायु परिवतन के लिए आया हू। खासी तो दिल्ली म ही जाती रही था, पर कुछ कमजोरी आ गई है इसलिए यहा चला आया। मसूरी की आबोहवा म कुछ लाभ हुआ है।

अब यह बताओ कि रामनरश त्रिपाठीवाल मामले म मुझे क्या कुछ करना है। कुछ और अधिक करना बाकी है क्या ? तुमन मातण्ड का जो सदेश भेजा था उसका सार उसन मुझे लिख भेजा है। पर जहा तक मेरा सबध है यह बताओ कि मुझे और अधिक क्या करना है।

क्या 'बापू' की वह प्रति भेजन की कृपा करोगे जिस बापू ने पढकर उसम निशान लगाय थ ?

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई दसाई
सवाग्राम

४७

सेवाग्राम वर्धा होकर
(मध्य प्रात)
१२ सितम्बर १६४१

भाई घनश्यामदास,

हनुमानप्रसादजी का खत म० (महादेव) के माफत परसो मिला।

किस्सा दु खद है। मेरा स्पष्ट अभिप्राय है कि जो गलतिया हुई हैं उनका पूण

स्वीकार करके हि व अपनी दुर्बलता को दूर कर सकते है सिवाय ऐसी शुद्धि के उनके हाथ से हानि हो हो सकती है। वे सज्जन हैं इसीलिये तो बिना स्वीकार ज्यादा हानि होगी। सज्जनता की एक निशानी तो यह है कि गलती का पूर्ण स्वीकार सारे जगत के पास किया जाय सत्याग्रही के लिये तो दूसरा चारा हि नहिं है इसलिये प्रथम कर्तव्य यह है कि कोई अच्छा सत्पुरुष उनसे मिले। तुमारे तरफ से कटींग मिली था।

बापु के आशीर्वाद

४८

२२ सितम्बर १९४०

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १२ तारीख का पत्र रिडाइरेक्ट होकर यहा मिला। मैंने त्रिपाठी और मार्तण्ड दोनो को लिखा है त्रिपाठी को लिखा है कि वह मार्तण्ड का दूसरी चिटठी स्वीकार कर लें और मार्तण्ड का सूचना दी है कि मैं त्रिपाठी को ऐसा लिख रहा हू। आशा है त्रिपाठी अवश्य इस अध्याय को समाप्त कर देंगे। यदि न करें तो यह उनके देखने की बात है। मैंने उनको लिख भी दिया है। यदि उन्हें सौदा न्याययुक्त न जचे तो वह उसे मानने से इन्कार कर सकते है पर बाद मे उन्हे इसका दोष मेरे माथे नही मढना चाहिए।

मैं १ अक्तूबर को जबलपुर जा रहा हू इसलिए ३० को दिल्ली मे होऊगा। रामेश्वरदासजी ने मुझे बताया था कि वह उन्ही दिनो पिलानी जानेवाले है। ३० के बाद उनका और आपका क्या प्रोग्राम रहेगा यह जानना चाहूगा।

मैं सेवाग्राम २७ को लौट रहा हू और २९ को दिल्ली के लिए रवाना होऊगा।

सप्रेम

महादेव

आशा है रामेश्वरदासजी और आप दोनो ही पूर्ण स्वस्थ होगे।

४६

मसूरी
२३ ६ १९४१

पूज्य बापू

मुझे ऐसा लगता है कि हरिजन काम की गति ज्यादा बढ़ाई जा सकती है। हमने जब काम शुरू किया था तब कई प्रान्तीय संघ जिला सभा, तहसील-सभा का एक निकम्मा जाल सा देश में फैला दिया था। जहा काम थोड़ा होता था, और कागजी की खानापुरी ज्यादा होती थी। अब ठोस काम दिन दिन बढ़ता जा रहा है। निष्क्रिय सभा का तो प्राय खात्मा-सा हो चुका है और विद्या प्रचार और छात्रवृत्तियों के काम की तरफ ज्यादा ध्यान जमता जा रहा है। दिल्ली, साबरमती और काडम्बाक्कम का काम तो है ही, भुसावल में दास्तानजी का नासिक में गद्रे जी का और गुण्टूर में सीताराम शास्त्री का काम भी आगे जाकर शायद जोर पकड सकता है। जयपुर में हीरालाल शास्त्री भी एक छात्रावास स्थापित करने की फिक्र में हैं। पर गाड़ी की चाल फिर भी मन्द ही है।

मेरी एक समय ऐसी इच्छा थी कि आगे चलकर दिल्ली में हमारे पास १००० तक छात्र शिक्षा पाने लगें। पर मुझे अब ऐसा लगता है कि दिल्ली इसके लिए उपयुक्त स्थान नहीं है और एक ही शहर में १००० छात्रों का जमघट करना सारे देश के लिए सुविधाजनक भी न होगा। इसलिए मैंने यह सोचा है कि यदि आपका आशीर्वाद मिले तो एक-दो साल के भीतर हम ६ नये आश्रम स्थापित करने का प्रयत्न करें। उनकी रूपरेखा इस तरह की हो कि प्रत्येक आश्रम में २०० विद्यार्थियों के रहने की गुंजाइश हो। उद्योग के साथ साथ किताबी शिक्षा मैट्रिक तक की हो। ये सब आश्रम शहर से दूर जंगल में स्वास्थ्यकर और सुखद स्थानों में किसी नदी के किनारे स्थापित किये जायें।

मेरा खयाल है कि इस लिहाज से एक आश्रम उत्तराखण्ड में हरिद्वार के निकट दूसरा प्रयाग के निकट तीसरा पन्ना के निकट चौथा यमुना-तट पर मथुरा के पास पांचवा नर्मदा के तट पर जबलपुर या कटनी के आसपास और छठा चित्रकूट में मन्दाकिनी के तट पर उपयुक्त होगा। स्वास्थ्य की दृष्टि से ये सब स्थान अच्छे हैं। जगह के चुनाव में मलेरिया आदि का प्रकोप न हो, इस ओर विशेष ध्यान दिया जाये।

दिल्ली का वातावरण तो निकम्मा-सा ही है। पानी के अभाव में हमारा

आश्रम एक तरह का रेगिस्तान-सा ही लगता है। न हम गायें रख सकते हैं न फल फूल लगा सकते हैं न तरकारी उपजा सकते हैं न सेती कर सकते हैं।

मेरा खयाल है कि इन आश्रमों में ज्यादा-से ज्यादा आधे लडके सवर्ण भी रखे जायें और उनसे पूरा शुल्क लिया जाय। हरिजन विद्यार्थी निःशुल्क हों। लडकों को—कम से-कम हरिजन बालकों को तो—नीचे की श्रेणी से ही दाखिला दिया जाये जिससे कि उन्हें आश्रम के वातावरण का कुछ अर्से तक पूरा लाभ मिल सके। मेरा खयाल है कि यदि अन्त में २०० लडकों के लिए रहने का स्थान बनायें, तो ४० ००० तो लडकों के मकानों पर लगेगा और ३० ००० मास्टरों के घरों पर लग जाएगा। २५ ००० स्कूल के मकान पर लगेगा १० ००० उद्योगशाला के मकान पर। १० ००० जमीन पर लग जायेंगे और ५००० सरजाम और ८००० कुएं इत्यादि पर लग जायेंगे। इस तरह हर आश्रम के पीछे सवा लाख रुपया तो मकानात पर खर्च होगा। किन्तु मेरा खयाल है कि पहले साल ७५ ००० हर आश्रम के पीछे लगेंगे। दूसरे साल २५ ००० की जरूरत होगी और तीसरे साल बाकी २५ ००० की जरूरत होगी।

शिक्षा का खर्च एक लडके के पीछे खान पान वस्त्रादि और अध्यापकों के वेतन समेत १६ रुपये माहवार लगेगा। इनमें से आधे सवर्ण विद्यार्थियों से पूरा शुल्क बल्कि कुछ अधिक ही लिया जाय तो हर हरिजन विद्यार्थी के पीछे ११ रुपये माहवार से ज्यादा खर्च नहीं आयेगा। इसके माने हुए हरएक आश्रम पर ११०० माहवार चालू खर्च होगा। इसमें से कुछ गवर्नमेंट ग्राण्ट भी मिल सकती है। अन्त में शायद ५०० या ६०० से ज्यादा प्रति आश्रम प्रति मास छीजन होगी। आगे चलकर शायद दाता लोग देने लगें तो हम लोगों पर कोई विशेष बोझ भी नहीं रहेगा। पर शुरू शुरू में तो खर्च के लिए दौड़ धूप रहेगी ही।

पर प्रथम वर्ष शायद हम इतने विद्यार्थी नहीं मिलेंगे। इसलिए खर्च भी कम होगा और घाटा भी कम होगा। मेरा खयाल है कि ऐसे आश्रम स्थापित करने के लिए हम पहले साल साढे चार लाख रुपये मकान इत्यादि के लिए और ३० ००० रुपये बालकों की शिक्षा के लिए चाहिए। दूसरे साल डेढ लाख रुपया मकानों के लिए और शायद थोडा ज्यादा शिक्षा के लिए और तीसरे साल फिर डेढ लाख रुपया मकानों के लिए और शायद कुछ और ज्यादा शिक्षा के लिए खर्च करना होगा।

यह योजना मुझे तो लाभकारी जचती है। एक तो सवर्ण लडके जो साथ पढेंगे उन्हें शहर के गन्दे वातावरण से दूर अच्छी शिक्षा मिल जाएगी। हरिजनों के साथ में वे लोग हिल मिलकर रहेंगे इससे हरिजन और सवर्ण दोनों का ही लाभ होगा। स्वास्थ्य सबका अच्छा रहेगा। चरित्र पर विशेष ध्यान दिया जा

सकगा। शरीर निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए और उद्योग के साथ चित्र-लेखन सगीत आदि ललित कलाए भी सिखाई जानी चाहिए। धार्मिक शिक्षा पर भी ध्यान रहेगा ही। यह लाभ हरिजन और सवर्ण दोनों को होगा। और यदि हम हर साल सब आश्रमो से २०० अच्छे बालक निकाल सकें तो देश म उसका अच्छा प्रभाव पडना चाहिए। इसलिए सब तरह से यह चीज मुझे आवश्यक लगती है। आपकी कृपा और सहायता से यह भी सम्भव है कि धन भी एकत्रित हो जाय। आपकी ओर स भी अपील की आवश्यकता तो होगी ही।

इसम हरिजी की एक और सूचना है जिसस मैं पूर्णतया सहमत नहीं हू। हरि जी कहते हैं कि हम मट्रिक के झझट म क्या पडें ? क्यो न जिस तरह स हमारा स्वतत्र पाठ्यक्रम दिल्ली में चल रहा है उद्योग के साथ-साथ उसी तरह इन आश्रमो म भी चलायें ? एक और मित्र की सूचना है कि मट्रिक पास करान स हरिजनों में भी बेकारी बढेगी। पर मुझे यह दलील कुछ ज्यादा रुचिकर नहीं मालूम देती। शिक्षा के कारण बेकारी का बढना यह एक सावजनिक रोग है। हरिजन ही इसस कस बचे रहग ? दूसरी बात और है। मट्रिक का पाठ्यक्रम रखे बिना सवर्ण विद्यार्थियो को हम आकर्षित नहीं कर सकेंगे। साबरमती म भी स्वतत्र पाठ्यक्रम था। वहा लडकिया पर्याप्त सख्या मे मिलन म कठिनाई होती थी। अब मेरी सलाह स स्वतत्र पाठ्यक्रम की जगह यूनिवर्सिटी का पाठ्यक्रम ग्रहण किया गया है। जब हमार देश की सल्तनत की बागडोर हमार हाथ मे आय तब यूनिवर्सिटियो का और उनके पाठ्यक्रम का सुधार हमे करना होगा। पर तब तक यदि हम स्वतत्र पाठ्यक्रम रखेंगे तो हरिजन लडको को शिक्षा के लिए किसी और स्कूल का दरवाजा खटखटाना पडेगा।

हरिजी यह भी कहते हैं कि मट्रिक के साथ साथ उद्योग की पर्याप्त शिक्षा देना असम्भव सा है। इस दलील म तथ्य तो है, पर इसका उत्तर मेरे पास यह है कि हम मट्रिक के पाठ्यक्रम के लिए एक साल ज्यादा ले लें, पर यूनिवर्सिटी के क्लास को हम न छोडें। यूनिवर्सिटी क पाठ्यक्रम और स्वतत्र पाठ्यक्रम क सम्बन्ध म जो दलीलें हैं उनस आप भली भाति परिचित हैं। इसलिए मैं उन्हें विस्तार-पूर्वक नहीं लिखना चाहता।

अब आप मुझे मेरा पत्र पढ़ने के बाद आपके मन पर क्या असर होता है, यह लिखिए और अपनी राय भेजिए। आपकी राय मिलने के बाद इस चीज को मैं हरिजन-सेवक सघ की कार्यकारिणी की आगामी बठक मे, जो दिल्ली मे १४ अक्तूबर को होनेवाली है रखूगा।

सक्षेप म २०० २०० लडको के ६ आश्रमो क मकानो के लिए ७॥ लाख

उनका शुद्ध प्रम है तो वह रहेगा हि। जनता उनका सरकारी पद स्वीकार नहा समझेगी इसलिय हर प्रकार स अच्छा होना चाहिये, जो इसी प्रतिष्ठा का स्वीकार न कर और अपना कारोबार को प्रजा की दष्टि स सुशोभित करें। हम सबकी सहाय लेते हैं यह सही है लेकिन उसम भी मयान्ा ता रहता हि है।

तुमारा स्वास्थ्य अच्छा हाता होगा।

बापु के आशीर्वाद

पुनश्च

दीनबन्धु-स्मारक के लिये मुसाफरी करनी हागी। अक्टाबर क मध्य म शुरू करन का इरादा है। दिल्ली पिलानी से शुरु किया जाय?

बापु

५२

तार

वर्धागज
२८ सितम्बर १९४१

घनश्यामदाम,
अमृत निवास
मसूरी

आपका सुझाव बापू को पसद है।

—महादव

५३

तार

वर्धागज
२८ सितम्बर १९४१

बिडला
अमृत निवास,
मसूरी

सरकार का बुलाना ठीक नही जचता।

—बापु

५४

मसूरी
२५ सितम्बर १९४१

प्रिय महादेवभाई

हम दोनों में से कोई भी ३० तारीख को दिल्ली में नहीं होगा। रामेश्वरदास जी भी यहीं है और उन्हें यहां की आबोहवा से लाभ पहुचा है पर उनकी मूल व्याधि ज्यों-की त्यों है। रहा मैं सो मेरी खांसी गायब है और शरीर में फुर्ती आ गई है। वजन कुछ कम हो गया था वह अभी पूरा नहीं हुआ है पर मसूरी की आबोहवा में उसकी पूर्ति सम्भव दिखाई नहीं देती। परन्तु यह एक मामूली सी बात है।

हम लोग १८ को हरिजन सेवक संघ की बैठक कर रहे हैं तुम भी आ जाओ तो अच्छा रहेगा। यदि तुमने अपना अलवरवाला प्रोग्राम रद्द कर दिया हो तब तो बात दूसरी है अन्यथा तुम्हें दिल्ली दो दफा आना पड़ेगा।

आशा है तुम बापू द्वारा पढ़ी गई बापू की प्रति अपने साथ लेते आओगे अथवा डाक के जरिये भेज दोगे।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

५५

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रान्त)
२६ ९ ४१

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। मैं तुम्हारी योजना से सम्मत हूं। ऐसी ६ संस्था होगी तो उसका असर अच्छा होना ही चाहिये। मैं यह भी मानता हूं कि आज हम मैट्रिक्युलेशन को छोड़ नहीं सकते हैं। साथ-साथ मेरा अभिप्राय है कि हमारा अभ्यास क्रम ऐसा होना चाहिये कि जो लड़के हाईस्कूल तक ही जाय उनको

अभ्यास पर्याप्त हो और उनका अभ्यास के बाद धधा या नौकरी मिल सके। मुख्य बात तो यहि है कि मुझे वस्तु पसद है और आरभ हो सकती है।

बापु के आशीर्वाद

पुनश्च

तबीयत के बारे में व्यायाम जितना शरीर आराम से कर ले कर सके, इतना हि रखा जाय।

५६

कांग्रेस हाउस भद्र,
अहमदाबाद
२७ सितम्बर १६४१

प्रिय घनश्यामदासजी,

मैं यहा आज सुबह पहुचा। कल वनस्थली जयपुर और अलवर के लिए रवाना हो रहा हू। दिल्ली में २६ तारीख को केवल एक घण्टा रुकूगा उसके बाद जयपुर के लिए चल पडूगा। वहा से अलवर जाऊगा जहा पहली और दूसरी को दो दिन ठहरूगा। तीसरी को दिल्ली लौट आऊगा। अपना प्रोग्राम इन्ही में से किसी स्थान पर भेज दीजिए। जवाहरलाल से मिलने के लिए देहरादून भी जा सकता हू वहा गया तो यदि आप मसूरी में हुए तो आपसे भी मिलना हो जाएगा। दिल्ली में आपकी खोज-खबर लगा लूगा। वहा कोई-न-कोइ तो बता ही देगा।

जल्दी में

आपका
महादेव

पुनश्च

देवदास का मामला युद्ध का कारण बन गया है और इतिहास में स्थान ग्रहण करेगा। यह देखकर मुझे खुशी हुई कि उन्होंने डटकर मोर्चा सभाला। सब देवदास की प्रशसा में लिख रहे हैं कि जब तक मामला चलता रहा उन्होंने मर्यादा से काम लिया।

५७

मसूरी
२७ ६ ४१

पूज्य बापू

आपका पत्र मिला।

आप दीनबन्धु स्मारक के लिए बाहर निकलनेवाले हैं यह जानकर खुशी हुई। आपका स्वास्थ्य तो इस लायक है ना ? महज रुपये के लिए आपको बाहर निकलना पड़ता है यह कुछ गर्व की बात नहीं है। मैं तो यह भी मानता हूँ कि आप वहाँ बैठे तो भी धन एकत्रित कर सकते हैं। पर दौरे के अन्य लाभ तो हैं ही। पिलानीवालों की अभिलाषा पूर्ण हो जाएगी यह जानकर और भी प्रसन्नता हुई।

आपने अक्तूबर के मध्य का प्रोग्राम लिखा यह समय अत्यंत नजदीक आ गया है—पिलानी के लिए। शेखावाटी में अब तक सार्वजनिक जीवन नहीं रहा है इसलिए कितना बड़ा मजमा इकट्ठा हो सकता है यह नहीं कहा जा सकता। पर तो भी आपके आने की खबर पाकर बाहर से आपका प्रवचन सुनने के लिए हजारों आदमी आ सकते हैं। ५० ००० तक आ सकते हैं। क्या पता इसमें भी ज्यादा आ जाएँ। आनेवाले ऊँटों पर आयेंगे। उनके लिए पानी का प्रबन्ध शौचादि का प्रबन्ध यह सब क्या १५ दिन में हम कर लेंगे ? थोड़ा शक होता है। हाँ, यदि अखबारों में हम आपके आने की डुग्गी न पीटें और आप केवल संस्था भर को देखने के लिए चुपके से आयें तब तो कोई ऐसी समस्या पैदा नहीं होगी। आपका आना चुपके से हो सकता है क्या यह भी एक प्रश्न है। इसलिए यदि आपका वहाँ जाना प्रकाश्य रूप से हो तब तो कुछ लम्बी सूचना की जरूरत होगी। पर वैसी हालत में तो आपको जयपुर भी जाना चाहिए और शेखावाटी के अन्य शहरों में भी जाना चाहिए। यदि आप बिना विज्ञापन के आयें तब तो केवल पिलानी जा कर ही आप दिल्ली वापस आ सकते हैं। पर इससे जनता को या जमनालालजी को शायद पूरा संतोष नहीं होगा। इसलिए आप जमनालालजी से मशवरा करके यह निश्चय करें कि आपका वहाँ जाना प्रकाश्य रूप से होगा या महज संस्था को देखने के लिए एक प्रशान्त आगमन होगा।

मेरी यह सूचना है कि यदि आपका राजपूताने का दौरा प्रकाश्य रूप से हो तो आप राजपूताने में दक्षिण से प्रवेश करके उत्तर से निकल जाएँ और फिर दिल्ली पहुँच जाएँ। इसके मानी हुए कि आप बम्बई सूरत बड़ौदा और अहमदा

बा॰ जाते हुए अजमेर जयपुर उसके बाद शेखावाटी और पिलानी जाकर दिल्ली पहुचेंगे। यदि महज पिलानी के लिए और सो भी अप्रकाश्य रूप मे जाना हो तो दिल्ली आकर पिलानी जाए और वहा एकाध दिन रहकर वापस दिल्ली पहुच जायें। जयपुर जाना हो तो महाराजा और दीवान से भी मिलने के लिए उनसे पूछा जाय। पर शायद वह मिलें या न मिलें। रेजिडेंट वहा हर्बर्ट है। महादेव भाई उससे मिला है। वह शरीफ आदमी है ऐसा खयाल है।

इस सम्बन्ध मे आप पूरा निर्णय करके मुझे अपना कार्यक्रम लिख भेजिये। यदि प्रकाश्य रूप से राजपूताना या जयपुर का दौरा करते हुए आप दिल्ली पहुचते हैं तो फिर पिलानी मे उतनी बडी भीड नही भी हो क्योकि लोगो को जयपुर सीकर फतेहपुर, नवलगढ इत्यादि जगहो मे आपके दर्शनो का लाभ मिल जाता है। यदि प्रकाश्य रूप मे भी जाना हो और पिलानी तक ही जाना हो तो फिर कुछ लम्बी सूचना की जरूरत होगी करीब चार हफ्ते की।

इस पत्र का उत्तर आप दिल्ली के पते पर भेजियेगा क्योकि मै एकाध रोज मे ही नीचे जा रहा हू।

विनीत
घनश्यामदास

५८

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रान्त)
२ १० ४१

भाई घनश्यामदास

तुमारा खत मिला। जमनालाल सब तुम पर छोडते हैं। वह मानते हैं कि मुझको दूसरी जगह भी ले जाना होगा। मैं अहमदाबाद नहिं जाना चाहता हू। जाऊगा अगर वहा से निमन्त्रण आवेगा तो। मुझको वही ले जाना चाहिये जिधर पसे मिल सकें। जमनालाल मानते हैं कि यह मौसम है जब धनिक लोग अपने घर रहते है। मेरा कोई आग्रह है नहिं कि मैं इस महिने के मध्य मे हि शुरू करू या दिल्ली पिलानी से जा उचित हो वही किया जाय। महादेव से मिलोगे उनके साथ मशविरा करके निर्णय किया जाय।

बापु के आशीर्वाद

५९

मसूरी
२ १० ४१

पूज्य बापू

आपका पत्र मिला।

महादेवभाई से यही तय किया है कि पहले हम लोग प्रयत्न कर लें। और उसके बाद जरूरत हो तो आपको कहीं ले जायें। मुझे लगता है कि पहले तो आपके बिना ही हम लोगों को प्रयत्न करना चाहिये। आशा है हम लोगों को कुछ सफलता भी मिल जायगी। थोड़े से पैसे के लिए आपको घुमाना मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता।

पिलानी किसी समय पिलानी के उद्देश्य से ही आयें या तो साल छ महीने में कभी दिल्ली आना हो तो उधर हो जायें। चन्दे के लिए हम लोग अभी आपको घुमाना नहीं चाहते। यह तो ऐसा काम है जिसे आपके बिना ही हम लोगों को पूरा कर लेना चाहिए।

विनीत
घनश्यामदास

६०

भारतीय ईसाइयों की अखिल भारतीय कौंसिल

२ दिल्ली श्रीरामपुर रोड
कलकत्ता
८ अक्तूबर १९४१

महात्मा गाधी
सेवाग्राम
वर्धा (मध्य प्रात)

माननीय महोदय

मैं बम्बई से लौटते समय कुछ दिन सेवाग्राम में बिताने की आशा लगाए बैठा था पर अपनी पत्नी की रुग्णावस्था की खबर मिली। हमारा कोई बाल-बच्चा

नहीं है इसलिए मैंने जल्दी ही घर लौटना उचित समझा जिसमें पत्नी अधिक व्याकुल न हो।

जब मैं गत वर्ष ८ जुलाई को आपसे मिला था, तो आपने मुझ से यह पूछने की कृपा की थी कि क्या मुझे कोई सवाल करना है। उत्तर में मैंने कहा था कि मुझे आपसे बहुत-सी बातें कहनी हैं पर मैं आपका अधिक समय नहीं लेना चाहता।

आज मैं उनमें से एक बात आपके सम्मुख रखने के लिए यह पत्र लिख रहा हूँ।

मुझे मालूम हुआ है कि हरिजन-सेवक संघ के वर्तमान नियमों उपनियमों के अंतर्गत केवल हिन्दू ही उसमें शामिल हो सकते हैं। गैर हिन्दुओं को अलग-अलग रखने के औचित्य के प्रतिपादनस्वरूप यह बताया गया है कि अस्पृश्यता मात्र हिन्दू जाति का ही पाप है, और उसके प्रक्षालन स्वयं हिन्दुओं को ही करना चाहिए।

मैं इस विचार से सहमत नहीं हूं क्योंकि मैंने मुसलमानों और भारतीय ईसाइयों में भी अस्पृश्यता देखी है। मैं ठोस उदाहरण दे सकता हूं और स्वयं मुझे भारत के विभिन्न अंचलों में इसका अनुभव हुआ है। हाल ही में, गत सितम्बर के अंतिम सप्ताह में जब मैं गुजरात गया था, तो ऐसे उदाहरण स्वयं मेरी दृष्टि से गुजरे।

मेरा दावा है कि मुझे अपने हिन्दू भाइयों के अस्पृश्यता निवारण कार्य में सहायता देने का अधिकार है। इस अस्पृश्यता से हिन्दू-समाज में भी लोहा लेना है और स्वयं मेरे ईसाई समाज में भी और इस सत्कार्य में हिन्दू ईसाई-योग वांछनीय है। यदि ईसाइयों को उस अधिकार से वंचित किया गया तो इस बात का यह ताजा प्रमाण समझा जायगा कि भारत में ईसाइयों को भी अस्पृश्य समझा जाता है भले ही यह दलील सही न हो।

मेरी समझ में विभिन्न सम्प्रदायों में ऐक्य की भावना उत्पन्न करने का एक उपाय यह है कि विभिन्न सम्प्रदायों के लोग अन्य सम्प्रदायों की सेवा करें, ऐसा डिस्पेंसरियों अस्पतालों विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाओं में तथा खद्दर के उत्पादन और ग्रामोद्योगों में अब भी होता है। फिर मुझे हरिजन-सेवक-संघ के माध्यम से अपने हरिजन-बंधुओं की सेवा करने के अधिकार से क्या वंचित रखा जाये?

मैं यह पत्र इसलिए लिख रहा हूं कि सिकन्दराबाद निवासी श्री सी० सी० पाल नामक मेरे एक परम मित्र का जो भारतीय ईसाई-समाज में जाने-माने व्यक्ति

हूं और जो अपने नगर में रहकर अच्छी ख्याति समाज सेवा करते रहे हैं मुझे इस कारण संघ में नहीं लिया गया कि वह स्मार्ट हैं। उन्हें तो यह बात नहीं सूझी पर मुझे चुभ रही है। वह निजाम सरकार के एक उच्च पदस्थ अधिकारी हैं और मादक द्रव्य निषेध के क्षेत्र में तथा पतित महिलाओं के उद्धार कार्य के क्षेत्र में व अपाहिजों को राहत पहुंचाने के मामले में जो स्तुत्य कार्य कर रहे हैं उसे वे सब जानते हैं जो हैदराबाद भ्रमण कर चुके हैं। मैं यह स्वीकार करता हूं कि उन्हें संवाददाता का काम सौंपा गया है पर इससे मेरी दलील की सार्थकता पर कोई आंच नहीं आती क्योंकि वह एक असाधारण तथा योग्य व्यक्ति हैं।

पूरे आदर और श्रद्धा के साथ मेरा यह निवेदन है कि आप इस पत्र पर भगवान का स्मरण करते हुए विचार करें और आपका अंतःकरण आपको जैसी प्रेरणा प्रदान करे उसके अनुरूप ही कार्य करें। आपके सामने मैंने यह बात इसलिए रखी है कि मैं ऐसा करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

भगवान आपको वह कार्य सम्पादन करने की क्षमता, शक्ति और प्रेरणा प्रदान करे जिसके निमित्त उसने आपको यहां भेजा है।

आदरपूर्वक
आपका ही
हरद्रचंद्र मुकर्जी

६१

सेवाग्राम
१ अक्तूबर १९४१

प्रिय डाक्टर मुकर्जी

आपके पत्र के लिए धन्यवाद।

फर्ज करिये यदि ईसाई लोग अपने कुछ सामाजिक दूषणों के निवारण की कामना से प्रेरित होकर ऐसे दूषणों से निबटने के लिए एक संस्था को जन्म दें, उसी अवस्था में मेरा खयाल है कि वे उस संस्था में केवल ईसाई धर्मावलम्बियों को ही प्रविष्ट होने देंगे, अन्य धर्मावलम्बियों के लिए उस संस्था का द्वार बन्द रहेगा। यदि आप यह बात स्वीकार करें तो हरिजन सेवक संघ ने जो प्रतिबंध लगा रखा है उसकी सार्थकता आपकी समझ में आ जायगी। पाप हिंदुओं ने किया है उसका

प्रक्षालन भी हिन्दू ही करेंगे, अन्य धर्मावलम्बी अपनी सहानुभूति मात्र प्रदान कर सकते हैं, प्रक्षालन-कार्य उनकी परिधि के बाहर की चीज है। ईसाइयों और मुसलमानों में भी छुआछूत मौजूद है, पर इसका स्रोत हिन्दू-समाज है जिसके संक्रामक रोग से ये सम्प्रदाय भी अछूते नहीं बचे हैं। इन सम्प्रदायों की सहायता हिन्दू समाज केवल एक ही मार्ग अपनाकर कर सकता है और वह यह कि वह स्वयं अपने-आपको इस व्याधि से मुक्त करे। बाकी सारा कार्य तो ये सम्प्रदाय स्वयं ही करेंगे।

पर जो चीज बिलकुल स्पष्ट है, उसकी उपेक्षा राजनैतिक कारणों से की जा रही है। सारी व्याधि के मूल में धर्म में भ्रष्टाचार का समावेश है। यदि अब भी आपकी समझ में यह बात नहीं आई हो तो आइये इस विषय पर और अधिक विचार विमर्श किया जाए और किसी नतीजे पर पहुंचने तक यह सिलसिला जारी रखा जाय।

आशा है आपकी धर्मपत्नी अब तक स्वस्थ हो गई होंगी। आप जब चाहें आ जाइये, स्वागत है।

भवदीय
मो० क० गांधी

६२

बिड़ला आरोग्य मन्दिर
नासिक रोड
१८ १० ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

कल यहां आ पहुंचे। स्थान बड़ा सुन्दर है और अपार शांति है। मरदार को शांति से तो लाभ हुआ है परन्तु दर्द ज्यों का त्यों है। होम्योपैथी दवा में पहले जो लाभ हुआ दिखाई देता था वह भी अब तो नहीं-जैसा है। गुप्ता डाक्टर एक दफा आ गया था, कल फिर आवेगा। आज दो दिन से एक वैद्य की दवा शुरू की है। वैद्य अच्छा है यहां का ही है और स्वयं सेवा भाव से आया था। जो चीजें दी हैं, वह भी परिचित औषधियां हैं। देखें उससे क्या होता है।

विधान को दिखाने की उनकी बहुत इच्छा तो नहीं है परन्तु आगर जारद

६४

तार

वर्धागंज
२२ अक्तूबर, १९४१

घनश्यामदास बिड़ला
पिलानी

हम सबकी ओर स आप सबको दीवाली की शुभकामनाए। सरदार को यहा बापू ने कुछ समय के लिए राक रखा है। राजाजी का प्रोग्राम अनिश्चित है पर इस मास के अत तक दिल्ली पहुचने की आशा है।

—महादेव

६५

२३ अक्तूबर १९४१

प्रिय महादेवभाई,

प्रारम्भ म बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट म पर्याप्त ट्रस्टी थे पर जमनालालजी और श्री कृष्णदास जाजू के त्यागपत्र दने क बाद स हम क्वल तीन ट्रस्ट मे रह गय हैं—रामेश्वरदासजी, मैं और श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका। अब हम दो ट्रस्टी और लेन हैं।

मैं तुम्हार ऊपर कोइ भार नही डालना चाहता, पर यदि तुम ट्रस्ट म आ जाओ तो हम नतिक सहायता मिलगी। रही सक्रिय काय की बात सो तुम्ह तो केवल साधारण मागदशन दना होगा इसमे अधिक कुछ नही।

मैं दूसर रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए श्री राधाकृष्ण का लिख रहा हू।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री देसाई
सेवाग्राम, वर्धा

६६

सेवाग्राम
२८ १० ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

आप राची के शहद के बारे म बात करत थ। बापू कहत है कि अगर कुछ स्टाक मे हो तो उमे तुरन्त भिजवा दिया जाय।

यहा बातें चल रही हैं कुछ नतीजा नही निकल रहा है। राजाजी कुछ ठहरेंगे। वे अपन विचार पर डटे हुए है और कहत हैं कि हम सब अधविश्वास करके बठ हैं।

आपका स्वास्थ्य कसा चलता है ?

मैं ७ तारीख को ग्वालियर जा रहा हू ८ को १२ बजे पहुचूगा।

मास्टरजी का साथ का पत्र दीजियेगा।

आपका
महादेव

प्राफिट बाइ माइ एक्सपीरिएन्स (मेरे अनुभव का लाभ) पढ रहा हू। मेरे पास जून का रीडर्स डाइजेस्ट है। जुलाई अगस्त सितम्बर का नही है। वह भिजवा दीजियेगा। शायद जून के पहले यह फीचर रीडस डाइजेस्ट म था ही नही।

म०

६७

२६ अक्तूबर १९४१

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा २२ तारीख का पत्र मिला।

दो एक दिना म इस स्थान से चल पडने की इच्छा है। नवम्बर के मध्य तक कलकत्ता पहुचने की आशा है। कलकत्ता रवाना होने मे पहले यदि बापू स दीनबन्धु मेमोरियल फण्ड के बारे म बात कर लो तो अच्छा रहे। मझे तथा अ य लोगो न टेगोर मेमोरियल फड खोला है। इस ममोरियल के प्रति हम क्या रुख अपनाना चाहिए ? बापू मे इन सारी बातो की चर्चा करनी है। उनका जसा रुख हो मुझ

सूचित कर दना।

मुझे यह जानकर सताप हुआ कि इस समय सरदार बापू की देख रेख म इलाज करा रहे हैं। यदि बापू चाहें ता विधान सवाग्राम आ सक्त हैं। पर वह बिना बुलाए कस आ सक्त हैं ? वह वैसा करेंगे, ता एसा लगेगा मानो वह अन्य डाक्टरा के इलाज पर अपना इलाज थोपना चाहत हैं। जब मैंने सरदार से दिल्ली जान को कहा था, ता मेरा उद्देश्य उनकी डॉक्टरी परीक्षा कराना मात्र नही था। मैंने सोचा था कि उनके लिए दिल्ली की जलवायु नासिक की जलवायु की अपेक्षा अधिक लाभकारी सिद्ध होगी। जो हो, यदि बापू या सरदार चाह तो विधान निसकाच सवाग्राम आ सकेंगे।

बापू और राजाजी के बीच जा बातें हुइ उनके बारे म तुमन जा लिखा सो पढ़ा। तुमन जा-कुछ लिखा उससे कुछ निराशा-सी हुई। पर मेरा खयाल है कि राजाजी का विचार बापू के लिए कोई आश्चय की वस्तु नही है। कुल मिलाकर यह अच्छा ही है कि राजाजी अपनी बात पर इतनी दृढता के साथ अडे हुए हैं।

आशा है सब-कुछ ठीक चल रहा होगा।

सप्रेम

घनश्यामदास

पुनश्च

ग्वालियर प्रजा मडल क जलस म जा रह हो ? इस विषय म मैंन तो सुना है कि मडल म से पुस्तके जा एक सज्जन पुरुष थे व तो निकल गय हैं। अब जा लोग इसम हैं वे अवाछनीय लोग हैं ऐसा सुना है। पर शायद तुमन जाच पडताल कर ली होगी। चरित्रवान लोग हैं यह पता लगा लिया हागा।

६८

वसत निवास,

सुलतानपुर

२६ १० १९४१

प्रिय महादेवभाई,

२२ १० का आपका पत्र मिला। मातण्डजी न जा शिकायत की, वह प्रयाग म महर क कमचारी द्वारा आई हुई गलत रिपोर्ट क आधार पर थी। कविता-

कौमुदी म ८६ कवि है उनम स केवल ७ या ८ कवियो का विवरण नागपुर युनिवर्सिटी के बी० ए० या एम० ए० म स्वीकृत है। कविता कौमुदी की माग आ रही थी। पर वह समाप्त हो गई है। पुस्तक न मिलने पर वह कोस से निकाल दी जाती। मैंने इलाहाबाद के एक बडे बुकसलर रामनारायणलाल को उन्ही ७ ८ कवियो का विवरण पुस्तकाकार छपाकर बेचने की इजाजत दे दी थी। हिन्दी मदिर को दे देने की बात चल रही थी इस मैं स्वय प्रकाशित करना नही चाहता था। आठ आन की पुस्तक होगी और वष भर म ५० ६० प्रतियो स अधिक बिकेंगी नही वह कविता कौमुदी का सक्षिप्त सस्करण हरगिज नही है। फिर भी मैंने रामनारायणलाल को लिख दिया है कि वे उसकी रायल्टी का रुपया मडल को देत रह। मातण्डजी न विना समझे बूझे शिकायत की ह। मैंने उनका खुलासा लिख दिया है और उन्होंने अपनी भूल स्वीकार भी की है। पुस्तक छापन की स्वीकृति मैंने गत जुलाई या अगस्त म दी थी। कृपया घनश्यामदासजी को कहे या लिख दीजिय कि उन्होन मर साथ जसी सहृदयता दिखलाई है उसे ध्यान म रखते हुए मैं उनके साथ लन देन के किसी तरह क सौदे म नही पडना चाहता। वे जो कुछ मुझस कराना चाहत हैं बिना पूछे और बिना सकोच क सीधे या आपके द्वारा मुझ सूचित कर दें मैं भरसक अच्छा-से अच्छा जो मुझस हो सकगा कर दूगा। बदले म व जो-कुछ दना चाहग, वह उनके सतोष के आधार पर ही मेर सतोष का कारण होगा। सशोधन प्रूफ शुद्धि आदि मैं सब कर दूगा।

यदि बिडलाजी प्रकाशित कराना चाहेग मरी तो इच्छा है कि पुराणो से अच्छी-अच्छी कथाए जिनम नतिक चरित्र का दिग्दशन हो सग्रह कर दू मैं तो अपनी इच्छा म उनका सहयोग सदा चाहूगा।

आप और चि० नारायण आदि प्रसन्न होगे। मुझे चिन्ता है कि नारायण को अब मैं पुस्तकें नही दे सकूगा क्योकि हिन्दी मदिर अब मरा नही रहा।

आपका,
रामनरेश

६९

२८ अक्तूबर १९४१

प्रिय महादेवभाई

मैंने राची तार भेज दिया है कि मेरे अपने स्टाक म स बापू के लिए शहद रवाना कर दें। मैंने १० सेर भेजने को कह दिया है। रीडस डाइजेस्ट के १९४१ के जुलाई, अगस्त और सितम्बर के अक तुम्हारे पास भेजने की भी ताकीद कर दी है।

यहा म दिल्ली के लिए कल रवाना हो रहा हू। वहा कोई एक पखवाडे ठहर कर कलकत्ता के लिए चल पड़ूगा।

आशा है तुम सकुशल होगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम वर्धा

७०

सेवाग्राम
२९ अक्तूबर, १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका २३ अक्तूबर का पत्र आज मिला। कई रोज से आपके पत्र के इत-जार म था। रोज सरदार पूछते थे कि घनश्यामदासजी का कोई पत्र नही है क्या ?

बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट के ट्रस्टी मे मुझे रखना हो तो अवश्य रखिये। रखने का विचार करना यह तो आपकी मेरे प्रति ममता है। बाकी ट्रस्टी बनकर मैं क्या करूगा नहीं जानता।

रामनरेश त्रिपाठी का एक पत्र आया है। देखने के लिए भेज रहा हू। उनसे काम लेना न लेना आप ही जानें।

आप कब तक वहा रहेंग ? बापू का एक लम्बा निवेदन अखबार म दखेंगे। राजाजी निराश होकर गय। सरदार के बार म रामश्वरदासजी के पत्र म मैंने लिखा है।

बापू का स्वास्थ्य ठीक ठीक रहता है। आजकल ब्लड प्रेशर (रक्तचाप) काफी बढ जाता था। क्योकि नताओ क साथ चचा काफी सिर खपानेवाली रही।

आपका
महादेव

७१

३ नवम्बर १९४१

प्रिय महादेवभाई,

तुमन बिडला एजूकेशन ट्रस्ट का ट्रस्टी बनना स्वीकार कर लिया यह मेर लिए सतोष का विषय है।

देखता हू कि तुम ग्वालियर जा रह हो। भूलाभाई राजाजी और सत्यमूर्ति—सब यहा एकत्र हैं। अभी कुछ स्थिति है उससे सभी क्षोभ स भर हुए है और अपन-अपने विचारो को लेकर आपस म मतभेद है।

ऐसा लगता है कि और अधिक सत्याग्रही रिहा होगे और अत म शायद जवाहरलालजी भी छोड दिय जाए। उसक बाद क्या होगा? पर अभी हम भविष्य को लकर परशान होने की जरूरत नहा है। हमारे भाग्य की रखाए अदृष्ट के हाथ म हैं इसलिए लेखा-जोखा बठाना बमान है।

मैं पिलानी से रवाना हा ही रहा था कि बापू क वक्तव्य पर निगाह गई। अब उस अधिक मनोयाग के साथ पढूगा। ग्वालियर जात हुए दिल्ली शायद नही उतरोगे, बस तो कुछ ही घण्टे का अन्तर पडेगा। इधर हम लोगो ने भी अभी अपना कलकत्ता का प्रोग्राम नही बनाया है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादवभाई दसाई,
सेवाग्राम वर्धा

७२

विडला हाउस
अल्बूकक रोड नयी दिल्ली
८-११ ४१

पूज्य बापू,

यह पत्र राजनीतिक चर्चा के लिए लिख रहा हू। अच्छा होता, यदि मैं आपके पास चला जाता। पर मेरा खयाल है कि एक महीन वाद यदि जाऊगा तो स्थिति ज्यादा सुस्पष्ट होगी और उस समय शायद काई निष्कप निकालना ज्यादा आसान हागा।

आपका लम्बा वक्तव्य पढ गया। मुझ पर उसका अच्छा ही असर हुआ। इसका शायद यह भी कारण ह कि मैं आपके सार वक्तव्य श्रद्धा स पढता हू। अक्ल से काम नही लेता सो वात नही। पर एक मजिल ऐसी जाती है जहा बुद्धि रुक जाती है और श्रद्धा से ही काम लेना पडता है। मैं बुद्धि और श्रद्धा दानो के जरिये विचार करता हू तो मुझे लगता है कि जो आपने किया वह अत्युत्तम माग था। मुझे लडाई के शुरू शुरू मे आपके माग के बारे म कापी शका थी। मैंने इस शका का इजहार आपके सामन काफी किया भी। अब मुझे लगता है कि दूसरा माग हम ले ही नही सक्ते थ। वह इसलिए कि अग्रजा की तरफ स दने-लेन की कोई मशा रही ही नही और सारी दुनिया का अहिसा का उपदेश दने के बाद यदि हम कुलाच खाते, और पूना प्रस्ताव के अनुसार लडाई म शरीक होते, ता हमारा नतिक बल मिट्टी म मिल जाता। हमने ससार के सामने यह साबित कर दिया कि दुनिया म केवल एक हिदुस्तान की आत्मा ही लडाई म शरीक नही है, हालाकि हमारे सिपाही लडते हैं। लडाई म सबका खातमा ही होता है। काई भी जीत विनाश अवश्यम्भावी है। एसी हालत मे यदि हम निर्लेप रहे तो विश्व की भी सवा कर सक्त हैं। बर्ट्रेंड रसल और टोड इम अहिसा का वखान करने की योग्यता खो वठ। हमने यह योग्यता नही खोई। यह भी एक निधि है, जा लडाई के बाद सबको उपयोगी होगी। दुनियादारी की दृष्टि से भी हमन तटस्थ रहकर अपना कुछ नहा विगाडा और अग्रेजा को त्रस्त न करके भी अपनी नकनीयती को सिद्ध कर दिया। आज क अग्रेज इस नही मानते। पर भविष्य के इतिहास लिखनेवाल जितनी बातें मैं कह रहा हू इससे जरूर सहमत होगे।

पर जहा पहले मैं शकाशील था और आज शका समाधान लेकर वठा हू,

उसी तरह अन्य लोग जिनका पहले समाधान हो चुका था वे आज शंकाशील होते जा रहे हैं। इसका यह भी कारण शायद है कि मुझे तो भुगतना नहीं पड़ रहा है इसलिए तटस्थ होकर भी सोच सकता हूं। और लोगों को भुगतना पड़ता है। यातनाएं भी झेलनी पड़ती हैं और मेरी जिम्मेदारी भी कुछ नहीं है। अन्य लोग अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। उन लोगों पर मुझे लगता है आपके वक्तव्य का कोई खास अच्छा असर हुआ है ऐसा नजर नहीं आता। ऐसे लोग भी हैं जो कभी इस पक्ष का पक्ष करते हैं और कभी उस पक्ष का और अब निराश हो रहे हैं। ऐसी मनोवृत्तिवाले तो आपके वक्तव्यों से शायद ऊब भी जाते हैं। सफलता में सभी साथी। चूंकि ऐसे लोग आज कोई खास सफलता नहीं पाते तो उनका धीरज छूट रहा है। उनके पास कोई योजना नहीं है पर आपकी योजना से तो असंतोष ही है—कितने प्रतिशत ऐसे लोग हैं यह कहना कठिन है। पर ऐसे लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। जनसाधारण की मनोवृत्ति कोई स्थिर तो होती नहीं, और ज्यादा त्याग-तप की बात भी उन्हें अच्छी नहीं लगती। आदर्श भी पश्चिमी है जहां स्वतंत्रता जोर-जबर से ही मिली है। इन सब संयोगों के मेल-जोल ने एक असंतोष की लहर पैदा कर दी यह स्पष्ट है। और जब से नेता लोग जेल से बाहर आए हैं तब से यह लहर कुछ जोर पकड़ती जाती है। जितने असेम्बली के मेम्बर यहां इकट्ठे हुए उनमें एक जबरदस्त गिरोह में यह असंतोष की भावना स्पष्ट है। राजाजी भूलाभाई तो अत्यंत असंतुष्ट मालूम होते हैं। भूलाभाई में तो कड़वाहट बढ़ रही है। मौलाना इसी मार्ग के शायद अनुयायी हैं। सरदार राजेन्द्र बाबू जवाहरलालजी कृपलानीजी को छोड़कर बाकी कई लोग जो अवहेलना करने योग्य नहीं हैं वे असंतुष्ट और कड़वाहट से भरे मालूम होते हैं। यह लहर और भी बढ़ेगी क्योंकि छोटे मोटे प्रांतीय दिग्गज शंकाशील हैं और असंतुष्ट है।

राजाजी के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे विद्वान् है, त्यागी हैं कोई निजी स्वार्थ से रंग नहीं हैं। उनका विचार शुरू ही से वही है जो आज है। राजाजी विचारक भी है। उनके असंतोष और क्षमता की अवहेलना या भी नहीं की जा सकती। चूंकि वे कांग्रेस के एक जबरदस्त स्तम्भ हैं इसलिए उनकी अवहेलना करना भूल होगी। राजाजी ने एक बात कही जो सही भी है। वह यह कि बापू की अहिंसा और सत्य को कांग्रेस ने माने कांग्रेस के अधिकांश लोगों ने धारण तो किया ही नहीं बल्कि झूठा जामा पहनकर दुनिया को ठगते भी हैं। एक मतबा मॉरिस ग्वायर ने कहा था कि जो लोग पहले दिन तक पूना प्रस्ताव के कायल थे और हिंसा नीति में कोई पाप नहीं पाते थे वे एक रात के भीतर ही कैसे बदलकर अहिंसात्मक हो गये? उनका सच्चा उत्तर तो यही है कि पूना प्रस्ताव सरकार स्वीकार करती

तो रग दूसरा बठता। जब ऐसा नही हुआ, तो अहिंसात्मक बन गए। राजाजी का कथन है, जो उ होंने आपके सामने भी रखा ही होगा कि जब लोग असली रूप म अहिंसात्मक नही हैं तब उन्हे अहिंसात्मक जामा पहनाकर असत्य का प्रोत्साहन देकर हम लोग हमारे विपक्षिया पर कोई नैतिक प्रभाव नही डाल सकते। इस बात म वजन है और साथ ही यह भी बात है कि इस समय मतभेद म कुछ कम जोरी आएगी। पर जब जोर है नही तो फिर कमजारी को छिपाना भी लाभप्रद मालूम नही होता। इस गुत्थी का सुलझाना चाहिए। इसे भूल नही जाना चाहिए। इसम दो ही माग है या तो जस मुशी बाहर निकल गए वस राजाजी इत्यादि बाहर निकल जाए या आप इन्ह बागडोर सौंप कर अलग हो जाय। राजाजी की यह राय कि सत्याग्रह स्थगित हो मुझे नापसद है। आप काग्रेस छोडें इसे राजाजी पसद नही करत पर मरा खयाल है उस यह लाग मा य कर लेंगे।'[1]

स्नेहभाजन
घनश्यामदास

१ यह पत्र ३ ११ ४१ को लिखा गया था पर चूकि उसी रोज टेलिफोन पर महादेव स बातें हो गई इसलिए यह भेजा नही गया। ६ ११ ४१

७३

६ ११ १९४१

प्रिय घनश्यामदासजी

आपके साथ जो बातें हुई थी उनका निचोड मैंने आज सुबह बापू को सुना दिया। उन्होंने गुजराती म जो लिखा सो यह रहा

'एक बार दो दिन के लिए यहा हो आओ। भूलाभाई और अन्य लोगो से जोर देकर कहो कि अगर उन्ह मेरे पास आना है तो भले ही आ जाए। मेरा यहा स निकलना नही हो सकता। मैंने सुना है कि दो-तीन आदमी कुछ गल गपाडा मचा रहे है। व लाग मुझे लिखें तो सही।'

अत मैंन ित्ली जाने का फगला किया है। पर कही मेरे वहा पहुचत-पहुचत अ य लाग वहा से चल न पडे हा। कृपा करक मुझे ग्वालियर फोन करियगा या शायद मैं ही ग्वालियर से फान करके आपसे बातचीत करने की कोशिश करुगा।

सप्रम
महादेव

७४

तार

दिल्ली
८ नवम्बर १६४१

दुगाप्रसाद
मारफत बिडला,
ग्वालियर

महादेवभाई को खबर कर दो कि सब यही है। वह भी आयें।

—घनश्यामदास

७५

१४ नवम्बर, १६४१

प्रिय महादवभाई

यदि तुम साथ म भेज पत्र के लेखक की वतमान स्थिति क लिए पने-आपको उत्तरदायी समझत हो तो मुझ लगता है कि इस भद्र पुरुष की मातृविहीन स ताान की याह शादी के खच का ब दोबस्त भी तुम्हे ही करना चाहिए।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाइ
सेवाग्राम वधा

७६

कलकत्ता
१२ दिसम्बर १९४१

प्रिय महादेवभाई

'सर्वोदय' के दिसम्बर के अंक में मैं बापू की वह स्पीच पढ़ रहा था, जिसमें उन्होंने सहकारिता प्रणाली की खूबियों की चर्चा की है। इस सदंभ में मैं तुम्हारा ध्यान मूर के उन लेखों की ओर दिलाना चाहूंगा जो आजकल 'स्टेटसमन' में लेखमाला के रूप में निकल रहे हैं। उसने अपने एक लेख में इंग्लैंड में व्यवहार में लाई जा रही सहकारिता प्रणाली की विस्तार से चर्चा की है, और भारत के लिए उसे अपनाये जाने की जोरदार सिफारिश की है। यदि तुम्हारे पास पूरी लेखमाला संगृहीत न हो तो मैं भेज दूं। इनमें से कई एक लेख तो बड़े सुंदर हैं, पर कुछ एक नीरस हैं। जैसे भी हों हैं पढ़ने लायक।

जूट सोसाइटी की पत्रिका की भी एक प्रति भेज रहा हूं। इसमें तुम एक ऐसा लेख पाओगे, जिसमें खाद्यान्न के पोषक तत्त्वों पर रासायनिक खाद के प्रभाव की चर्चा की गई है। इस लेख को पढ़ने के बाद मुझे लगा कि बापू के पढ़ने के लिए भेजूं तो कैसा रहे। ऐसी चीजों के लिए उनके पास समय है ही कहां? पर यदि बापू स्नानघर में इस पर निगाह डालने लायक समय निकाल सकें, तो उनके सामने रख देना। मैंने उस लेख पर निशान लगा दिया है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली आश्रम
बारडोली

७७

स्वराज्य आश्रम
बारडोली
२३ दिसम्बर १६४१

प्रिय घनश्यामदासजी

कार्यकारिणी की बैठक आज हो रही है। राजाजी की प्रतीति है कि किसी न किसी प्रकार का सर्वसम्मत फार्मूला खोज निकालने की कोशिश की जाएगी जिससे दोनों दलों में खुल्लम खुल्ला फूट की नौबत न आए। पर मुझे पता नहीं क्या होनेवाला है। मैं तो यही चाहूंगा कि बापू इस झमेले से हाथ झाड़कर अपने शुद्ध शांतिवादी रुख के प्रतिपादन में लगें। भांति भांति के राजनैतिक फार्मूलों में फंसने से कोई लाभ नहीं है।

हम लोग २१ जनवरी को बनारस जा रहे हैं। आप बापू से मिलने आएंगे क्या? उन्होंने स्वयं इस बारे में कुछ नहीं कहा है पर उनसे मिले काफी समय हो गया है और मिलना अच्छा ही रहेगा। आ सकें तो ठीक ही है। बनारस का प्रोग्राम कुछ अधिक भारी नहीं है। केवल विश्वविद्यालय की बैठक भर है—बस। बापू एक बार सारनाथ भी हो आना चाहते हैं। आप इसकी सूचना बड़े भाईजी (जुगलकिशोरजी) को भी दे दीजिए। स्यात उन्हें यह जानने में दिलचस्पी होगी कि बापू सारनाथ जा रहे हैं। जापान की करतूत के बारे में उनका क्या विचार है सो अवश्य जानना चाहूंगा। आशा है अब वहां उस आतंक का जोरदोरा नहीं रहा होगा। एक प्रकार से यह अच्छा ही हुआ कि शहर की बाधी छूट गयी।

सप्रेम
महादेव

७८

कलकत्ता
२७ दिसम्बर १९४१

प्रिय महादेवभाइ,

तुम्हारे पास से एक पत्र आया तो गनीमत है। इतने हफ्तो बाद जाकर कही पत्र लिखा है तुमने बडा सुख मिला। खुद मैंने कोई चिट्ठी इस कारण नही लिखी कि मुझे मालूम था कि तुम एक जगह से दूसरी जगह घूम रहे हो।

जब बापू बनारस जाएगे तो मैं वहा नही जाऊगा और बापू से मिलने के लिए बनारस एक आदर्श स्थान है इस बारे मे भी मुझे सशय है। उनका अपना प्रोग्राम भले ही भारी न हो पर उन्हे तरह-तरह के लोग अवश्य घेरे रहेगे। मैं तो वर्धा आना ही पसन्द करूगा और जल्दी ही—अर्थात जब कभी तुम्हें ऐसा प्रतीत हो कि वह कुछ खाली हैं। हो सकता है कि बारडोली से लौटने के तुरत बाद, पर अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के अधिवेशन से पहले उन्हे कुछ अवकाश रहे तो।

यह पत्र पाते ही एक तार बापू के प्रोग्राम की सूचना देने के लिए भेजोगे क्या ? हो सकता है भाईजी बनारस मे मौजूद रहे। यह जानकर कि बापू सारनाथ भी जाएगे वह आनन्द से विभोर हो गए।

कलकत्ता मे थोडी बहुत बेचैनी अवश्य है पर पत्रो मे जो कुछ निकलता रहता है उस पर कदापि विश्वास न करना। लोगो के लिए अपने बाल-बच्चे भेजना स्वाभाविक ही है। हा, कुछ दिन भगदड मची थी पर अब पहले-जैसी घबराहट नही है।

शुरू शुरू मे मेरा इरादा बडे दिन की छुट्टियो मे दौरे पर निकलने का था, पर फिर मैंने उसमे जान बूझकर हेर फेर कर दिया। परिवार की महिलाओ और युवको ने भी जान बूझकर कलकत्ता मे ही रहने का सकल्प किया है। यह अच्छा ही है। यदि मैं या हमम से कोई और यहा से थोडे दिनो के लिए भी जाता तो समाज मे और अधिक बेचैनी फैलना निश्चित था। पर अब पहले जैसी घबराहट नही है और यदि सब कुछ ठीक ठाक चलता रहा और यहा न जाने मे मुझे किसी असुविधा का बोध नही हुआ, तो मैं बापू के बारडोली से लौटने के तुरत बाद वर्धा आना चाहूगा। इसलिए मुझे उनके प्रोग्राम के बारे मे अवश्य लिखना।

केदार राय के बारे मे पूछताछ कर रहा हू। पर मैं जानता हू कि आदमी

मिथ्यावादी है। यह कहना गलत है कि उसे बम्बई म अपनी शिक्षा दीक्षा पर बहुत रुपया खच करना पडा। वास्तव म जब तक उसकी शिक्षा दीक्षा चलती रही रामश्वरदास बराबर रुपये पस से उसकी मदद करत रहे और मैं समझता हू कि वह खुद ही नही उसकी पत्नी भी बालिका विद्यालय म ड्राइग की शिक्षा देती है। इसलिए उसने जो कुछ लिखा है वह सब सत्य ही हा ऐसी कोई बात नही है। मुझे तो वह कभी विश्वासी और स्पष्टभाषी नही लगा।

वह दूसरा आदमी जिसने बापू के दिल्ली के प्रवासकाल मे उनके कई एक रखा चित्र तयार किय थ केदार राय के मुकाबल म अधिक स्पष्टवादी और ईमानदार है पर तो भी मैं इसक बार मे और अधिक जानकारी लूगा और वह सहायता का अधिकारी लगा तो मुझस जो कुछ हा सकगा, अवश्य करूगा।

मर पास हरिजन की फाइल नही है। इसलिए उसक जिस अक म बापू के रचनात्मक काय के सबध म १३ मुद्दे छपे थे, उसकी एक प्रति भेज देना।

आशा है आप सब सकुशल होगे।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

७६

बिडला हाउस
बम्बई
२८ १२ ४१

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं यह बताना भूल ही गया कि वर्धा म भी शातिपूवक बात करने योग्य वातावरण का अभाव रहेगा। हो सकता है कि कायकारिणी के सदस्य १३ तारीख को हानेवाली बठक म भाग लेने के लिए १० तारीख से ही जमा होने लगें और आपको बापू के साथ एकान्त म बात करने का सुयोग न मिले। इसके अलावा जमनालालजी के यहा कायकारिणी के सदस्य भी आकर ठहरेंगे इसलिए आपके ठहरने का प्रबध करने में भी कठिनाई होगी। तो भी ३१ तारीख को बारडोली

से लौटने पर मैं बापू से बात करूगा और तब निश्चित रूप म आपको लिखूगा। यह हो सकता है कि आपका सेवाग्राम म ही ठहरना पडे। वैसी स्थिति म बीच बीच म जब कभी बापू खाली दीखें उनस थोडी थोडी बातचीत हो सकती है। मैंने इन सब भावनाओं को आपसे कह देना उचित समझा।

इस दृष्टि स बनारस अपेक्षाकृत अधिक शान्त स्थान रहेगा। पर साथ ही यह भी है कि कार्यकारिणी और अखिल भारतीय कांग्रेस कमटी की बैठकें १६ तक खत्म हो जाएगी। इसलिए यदि आप १६ को वर्धा पहुच जाए तो आपके लिए बापू स बातचीत करने को १७ १८ और १९—तीन दिन उपलब्ध रहगे। हम बनारस के लिए १९ को रवाना होग। आप इन सारी बातो पर विचार करने के बाद मुझे लिखिय कि आपके लिए क्या करना सुविधाजनक रहेगा।

क्या दिल्ली के देवता इस बार कुछ पिघले ? या आपने उन तक पहुचने की कोई कोशिश ही नही की ?

सप्रेम
महादेव

८०

कलकत्ता
३० दिसम्बर १९४१

प्रिय महादेवभाई

इस पत्र के साथ एक पर्चा रखता हू जो देशपाण्डे ने राजपूताना से भेजा है।

प्रचार-कार्य एक अच्छा काम है, पर क्या बापू के पत्र उनकी लिखावट के ब्लाक बनवाकर पर्चों म छापना और इस प्रकार पैसा बरबाद करना अच्छा है ? ज्यादा अच्छा तो यह होता कि खादी और अधिक मात्रा म तैयार की जाती। इस समय मिल का कपडा इतना महगा हो गया है कि खादी के लिए उसकी होड म बाजी मारना बिलकुल शक्य है। ऐसा मालूम होता है कि हमारे लोग प्रचार कार्य म तो सिद्धहस्त हैं पर रचनात्मक कार्य उनके बूते के बाहर है। मुझे कहना पडता है कि यह प्रचार की व्याधि हमारे कार्यकर्त्ताओं मे अवाछनीय मात्रा मे जोर पकडती जा रही है। परिणामस्वरूप ठोस काम कम हो पाता है।

८१

पूज्य बापू

हम लोग कइ एक छात्रावास युक्त विद्यालय खोलने का विचार कर रहे हैं। जिनम मुख्यत हरिजन बालका को शिक्षा दी जायेगी, पर इनम सवण हिन्दू बालक भी शिक्षा प्राप्त करेंगे। अभी तक हमन ऐसे हरिजन छात्रवासो और हरिजन विद्यालयो की बातें की हैं जिनम अद्धशिक्षित शिक्षको द्वारा बुभुक्षित छात्रो को घटिया किस्म की शिक्षा मिले। अब तक यही धारणा रही है कि हरिजन बालकों अथवा दरिद्र बालको के लिए सस्ती शिक्षा की व्यवस्था होनी चाहिए। यह धारणा जान बूझकर भले ही कायम न की गई हो पर व्यवहार मे यही होता आ रहा है। मेरी समझ म यह एक निहायत दोषपूण सिद्धान्त है। जब तक हम इन सस्ती सस्थाओ म हरिजन बालको अथवा दरिद्र माता पिताओ के बालको को शिक्षा देते रहेंगे, वे अपन आपको हीन और नीचा समझने के उस सस्कार से छुटकारा नही पा सकेंगे जो उनकी जाति अथवा परिवार म बहुधा व्याप्त है। और ये सस्ते और अद्ध शिक्षित शिक्षक इन बालका का किस प्रकार की शिक्षा देंगे? निधन परिवारो के बालक इन सस्थाओ म मध्यम और उच्चतर श्रेणी के बालका के साथ नही हिल मिल सकेंगे। हरिजन बालको और सवण बालको तथा निधन बालका और समद्ध बालका के बीच पारस्परिक सम्पक के अभाव का परिणाम सबके ही लिए समान रूप स साघातिक होगा। इसलिए मरा सुझाव है कि छात्रावास युक्त विद्यालय सुन्दर स्थाना म स्थापित करें। य विद्यालय अपन यहा दी जानेवाली शिक्षा का स्तर इतना ऊचा बनाय रखें कि उनकी तुलना अव्वल दर्जे की साव-जनिक शिक्षण सस्थाओ के साथ हर दृष्टि स हो सक, और वहा राजा लोग भी अपने बालका को शिक्षा पाने के लिए भेजन म सकोच न करें। सबसे पहल हम परीक्षण के तौर पर फिलहाल ऐसे ही एक छात्रावास युक्त विद्यालय की स्थापना म सतोष करना चाहिए।

एस विद्यालया म मटिक तक की शिक्षा की व्यवस्था हो और य विश्व विद्यालय के पाठ्यक्रम को अपनाए। इन विद्यालया के साथ छात्रावास अवश्य होने चाहिए। इनकी यही विशेषता होनी चाहिए कि प्रत्येक बालक की शिक्षा दीक्षा और रहन-सहन विद्यालया तथा छात्रावासो के व्यवस्थापका के ध्यान का विषय

रह। शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। अग्रेजी की शिक्षा एक भाषा के रूप म दी जाए। बालक जब तक विद्यालय म शिक्षा पाता रह उस अपने हाथो का अधिक से-अधिक उपयोग करन का प्रोत्साहित किया जाए। बालक का आत्म निभरता की शिक्षा देनी चाहिए आर ऊच नीच के भेद भाव को आमूल नष्ट करने की दिशा मे विशेष रूप म प्रयत्नशील रहना चाहिए।

पर मटिक की तयारी के लिए जितने समय की साधारणतया जरूरत होती है हम उसस दो वष अधिक समय लेना चाहिए। इसके अतिरिक्त दो वर्षों म छात्र का मटिक की तयारी कराने के अलावा कोइ दस्तकारी सिखानी चाहिए। इन अतिरिक्त दो वर्षों का उपयोग बालक को निम्नलिखित तीन प्रकार की दस्तकारियो म से किसी एक म पारगत करन तथा उसकी साधारण जानकारी पूरी करने म करना चाहिए।

बालक तीन दस्तकारियो म स कोई भी ले सकता है

(१) रुइ धुनना और कातना कपडा बनाना रगना और स्वच्छ करना।

(२) बढ़इ या लुहार का काम।

(३) कागज बनाना जिल्दसाजी और साधारण कम्पोजिग।

हमारा लक्ष्य यही हो कि जो स्टाफ रखा जाय अव्वल दर्जे का हो। उसम जो लोग निय जायें अपने अपन हुनर म माहिर हो उन्हे अच्छा वतन दिया जाए। वे बालको को इतना निपुण कर द कि जो लडक मट्रिक करने के बाद उच्चतर शिक्षा के लिए कालेज जान की इच्छा रखते हो उन्हे छोडकर बाकी सब विद्यालय की पढ़ाई समाप्त करके अपनी अपनी दस्तकारी की शिक्षा-दीक्षा के अनुरूप काम पा सक या अपना काम चला सक।

विश्वविद्यालय के पाठयक्रम के अनुरूप शिक्षण काय व दस्तकारी का प्रशिक्षण देन तथा बालक का साधारण जानकारी से परिपूण करने के अतिरिक्त उसकी शारीरिक उन्नति की ओर भी पूरा ध्यान देना होगा। बालक खेल कूद व्यायाम घुडसवारी तराकी आदि म भाग लेगा। साथ ही उसे सगीत का भी ज्ञान कराया जायगा। धार्मिक शिक्षा के प्रति उदासीनता नही बरती जायगी। अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णुता का पाठ पढाया जायेगा। साथ ही साथ उस अपनी सस्कृति सभ्यता स प्रेम करना भी सिखाया जायगा।

अच्छी-स-अच्छी शिक्षा देन के लिए निपुण से निपुण शिक्षकों को अच्छे स अच्छे वतन पर रखा जायगा।

बालकों को जो भोजन दिया जाये वह पौष्टिक सतुलित और वज्ञानिक ढग स स्थिर किया गया होना चाहिए। भोजन खर्चीला भले ही न हो, पर उसम फल

दूध और दूध से तयार किय गय पदार्थों व शाक सब्जी का यथेष्ट परिमाण म समावेश रहना चाहिए।

जितने विद्यार्थी लिये जाए, उनम से आधे हरिजन हो। उनका शिक्षण, भोजन और आवास नि शुल्क रह। बाकी आधे विद्यार्थियो से जो सवर्ण होगे पूरी फीस ली जायेगी। जो बालक निधन होग, उन्ह नि शुल्क सारी सुविधाए दी जायेंगी।

एक अच्छा हाईस्कूल किस ढग का होना चाहिए इस बार म मेरी अपनी कल्पना का यह एक धुधला चित्र मात्र है।

मेर द्वारा अकित की गई इस रूप रेखा के बार म कुछ मतभेद है। कुछ लोगो का कहना है—हम मैट्रिक की शिक्षा दें ही क्या ? कुछ अ य लोग कहते है—हम उच्च कोटि की शिक्षा देकर दूसरो के लिए गलत उदाहरण पश करेंगे। यह दलील भी पश की गई है कि हम भले ही सुदक्ष और माहिर लोगो को बुलाए पर केवल उन्ही को लें जो आत्मत्याग की भावना से ओत प्रोत हो और इस कारण थोडे शुल्क पर शिक्षा देन को राजी हो जाए। इसका मतलब यह हुआ कि इस सस्था म केवल उन्ही लोगो क लिए स्थान रहे जो बलिदान की भावना से प्ररित होकर सीधा सादा जीवन व्यतीत करें। कुछ एस लोग भी हैं जिनका कहना है कि यदि हम हद दर्जे का आत्मत्याग करन लायक व्यक्ति न मिलें तो सस्था को जन्म नही देना चाहिए।

मुझे यह सब कुछ अव्यावहारिक लगता है। मुझे इस बार म दलील पश करन की जरूरत नही ह। वास्तव म दलीलें स्वय ही स्पष्ट हैं। मैं तो नही समझता कि ग्रामीणो की इतनी भारी सख्या को यह तौर-तरीका अपनाकर शिक्षित किया जा सकता है। सत और महात्मा कहने मात्र स उपलब्ध नही हो सकते। प्रत्येक गाव म एक एक सेवाग्राम स्थापित करना कहा तक सम्भव है ?

इस बार म आपकी जो राय हो उसे व्यक्त करने की कृपा करिये।

स्नेहभाजन,
घनश्यामदास

८२

सेवाग्राम, वर्धा

प्रिय घनश्यामदासजी

२६ का आपका पत्र मिला। ग्वालियर का तो बापू ने ही निश्चित कर लिया था और वह भी हरिभाऊ उपाध्याय के आग्रह पर और कोई नही तो हरिभाऊ तो हैं ही। अभी देखें, क्या होता है। मुख्य तो उन्हें मंडल परिषद का उदघाटन ही करना है—अध्यक्ष तो होना नहीं है। परंतु आपने सावधान (सावधान) किया है यह तो अच्छा ही है।

टेगोर स्मारक के लिए सप्रूवाले लोगो ने बडी कमेटी बनाइ है, और भी बनाने जा रहे हैं। राजेंद्र बाबू और जमनालालजी को भी कहा है सरदार के पास भी पत्र आया है। राजेंद्र बाबू ने एक पत्र लिखकर पूछा है कि स्मारक के उद्देश्य क्या हैं कहा कहा से पैसा लाना यह तय किया है। अगर वे लोग ही सब करने के लिए तैयार हो तो हमारा बोझ उतर गया। राजेंद्र बाबू को क्या जवाब मिलता है देखेंगे फिर आपको लिखूगा।

विधान बाबू को तो अभी बुलाने की आवश्यकता नही मालूम होती है, क्योंकि सरदार अच्छे हो रहे हैं और बापु को तो विश्वास है कि सरदार पूरे अच्छे होकर ही यहा से जायेंगे।

बापु का बी० पी० (रक्त चाप) कुछ बढ गया था पर अभी फिर नामल है।

आपका
महादेव

साथ का शायद आपको दिलचस्प लगे। आप फूल बाग का शौक रखते हैं फूलो से घर को कैसे सजाना यह भी देखिये। एक दक्षिण अफ्रीका के मासिक में से मैंने काटा है।

१९४२ के पत्र

१

१ जनवरी, १९४२

प्रिय महादेवभाई,

वर्धा आने के बारे में मेरा कहना यह है कि वहां मैं काफी दिनों बाद जा रहा हूं इसलिए बापू के साथ निर्विघ्न कुछ समय बिताना चाहूंगा। यदि तुम्हें लगे कि बनारस जाने से पहले उन्हें अवकाश नहीं रहेगा तो मैं उनके बनारस हो आने के बाद ही वर्धा आना पसन्द करूंगा।

बारडोली में जो कुछ हुआ वह कुछ मिलाकर मेरी समझ में अच्छा ही रहा। बाकी मिलने पर।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

२

स्वराज्य आश्रम,
बारडोली
२ १ ४२

प्रिय घनश्यामदासजी,

बम्बई से लौटने के बाद मैंने बापू से बात की थी। उनका कहना है कि सबसे अच्छा तो यही रहेगा कि आप १७ को वर्धा आ जायें, और १९ तक वहीं रहें। १९ को हम बनारस के लिए रवाना हो रहे हैं। तभी आप यह भी निश्चय कर लेंगे कि आप हमारे साथ बनारस जा सकेंगे या नहीं। १७ तारीख को सुबह से बाद कार्यकारिणी के सदस्यों के लिए वर्धा में बने रहने की सम्भावना नहीं है क्योंकि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक दो दिन से अधिक नहीं चलेगी।

बापू को यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि आप कलकत्ता में दृढ़तापूर्वक डटे रहे

और इस प्रकार भगदड व आतक का शात रखन म सहायक हुए।

आज यहा रामेश्वरदासजी आनवाल थ पर अभी तक नही आय हैं। जिस दिन मैं वहा स चला था वह कुछ अस्वस्थ लग थ, उन्ह कुछ सर्दी की शिकायत थी। आशा है, कल तक आ जायेंगे। यहा इस समय उतनी भीड नही है इसलिए कुछ समय शाति क वातावरण म बिताना सम्भव होगा।

सप्रेम,
महादेव

३

५ जनवरी १९४२

प्रिय महादेवभाई

पहली फरवरी को फ-रेशन आफ इडियन चम्बस आफ कामस की बठक दिल्ली म होनेवाली है। अत मरा वर्धा होत हुए दिल्ली जाने का विचार है। यदि बापू २५ को वहा हा, तो मैं उस समय तक वहा पहुच सकता हू। पर स्वय बापू का किसी कारणवश दिल्ली आना न होगा, यही कौन बता सकता है ? यदि बापू २५ को खाली रह तो वह दिन मर लिए नियत रखने की बात मत भूलना।

सप्रेम,
घनश्यामदास

४

७ जनवरी, १९४२

प्रिय महादेवभाई

हाल ही म मैंने सर्वोदय मे पढा था कि बापू रचनात्मक कायक्रम पर एक निब ध-माला लिख रहे हैं। यह बतलाना कि क्या व लेख निकल चुके है, या अभी निकलने बाकी है। यदि निकल चुके है या निकलेंगे तो कौन से पत्र मे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाई
बारडोली

५

८ जनवरी, १९४२

प्रिय महादेवभाई,

आखिरकार महावीरप्रसादजी रिहा हो ही गये। यह अच्छा हुआ।

'सर्वोदय' में बापू का रचनात्मक कार्यक्रम के ऊपर लिखा लेख देख लिया है। बड़ा रोचक है। अभी थोड़ा ही पढ़ पाया हूं। पूरा पढ़ूंगा और दुबारा पढ़ूंगा और उसके बाद इस विषय पर बापू से विचार विमर्श करूंगा। पर इस बीच इतना तो कह ही दूं कि उसका हिन्दी अनुवाद बेहद असंतोषजनक है। यदि काका कालेलकर के साथ साक्षात्कार का संयोग हो, तो उनसे यह अवश्य कहना कि जिस पत्र का सम्पादन वह स्वयं और दादा धर्माधिकारी कर रहे हों उसमें तो बापू के लेखों का अच्छा अनुवाद निकलना चाहिए था।

यह जानकर ढाढ़स बंधा कि हरिजन जल्दी ही निकलेगा।

अधिक मिलने पर,

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
बारडोली

६

सेवाग्राम,
वर्धा होकर
११ जनवरी ४२

प्रिय घनश्यामदासजी

पोस्टकार्ड भेज रहा हूं कुछ खयाल मत कीजिएगा। बापू २५ तक जरूर वापस लौट आयेंगे। वह दिन उनके लिए पूरा सुविधाजनक रहेगा। १७ और १८ को भीड़ भाड़ हो सकती है और २५ उनके लिए भी उतनी ही सुविधाजनक रहेगी, जितनी आपको।

बसन्तकुमार न एक पत्र की याद दिलाइ है जो उन्होंने मुझे कुछ समय पहल लिखा था और जिसका उन्हें अभी तक कोई उत्तर नहीं मिला है। कृपा करके उनसे कहिये कि वह पुन लिखें क्योंकि मुझ उनका वह पत्र नहीं मिला।

सप्रेम
महादेव

७

१५ जनवरी, १९४२

प्रिय महादेवभाई

महावीरप्रसादजी पोद्दार के हाथों दो मित्रों की दो भेंट भेज रहा हूँ। एक गहनों की पिटारी है। गहनों की सूची महावीरप्रसादजी को द दी है। ये गहने श्री नर्सिंहदासजी बाजोरिया की स्वर्गीया धम पत्नी के है। नर्सिंहदासजी की अभिलाषा है कि इन गहनों का रुपया बापू जिस सुकार्य मे लगाना उचित समझें लगा दें। मैंन उन्हें कह रखा है कि बापू शायद इसका उपयोग अस्पृश्यता निवारण अथवा खादी काय म करना चाहग। नर्सिंहदासजी ने मुझ जो पत्र लिखा है उसमे कई एक सुझाव पश किये है जो मुये कुछ कम जचे हैं। पर बापू स्वय विचार कर ल। नर्सिंहदासजी का मूल पत्र साथ भेजता हू। गहनों की पहुच और बापू का सदेश भेजना।

दूसरी भेंट एक मित्र की ५ ०००) की हुण्डी है। इस मित्र की अभिलाषा है कि बापू इस रुपय का उपयोग जिस लोकोपकारी काय मे करना उचित समझें, कर लें। मेरे कुछ मित्रों म आजकल यह रिवाज सा हो गया है कि जब कभी कोइ बीमार पडता है तो व दान का सकल्प करते हैं और रुपया बापू को भेज दते है। यह रुपया भी वसे ही सकल्प का है। जिस रोगी ने यह सकल्प किया था वह अब अच्छा खासा है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाइ देसाई
सेवाग्राम

सलग्न सूची

पेटी मे गहन इस प्रकार हैं

(१)	वोर १	
(२)	माकली जडाऊ १	१४॥)
(३)	खेंचा	८।)
(४)	जडाऊ हार नग १ पुरानी चाल का	७६)
(५)	गलपटिया १ जडाऊ	६)
(६)	वडा जडाऊ जोडी नग १ लहर की जोडी १	१३॥)
(७)	गट्टा नौचरी नग १	१५॥)
(८)	पहुची नग १ जडाऊ	६)
(९)	तागडी नग १	२१)
(१०)	चावी का गुन्छा १	६॥।)
(११)	हथफूल जडाऊ (३ छल्ला १ फूल १ पट्टा १ झूलरा टूटा हुआ टुकडा।)	२१॥।)
(१२)	सिरपच नग १ पन्ना का जडाऊ	१७१)
(१३)	सिरपेच नग १ हीरे का जडाऊ	१४)
(१४)	मोती चौकडा नग २	
(१५)	पछेली नग ४ साने की	२१)
(१६)	कडा नग ४ सोन का	२०॥)
(१७)	अणत नग २ सोन का	१२)
(१८)	हार नग १ सान का	७॥।)
(१९)	सुगनिया नग ४ (दो छोटा दो वडा)	३॥)
(२०)	कठला नग १ (७ मुरती का)	१०)
(२१)	सिक्के ७ सान क (१ वडा ६ छोटे)	७)
(२२)	डिब्या नग १ सान की (टिब्बी म लड जडाऊ २ बटन ७ मिरी १)	४)
(२३)	बटन नग ४—साथ म ३ माती (२ वडा १ छोटा) बटन रिंग ४	१)
		७४१॥)

मोती के गहनों की सूची (मोती सब सच्चे हैं)

(१) पछेली नग ६

(२) अणत नग २ ....

वसन्तकुमार न एक पत्र की याद दिलाई है जा उन्हान मुझ कुछ समय पहल लिखा था और जिसका उन्हें अभी तक कोई उत्तर नही मिला है। कृपा करक उनसे कहिय कि वह पुन लिखें क्योंकि मुझे उनका वह पत्र नही मिला।

सप्रेम,
महादेव

७

१५ जनवरी, १६४२

प्रिय महादेवभाई

महावीरप्रसादजी पोद्दार के हाथा दो मित्रा की दो भेंट भेज रहा हू। एक गहना की पिटारी है। गहनो की सूची महावीरप्रसादजी का दे दी है। य गहने श्री नर्सिहदासजी वाजारिया की स्वर्गीया धम पत्नी के ह। नर्सिहदासजी की अभिलाषा है कि इन गहना का रुपया बापू जिस सुकाय म लगाना उचित समझें लगा दें। मैंने उन्हें कह रखा है कि बापू शायद इसका उपयोग अस्पृश्यता निवारण अथवा खादी-काय म करना चाहेंग। नर्सिहदासजी न मुझे जो पत्र लिखा ह उसम कई एक सुझाव पेश किय है जो मुझे कुछ कम जच हैं। पर बापू स्वय विचार कर लें। नर्सिहदासजी का मूल पत्र साथ भेजता हू। गहना की पहुच और बापू का सदेश भेजना।

दूसरी भेंट एक मित्र की ५ ०००) की हुण्डी है। इस मित्र की अभिलाषा है कि बापू इस रुपय का उपयोग जिस लाकोपकारी काय म करना उचित समझें, कर लें। मरे कुछ मित्रो म आजकल यह रिवाज सा हो गया है कि जब कभी काइ बीमार पड़ता है ता व दान का सकल्प करते हैं और रुपया बापू को भेज देत हैं। यह रुपया भी वस ही सकल्प का है। जिस रागी न यह सकल्प किया था वह अब अच्छा खासा है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादवभाई देसाई
सवाग्राम

पेटी में गहने इस प्रकार हैं

(१) बार १	
(२) माकनी जड़ाऊ १	१४॥)
(३) खूँचा	८।)
(४) जड़ाऊ हार नग १ पुरानी चाल का	२६)
(५) गलपटिया १ जडाऊ	६)
(६) बडा जड़ाऊ जाटी नग १ लहर की जाटी १	१३॥)
(७) गट्टा नौचरी नग १	१५॥)
(८) पहुँची नग १ जडाऊ	६)
(९) तागडी नग १	२१)
(१०) चाबी का गुच्छा १	६।॥)
(११) हथफूल जड़ाऊ (३ छल्ला १ फूल, १ पट्टा, १ फूलका टूटा हुआ टुकडा।)	२१।॥)
(१२) सिरपच नग १ पन्ना का जड़ाऊ	१२।)
(१३) सिरपच नग १ हीरे का जडाऊ	१४)
(१४) माला चौकड़ा नग २	
(१५) पछेली नग ८ मोने की	२१)
(१६) कड़ा नग ४ सोने का	२०॥)
(१७) अणन नग २ सोने का	१२)
(१८) हार नग १ मोन का	७।॥)
(१९) मुरलिया नग ४ (दो छोटा दो बड़ा)	३॥)
(२०) कठला नग १ (७ मुरती का)	१०)
(२१) सिक्के ७ सोन क (१ बडा ६ छोटे)	७)
(२२) टिक्या नग १ सोन की (टिक्की म लड जडाऊ २ बटन ७, मिरी १)	४)
(२३) बटन नग ४—साथ म ३ मोती (२ बडा १ छोटा) बटन रिंग ४	।)
	२५१॥)

मोती क गहना की सूची (मोती सब सच्चे हैं)

(१) पछेली नग ६

(३) तागडी नग १	१४॥)
(४) साक्ली नग १	
छाप २	२।)
मुरलिया २	२॥।)
(५) खेंचा मोती का	५)
(६) मुरलिया	॥।=)
(७) हाथ के बाधने का जतर २	५॥।)
(८) एक प्रकार का गहना—नाम मालूम नही	१२।)
(९) कडा ४ छड २ चूडी ८	१३॥।)
	१०३=)

हीरे का काटा १ जडाऊ—जडाव की वटन ७
काटा नाक का हीरे का
हीरे का वटन १ गले का
हीरा नग १ कीमत अन्दाज ५००)
मोती का छाप २
नथ माथे की छोटी और सिरी सोने की काकरू १ क्लिप २
खुखरी १ सोने की

एक डिब्बी मे रखे गहने

१ लड पाय हुए मोतियो की
१ माणक रत्ती ५ करीब का। अन्दाज २५००) का
२ मुरलिया २ सोन का जडाऊ
६ सोन की खुदरा चीजें
१ मुरती सोने की

८

सेवाग्राम
(वर्धा होकर)
२७ २ ४२

पूज्य बिडलाजी

सादर प्रणाम।

आपका खत मिला। पिताजी को पूरी तरह आराम दिया जा रहा है। खान पीने म परहेज रखते हैं इसलिए कुछ अशक्त ह। कल शाम का किशोरलालभाई से बात कर रहे थे, तब उन्हे फिर से चक्कर आ गये। ब्लड प्रेशर लिया तो ११२ ८८ था। अशक्ति के कारण ही चक्कर है। नाडी कुछ देर तक इररेग्यूलर (अनियमित) रही।

सेवाग्राम से बाहर जाने की पिताजी की कम इच्छा है और पू० बापू का रुख भी वैसा ही जान पडता है। बापू कहते थे कि अगर जरूरत महसूस करेंगे तो अप्रैल म कही भेज देंगे।

वनमालाबहन का कल से सब कुछ खाने की इजाजत मिल गई है वहआपको प्रणाम भेजती है।

आपका विनीत
नारायण[1]

१ महादेवभाई का लडका

९

नासिक रोड
२८ २ ४०

पू० बापू

पुरुषोत्तमदास का मेरे नाम खत आया है वह इस पत्र के साथ भेजता हू। मैंने उसका जो जवाब दिया है उसकी नकल भी साथ म भेजता हू। इसमे सारी हकीकत आ जाती है।

यह तो मुझे भी लगता है कि हमको साम्प्रदायिक मामले में कुछ प्रयत्न तो करना चाहिए। पर सिवा इसके कि राजाजी को जिन्ना से मिलने के लिए प्रोत्साहन दिया जाय दूसरी बात ध्यान में नहीं बैठती। ना अगर आपको उत्साह हो तो आप जिन्ना को लिखें कि इस समय स्थिति विकट है और कम से कम देश की शांति के लिए आपका और उनका मिलना आवश्यक है और आप उसमें बहैसियत हिंदू नेता के नहीं पर एक कांग्रेस नेता के मिलना चाहते हैं।" क्या उसको इसमें कोई उज्र होगा? अगर इस पर वह रजामंद हो तो आप उससे मिलें। इसमें कोई लाभ होगा ऐसा मानने के लिए कोई कारण नहीं है। कम से कम नुकसान नहीं होगा ऐसा माना जा सकता है। पर वह भी आपको ऐसा लगता हो तो। हां राजाजी का और जिन्ना का स्वाभाविक तौर पर मिलना अच्छा है ऐसा मैं मानता हूं। जिन्ना अगर आपसे मिलने के लिए इन्कार करेगा तो वह खोता है। पर यह प्रयत्न भी कहां तक सही है मैं नहीं जानता। जो हो पुरुषोत्तमदास के खत का जवाब आप उनके लिए मुझे भेजें और विस्तारपूर्वक समझाकर भेजें। संक्षेप में वे नहीं समझ सकेंगे।

विनीत
घनश्यामदास

१०

सेवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
१ ३ ४२

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। मेरा जाना निरर्थक और नुकसानकारक भी हो सकता है। नुकसानकारक इस निगाह से कि मेरे जाने का परिणाम अमल में आये तो निराशा बढ़ेगी। यों भी मेरा कायदआजम से मिलना अशक्य-सा लगता है। लेकिन राजाजी को मैंने खूब प्रोत्साहन दिया है वे प्रयत्न भी करेंगे। नतीजा देखा जायगा। मेरा अभिप्राय है कि समझौता होनेवाला है नहीं। हमारे समझौते के बाहर जो हो सकता है करना चाहिये। समझौते के विश्वास से बैठे रहने से बड़ा

नुकसान होने का सभव है। मेरा अभिप्राय है कि समझौते के बाहर सफल प्रयत्न हो सकता है।

मैंने सुन लिया कि तुम्हारा प्रयोग ठीक चल रहा है।

बापु के आशीर्वाद

११

सेवाग्राम,
वर्धा (सी० पी०)
१ ३ ४२

भाई घनश्यामदास

महादेव की चिंता न करें। वह अच्छे हैं। आराम तो देना ही। मानसिक आराम की बडी आवश्यकता है। आज तो बहार भेजने की इच्छा है।

तुमारा प्रयोग ठीक चलता होगा। वजन और शक्ति का कम ?

जमनालालजी के बारे में लिखा था उसका क्या ?

बापु के आशीर्वाद

१२

सेवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
५ मार्च १९४२

भाई घनश्यामदास

आज वैद्यराज को मुक्ति दी। मैंने तो बा के आश्वासन के कारण इतने दिन तक रोक लिये। अब तो बा भी राजी हो गई हैं इसलिये उनको मुक्त करता हू। आशा है कि यहा के काम मे कुछ रुकावट पैदा नही हुई होगी। इतने दिन रोकने के बाद ऐसा निर्णय निरर्थक लगता है लेकिन ऐसा है नही क्योंकि भविष्य म

आदमी सावधान होता है। मुझे करना यह चाहिए था कि प्रथम मैं जान लेना चाहिए था कि सचमुच यहां के दवाखाने में कुछ रुकावट पैदा होगी या नहीं—बोलो तो मैंने तुमसे पूछा था लेकिन या हां जब तो जो हुआ सो हुआ। नारायण दास सज्जन है।

बहार की गरमी का कुछ आक्रमण लगा कि भीतर की कम भी हो मक्खन मैंने कम कर दिया। गरमी के दिनों में मक्खन की मात्रा कम करना ही होगा। बहार या भीतर की गरमी के लिए पत्ती भाजीयां गाजर प्याज नारंगी मलाई की मात्रा बढ़ाई जाय। इनमें भी टमाटर या पत्ती और मलाई सर्वोत्तम है।

बापु के आशीर्वाद

१३

सेवाग्राम
६ मार्च १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

अबकी बार मैं क्या बीमार पड़ा ठीक समझ में नहीं आया। हद से ज्यादा परिश्रम मैं नहीं करता था आगे जितना परिश्रम किया है उतना तो मैंने किया नहीं। आपके साथ न आया वह तो ठीक ही किया। क्योंकि यहां मिट्टी मालीश वगैरह के जो इलाज किए गए वह नहीं हो सकते और आपको मैं काफी झंझट में डालता। दो दिन के बाद याद आया कि कलकत्ते में आते हुए गिरने से सख्त चोट खाई थी। ट्रेन में ऊपर की बर्थ (शायिका) से मार लगी। चोट का परिणाम उस वक्त तो कुछ नहीं हुआ क्योंकि सो गया पर वर्धा उतरते ही चक्कर आने लगे और नासिक जाने लगा तब भी वही हालत हुई—यह सब उस चोट के परिणाम हो सकते हैं। इतने दिन आराम ही लिया। जहां चोट आई थी वहां तीन चार दिन काफी दर्द मालूम हुआ अब वह दर्द तो बिलकुल शांत है। पर आंखों में कुछ पीड़ा ईचिंग पेन (टीस) है। मिट्टी के इलाज से वह भी शांत हो जाय ऐसा मालूम होता है। पर न शांत हो तो वहां आने का विचार है—डॉ० श्राफ को दिखा सकते हैं और जोशी भी देख लेगा। बापू के साथ विचार नहीं किया क्योंकि अब तक मिट्टी पर विश्वास लगाये बैठा हूं। कल तक कातना भी बन्द था। कल से

आध घण्टा कातने लगा हू। खत भी कल तक एक भी नही लिखा। कल तक राजाजी को और आज यह आपको लिख रहा हू। बिना पढे तो रहा नही जाता। इसलिए थोडा कुछ पढ लेता हू पर वह भी बहुत कम।

एक रोज आप बादल के कई प्रकार बताते थे—या तो मारवाडी भाषा म कई नाम बतात थ। एक नाम था 'चौथरी'। टेनीसन का एक छोटा सा मधुर काव्य है 'द बगर मेड (भिखारिन बालिका) उसम इस भिखारिन क चीथरे कपडे को बादल की उपमा दी है—

शरद चन्द्रिका सी वह सुन्दर नारी
परिवेष्टित है मेघ पुज सम गूदड से।

कितना स्वाभाविक और सुन्दर है !

आपके जाने के बाद सूना सूना लगा—शायद बेकार पडे रहने की वजह से अधिक हो।

बस यह तो केवल लिखने के लिए ही लिखा। वहा के वातावरण म कुछ नई हलचल दिखाई देती है क्या ?

आपका
महादेव

जानकीबहन कल से यहा रहने आ गई।

१४

सेवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
१० मार्च १९४२

प्रिय घनश्यामदासभाई

आपका पत्र कल मिला। पू० बापू को दिखाया वे कहते हैं कि जो आप कहते है वह ठीक है। बापू रोटी या दूध बढा नहीं सकते। कोशिश की है पर पेट म गडबड हो जाता है। अब उन्होंने एक आउंस बादाम पेस्ट यानी पीसे हुए बादाम लेना शुरू किया है। कल वजन आधा पौंड बढा है।

महादेवभाई अच्छे हैं। थोडा थोडा काम करने लग गये हैं। आज डा० जीवराज और गिल्डर बम्बई मे आए हैं और महादेवभाई और बा का पूरी तरह मुआइना किया। बा को तो क्रानिक ब्राकाइटिस है। महादेवभाई को थोडा काम करने की इजाजत दे दी है। लेकिन आखें दिखाने के लिए कहा है। काम बहुत

करते हैं। लाग भी काफी आत हैं लकिन इमम तो व बच नहा सक्त।

कल रामेश्वरभाई ने आदमी व हाथ खत भेजा था। कमेटी बना ली है और रुपया भी मागा है। बापू के हरिजन म छोटा सा नोट भी लिखा है।

वकिंग कमेटी १७ को हागी। बापू को तो तग करेंगे ही।

आप हमार कालेज पर मेहरबानी रखत हैं। आपक सहयोग के बिना हम मुश्किल पडती। मरा दद अभी पूरा पूरा गया नहीं। कुछ कमजोरी भी मालूम देती है।

आप कुशल होगे।

आपकी
अमृतकुवर

१५

सवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
१२ माच १६४२

प्रिय घनश्यामदासभाई

यह तार आज आया। बापू कहत है आपके पास भेजना चाहिए। मैं ता फाड देने वाली थी।

क्रिप्स के आने की खबर रात सुनी। आज चर्चिल की घोषणा भी बापू क पास आई। प्रस क लाग उनस स्टेटमट मागते हैं लकिन कह दिया है कि चर्चिल की सलाह क अनुसार मौन रखेंग।

देखें क्या हाता है? इन लोगा के पास सामान वगरा लडाई के लिये तो कुछ है ही नहीं या कुछ कर नहीं पाते तो हम भी इनके साथ डूबेंगे सिवाय इसके कि हम बापू का पीछा बहादुरी स कर सकें।

महादेवभाई अच्छे है। आखो के लिए कब बम्बई जाना है अभी पक्का नहीं।

बापू अच्छे हैं। बा की तबीयत ठीक नहीं होती।

मरा सादटिका पहले मे बहुत बेहतर है।

आप कुशल होगे। खाने का प्रयोग वसा ही चलता है?

आपकी
अमृतकुवर

१६

१४ माच, १६४२

प्रिय राजकुमारीजी,

मेरी मिल मे पिछल ७ दिन स हडताल चल रही है। यद्यपि आजकल बाकायदा नोटिस दिय बिना हडताल करना गर कानूनी है तथापि हमन पुलिस से सहायता की माग नही की है। इससे सवत्र शाति है। हमने तब तक के लिए मिल बन्द कर दी है जब तक मजदूरा को अपनी भूल का नान न हा जाए और वे बिना शत काम पर न लौट आए।

मैं यह इसलिए लिख रहा हू कि यदि इस मामले मे बापू के पास इस आर म कोई पहुचे ता उन्हें स्थिति की पूरी जानकारी रहे।

भवदीय,
घनश्यामदास

श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर
सवाग्राम

तार

दिल्ली
११ माच १६४२

महात्मा गाधी
वर्धागज

८ तारीख स बिडला मिल म धरना हडताल चल रही है आपके पथ प्रदशन और हस्तक्षप की जरूरत ह।

—रामचद्र त्यागी

हडताल समिति बिडला लाइ स

१७

सेवाग्राम,
वर्धा (सी० पी०)
१८ ३ ४२

प्रिय घनश्यामदासभाई

आपके सेक्रेटरी का पत्र और बादाम की रेलवे रसीद आज मिली। बापू कहते हैं कि अब तो बादाम का यहां बाजार लग जायेगा।

मैं तो कई दिनों से कह रही हू कि बापू को स्कार्च्ड अर्थ पालिसी (सर्वस्व भस्म कर देने की नीति) के बारे में कुछ लिखना चाहिए। अच्छा हुआ आपने भी जोर दिया है। अब लिखेंगे।

बापू की सेहत ठीक है। थकान तो हो जाती है। अब तो दिन भर बातें चलती हैं। मौलाना साहब कल से यहां आए हैं और आज जवाहरलालजी भी आ गये होंगे। २ बजे से बातें शुरू होंगी।

महादेवभाई की तबीयत ठीक है। अभी उन्हें काम पर वापिस आने की इजाजत नहीं मिली है पर थोड़ा बैठ उठ कर लेते हैं।

मैं अब अच्छी हू। वा का भी ठीक चल रहा है। आचार्य नरेन्द्रदेव यहां परसों से हैं। दम के दौरे से बहुत परेशान हैं। बापू पर बीमारों का काफी बोझ रहता है। जल्दी में

आपकी,
अमृतकुंवर

१८

सेवाग्राम
१४ मार्च १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। आप कहते हैं सो ठीक ही है। आहार में बड़ा परिवर्तन करना पड़ेगा। काफी कर लिया है—काम में भी नियमितता आ जायगी। अभी करीब-करीब आराम ही लेता हूं।

बापू पर लिखा हुआ आपका पत्र देखा। मेरे पुरुषोत्तमदास का एक पत्र मेरे पास आया था—मेरी बीमारी में सहानुभूति का। (आपकी सूचना से ही लिखा होगा।) उनको मैंने लिखा था कि स्कार्च्ड अर्थ पालिसी (सर्वस्व भस्म कर देने की नीति) के लिए जो आपने किया वह बड़ा उचित था और उस बारे में छोटा नोट भेजने के लिये मैंने उन्हें लिखा था। आज ही उनकी नोट आई है अच्छी है। बापू कुछ लिखेंगे। बापू तो स्कार्च्ड अर्थ पालिसी से नान वाइलेन्स (अहिंसा) की पुष्टि से भी खिलाफ हैं। आपने ऐक्शन (कर्म) मोशन (हलचल) के भेद का बड़ा सुन्दर उदाहरण दिया है। एक्शन में विचार और विवेक है मोशन यानी विचार और विवेक का अभाव। एक्शन यानी सच्चा निष्काम कर्म मोशन यानी अकर्मण्यता—पमिविटी इनटश्य। मास्टरजी ने मोशन की बात करके तो कमाल कर दिया। अब मैं समझ सकता हूँ आप मास्टरजी को हरदम अपने साथ क्यों रखते हैं।

आपका

महादेव

क्रिप्स भले आवें। बापू से वह क्या पायेगा? जवाहरलाल और राजाजी को वह संतुष्ट कर सके तो अच्छा है।

म०

१९

सेवाग्राम

वर्धा (सी० पी०)

१५ ३ ४२

भाई घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। वैद्य ने मेहनत तो बहुत की। लेकिन बा को चाहिए सो आराम नहीं हुआ। अब एक नैसर्गिक उपचारक आया है उसमें काफी दोष है। लेकिन कुछ जानता है। आज चौथा दिन है। बा को अच्छा लग रहा है। बा को तीन दिन तक आकड़े के दूध से कै करवाई उससे बलगम निकला और कुछ शांति हुई। उजाड़ करने की नीति के बारे में लिखूंगा।

नासिक सनिटारियम म किसी का मैं भेज सकता हू क्या ? अभी सनिटोरियम म जगह नही रहती है। भरा रहता है तो खास जगह मैं नही चाहता हू ऐसी कोई खास तजवीज की आवश्यकता नही है।

भाऊजी का यहा आने की खास तकलीफ देना नही चाहता हू—स्वेच्छा से आवे तो मुझे अच्छा लगेगा।

बापु के आशीर्वाद

२०

१७ मार्च १९४०

प्रिय महादेवभाई

मैं आज कलकत्ता जा रहा हू। बीच म दो रोज काशी ठहरूगा। कलकत्ता कितने दिन ठहरना होगा यह देखा जायगा। पर मुझे एसा लगता है कि क्रिप्स की बुलाहट पर बापू को यहा आना पडेगा। इसलिए मैं भी शायद दिल्ली शीघ्र ही लौट आऊ। बापू यहा आयेंगे तो तुम भी आओगे ही।

अलग डाक स जमनालालजी के सम्बध म जो स्केच (रेखाचित्र) लिखा वह भेजता हू। स्केच के लिए हिन्दी म उपयुक्त पर्यायवाची शब्द शायद मनन होगा। यह बापू को दिखा देना और इसका क्या करना है यह मुझे कलकत्ते के पते से लिख देना।

हमारे यहा मील म हडताल चल रही है। हडताल होने के पहल और हडताल होने के समय मजदूरो स कहा गया कि उनकी क्या शिकायतें है व उनके बारे मे मनेजर स वार्तालाप करें। पर उस समय तो धुन म आकर उन्होन हडताल कर दी। अब ठडे हैं क्योकि हमन पुलिस स कोई सहायता नही ली। चुपचाप बठ गये।

तुम्हारे सामने दो मजदूरो ने जो इकरारनामा लिखा था उसका उन्होंने पालन नही किया। यहा की काग्रेस न जब बीच म पडने के लिए अपनी इच्छा प्रकट की तो हमन धन्यवाद सहित वह सहायता लेने से इकार कर दिया। मैंने उनसे कहा कि आपकी कोई सुनता तो है नही। जो मन को लुभानेवाली चीज आप मजदूरो स कहेंगे उसे तो व मान लेंगे बाकी को ठुकरा देंगे। इसलिए आपका जब तक मजदूरो पर काबू नही है तब तक म आपसे कोई मशविरा नही करना चाहता।

आसफअली का मेरा स्त्र थोडा बुरा तो लगा पर कोई चारा नहा था। अब मजदूर भूख हड़ताल की धमकी भी देते है पर मैने उन्हे कह दिया है कि इस तरह काम नही चलनेवाला है। आप लोग जब तक सगठित होकर अपनी बात पर दृढ रहना नही सीखेंगे तब तक आपकी बातो का कोइ प्रभाव नही पडनेवाला है। इसलिए हडताल अभी जारी है। पर वातावरण खूब शान्त है, क्योकि हमारा भी शान्त असहयोग चल रहा है।

बापू ने अपने पत्र मे पछा है कि नासिक का (सेनिटोरियम) खाली रहता है क्या। अक्सर उसमे एक दो रहवास खाली रहते ही हैं। इसलिये जब किसी को भेजना हो तो रामेश्वरभाइ को इत्तला भेज देना।

यहा सब प्रसन्न हैं। आशा है तुम अच्छे होग।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

२१

सेवाग्राम
वर्धा (सी० पी०)
२१ मार्च १९४२

प्रिय घनश्यामदासभाइ

आपका पत्र और हडताल के बारे म जो कागज आपने भेजे वे सब मिल गय हैं। बापू को बता भी दिया। आशा हैं अब तक सब ठीक हो गया होगा। मैं आपके पत्र स बिलकुल सहमत हू।

कार्यकारिणी की बैठक हो चुकी। सब अपनी-अपनी जगह आज चले गय। कुछ खास नही हुआ। क्या हो सकता था? मौलाना साहब को नेहरूजी २५ तारीख के लगभग बुलाया गया है। देखें क्या होता है?

महादेवभाई आज सरदार के साथ बम्बई चले गए। उनका स्वास्थ्य तो अब ठीक मालूम देता है लकिन थकान जल्दी हो जाती है एसा मैं समझती हू आखें भी बिलकुल ठीक नही हुइ। चार दिन मे वापस आ जायेंगे।

बापू अच्छे हैं। वजन १।। पौंड बढा है। बा भी पहले से बेहतर हैं। आचार्य

नरेंद्रदेव यहा पर हैं। वापा बुरा दौरा—दम का—हुआ। अब कुछ ठीक हो रहे हैं। डॉ० कृष्ण वर्मा—नचरोपथ (प्राकृतिक चिकित्सक) के हाथ में है।

आप कुशल होंगे।

आपकी
अमृतकुंवर

७२

कलकत्ता
२४ मार्च १९४२

प्रिय राजकुमारीजी

आपका पत्र मिला।

हड़ताल के बारे में तो यह हाल है कि मौलाना साहब जब दिल्ली गये तब मजदूर उनसे मिले। मौलाना साहब ने तो सुना है मजदूरों से ऐसा कह दिया कि आप लोगों की सरासर गलती है और बिना किसी शर्त आप लोग काम पर वापस चले जाए। हड़ताली नेताओं ने जब यह किस्सा मजदूरों को सुनाया तो उन्हें मजदूरों से काफी भला-बुरा सुनना पड़ा। अगर ऐसी ही बात थी तो क्या हमें हड़ताल के लिए उकसाया? —ऐसा कहा बताते हैं। इस पर हड़ताली नेताओं ने मजदूरों को अपना त्यागपत्र दे दिया। हड़ताल अब ढीली है। किसी ने भूख हड़ताल नहीं की। हमने पुलिस से कोई मदद नहीं ली। इसलिए बिलकुल सन्नाटा है और शान्ति है। न कोई मीटिंग है न पर्चेबाजी।

ऐसा माना जाता है कि २४ रोज में मजदूर वापस काम पर आ जाएंगे। मैंने मजदूरों से यह भी कहला दिया है कि जिन लोगों ने नालायकी की है उन्हें मैं अब नहीं रखना चाहता। यह तो हुई हड़ताल की बात।

महादेवभाई से टेलिफोन पर बातें की थी। कहते थे तबीयत अब अच्छी है।

बापू का वजन क्या बादाम से घटा? बा की तबीयत कैसी है?

जमनालालजी का हिन्दी में लिखा हुआ स्केच (रेखाचित्र) मैंने भेजा था क्या बापू उसे पढ़ गये? उसका क्या करना है यह मुझे बतलावें।

आपका
घनश्यामदास

२३

सवाग्राम,
वर्धा (सी० पी०)
८ अप्रल १९४२

भाई घनश्यामदास,

तुम्हारे तार का उत्तर मैंने दिया है। तुम्हारा निबंध अच्छा ता है परन्तु बहुत विवादास्पद हो गया है। और राजप्रकरण से भरा हुआ है। तुम्हारी कलम से शाश्वत वस्तु की आशा रखता था। ज०[1] का राजप्रकरणी हिस्सा उसका शाश्वत काय नहीं था। तुमने देखा होगा कि मैंने मित्र मंडल की सभा में उनके प्रकरण की बात तक न की। उनके राजप्रकरण को भी नैतिक जामा पहना सकते थे।

इंग्रेजों की टीका का तुम्हारे निबंध में स्थान नहीं होना चाहिए। मुझे आश्चर्य है काका को यह बात न चुभी। हम मिलेंगे तब अधिक बातें करेंगे।

बापू के आशीर्वाद

प्रकृति अच्छी होगी और मखन का प्रमाण मिल गया होगा।

१ जमनालाल बजाज

२४

बिड़ला हाउस
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली
१५ अप्रैल १९४२

प्रिय महादेवभाई,

'अभिभावक कोई है भी?'—ऐसा किसी ने पूछा तो बापू ने कहा कि जमनालाल उस आदर्श के नजदीक—सो भी नजदीक ही—पहुंचा था। बाकी वाल्या टाटा बिड़ला इत्यादि तो आदर्श के पास भी न फटके। बापू ने और उनके प्रश्नकर्त्ता दोनों ने ही अभिभावक का नमूना धनाढ्यों में से खोजना चाहा

माना धनान्य ही अभिभावक पन्न कर सकते हैं। पर मध्यम श्रणी क नाग भी ता हैं ?

मेरा एक मिल मनेजर था। पूरा सच्चरित्र और ईमानदार। अपनी धुन का पक्का। लोक-सेवा तो करता ही था और सादगी से रहता था। बीवी जवानी म ही चल बसी थी पर दूसरा विवाह नही किया। नसर्गिक चिकित्सा म उसका विश्वास इतना कि वह अधविश्वासी बन गया। उस सम्बन्ध का ज्ञान-अज्ञान जो कुछ था उसम उसकी अटूट श्रद्धा थी। उसे (ए टेरिक) आत्र ज्वर न आ घेरा। पर उसने नसर्गिक चिकित्सा का ही—जसी उस आती थी—आश्रय लिया और अन्त म मर गया। पास म तीस चालीस हजार की पूजी थी वह सारी की-सारी उसन मुझे ट्रस्टी बना के धर्माथ सौंप दी। भाई और भतीजे थे पर उसने सारी की सारी कमाई परोपकाराथ छोडी।

एक हमारा नौकर था हीरा जाट। उसको तो उस जमाने म पहल एक पीछे कुल दो रुपये माहवार मिलत थे। अस्सी पार करक वह मरा और मरते मरत उसन दो-तीन बार अपना खजाना खाली किया। हालांकि खजाने म पाच-सात सौ से ज्यादा कभी जमा न हो पाया।

एक हमारे गाव म पुलिस का मुशी था। उस पाच रुपय ही माहवार मिलत थ। उस जमाने म जब राजदरबार स किसी कमचारी की नियुक्ति होती थी तो सुनते हैं दीवान उसे बुलाकर उसके कत्तव्य पर कुछ सूचना दे देता था। मुशीजी की नियुक्ति पर दीवान न उन्हें कहा बतलाते है मुशीजी पाच रुपय माहवार तनख्वाह है और कुछ ऊपर की भी आमद है। मुशीजी न आना मानी और पाच की तनख्वाह के साथ रिश्वत भी लते गय। पर एक विवक मुशीजी न किया। किसी की बुराई करक उन्होंने रिश्वत नही ली। रिश्वत लेते थे पर भलाई करक। इस तरह मुशीजी न बीस हजार इकट्ठे कर लिये। जब पचासी पार करने लग तो मुशीजी न काशीवास की ठानी। अपनी पूजी तो मुझ ट्रस्टी बनाकर धर्माथ सौंप दी और स्वय गगा-स्नान और विश्वनाथ का दशन नित्य करते है। अब भी जिन्दा है। पता नही मुशीजी को बापू नापास करेंगे या पास। पर पहले दो उदाहरण तो बुरे नही है। बुरे क्या अच्छे हैं।

धनाढ्यों म स पक्का अभिभावक मिलना कठिन है। पहल तो होना कठिन है। और हो भी तो माप तौल म पूरा उतरना कठिन है। क्योंकि लोगो का माप तौल भी गलत है। वणिक वत्ति का समाज रचना मे एक खासा महत्त्व का स्थान है। पर इस जमाने म वश्य वत्ति के अवगुणो न इतना जोर पकड लिया है कि उसक गुण आखो स ओझल हो गय है। चीजो की पदाइश और वितरण वणिक

तत्र चलाता है इसका भूल गये हैं। लाभवृत्ति ज्यादा बढ़ने से लोगों ने भूल से यह मान लिया है कि वैश्य के मानी खून चूसनेवाला एक अजगर।

लेनिन ने जब बाल्शेविज्म चलाया और वैश्य जाति का समूल नाश किया तब रूस में एक बार समाज में त्राहि-त्राहि मच गई। क्योंकि रूस की सरकार ने एक नये वैश्य-तंत्र की रचना किये बिना ही पुराने तंत्र को ढाह दिया। फलस्वरूप रूसी सरकार को नये बाईस में फिर से अपनी नीति बदलनी पड़ी जिसका नाम नेप—(न्यू इकनामिक पालिसी) रखा गया। वैश्य वर्ग नेपमेन कहलाये। तात्पर्य यह है कि वैश्य की समाज-सेवा एक महत्त्व रखती है।

शायद यह कहा जाय कि वैश्य की सेवा आखिर विवेक से नहीं है स्वार्थवश है। यह सही है। विवेक से हो तो फिर अभिभावक ही न बन जाय? पर क्या सभी राष्ट्रसेवक विवेक से सेवा करते हैं? मेरा तो खयाल है कि प्राय मनुष्य एक मज का शिकार है। नेता एक तरह के रोग के वश होकर तालियों के बीच व्याख्यान देता है और जेल जाता है। वणिक दूसरे मज का शिकार बनकर धन कमाता है और देता भी है। दाता एक तरह के अभिमान के शिकार हैं।

जिसने अभिमान छोड़ा वह तो उस पार। उसके तो पांव पूजने चाहिये।

बापू को दिखाना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

२५

सेगांव
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
१६ अप्रैल १९४२

भाई घनश्यामदास

भाई शांतिकुमार, रायबहादुर वीरजी सेठ और भाई नादाजन भी आये हैं। बर्मा में करीब आठ लाख आदमी पड़े हैं। वे पीड़ित हैं। उनको लाना हमारा धर्म है। ये भाई चाहते हैं एक खास कमिटी बनाई जाय उसमें तुम्हारा नाम भी होना चाहिये, जो बन सके वह किया जाय।

बापु के आशीर्वाद

२०

मगनवाडी
वर्धा
१८ अप्रैल १९४२

प्रिय पारसभाई[1]

उस रोज की मुसाफरी बहुत अच्छी रही। भीड़ भी नहीं, गरमी भी बहुत नहीं थी और गाडी की मूवमेंट (गति) अच्छी थी।

शहद के बारे में तो घनश्यामदासजी ने मुझे कहा था कि २० पौंड मुझे भेजेंगे और आश्रम के लिए अलग ४०-५० पौंड भेजेंगे। पर २० ही पौंड भेजने का हो तो वह सब आश्रम का ही मैं दे दूंगा। आश्रम में तो शहद की आवश्यकता कितनी रहती है, आपको क्या बताऊं? घनश्यामदासजी जानते हैं। मैंने काश्मीर से ८ पौंड शहद मंगाया था। १२ रुपया लगा था। मैं आज यहां आया तो पता लगा कि ४ पौंड आश्रम में दे देना पड़ा, क्योंकि आश्रम में था ही नहीं। तुम्हारा पत्र न आवे तब तक मैं २० पौंड ज्यों-का-त्यों रखूंगा।

सरदार के बम्बई के घर के इर्द-गिर्द में तो पुलिस लग गई है और सरदार और उनके पड़ोसियों को नोटिस दी गई है कि २४ घण्टे की नोटिस पर घर खाली करके जाना पड़ेगा। सरदार ७-८ रोज में बारडोली जा रहे हैं।

मेरी तबीयत अच्छी तो है, पर गरमी सहन करने की शक्ति खो बैठा हूं, ऐसा मालूम होता है और यहां की गरमी तो तुम जानते हो।

ट्रस्टीशिप थ्योरी (ट्रस्टीशिप का सिद्धांत) के बारे में घनश्यामदासजी की चिट्ठी बापू के पास रख दी है।

घनश्यामदासजी को कहिये कि सरदार ने कार्यकारिणी से इस्तीफा दिया है।

आपका
महादेव

[1] मेरा निजी सचिव

२७

२० अप्रैल १९४२

पूज्य श्री देसाईजी

सविनय प्रणाम।

आपका १८ तारीख का कृपा पत्र मिला। अनेक धन्यवाद। आपकी यात्रा अच्छी रही यह जानकर प्रसन्नता हुई। भीड़ तो शुरू से ही कम थी और शायद रास्ते में भी ज्यादा यात्री नहीं चढ़े।

२० पौंड शहद जो भेजा गया है वह आपके ही लिये है। ५० पौंड आपके नाम रांची से और भेजा जायगा वह आश्रम के लिये होगी। श्री घनश्यामदासजी को यह बात ठीक तरह से स्मरण नहीं रही कि ४० ५० पौंड आश्रम के वास्ते भेजने के लिए भी वह आपसे कह चुके हैं। खैर अब तो ८० पौंड और भेजा ही जा रहा है।

आपकी तबीयत कुछ ढीली रहती है इससे चिन्ता है। पर आप तो विश्राम लेते ही नहीं। ले भी कैसे सकते हैं? आप जैसे लोगों की सेहत की तो ईश्वर ही सम्हाल करता है।

आपका पत्र श्रीयुत घनश्यामदासजी ने पूरा पढ़ लिया है।

नारायणभाई से राम राम।

विनीत

बजरंगलाल पुरोहित

श्री महादेवभाई देसाई

सेवाग्राम

मो० सी० की मीटिंग शायद एक-दो दिन और चलेगी। आज सरदार का टेलिफोन आया था, पर कुछ सुनाई नहा पडा। बहुत टकिंग (खटखड) होता था। सिर्फ इतना सुनाई पडा कि बापू के प्रस्ताव म काफी रद्दोबदल की जान पर भी जवाहर आज एक अपना अलग प्रस्ताव ला रहे हैं।

क्या आप चाहते हैं कि चौथी तारीख को बम्बई आ जाऊं ट्रस्ट की मीटिंग के लिए? अगर सरदार सीधे बम्बई आ गये, तो आना पसद करूगा—उनसे सब हालात जानने के लिए।

आपका
महादेव

३०

२३ मई १६४२

प्रिय महादेवभाई,

यह कटिंग रोचक लगगी। लन्दन क इस समुद्री तार से प्रकट होता है कि भारत की स्थिति से निबटने के लिए कठोर कारवाई करने की माग की वहा जो लहर आई थी वह सिंगापुर क पतन के बाद स शात हो चली है और शायद इसी म क्रिप्स मिशन के असफल साबित होने का रहस्य छिपा हुआ है। मारवाडी म कहावत है बडा पकोडा बाणि को तातो लीजो ताड। 'मम तो समझ गये होगे। क्रिप्स ने भारत आने म कुछ देर लगा दी।

दूसरा तार इलाहाबादवाला है जिसस जवाहरलालजी की योजना का निदशन होता है। हाल म उन्होंने लाहौर म जो प्रेस मुलाकात दी थी, सो तो तुम्हारी नजर से गुजरी ही होगी। वह दो अतिवादियो के बीच मे फसे हुए प्रतीत होते हैं।

मैं राजाजी की तारीफ किये बिना नहा रह सकता। चारो तरफ से उनका विरोध हो रहा है पर एक वह है जो अपनी बात पर अडे हुए है।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

३१

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
२४ मई १९४२

प्रिय मदनलालजी

पत्र मिला और उद्धरण भी। मुझे दुःख है कि मैंने दो कापियां करवाई क्योंकि आपको मैंने लिखा और दूसरे ही दिन मुझे हरिराम ने वह भेज दिये थे। क्षमा चाहता हूं।

घनश्यामदासजी ग्वालियर से कहां जायेंगे? देहली पिलानी या कलकत्ता? मैं उन्हें एक जरूरी चिट्ठी लिखना चाहता हूं। कृपा करके उनका प्रोग्राम मालूम हो तो भेज दीजियेगा। सेठजी की प्रकृति अच्छी होगी।

आपका
महादेव देसाई

पुनश्च

वृहस्पतिवार २८ मई के आसपास दिल्ली पहुचने की उम्मीद है।

श्री मदनलाल कोठारी
जियाजीराव काटन मिल्स लि०
ग्वालियर

३२

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
११ जून ४२

प्रिय बजरंगजी

तुम्हारा पत्र मिला। अगला भी मिला था। इन्जेक्शन के बारे में बापू को तो कोई पता था ही नहीं। अब यहां जो डाक्टर बापू की सेवा शुश्रूषा करता है उससे

पूछने पर पता चलता है कि इंजेक्शन आये ही नही थे। मुझे डर यह है कि आये होंगे, तब भी दिये नही गये और यहा वही दवाखाने के कोने में पडे होंगे। इसके बारे में क्या इतनी बडी तलाश हो रही है ?

वहा के पुस्तकालय की दो किताबें मेरे पास हैं। उसके बारे में तो तुम्हें अभी क्या लिखना ? तुम तो पिलानी में हो। बदरी को नाम लिख भेजूगा। एक साल तक पिलानी में रहोगे इसके मानी यह हुए कि एक साल तक पिलानी आना न हुआ, तो तुम्हारा दर्शन होनेवाला नही।

तुम्हारा भाई
महादेव देसाई

श्री बजरंगलाल पुरोहित
बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट,
पिलानी (जयपुर स्टेट)
राजस्थान

३३

सेवाग्राम
११ जून, १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं आपको बहुत सारी बातों के बारे में लिखना चाहता हू, पर लिखते डर लगता है। आप 'हरिजन' नियमित रूप से पढ़ते ही होंगे, और उससे बापू का दिमाग किस दिशा में काम करता जा रहा है इसका आभास आपको मिलता ही होगा। 'हरिजन' के गतांक में कई एक बातें चौंका देनेवाली लगी होंगी। स्थिति ने जो पलटा खाया है और उसे लेकर जो नया दौर शुरू हुआ है उसके मर्म की चर्चा करते हुए बापू ने भारत में अंग्रेज और अमरीकी सेनिकों के बने रहने की सम्भावना पर विचार व्यक्त किया है।

मौलाना और पंडित जवाहरलाल के साथ दिल खोलकर बातें हुई हैं और मुझे लगता है कि मतभेद अन्त में गायब हो जायेगा। ऐसा लगता है कि देश में बापू का सैद्धान्तिक समर्थन प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। पर इस समर्थन का ठीक

म विचार बदल दिया। यह सभी मेरे धम के विरुद्ध है। पर आगे क्या होगा, यह कौन कह सकता है ?

जल्दी ही बारिश होने के आसार हैं तब मौसम भी करवट बदलेगा।

रही 'हरिजन' के लेखो के बारे मे मेरी प्रतिक्रिया की बात सो मुझे बापू के अन्तिम लेख से तो एसा लगा कि उन्होने अपने रवये म थोडा बहुत हेर फेर किया है। पर उनके लेख पढने मात्र से यह पता लगाना कठिन है कि उनका अभिप्राय क्या है ?

आशा है तुम सानन्द होगे।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

३५

तार

वर्धागज
२३ जन १९४२

घनश्यामदास बिडला
अल्बुकर्क रोड,
नयी दिल्ली

होरेस अलेक्जण्डर और साइमण्डस दिल्ली शनिवार को ग्राण्ड ट्रक से प्रात-काल पहुच रहे हैं। क्या आप इन्हे ठहरा सकेंगे ? तार भेजिये।

—महादेव

३६

सेवाग्राम
वर्धा सी० पी०
२४ जून १९४२

भाइ घनश्यामदास

स्वामी जाते हैं तो मैं यह भेजता हू।

मेरा ख्याल है गो सेवा संघ की यह मीटिंग अनिवार्य थी— जो जमीन दे दी है उसके दो हिस्से हैं। एक तो वह जो जमनालालजी ने दिया। दूसरा वह जिसमे आश्रम ने पैसे दिये। यह स्थावर और जंगम दोनो प्रकार की मिलकत में गये। अब जो पैसे आश्रम ने दिये वह तो प्राय सबके सब तुम भाइयो ने पैसे दिये उसमे से ही ये था इसलिये परिणाम यह आता है कि उतने पैसे का तुम्हारा दान हुआ। अब जैसे उचित समझा ऐसे किया जाय। अगर इतने पैसे गो सेवा संघ से लेना है तो तुम्हारे बचते हैं अथवा उतना और दान तुम्हारी तरफ से गो सेवा संघ को होगा। मैं तो दान का दान दे नहीं सकता हू। न मुझे उसका पुण्य मिलता है। मेरी उमेद है मैं मेरा कहना समझा सका हू। अब जैसा उचित हो किया जाय।

मैं जो कर रहा हू उस बारे में मन का वेग बढ़ रहा है। सलतनत का पाजीपन भयानक सा है—मेरे विरोध में जो कहा जाता है उसमें दुःख भी होता है क्रोध भी। न दुःख होना चाहिये न क्रोध—यह क्षणिक है। फिर तो शांत हो जाता हू।

मेरे मन में युद्ध की रचना करीब-करीब बन गई है—अब तो का० का० (कार्य कारिणी) की मीटिंग की इन्तजारी में हू। मेरे तरफ से सब तैयारी है। बाकी मिलने पर। तुम्हारी तबीयत अच्छी होगी।

बापु के आशीर्वाद

३७

तार

बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली
२५ जून १९४२

महादेवभाई देसाई,
वर्धा (मध्य प्रांत)

पूरा परिवार यहीं है। घर खचाखच भरा हुआ है। पर अन्य प्रबंध कर दूंगा। मेरी गाड़ी उन्हें लेने स्टेशन जायगी।

—घनश्यामदास

३८

सेवाग्राम
२५ जून, १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

स्वामीजी उधर जा रहे हैं, यह अच्छा ही हुआ। अब आपको एक सचमुच का पत्र लिखूंगा। आजकल डाक के जरिये कोई चीज भेजना खतरे से खाली नहीं है जैसा कि आप खुद ही जानते हैं।

मैन ऐंड पालिटिक्स नामक जो पुस्तक आजकल आप पढ़ रहे हैं उसका लेखक फिशर यहां चार पांच दिन के लिए आया था। यह उथले किस्म का पत्रकार नहीं है। बात की तह तक पहुंचता है और गजब का विश्लेषण करता है। उसने बापू की खूब समालोचना की। उनके जीवन से संबंध रखनेवाली सारी बातों को समझने की चेष्टा की। उनके दार्शनिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयत्न किया। उन्होंने अब तक जो कुछ किया है उसके महत्त्व को हृदयंगम किया। और मेरे विचार में बापू ने भी जितना बस चला उसे दिया। यह उसीके उत्तर स्वरूप था जो उन्होंने विदेशी सेनाओं के भारत में टिके रहने और भारत का उपयोग एक पड़ाव के रूप

म करने के विचार को विकसित रूप दिया। फिशर आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि वह एसी किसी बात की सम्भावना लेकर नही आया था। इसके विपरीत वह यह समाचार लकर आया था कि बापू किसी भी दिन गिरफ्तार हो सकते हैं। कोई दो सप्ताह पहल इस वार्ता को स्वय बापू न एक लख का रूप द दिया था और रायटर न पूरे लेख को विश्व भर म प्रसारित कर दिया था। लख म उस मुलाकात का केवल एक अश ही जा पाया था बातचीत लम्बी चौडी हुइ थी और उसके दौरान अन्य अनेक प्रसगो पर विचारो का आदान प्रदान हुआ था। पर वह अप्रासगिक जचेगा इसलिए यहा उसका उल्लेख नहा कर रहा हू। जिस दिन फिशर विदा लेनेवाला था उस दिन उसने मुझे अपनी डायरी देखने को दी—वह वास्तव म मुलाकात का निचोड था और उसम उसकी वाइसराय के साथ हुई बातचीत का भी उल्लेख था। बापू का प्रसग उठा था और फिशर ने जो कुछ दर्ज किया था वह बडी दिलचस्प और कुछ अनोखी सामग्री थी। वाइसराय ने फिशर स कहा था गाधी इन कई वर्षों म बराबर मेरे साथ सहृदयता का बरताव करत आ रहे हैं और यह एक बहुत बडी बात है। यदि वह यहा भी दक्षिण अफ्रीका की भाति ही सत बन रहते तो मानवता की अद्वितीय सेवा कर पाते। पर दुभाग्य वश वह यहा आकर राजनीति मे तल्लीन हो गय जिसके फलस्वरूप उनमे मिथ्या गव और आत्मश्लाघा उत्पन्न हो गई। पर आपस कुछ सिविलियनो ने जो कहा है कि उनका प्रभाव नष्टप्राय है सो बिलकुल वाहियात बात है। उनकी उपक्षा कदापि नही की जा सकती। जनता पर उनका अतुलनीय प्रभाव है सब उनके इशारे पर चलते हैं। अन्य किसी व्यक्ति का इतना प्रभाव नही है। उनके बाद जवाहरलाल की बारी है। काग्रेस म बाकी जितने लोग हैं उन्हें अपने-अपन काम का पसा मिलता है। काग्रेस व्यापारियो की सस्था है व ही उसका खर्चा चलात हैं। गाधीजी का वतमान रवया रहस्य स परिपूण है और खतर स खाली नही है। मैं उनके रवय पर कडी निगाह रख रहा हू। गाधी युक्त प्रात और बगाल की जनता को उकसाने की योजना बना रहे हैं। वह किसानो से कहेंगे अपने घरो स हिलो मत। मैं जल्दबाजी म कोई काम नही करूगा पर यदि उनक कार्य-कलाप स युद्ध प्रयत्नो को ठेस पहुची तो मैं उन्हें नियत्रण म रखन को बाध्य हो जाऊगा। बस मेरी यादगाश्त म इतना ही समा सका और मैं जितना कुछ स्मरण रख सका यह उसकी अच्छी-खासी रिपोट है।

बापू न जवाहरलाल और मौलाना के साथ विस्तारपूवक बातचीत की। जवाहरलाल चीन और अमेरिका स ओतप्रोत हैं। उन्होंने इन दोनो देशो का तरह तरह क वचन दे रखे हैं। बापू न फिशर क साथ अपनी मुलाकात के दौरान जो

रुख अपनाया था, उसमे बाद मे उन्होने जो हेर फेर किया वह जवाहरलाल के साथ हुई अपनी बातचीत को ध्यान मे रखकर ही किया था। वह मुलाकात जवाहरलाल के विचार के साथ खब मेल खाती थी। जवाहरलाल ने बापू को सुझाव दिया था कि वह च्याग को चिट्ठी लिखकर उसे अपनी स्थिति समझायें और उसे आश्वासन दें कि स्वतत्रता प्राप्ति के बाद भारत चीन को पूरी पूरी मदद करगा और उस यह भी बता दें कि सेना हटाये जाने का सुझाव वास्तव म चीन की सहायता करने के निमित्त पेश किया गया था। च्याग ने बापू को वह चिट्ठी हरिजन म प्रकाशित न करने का तार किस कारण से भेजा सो तो मैं नही जानता पर वह चिट्ठी चीन और अमरीका, दोनो देशो को ही समुद्री तार द्वारा भेजी गई थी और यह भी अच्छा ही हुआ कि जब चर्चिल रूजवल्ट म मिला तब वह रूजवेल्ट के हाथो म पहुच चुकी थी।

इससे जवाहरलाल की बम्बईवाली प्रेस भेंट पूरी तरह समझ मे आ जाती है। मौलाना ने अभी निश्चित रूप से कोई रुख नही अपनाया है। अभी वह हठ कर रहे है, पर अत म जवाहर के पीछे हो लेंगे। सिंध को लेकर उनका बापू के साथ गहरा मतभेद है और बापू का कथन उनकी समझ मे बिलकुल नही पैठ रहा है—कम स कम कहते तो वह यही हैं। वह ३० को फिर आ रहे है या शायद ४ अथवा ५ को आयें, क्योकि कायकारिणी की बठक अब ८ को होगी। तब वह कार्यकारिणी द्वारा निर्धारित नीति को अपना ले। सबसे अधिक परिताप की बात यह है कि बापू के आदशवाद के किसी म भी दर्शन नही होते, सब कोई अपनी अपनी बद्धमूल धारणाओ के चश्मे से बापू की योजनाओ को देखते हैं। पर काय कारिणी ने शेष ससार के लिए कोई अचरज म डालनेवाली सामग्री तयार करके नही रख छोडी है क्योकि बापू जान-बूझकर मथर गति से चल रहे है। बापू कोई सामूहिक हलचल की योजना पेश नही करेंगे, वह तो जनता से केवल इतना ही कहेंगे कि जब कभी सरकार के आदेश का पालन करने के लिए उसका अत करण गवाही न दे वह आदेश की अवहेलना कर दे। आप खुद भी बापू के इस रवय स अवगत है। इसका उडीसा की जनता पर अभी से गहरा प्रभाव पडने लगा है। वहा मीराबेन सर्वोत्कृष्ट काय कर रही हैं। उडीसा मे सरकार ने अनेक गावो को नोटिस दे रखा है कि वहा के ग्रामीण लोग गाव छोडकर चले जायें। इन आदेशो की पाबन्दी रोक दी गई है। पर सरकारी अमले की मूर्खता और अधेपन के परिणामस्वरूप वहा नाना प्रकार की घटनाए घटित हो रही हैं। सरकारी अमले न त्रावणकोर और कोचीन मे कुली भर्ती किय और १) रोज देने का वचन दिया पर स्थानीय लोगो को उतने ही काम की मजदूरी केवल । =) मिली।

उन्होने कुलियों के बीच ताडी की दूकान खाली और विदेशी कुलियो न जो वास्तव में वहां जेलो मे लाये गये थे और अपराधो का दण्ड भोग रहे थे बाजार को लूटा और उसमे आग लगा दी। बगाल मे सैनिक लोग अपनी रायफलो का थोडा-सा बहाना मिलते ही धडल्ले के साथ उपयोग करते हैं और कई निर्दोष व्यक्तियो को उन्होने मौत के घाट उतार दिया है। इन सारी बातो से बापू का मन अत्यंत कठोर हो गया है।

राजाजी यहा दो दिन के लिए आये थे। पर दो दिन की लम्बी चौडी और सौहार्दपूर्ण वार्ता के बाद बापू बोले देखता हू कि मेरे और उनके बीच जितना गहरा मतभेद है उसकी मैंने कल्पना तक नही की थी। बापू ने उन्हे जिन्ना के साथ बातचीत करने का बढावा दिया यद्यपि उन्हे बस बढावे की जरूरत नही थी। और राजाजी अब जिन्ना से मिलेगे। पर उस आदमी ने टाइम्स आफ इंडिया के उस नीच मनोवृत्ति के इसान ने फ्रासिस लो के कहने मे आकर जितनी दूषित मुलाकात दे डाली है उसके बाद उसके लिए बापू का पग पग पर विरोध करना अनिवार्य हो गया है और मैं तो नही समझता कि राजाजी की वार्ता से कोई प्रयोजन सिद्ध होगा। जो भी हो राजाजी उनसे मिलेंगे अवश्य और वर्धा वापस आकर बतायेंगे कि हवा का रुख किधर है। पर मुझे जिस बात की आशका है वह यह है कि उनके और जिन्ना के बीच जो बातचीत होगी उसका पूरा ब्यौरा देने मे वह कतरायेंगे। ऐसा वह कुछ इसलिए नही करेंगे कि कोई चीज जान बूझकर रहस्य के गर्भ मे छिपा रखना चाहेगे बल्कि एकमात्र इस कारण से कि वह सारी चीजो को अपने ही चश्मे से देखना पसद करते है और ऐसी हर भी बात जो उनकी प्रिय योजना के खिलाफ जानेवाली लगती हो और जिसके द्वारा उनका हवाई किला भग होना लगे उसकी चर्चा करने से वह बचे रहेगे। जो भी हो वह जिन्ना से मिलें तो देखें क्या परिणाम निकलता है।

बस मेरे पास आपको बताने योग्य जितनी खबरें थी मैंने बता दी। बापू की तबीयत ठीक नही है। बहुत शान्त हैं और दिन बीतते वह बिलकुल मौन हो जाते है। मैं उनका कार्यभार हल्का करने की भरसक चेष्टा कर रहा हू पर वह अपनी नूतन कार्य-योजना को पूरा करने मे बेतरह तल्लीन हैं और उसी मे उनकी सारी शक्ति खप रही है। उनका वजन घट गया है खाते कम है टहलते भी कम हैं और काम से श्रान्त हो जाते हैं। यह बडे दुख की बात है पर हम उनकी सहायता करें भी तो कैसे करें। मै तो इतना मात्र कर सकता हू कि वह हरिजन के लिए केवल दो कालम ही लिखें इससे अधिक नही। बाकी सब मैं स्वय लिख डालता हू और यह मेरे लिए कोई दुष्कर कार्य भी नही है क्योकि उनके

विचारा का खुलासा करना मेरे लिए बिलकुल आसान है। पर सोचना और योजना निश्चित करना—यह तो वही करेंगे या फिर स्वय भगवान उनकी सहायता कर सकते हैं।

होरेस अलक्जेंडर और साइमण्ड यहा आये हुए है। अन्य ववकरा की तरह ये लोग भी सदिच्छाओ से परिपूर्ण हैं। लन्दन से रवाना होने के पहले अलेक्जंडर एमरी से मिले थे। एमरी ने कहा कि अलेक्जेंडर गाधी तथा अन्य लोगो से मिलेंगे हा, पर इसका कोई परिणाम नहीं निकलेगा क्योंकि वह क्रिप्स की वकालत करेंगे। फिर भी दोनो है भले आदमी। मैंने उनसे आपके पास ठहरने को कहा है। आशा है आपको कोई आपत्ति नहीं होगी। आप होरेस की थोडी-बहुत जानकारी बढा सकते हैं सो बढाइये। वह स्वय बहुत कम जानकारी रखते है और आपको भी उनसे बहुत सारी नयी बातें मालूम होगी। होरेस अलक्जैंडर भारत मे किसी से परिचित नही हैं इसलिए मैंने सोचा कि उनके लिए सबसे अच्छा यही रहेगा कि वे दोनो आपके पास ही ठहरें। उनके आपके पास टिकने से आपके कामकाज मे सम्भव है कुछ व्याघात उपस्थित हो पर आशा है आप उसे नजरअन्दाज कर देंगे।

आपका ही
महादेव

पुनश्च

यदि आप मुझे फिशर की पुस्तक भेज सकें तो कृपया स्वामीजी के हाथ भेज दीजिए। और भी कोई साहित्य हो जिसे आप मेरे लिए रुचिवर्द्धक समझें तो उसे भी स्वामीजी के हाथ भेजने की कृपा कीजिए।

३९

२७ जून १९४२

प्रिय महादेवभाई

तुम्हारा पत्र जानने योग्य बातो से भरा हुआ है और यह मानसिक खुराक भेजने के लिए मैं तुम्हारा आभारी हू।

श्री अलेक्जंडर और श्री साइमण्डस यहा आ गये हैं। मैंने दोनो को एक ही

कमरे में ठहरा दिया है। दो कमरे दे पाता तो अच्छा होता, वैसा सम्भव नहीं था। दोनों खूब खुश हैं। मैं उनके आराम का खयाल रखूंगा। दिल्ली में उनके ठहरने की बात को लेकर चिन्ता करने की जरूरत नहीं है।

तुमसे बहुत सारी बातें करने को हैं, पर भेंट होने तक रुका रहूंगा। शायद अगस्त के आरम्भ में तो मैं वहां जाऊंगा ही।

सुना है तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं रहती है। 'हरिजन' में तुमने यह बात खुद कबूली है। तो फिर दिल्ली क्यों नहीं आ जाते? आने का वादा करो, तो मैं अपने प्रोग्राम में हेर-फेर करके तुम्हारे पास रहूंगा या फिर मैं तुम्हें पिलानी ले जाऊंगा, जहां तुम्हारी शांति में विघ्न डालनेवाली कोई चीज नहीं होगी। खालिस काम की खातिर भी तुम्हें आराम लेना चाहिए, जिससे आये दिन मूर्च्छित होने का खतरा दूर हो जाय। बापू मील भर कड़ी धूप में चलते रहे, और तुम ऐसा नहीं कर पाये, यह तुम्हें कितना बुरा लगा होगा! मेरी समझ में तुम्हें विश्राम की नितान्त आवश्यकता है। तुम्हें विश्राम लेना ही चाहिए। देवदास मुझसे पूरी तरह सहमत हैं।

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

४०

सेवाग्राम
२६ जून १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका कृपा-पत्र मिला। आजकल पत्र लिखना आसान नहीं है, क्योंकि सब पत्र खोले जाते हैं, अगरचे हमारे पास गुप्त बात कोई रहती नहीं है, तब भी हमारी लिखी हुई बातों का विपरीत असर न हो, इसलिए भी पत्र में लिखने का दिल नहीं होता है।

मैं धूप में कालेप्स (मूर्च्छित) हो गया और बापू चल सके, यह मेरे लिए शरम की बात तो है ही, पर आराम लेने पर भी मैं धूप बरदाश्त करने की शक्ति प्राप्त

करने की आशा नहीं रखता। बहुत परिमित काम करता हू। शाम का पढ़ना लिखना बद किया है। 'हरिजन' का छोड़कर और कुछ भी लिखता नहीं। इस लिए काम अच्छी तरह निभता है। बापू को इतनी थकान और अशक्ति लगती है कि उनको छोड़कर जाना यानी उनका भार बढाना। यह मुझसे तो हो ही नहीं सकता। नामल टाइम्स (साधारण समय) होता तो दो महीना आराम ले पाता। आपका प्रेम मुझे बुलाता है—यह मैं जानता हू। आपके प्रेम का अधिकारी रहू इतना ही काफी है।

राजाजी आज बबई से आये। अब तक यहा नहीं आये इसलिए पता नहीं चला क्या कर आये, पर सुबह बबई का टेलिफोन था, उसम पता चला था कि बडी आशा लेकर आ रहे है। अगरचे सरदार को तनिक भी आशा नहीं ह वे कहते हैं, 'या तो सरकार के साथ भी अपना फ्रीडम सरेन्डर (स्वतत्रता खोकर) करके सुलह हो सकती है। सब छोड़कर जिन्ना के साथ सुलह करने म क्या अथ है ?' और वह कुछ भी लिखकर दने को तयार नहीं है।

आपका
महादेव

४१

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रात)
३ जुलाई १९४२

प्रिय हरिरामजी

पत्र और पुस्तकें[1] मिल गइ। पढकर वापस कर दूगा।

आपका
महादेव देसाई

श्री हरिदास गायल
बिडला हाउस,
अलबूकक रोड,
नयी दिल्ली

१ मन इन पॉलिटिक्स और २ सोवियत एशिया।

४२

सेवाग्राम
६ जुलाई १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

वस कहने योग्य कोई नयी बात तो नही है पर श्री व्रजकृष्ण यह पत्र आपके पास ले जा रहे हैं तो थोडी-बहुत बातें लिख दू। नलिनी और सरदार की बिडला हाउस मे भेंट हुई थी। मुझे भी बुलाया गया था पर मैं डाक्टरो के साथ मशवरा कर रहा था इसलिए मेरा जाना न हो सका। नलिनी बाबू ने बताया कि उन्होने वाइसराय से कह दिया है कि हरिजन के बारे मे कोई कारवाई करने से पहले वह अपने परामर्शदाताओ के साथ परामर्श कर लें। अणे ने भी यही कहा। इस पर वाइसराय ने परामर्शदाताओ की बैठक बुलाई और उनसे सलाह मागी। सबसे पहले प्रधान सेनाध्यक्ष बोला। उसने कहा गाधी को जितनी छूट दी जा सकती है दी जानी चाहिए। जब तक हम यह न लगे कि वह युद्ध प्रयत्नो को ठेस पहुचा रहे हैं उन्हे अपनी राय व्यक्त करने की पूरी स्वतत्रता रहनी चाहिए। मैक्सवेल ने कहा पर वह सरकार के प्रति विद्रोह की भावना उत्पन्न कर रहे है हम यह सब चुपचाप बैठ कैसे देख सकते है ?' पर मैक्सवेल की बात ही मानी गई और सबकी यही सम्मति हुई कि गाधी को अधिक से अधिक छूट दी जाये।

पर वाइसराय की परामर्शदायिनी समिति के इस विस्तार से मुझे बहुत चिन्ता हो रही है। ऐसा लगता है कि यह बापू को दिया गया उत्तर है। इस नये गिरोह को सिर्फ इसलिए चुना गया है कि बापू को गिरफ्तार करने मे किसी तरह की कठिनाई का सामना न करना पडे। और इनमे कुछ को तो हमने खूब पहचान रखा है। यदि बापू पकड लिये जाए तो उन्हे रत्ती मात्र भी कष्ट नही होगा। वलात लन्दन के अल्पसख्यक पैक्ट से पहले के दृश्य की याद आ गई। सारी शक्लें पहचानी हुई हैं—रामस्वामी अय्यर और अम्बेडकर और वैसे ही बलन—और सब कुछ साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त के नाम पर किया जा रहा है। इस सप्ताह के हरिजन मे मैंने यही सब लिखा है यह सब कुछ सही है पर हम यह नही कहेंगे यह बताने का काम हम दूसरो पर छोडते हैं।

बापू का स्वास्थ्य कुछ अधिक अच्छा नही है। कार्यकारिणी की बैठक हो चुकने के बाद यदि उन्हें एक पखवाडे का अवकाश दिया जा सके तो बडी बात हो। बापू को आराम लेने को राजी किया जा सकेगा या नही सो मैं नही जानता।

मैं जवाहर और सरदार को इस बात पर राजी करने की भरसक चेष्टा करूंगा कि दोनों मिलकर बापू पर जोर डालें कि वह इस सारे व्यापार से अपना नाता तोड लें। सम्भव है मुझे सफलता न मिले पर यदि भगवान को उनके हाथों उनके जीवन का कार्य कराना होगा तो वह उनकी अवश्य रक्षा करेगा।

सप्रेम,
महादेव

४३

१३ जुलाई १९४२

प्रिय महादेवभाई,

खाद्यान्न के अभाव और खाद्यान्न के विक्रेताओं के खिलाफ लोगों की शिकायत के बारे में बापू की टिप्पणियां मैंने देखी हैं। लोगों का गिला शिकवा सोलह आने सही नहीं है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऐसे भी दूकानदार हैं जिन्होंने खाद्यान्न के अभाव की आड में अनाज इकट्ठा कर रखा है। मुनाफा बटोरना आदमी की आदत में शामिल है। पर इस दूषण से तभी निपटा जा सकता है जब सरकार के और जवाबदार व्यापारियों के बीच उचित मात्रा में सहयोग हो। इस समय तो जो हो रहा है वह यह है कि पहले तो सरकार कण्ट्रोल का आदेश जारी करती है और उसका पालन कराने में अपने-आपको असमर्थ पाती है तो व्यापारियों की पकड़ धकड़ शुरू कर देती है। अखबारवाले भी व्यापारियों के खिलाफ जनता को भड़काते रहते हैं। इन व्यापारियों की दूकानें किसी भी दिन लूटी जा सकती हैं। यदि ऐसा हुआ तो और भी अधिक अभाव होगा और बेचैनी फैलेगी। इस प्रकार सारा सरकारी ढांचा निकम्मा होकर रह जायगा।

सरकार ने जिस पदार्थ पर कण्ट्रोल लगाया है, उसी के दाम बढ़े हैं। इतने पर भी सरकार आंखें मींचे हुए है। इस व्याधि से कुछ निश्चित कदम उठाकर ही पार पाया जा सकता है। इनमें से पहला कदम तो यह है कि वस्तुओं की कीमतें तय करते समय इस बात का ध्यान में रखा जाए कि नया भण्डार एकत्र करने के लिए व्यापारी को कितनी कीमत अदा करनी होगी। दूसरा कदम यह है कि सरकार जवाबदार व्यापारियों से सहयोग करे जिससे वे लोग मुनाफे की मनोवृत्ति

से काम न लेकर जगह जगह दूकानें खोलें। तीसरा कदम माल लाने ले जाने की सुविधाओं के बारे में है। फिलहाल तो ऐसे अनेक स्थान हैं जहां इन सुविधाओं के अभाव में चीनी और नमक अप्राप्य हैं।

रामस्वामी मुदलियार ने अब तक व्यापारियों का सहयोग लेने की कोई कोशिश नहीं की। उन्होंने अब तक जो कुछ किया है वह उनके अनाड़ीपन का सबूत है जिसके परिणामस्वरूप स्थिति पहले से भी अधिक पचीदा हो गयी है। मुझे आशा है जब नलिनी बाबू यह महकमा संभालेंगे तो स्थिति में सुधार होगा। उनकी यह एकांत अभिलाषा है कि व्यापारियों और सरकार के बीच सहयोग की भावना बलवती हो। वह चाहते हैं कि चोरबाजारी का जड़ से नाश हो जाये, पर यह तभी हो सकता है जब शाह बाजारी का समुचित संगठन हो। मैंने नलिनी बाबू को कह रखा है कि यदि माल लाने ले जाने की सुविधाएं उपलब्ध हों और दूकानों के लूटे जाने की आशंका न रहे तो एक काफी बड़े अंचल में नियमित रूप से खाद्यान्न वितरण लागत मूल्य पर कराने की व्यवस्था का जिम्मा मैं लेने को तैयार हूं। उन्हें यह जानकर खुशी हुई पर मैं यह नहीं जानता कि सरकारी ढांचा इस दिशा में कहां तक आगे बढ़ने को तैयार है। पर मुझे इस बारे में संदेह नहीं है कि यदि बड़े व्यापारियों में बड़े बड़े अंचलों की देखभाल करने को कहा जाये तो इस व्याधि का अंत हो सकता है।

इस समय मुख्य कठिनाई यही है कि व्यापारियों और सरकार के बीच सहयोग का तथा माल लाने ले जाने की सुविधाओं का अभाव है। जो थोड़ा बहुत संगठन था वह अविवेकपूर्ण कंट्रोल अंधाधुंध गिरफ्तारियों और माल के आवागमन की सुविधाओं के अभाव के कारण विशृंखल हो गया है। अभाव का एक कारण यह भी है कि लोग घबराकर आवश्यकता से अधिक खाद्यान्न संचित करने में लगे हुए हैं।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

४४

१४ जुलाई १९४२

प्रिय महादेवभाई,

तुमने बताया था कि बापू ने राजाजी से जिन्ना के पास से जो-कुछ लिखित रूप में लाने को कहा था, और अब बापू ने 'हरिजन' में पाकिस्तान की परिभाषा मांगी है, तो इस पत्र के साथ मैं कुछ ऐसी सामग्री रख रहा हूं जिसे एक तरह से अधिकारपूर्ण समझा जा सकता है। यह दो दिन की बातों का परिणाम है। यह परिभाषा जिन्ना के पास से तो नहीं आई है पर मैं समझता हूं कि नवाबजादा लियाकतअली खां भी कुछ हैसियत रखते हैं। नवाबजादा का कहना है कि मुस्लिम लीग में अकेले जिन्ना का ही वजन हो ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे इस कथन में कुछ सार दिखाई देता है। जब मैंने उनसे कहा कि हम लोग अभी तक यह नहीं जान पाये हैं कि मुस्लिम लीग वास्तव में चाहती क्या है तो उन्हें मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ।

साथ भेजी सामग्री से तुम देखोगे कि वह समूचा पंजाब चाहते हैं। पर बातचीत के दौरान मुझे लगा कि मुस्लिम लीग कुछ चीज छिपाकर बात कर रही है। पंजाब के मामले में भी वह थोड़े-बहुत हेर-फेर के लिए तैयार हो जायेगी और फिर पंच फैसले की भी व्यवस्था है। मुख्य बात यह है कि क्या हम पार्थक्य की बात सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करने को तैयार हैं? यदि हों तो विचार विमर्श की काफी गुंजाइश है। यदि न हों, तब तो समझौते की बातचीत का सवाल ही नहीं उठता। जब मैंने जानना चाहा कि यदि सिख तैयार न हों तो फिर क्या होगा, तो इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था।

पर बापू का कहना है कि वह और कांग्रेस विचार विनिमय के लिए प्रस्तुत है। मैंने नवाबजादा का ध्यान बापू की इस उक्ति की ओर आकृष्ट किया और उनसे जानना चाहा कि क्या सार्वजनिक रूप से इस बात की घोषणा करेंगे कि वह कांग्रेस से विचार विनिमय के लिए उससे बात करने को तैयार हैं? इसके उत्तर में उन्होंने कहा : 'जवाहरलाल का यह कहना है कि वह पाकिस्तान की बात तक करने को तैयार नहीं है। जब ऐसी बात है तो बातचीत कैसे शुरू की जा सकती है?' मुझे तो जवाहरलाल के वक्तव्य तथा बापू के वक्तव्य में विरोधाभास दीखता है। यदि कांग्रेस की स्थिति यह है कि वह विचार विनिमय के लिए तैयार है तो बातचीत का रास्ता निकल सकता है और दोनों पक्षों की भेंट हो सकती

है। मैं इस चिट्ठी के साथ जो मसौदा रख रहा हू उसकी एक प्रति मैंने नवाब जादा के पास भी भेज दी है। मसौदे की सामग्री को उनका पूरा समर्थन प्राप्त है और यह तुम्हारे पास उनकी रजामंदी से ही भेजा जा रहा है। मेरी धारणा है कि वह अपनीवाली प्रति जिन्ना के पास भेजेंगे। यदि पार्थक्य पर विचार विमर्श की अभिलाषा हो तो मैं तो समझता हू कि उभय पक्षों में भेंट वांछनीय है। हा यदि नवाबजादा अपनी कोई हैसियत न रखते हो, और अकेले जिन्ना ही सर्वेसर्वा हो तो बात अलग है।

मैं यहा शुक्रवार की संध्या तक हू। यह पत्र तुम्हारे पास बुधवार की शाम तक पहुच जायगा, और यदि तुम्हें ऐसा लगे कि तुम कोई ऐसा उत्तर भेजोगे, जिसके फलस्वरूप मेरा यहा टिके रहना जरूरी है तो मुझे "रुके रहिये" का तार भेज देना। पर यदि तुम्हें लगे कि इस मसौदे को रद्दी की टोकरी के हवाले करना ही उचित है तो तुम्हें तार भेजने या उत्तर देने की जरूरत नही है और मैं यहा से शुक्रवार को चल पड़ूगा।

पाकिस्तान के बारे में मेरे विचारों से तुम अवगत हो। मैं पार्थक्य के पक्ष में हू और मैं इसे अन्यवहार्य नही समझता हू न मैं यह मानने को तैयार हू कि पार्थक्य हिंदुओं अथवा भारत के हित मे ठीक नहीं होगा। हम लोग जब तक आपस में लड़ते झगड़ते रहेंगे भारत का उद्धार एक असम्भव कल्पना है। साथ ही हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि मुसलमान-मात्र पाकिस्तान चाहते हैं— सारे के-सारे मुसलमान। काग्रेसी मुसलमानों को भी अब अलग नही किया जा सकता। जब ऐसी स्थिति है तो हमारे प्रतिरोध का क्या मूल्य है? नवाबजादा का कहना है कि काग्रेसी मुसलमान उनसे कुछ कहते हैं हमसे कुछ और। जब लीगी लोग उनसे काग्रेस से निकल आने को कहते है तो इसके उत्तर में वे कहते हैं कि काग्रेस में बने रहकर वह उसे नियंत्रण में रख रहे हैं। यह दुहरी चाल नही है तो और क्या है?

बापू के संभाव्य आदोलन के बारे में हम लोग केवल अटकलबाजी से काम ले सकते हैं पर सच्ची बात तो यह है कि जनता में न आशावादिता की झलक मिलती है न उत्साह की। इससे पहले भी आदोलन छिड़े उन्हें या तो वापस ले लिया गया या कुचल दिया गया था। इसमें संदेह नही कि इस समय समूचा भारत अंग्रेज विरोधी हो गया है पर जमकर मोर्चा लेने की प्रवृत्ति के कम से कम मुझे तो दर्शन नही हो रहे हैं। इस बार में सलाह मशवरा देने में मैं अपने आपको बिलकुल असमर्थ पाता हू। मैं तो केवल यह बताने के लिए लिख रहा हू कि फिलहाल वातावरण कैसा है। इधर कुछ महीनों से काग्रेस ने जो नीति अपनायी

है उससे जनता के दिमाग म उलझन पदा हो गई है और जब नेता लोगो मे विचार सामजस्य न हो, तो जनता का मनोबल भग होना अनिवार्य है।

सप्रेम,
घनश्यामदास

४५

१४ जुलाई, १६४२

प्रिय महादेवभाई,

तुम्हे याद होगा कि मैंने जमनालालजी का जो शब्द चित्र प्रस्तुत किया था उसके कुछ अशो पर बापू को आपत्ति थी। उनकी आलोचना को ध्यान म रख कर मैंने मूल विषयवस्तु को कायम रखते हुए आपत्तिजनक अशो मे हेर फेर करने की कोशिश की है। अपने वतमान रूप म वह बापू को कसा लगेगा, सो मैं नही जानता। पर हरिजी का कहना है कि अब इसमे आपत्तिजनक कोई बात नही रह गई है। बापू क पास इसे देखने लायक समय या धय है इसम मुझे सदेह है। इस लिए मैं तो केवल इतना ही चाहूगा कि जिस अश को दुबारा लिखा गया है, उस पर बापू नजर डाल लें कि वह ठीक है या नही। या तो तुम इसके प्रकाशन के लिए बापू की अनुमति से मुझे सूचित करो या फिर काका कालेलकर इसे पढकर अपनी सम्मति की सूचना बापू को दे दें। मैं यह इसलिए लिख रहा हू कि हरिजी तथा कुछ मित्रो का यह एकान्त आग्रह है कि इसे प्रकाशित किया जाये। या फिर यह भी हो सकता है कि इसके प्रकाशन का विचार ही त्याग दिया जाये और इसके सम्बन्ध मे और कुछ न किया जाये। बापू का क्या आदेश है, लिखना।

सप्रेम
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई,
सेवाग्राम

४६

तार

वर्धागज
१५ जुलाई १९४२

घनश्यामदास
बिड़ला हाउस
नयी दिल्ली

मीराबेन बृहस्पतिवार को ग्राण्ड ट्रंक से पहुच रही है।

—महादेव

४७

सेवाग्राम
१६ जुलाई १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी

मैं आपको मीराबेन के हाथ पत्र भेजना चाहता था पर बेतरह थक गया था और सुबह-सुबह सतोषजनक पत्र तयार करने लायक नही था।

इस बार की कायकारिणी की बठक ने हमारी आखें खोल दी। अकेले खान साहब को छोड अन्य काग्रसी मुसलमानो म काग्रस की काय-योजना या यो कहिये कि बापू की काय योजना म आस्था नही है। जवाहरलाल चीन और अमरीका म तल्लीन हैं। इसलिए अभी कोई जोरदार कदम उठाने की मन स्थिति म नही हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि वास्तविक स्थिति इससे भी गई बीती है। रामेश्वरभाई मुझे 'लाइफ' पत्रिका प्रति सप्ताह भेजते आ रहे हैं। इस सप्ताह के अक म जो-कुछ खोलकर रखा गया है उसे पढ़कर भय होता है। बापू आपके यहा कलकत्ता म जनरलिस्मो च्याग स मिले थ। 'लाइफ' म उस अवसर पर लिये गये सारे फोटो छपे हैं। चित्रो के नीचे जो सामग्री दी गई है वह या तो मैडम च्याग की करतूत है या उनके अमले के किसी आदमी की क्योकि उस अवसर पर या तो मैं था या वे

लाग, जो एसा विवरण द पाते। और, बापू का हवाला कितना शरारत भरा ह ! कितना कृतघ्नतापूण और कितना अपमानजनक ! मैं ता समझे बठा था कि कृतज्ञता चीनियो की सबसे बडी विशेपता है पर जहा तक इस दम्पति का सबध ह, इस सदगुण का अत्य त अभाव है। यदि उन्हें पूजीपतियो से किसी तरह का सरोकार नही रखना था ता उ होने बेचारे लक्ष्मीनिवास का आतिथ्य क्या स्वीकार किया ? सब कुछ हन दर्जे का घिनौना मामला बनकर रह गया है। यह भेंट नही होनी चाहिए थी। पर बापू और इस रहस्यपूण आदमी' का साक्षात्कार हो गया तो अच्छा ही रहा। बापू च्याग का इसी विशेपण से पुकारते आये है। जवाहरलाल ने या तो अपने आपका पूरा उल्लू बना लिया है या वह च्याग की पैंतरबाजी म शरीक है—भगवान कर मेरी यह दूसरी आशका निमूल सिद्ध हो। च्याग न अपन ताजा सदश म बापू का सलाह दी है कि वह जल्दबाजी म कोई काम न कर क्या कि हैलिफक्स ने, जो अब ब्रिटेन लौटा है, यूयाक मे च्याग के प्रतिनिधि स कहा बताते हैं कि वह इगलड के उच्च पदस्थ अधिकारियो से कह-सुनकर भारत के साथ समझौता करा देगा। बापू ने च्याग को उत्तर भेजा है कि वह जल्दबाजी म कोइ कदम नही उठायेंगे पर वह अनिश्चित काल तक नही रुके रहेगे क्याकि वसा करन से कदम उठाने की विशेपता ही नष्ट हा जायेगी। मुझे तो लगता है कि इस सदश म काई तथ्य नही ह या ता हलिफक्स च्याग का उल्लू बना रहा है या दोना मिलकर हम उल्ल बना रह हैं।

अब आपके पत्र के बारे म। बापू न उस बडे मनायोगपूवक पढा। उ ह यही सोचकर हरानी हो रही है कि कही आपन कोई जबान तो नहो दे दी। यदि आप एसा कर बठ हा, ता बडा खतरनाक काम किया। सवाल पाकिस्तान का अथवा पाथक्य का नही इस परिकल्पना मात्र का है। बापू ने १२ जुलाई के 'हरिजन म अपना जो बक्तव्य प्रकाशित किया है, उसे लेकर जिन्ना क रोपपूण विस्फाट स बहुत-कुछ स्पष्ट हो जाता है। उसने १२ जुलाई के 'हरिजन म छपे उस वक्तव्य का आश्रय लेकर कहा है, ' मिस्टर गाधी न अपन नजरिये का खुद ही अच्छे-से अच्छा खुलासा कर दिया। उन्होंने मुसलमाना की माग को चुने हुए लफ्जा मे पश कर दिया।" यदि ऐसी बात है तो मुसलमाना के साथ किसी भी तरह का समझौता कभी भी सम्भव नही हो सकता। बापू न लियाकत क मुद्दा का अध्ययन करन के बाद कई एक प्रश्न तयार किये हैं जिनका वह स्पष्ट उत्तर चाहते हैं। यह कुछ ऐसा मामला है जिस एक कान म बैठकर नही निपटाया जा सकता। इन सार मामला पर पूर तौर स और खुले दिल से विचार करना होगा। यदि इनका सतोप जनक उत्तर मिल, तो समझौते की पूरी सम्भावना है नही तो समझौता असम्भव

है। राजाजी की सबसे बडी कमजोरी यह है कि वह पाकिस्तान की बात सिद्धान्त के रूप म करते नही अर्थात पर उस सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करने का क्या अर्थ होगा, इस निष्कर्ष तक पहुचने का उनम साहस नही है। मैं य प्रश्न राजाजी के पास भी भेज रहा हू, जिससे उनके दृष्टिकोण की जानकारी हासिल कर सकू। वास्तव म, बापू इन प्रश्नो की खुल्लमखुल्ला चर्चा छेडने को तत्पर हैं।

जमनालालजी सम्बन्धी पुस्तक के बारे म बापू का कहना यह है कि उन्ह उसके प्रकाशन पर कोई आपत्ति नही है। उन्होने तो आपको चेतावनी भर दी थी और यदि उनकी आलोचना को सामने रखकर आपने विषयवस्तु मे सशोधन परिवर्तन कर लिया है तो ठीक है प्रकाशित करने म देर क्या की जाय। उसे दुहराने क लिए काकासाहब क पास भेजने की भी कोई जरूरत नही है।

मूल्यो के नियत्रण क बारे म आपका पत्र। बापू का कहना है कि आपको पहल करनी चाहिए—आपको अर्थात व्यापारी समाज को। यदि नलिनी ने कोई ठोस कदम उठाने की बात सोच रखी है और उसम वह आपको साथ लेकर चलना चाहते हैं तो इससे अच्छी बात और क्या हो सकती है ?

मीराबेन स दिल खोलकर बातें करिय। उनम खूब उत्साह है। काश, वह जानकारी से भी भरपूर होती। पर यदि वह उन तीन बडे लोगो क साथ बात करें तो क्या बुराई है ? उन्हें मुलाकात करने का अवसर तो मिल।

यह पत्र पहुचने के बाद मुझस फोन पर बात कीजियेगा।

सप्रेम,
महादेव

पुनश्च

मैंने सोचा था कि पत्र समाप्त हो गया पर इसम एक महत्त्व की बात तो रह ही गइ। आपने अपने गोपनीय पत्र के अन्तिम पैरे म काग्रेस के आन्दोलन की चर्चा करते हुए कहा है कि काग्रेस की नीति स जनता के दिमाग में उलझन पैदा हो गई है अथवा हो रही है। मैं मानता हू इसका एकमात्र कारण यह है कि हम लोग अनेक स्वरो म बोलते आ रहे हैं। जब काम करने का समय आयेगा, तो सारी उलझन दूर हो जायेगी। पर आन्दोलन व्यापक हो अथवा न हो, बापू ने निर्णय ले लिया है और ज्यो-ज्यो वह दूसरे पक्ष म कठोरता बढती देखते हैं त्यो त्यो वह स्वय भी कठोरतर होते जाते हैं। असली बात यह है कि उन्होने इस बार आखिरी दाव लगाने का सकल्प कर लिया है। उधर दूसरे पक्ष म दुष्टता खुलकर खेल रही है, उसका मुकाबला पूरी साधुता से करना आवश्यक हो गया है। इस

लिए उनकी धारणा है कि इस दाव पर वह अपना सब-कुछ लगा दें—अपने प्राणों की बाजी लगानी पडे तो लगा दें। उनके सामने दलीलें कारगर नहीं होतीं। उन्होंने कार्यकारिणी की अंतिम बैठक में यह कहा कि वह सरकार को नोटिस देंगे कि यदि वह सोच रही हो कि उन्हें कारागार में जीवित रख सकेगी तो यह उसकी भूल है। सदस्यों ने जब यह सुना तो खामोशी छा गई मानो सबको काठ मार गया हो। उनकी इस उक्ति को लेकर किसी प्रकार की चर्चा नहीं हुई।

यदि लियाकत से और अधिक बात करने के बाद अथवा मेरा पत्र पढने के बाद आपको लगे कि यहां आना आवश्यक है तो अवश्य आइये। जो भी हो आप बम्बई अवश्य आइये। हम लोग बम्बई ३ या ४ अगस्त को पहुंच रहे हैं।

म०

४८

सेवाग्राम
१७ जुलाई, १९४२

प्रिय घनश्यामदासजी,

रघुनन्दन कल सुबह यहां पहुंचा यह तो लिखना मैं भूल गया। कसूर उसका नहीं था। ग्राण्ड ट्रंक कई घंटा लेट थी और यहां आता, तो रात को ११ बजे पहुंचता।

कल उसको एक सील्ड (मोहरबंद) चिट्ठी दी है। उसमें जो ड्राफ्ट (मसौदा) है—'प्रश्न' का—उसमें एक सीरियस (गम्भीर) भूल रह गई है। दूसरे पैराग्राफ की तीसरी पंक्ति में अननोन टु हिस्ट्री (इतिहास में अघटित) शब्द निकाल दीजियेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि आप यह शब्द निकालकर ड्राफ्ट की एक नयी कापी (नकल) करवाकर नवाबजादा को दिखाइये।

इसके साथ बापू का एक ताजा इण्टरव्यू (मुलाकात) भेज रहा हूं जो कहीं नहीं आया है और २६ के हरिजन में आयेगा। यह तो आपके—और खासकर मीराबहन के पढने के लिए भेज रहा हूं। मीराबहन आगरा बडे घर में नहीं जा सकी है तो यह पढकर जाय यही अच्छा है।

यह सब मसाला पहुंचने पर टेलिफोन से बात कीजियेगा।

आपका,
महादेव

पुनश्च

बापू की तबीयत सुधर रही है। शक्ति अभी अधिक मालूम होती है क्योंकि दूध
२॥ रतल ले रहे हैं। मिल्क स्टार्वेशन का केस (दूध की बेहद कमी) का मामला
था। चलने में जो थकान लगती थी दिन में तीन दफा सोने की आवश्यकता पहले
रहती थी वह भी अब नहीं रहती है।

क्या बजरंग की सेवा आप हमको एक-दो महीना दे सकते हैं ?

महादेव

४६

१८ जुलाई १९४

प्रिय महादेवभाई

दोनों लिफाफे मिल गये। मीराबेन आपको अलग से लिख रही है। तुमने ज
पूछा है कि क्या मैंने कोई जवान दी है सो मैं ऐसा कैसे कर सकता था ? औ
करता भी तो किसकी ओर से। मैंने तो यह स्पष्ट रूप से कह दिया था कि ऐस
एक भी हिन्दू नहीं मिलेगा जो पार्थक्य के सिद्धान्त में विश्वास रखता हो। औ
यह बात स्पष्ट करने की भी कोई जरूरत नहीं थी। मैं तो पार्थक्य का अभिप्रा
जानना चाहता था और वह मुझे मालूम हो गया और कोई बहुत भयावह भी नह
लगा।

तुमने जो सवाल किये हैं वे तर्क-जैसे लगते हैं और उनका उद्देश्य मुसलमान
की माग के स्वरूप के बारे में जानकारी हासिल करना कदापि नहीं रहा होगा
जो हो, मैं इस मामले को और आगे बढ़ाऊंगा। पर तुमने जिस ढंग के सवाल कि
हैं उनसे यह स्पष्ट है कि बापू पार्थक्य की कल्पना तक को अपने दिमाग में स्था
देने को तैयार नहीं हैं।

यह जानकर खुशी हुई कि बापू दूध अधिक मात्रा में ले रहे हैं और पहले
अच्छे हैं। यह जानकर दिल को ढारस हुआ। मीराबेन बता रही थी कि तुम
किसी ने यह कहा है कि नासिकवाला भवन अब हमारे अधिकार में नहीं है। य
बात गलत है। बापू बम्बई जाने से पहले एक सप्ताह के लिए नासिक में रुक जा
तो कैसा रहेगा ? इससे उनका स्वास्थ्य भी सुधरेगा। यदि वह ऐसा करने क
फैसला करें तो मैं खुद आकर एक हफ्ता उनके पास ठहरूंगा।

तुमने पूछा है कि क्या बजरंग को दो महीने के लिए देना सम्भव होगा। बात यह है कि पिलानी का काम बहुत पिछड़ गया है और वहां सब कुछ ठीक ठाक करना है, इसीलिए मैंने बजरंग को भेजा है। वह साल भर तक वहां रहकर काम काज की जानकारी भी हासिल करेगा। यदि तुम्हें टाइपिस्ट की जरूरत हो तो मैं अवश्य बन्दोबस्त कर दूंगा। हरिराम भी अच्छा खासा टाइप कर लेता है पर बजरंग बिलकुल भिन्न है। यह बताओ कि तुम्हें वास्तव में किस चीज की जरूरत है ?

सप्रेम,
घनश्यामदास

श्री महादेवभाई देसाई
सेवाग्राम

१९४४ के पत्र

सेवाग्राम (वर्धा हाकर मध्य प्रात)
६ १ ४४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका ४ तारीख का पत्र मिल गया था। आज प्रात काल आपका तार आया जिसके उत्तर म तार भेजा कि बापू प्राय ठीक ही हैं। फफडे साफ हैं खासी नही है। बम्बई जाना जरूरी नही है। जब खासी जोरा की थी तो हमने उनको बम्बई जान की सलाह अवश्य दी थी। पर बापू राजी नही हुए। पिछली बार डॉ० गिल्डर आय थे तो हमने उनसे कहा था कि अगर इसी तरह बीच बीच मे हलका बुखार आता रहा, तो बापू को बम्बई ले जाना जरूरी हो जायगा। पर हमार भाग्य अच्छे थ, बुखार और खासी दोना मिट गय हैं। शुष्क प्लूरिसी का एक छोटा-सा धब्बा था, जो अब बिलकुल जाता रहा है। अभी कमजारी बनी हुई है, पर थोडा चलते हैं और राजमर्रा आधा घटा कातत भी हैं। खुराक लगभग पहले जसी हो गइ है और धीरे धीर ताकत आ रही है। अब चिन्ता की कोई बात नही रही है। बापू अपने कान का तथा हुकवम का इलाज कराने का राजी हो गय हैं, जब हम वह इस योग्य लगन लगेंगे, यह इलाज भी शुरू कर दिया जायेगा। १५ तारीख से इलाज शुरू करने का विचार है। यह फसला डा० गिल्डर न किया था। आशा है इलाज से उन्हें इन व्याधियो से भी छुटकारा मिल जायगा।

इस बार भाई साहब का आपरेशन रीढ की हड्डी के नीचे हुआ था। बाद म दो और नयी शिकायतें पदा हो गइ—पशाब नही आता था और कब्ज रहने लगा था। अभी उनका पेट स्वाभाविक स्थिति म नही आया है। पर इतना तो कह ही दू कि १९३८ म भी व ऐसा ही आपरेशन करा चुके थ। कई रोगियो म यह व्याधि ८ १० बरस बाद फिर जोर पकड लेती है। भाई साहब के बारे म भी यही हुआ और इसका दोष बहुत-कुछ उन्ह ही दना चाहिए। भाई साहब अपनी तन्दुरुस्ती का बिलकुल खयाल नही रखत।

विनीत
सुशीला

२

तार

१३ ५ ४४

प्यारेलाल
मारफत महात्मा गाधी
जुहू (बम्बई)

मेरी राय म स्वास्थ्य लाभ के लिए बम्बई आदश स्थान शायद सिद्ध न हो। यदि शीघ्र ही स्वास्थ्य सुधरता दिखाइ न द तो क्या तुम्हारी राय मे डाक्टरा से मशवरा कर बापू को किसी अ य मामूली सी ऊचाईवाले स्थान पर ले जाना ठीक नही रहेगा ?

—घनश्यामदास बिडला

३

सुदरवन, जुहू
१० जून १९४४

प्रिय मित्र

मैं आपको इस पत्र के साथ दो जिल्दा म वह सारा पत्र व्यवहार भेज रहा हू जो आगा खा महल म नजरबदी के बाद मैंने भारत सरकार और बम्बइ-सरकार के साथ किया था।

दूसरी जिल्द म भारत सरकार की '१९४२ ४३ के उपद्रवो के सम्ब ध म काग्रेस का उत्तरदायित्व नामक पुस्तिका क मेरे प्रत्युत्तर की नकल है। पहली जिल्द म उक्त उत्तर के फलस्वरूप पत्र-व्यवहार की नकल तथा सावजनिक हित से सम्बद्ध विभिन्न पत्र ह।

मैंने इस सारी सामग्री को मित्रो की सहायता से साइक्लोस्टाइल करा लिया था। मुझे सेंसर की काट छाट की आशका थी इसलिए मैंने यह सामग्री किसी छापेखान म छपवान के लिए नहीं भेजी। पर इसमे कही गई कोई बात भारत सरकार को सनिक दृष्टिकोण से आपत्तिजनक न लगे, इसलिए मैं इस सामग्री का

वितरण अपने उन मित्रा म ही करके सतोप कर रहा हू, जिन्ह इन दोना सरकारा और मेरे बीच हुए पत्र व्यवहार के सारे ब्योरे की जानकारी करा देना जरूरी है। आप चाहें ता यह सामग्री अपने मित्रा को दिखा दें पर साथ ही सतकता की बात भी ध्यान म रखियेगा।

इस सामग्री को देख जाने के बाद आपकी क्या प्रतिक्रिया होती है इसकी जानकारी आप मुझे कराएग तो आभार मानूगा, विशेषकर भारत सरकार की पुस्तिका पर मेरे उत्तर को देखने के बाद। सरकार ने मुझ पर जो आरोप लगाया है उसके सभी अगा का मैंने सम्यक उत्तर देने की कोशिश की है एसा मेरा विश्वास है। यदि आपको लगे कि कोई मुद्दा बगैर उत्तर के रह गया है ता मुझे बताइये।

भवदीय
मो० क० गाधी

श्री घनश्यामदासजी

४

तार

बिडला हाउस,
मलाबार हिल
४ ७ ४४

प्यारलाल,
मारफत महात्मा गाधी,
पचगनी

कृपा करके बापू को सूचना द दो कि मैं पचगनी शुक्रवार की सुबह पहुच सकता हू और शनिवार के तीसरे पहर वहा से चल पडने का विचार है। यदि बापू को यह सुविधाजनक लगे, ता तार देने की कृपा करो।

—घनश्यामदास

५

तार

पचगनी
४ जुलाई, १९४४

घनश्यामदास बिडला
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई

शुक्रवार अनुकूल है।

—प्यारेलाल

६

दिलखुश
पचगनी
३१ ७ ४४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २७ तारीख का पत्र मिला, साथ भेजी सामग्री भी मिली। पत्र लेखक महत्त्वाकाक्षी नहीं है आपको भ्रम हुआ है। उस पर तो बडप्पन का भूत सवार है और वह महत्वोन्मादी लगता है। यहा इस ढग के अनेक पत्र आ चुके हैं।

हम सेवाग्राम ३ अगस्त को पहुच रहे हैं। सप्रू यदि चाहे तो वह हैदराबाद से ३ तारीख के बाद चल सकते हैं। उनकी बापू से सेवाग्राम मे भेंट होगी शायद जयकर भी उनके साथ आयें।

सेवाग्राम मे स्त्री पुरुषो का अच्छा खासा जमाव हो जाएगा। शातिकुमार रहेंगे ही और गिल्डर को भी काफी दिन ठहरे रहने का निमत्रण मिला है। सेवाग्राम के सीमित साधनो को ध्यान मे रखा जाए तो आतिथ्य सत्कार की यह भारी व्यवस्था वह किस प्रकार कर सकेगा यही देखना है।

बापू ने मुझसे कई एक विदेशी पत्र पत्रिकाओ का प्रबध करने को कहा था।

मैंने उनकी सूची शान्तिकुमार को दे दी थी जो इस प्रकार है

(१) यू स्टेट्समन एड नेशन, (२) टाइम्स (अमरीकी) (३) रीडस डाइजेस्ट (४) मैंचेस्टर गार्जियन (साप्ताहिक) (५) टाइम्स साप्ताहिक (६) यूनिटी और (७) एशिया। अब उन्होंने लिखा है कि इनका प्रबंध नही हो पाया है। क्या आप इनकी प्राप्ति का प्रबध करने की कृपा करेंगे?

भवदीय
प्यारेलाल

पुनश्च

डा० एम० आर० मुकर्जी ५ तारीख को सेवाग्राम पहुच रहे हैं। के० एस० राय ८ को पहुचेंगे। डा० मुकर्जी के साथ श्री मनोरजन चौधरी भी रहेंगे।

७

७ अगस्त १९४४

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारा ३१ तारीख का पत्र मिल गया था। तुमने जिन जिन पत्र पत्रिकाओं का उल्लेख किया है उनको प्राप्त करने के बारे म कोई कठिनाई नही होगी। सब तुम्हारे पास सीधे पहुच जाया करेंगे। आज अपने लन्दन और न्यूयार्क के दफ्तरो को आवश्यक कारवाई करने के लिए समुद्री तार दे रहा हू। जब ये मिलने लगें, तो मुझे खबर कर देना।

जब कभी कोई लिखने लायक बात हो महादेवभाई की तरह तुम भी लिखते रहा करो। अपने पत्रो म अपने निजी विचार भी व्यक्त कर सकते हो।

मैं अभी बम्बई नही जा रहा हू पर बापू को बता देना कि उन्हे जब कभी मेरी जरूरत हो—बम्बई मे या और कही—उनके कहने भर की देर है और मैं आ जाऊगा। मैं उन्हें सीधे नही लिख रहा हू क्योंकि वह पहले से ही काम के बोझ से दबे हुए है उस बोझ को और क्या बढाऊ? आशा है, उनके हुकवम हमेशा के लिए समाप्त हो गये होंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

८

सेवाग्राम
वर्धा सी० पी०
१२ अगस्त १९४४

भाई रामेश्वरदास

बहुत दिनो से लिखने की इच्छा हो रही थी लेकिन लिखने का समय ही नही मिला। अब तो लिखना ही चाहिए। जिन्ना साहेब का खत किसी भी वक्त आ सकता है। मैंने लिखा तो है कि ३ ४ दिन की मुद्दत मिलनी चाहिए। मुझ पर बहुत दबाव डाला जाता है कि मैं बिडला हाउस मे तो हरगिज न रहू। मैंने साफ साफ कह दिया है कि मैं बिना कारण बिडला हाउस का त्याग नही कर सकता हू। प्रश्न तो इसी कारण खडा होता है कि कोई भी सजोगवशात मेरा वहा रहना अनुचित माना जाय तो बगर सकोच मुझे कह देना। यह प्रश्न पूना मे ही उठा था और उस वक्त तय हुआ था कि तुम्हारे तरफ से सकोच की कोई बात हो नही सकती। मुझे याद नही। उस वक्त तुम थे या नही बात घनश्यामदास से हुई थी। लेकिन सावधानी के कारण आज तुमको हर प्रकार से सुरक्षित रखने के कारण जब मुझे बबई जाने का समय नजदीक आ रहा है तो पूछ लेना धर्म हो गया है।

दूसरी बात अधिक अगत्य की है लेकिन समय की दृष्टि से इतनी अगत्य की नही जितनी मुबई निवास की है। अगर मेरी गिरफ्तारी होनेवाली ही है, तो उसके पहले जो काय मुझे करने चाहिए उसे मैं कर सकू तो एक प्रकार का सतोप मिलेगा। तालीमी सघ का काय बहुत अच्छा है ऐसा मेरा विश्वास है। उसके लिए १/२ (आधा) लाख रुपये का प्रबन्ध कर लेना चाहता हू।

मीराबेन के लिए रुपये दान मे मिले थे वह वापस देना चाहता हू। वह उसे वापस देने का धर्म हो गया है। इसका बोझ या तो सत्याग्रह आश्रम-फण्ड पर पडना चाहिए। थोडे पैसे हैं भी सही। लेकिन वह नारणदास ने रचनात्मक काय मे रोक लिये है। उसमे से निकल तो सकते हैं लेकिन उस काय को हानि पहुचा करके ही निकाल सकता हू। हो सके तो उस काय मे हानि पहुचाना नही चाहता हू। इसमे शायद १/२ (आधा) लाख तक पहुच जाता है। ठीक रकम कितनी देनी है मुझे पता नही चला है। दानो से जो रकम आती रही वह दानो मे लिखी है उसे निकालने मे कुछ देर लगती ही है। आश्रम की सब किताबें इधर उधर पडी है। अच्छी तरह रखे हुए चौपड मे से भी ऐसी रकमो को चुन लेना खास

म गिरी हुई सुई को ढूढ लेना सा हो जाता है। तब भी मैंने लिख दिया है कि वह मारा हिसाब निकाला जाए।

कुछ फुटकर खर्च पडा है। इसका कुछ करना आवश्यक है। उसम कुछ १/२ (आधा) लाख चला जाएगा। मैंने ठीक हिसाब निकाला नही है।

क्या इतनी रकम आराम से दे सकते हैं। इसका उत्तर नकार म भी बगर सकोच दिया जा सकता है। मेरे मब काय ईश्वराधीन रहते हैं। ईश्वर अगर वह काय रोकना नही चाहता है ता किसी न किसी को अपना निमित्त बनाकर मुझको हुडी भेज देता है। तो न मिलने से मैं न ईश्वर से रूठूगा न तुमसे। जिस वक्ष के नीचे मैं बैठता हू उसी वक्ष का छेदन आज तक नही किया ईश्वर की कृपा होगी तो भविष्य म नही होगा।

तुम सबका स्वास्थ्य अच्छा होगा। यह पत्र चि० जगदीश के मारफत भेजता हू। वह यहा भाई मुशी का खत लेकर आया है। डाक स क्या भेजा जाए क्या न भेजा जाए इसका निणय करना मुश्किल हो जाता है।

बापु के आशीर्वाद

६

आश्रम

सेवाग्राम (वर्धा होकर)

१४ अगस्त, १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका पत्र मिला। आपको पहल से ही लिखने का विचार कर रहा था पर मैं सकोच करता रहा। मैंने उत्साह को काबू म रखना सीखा है और सीमा लाघने की मेरी आदत नही है। कहना अनावश्यक है कि अब सम्पक बनाये रखूगा। मुझे बडी प्रसन्नता होगी, यह मेरा सौभाग्य है।

तो बापू अब बम्बई १९ को रवाना हो रहे हैं। उनका वहा बहुत थोडे समय ठहरने का विचार है। सम्भाव्य भेंट के बार म बापू इतना ही सोचते हैं कि तफ सील म न जाकर उन आधारभूत बातो तक पहुचा जाए जिन पर दोनो की सहमति हो सके। यदि कायदआजम का बापू के व्यक्तिगत रुख के बार म समाधान हो जाए तो फिर दोनो एक-साथ मिल बैठकर ऐसी परिस्थितियो की व्यवस्था

करेंगे जिनमे रहकर औपचारिक बातचीत सम्भव हो सकेगी।

राजाजी गाधी फार्मूले के जो अथ बापू ने लगाये हैं वे कायकारिणी की दिल्लीवाली बठक म पारित आत्म निणयवाले प्रस्ताव से बहुत कुछ भिन्न नही हैं। उसम देश की अखण्डता सुरक्षा और आर्थिक प्रगति को ध्यान मे रखकर अल्प सख्यकों के आत्म निणय के अधिकार को मान्यता प्रदान करने की बात है। फार्मूले मे से पारस्परिक शत्रुता की भावना को प्रश्रय देने की स्वतन्त्रता को अलग रखा गया है। बापू ने इसी को पाप की सज्ञा दी है। इस प्रकार की स्वतन्त्रता सहमति द्वारा प्राप्त नही की जा सकती। वास्तव म, शत्रुता की भावना रखने की स्वतन्त्रता के साथ पारस्परिक सहमति सम्भव ही नही है। ये एक दूसरे के विरोधी तत्त्व है।

राजाजी गाधी फामूल म यह व्यवस्था सोची गई है कि दोनो राज्यो के हितो के लिए समान रूप से मामलो को मिल जुलकर हल निकालने का विशिष्ट ढाचा तयार किया जाए। इस व्यवस्था का उल्लेख सघीय शासन विधान म नही रहेगा बल्कि वह दोनो राज्यो के बीच हुई सधि के द्वारा अस्तित्व म लाया जायेगा, और उस पाथक्य के दस्तावेज म एक अविभाज्य अग का रूप दिया जायेगा। बदनीयती का सन्देह बिलकुल सम्भव है। वास्तव मे पूण स्वतन्त्रता के तत्त्वावधान मे यह जोखिम तो उठाना ही होगी। स्वतन्त्रता की नीव आशका पर खडी नही की जा सकती।

इसी प्रकार राजनतिक गतिरोध के निवारण के लिए जो फामूला तैयार किया गया है वह वतमान परिवर्तित स्थिति को ध्यान म रखकर किये गये आवश्यक परिवतन परिवद्धन के बाद ८ अगस्तवाले प्रस्ताव की मात्र पुनर्व्याख्या है। बापू अपनी इस आधारभूत माग मे कि जिस शासन समिति का गठन किया जाये वह निर्वाचित प्रतिनिधियो के प्रति उत्तरदायी रहे किसी भी प्रकार की मिलावट स्वीकार नही करेंगे। उनकी इस माग को वतमान शासन विधान म उसके क्षत विक्षत रूप म समाविष्ट करने के सारे प्रयत्न व्यथ सिद्ध होंगे क्योंकि प्रयत्नो को बापू का समथन अथवा सहमति प्राप्त नही होगी।

९ अगस्त बापू के दृष्टिकोण के अनुरूप पूण सफल रहा। व्यक्तिगत रूप से भी यदि हम स्वाभिमान का ठेस पहुचानेवाले अवध आदेशो का सविनय प्रतिरोध करने या उनकी अवज्ञा करने का अपना नागरिक अधिकार त्याग देते तो इसका अथ यही होता कि हमने चम्पारन और दक्षिण अफ्रीका से जो सबक सीखा है उसे हमने भुला दिया है। फलत ९ अगस्त को बापू सब तरह की जोखिम उठाने को तयार थे पर एकमात्र सांकेतिक प्रदशन का परित्याग करने की जोखिम उठाने को

तयार नही थे। बापू तो यह प्रदशन महिलाओ तक ही सीमित रखने को तयार थे क्योंकि बापू की धारणा है कि नारी अहिंसा की प्रतीक है। पर तब तक बहुत कुछ हो चुका था और प्रोग्राम में हेर फेर करने का समय नही मिल पाया था।

बापू का स्वास्थ्य एक प्रकार से ठीक ही है, पर साथ ही यह बात भी है कि वह अपनी शक्ति-सामर्थ्य का अपव्यय एक ऐसे दीपक की भाति कर रहे है जिसकी बाती के दोना छोर जल रहे हो और तेल तजी से स्वाहा होता जा रहा हो। बापू का सारा जीवन ही सकट को न्योता देते बीता है वास्तव म उनके प्रत्येक नि श्वास मे यह चुनौती निहित है।

विदेशी पत्र पत्रिकाओ के निमित्त आपने इतना कष्ट उठाया, तदथ धन्यवाद। आपको लिखा इसमे अपराध-सा लग रहा है। मैं यह कदापि नही चाहता था कि आप इसके लिए इतनी परेशानी मोल लें। यदि आप अपनीवाली प्रतिया भेज देते तो उतना ही काफी था। उन्हे पढने के बाद वापस कर दिया जाता।

सदभावनाओ के साथ,

आपका ही,
प्यारेलाल

१०

८, रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता
२१ अगस्त, १९४४

प्रिय प्यारेलाल,

१४ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद।

यहा सविनय प्रतिरोध के पक्ष और विपक्ष म लोकमत बटा हुआ है। यह कहना ठीक होगा कि जो लोग उसके पक्ष म है व नयी पीढी के हैं जो उसका विरोध कर रहे हैं व पुरानी पीढी से सम्बध रखते है। दोनो पक्षो की शक्ति एक प्रकार से समान है।

पर यहा एक नया गुल खिल रहा है। मैंने अनेक बगालियो को यह कहते सुना है कि बगाल अखण्ड रहे भले ही उसे पाकिस्तान जाना पडे। उधर मुसलमान भी पाकिस्तान क्षेत्र का विस्तार करने पर तुले हुए हैं। यदि बगाल को अखण्ड

रखा गया तो यह पाकिस्तान नहीं होगा बल्कि बंगाल के एक भाग में अलग करना होगा। यह हिन्दुओं मुसलमानों—दोनों ही के लिए एक समान संकट का कारण बनेगा। यदि हिन्दुओं ने बंगाल को अलग रखा तो इसका मतलब होगा कि पाकिस्तान में रहना आए तो मुसलमानों को समझ लगेगा कि कुछ लाभ में घाटा है। हम लोग इस समय कुछ ऐसे ही वातावरण में रह रहे हैं। देश के बुद्धिजीवी वर्ग में यह धारणा व्याप्त है कि मुसलमान स्वयं देखेंगे कि आर्थिक दृष्टि से तथा अन्य दृष्टियों से भी पाकिस्तान व्यावहारिक नहीं है पर यदि मुसलमान उसे हासिल करने पर तुले हुए हैं इसलिए लाचारी है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि बापू एक प्रकार से ठीक हो रहे हैं। आशा है वे अपना दायित्व की बानी के दोनों ओर जताना बन्द कर देंगे। मैं जब जून में और बाद में पूना में उनके पास था तो यह देख चिन्ता रही। यह लगा कि बापू बुड्ढे हो चले हैं और अब बुढ़ापा उन पर अपेक्षाकृत अधिक वेग से आक्रमण करेगा। अतएव उन्हें अपनी शक्ति संचित रखनी चाहिए।

मुझे काम-काज के सिलसिले में सितम्बर के प्रथम सप्ताह में बम्बई जाना था पर अब मेरा बम्बई जाना स्थगित हो गया है। राजाजी के पास से बुलावे का तार आया था पर विचार कुछ बना नहीं।

सब कोई यही आशा लगाये बैठे हैं कि बापू की समझौते की बातचीत कामयाब हो। पर मुझे इस बारे में थोड़ा संदेह है। पर हमें अन्त तक आशा रखनी चाहिए।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

११

२४ अगस्त, १९४४

प्रिय प्यारेलाल

मैं अपने पिछले पत्र में तुम्हें यह बताना भूल गया कि नासिक के पास ही देहात में प्राकृतिक चिकित्सालय के लिए उपयोग में आनेवाली थोड़ी-सी जमीन

उपलब्ध है। मैंने इस जमीन की पूरी कैफियत रामेश्वरदास को लिख भेजी है। कोई २०० एकड़ जमीन होगी। अभी फौरन इससे ज्यादा बड़ी जमीन मिलना मुश्किल है। पर समय बीतते और भी जमीन ले ली जाएगी। आवश्यक पूछताछ करने के बाद रामेश्वरदास बापू को बतायेंगे कि जमीन उन्हें पसंद आई या नहीं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

१२

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रान्त)
२८-८-१९४४

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके २१ और २४ तारीख के दोनों पत्र मिल गये थे। बापू ने दोनों देख लिये हैं।

कल कायदआजम के पास से एक खत आया था, जिसमें उन्होंने लिखा है कि वह सितम्बर के पहले हफ्ते में उनसे मिलने को तैयार रहेंगे। पर १ सितम्बर से ६ सितम्बर तक पहले अखिल भारतीय चरखा संघ, और उसके बाद अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की बैठकें चलती रहेंगी, इसलिए बापू का ७ या ८ से पहले यहां से निकलना सम्भव नहीं होगा।

बापू को पेचिश की हल्की-सी शिकायत हुई। बापू यहां आने के बाद से जो कठोर श्रम करते आ रहे हैं, उससे उनके स्वास्थ्य को उतना आघात नहीं पहुंचा होगा, जितना इस पेचिश की शिकायत ने पहुंचाया है। सुशीला उनकी ताकत बढ़ाने के लिए उन्हें ग्लूकोज दे रही है।

जब हम लोग बम्बई पहुचेंगे तो क्या आप वहा रहेंगे ?
सदभावनाओं के साथ

आपका
प्यारेलाल

पुनश्च

बापू न चिरायता लेना फिर से शुरू कर दिया है।

प्यारलाल

१३

कलकत्ता
३ सितम्बर, १६४४

प्रिय प्यारेलाल

स्पक्टेटर की तीन कटिंग भेज रहा हू। इनम स दो का विषय अलेक्जण्डर का पत्र और राबिसन का उत्तर है। अलक्जण्डर ने बापू का भ्रामक हवाला दिया है और उनके कथन को गलत ढग स पेश किया है। स्पक्टेटर के सम्पादक क नाम तुम्हारा अथवा बापू का उत्तर वाछनाय रहेगा।

तीसरी कटिंग म एक नीग्रो द्वारा एक श्वेत स्त्री के साथ बलात्कार का वणन है। पत्र की टिप्पणी से ऐसा लगता है कि उस नीग्रो क खिलाफ जो अभियोग लगाया गया था वह निमूल था फिर भी उसे प्राणात होने तक फासी पर झूलते रहने का दण्ड दिया गया।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

१४

बम्बई
९ सितम्बर १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका ३ सितम्बर का पत्र और उसके साथ भेजी 'स्पक्टेटर' की कटिंग मिल गई थी। बापू ने तीनों कटिंग देख ली हैं। होरेस अलेक्जण्डर की पुस्तक भी मेरे पास है। आवश्यक कारवाई करूंगा।

आपने समाचार पत्रों में सेवाग्राम में धरना देनेवालों के हथकण्डों का समाचार पढा ही होगा। जहां तक हम लोगों का सम्बन्ध था हमने तो यह सारा मामला मनोविनोद की सामग्री लगा, पर तो भी धरने के पहले ही दिन धरना देनेवालों के अगुआ ने मन की बात कह ही डाली। उसने कहा कि यह तो श्रीगणेश मात्र है जरूरत पडी तो बापू का कायदेआजम से मिलने जाने से रोकने के लिए यदि बल प्रयोग करना पडेगा तो वह भी किया जाएगा। कल धरना देनेवालों ने कहला भेजा कि वे बापू को उनकी कुटिया से बाहर भी नहीं निकलने देंगे। इसके बाद उन्होंने कुटिया के तीनों दरवाजों पर धरना देना शुरू कर दिया।

आज प्रातःकाल पुलिस के डिप्टी सुपरिन्टेंडेंट का फोन आया कि धरना देनेवाले उत्पात पर उतारू हैं इसलिए पुलिस आवश्यक कारवाई करने को बाध्य है। बापू ने उनके बीच में से होकर वर्धा तक पैदल जाने की ठानी यदि धरना देनेवाले खुद ही उनसे कार में बैठकर वर्धा तक जाने का आग्रह करते तो बात दूसरी थी। यात्रा का समय दोपहर के १२ बजे निश्चित किया गया, क्योंकि पैदल चलने में अधिक समय अवश्य लगता। बापू यात्रा आरम्भ करने ही वाले थे कि डिप्टी सुपरिटेंडेंट पुलिस आ गया। उसने बताया कि सारे धरना देनेवाले पकड लिये गये हैं। पहले उन्हें नोटिस दिया गया और जब समझाना बुझाना बेकार हुआ, तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। आपको यह तो पता ही होगा कि इस समय वर्धा जिले भर में जलसों और प्रदर्शनों पर पाबन्दी है।

धरना देनेवालों का नेता बडा उत्तेजित दिखाई दिया उन्माद का शिकार और सब कुछ कर गुजरने पर उतारू। उसके रंग ढंग से यहां थोडी-बहुत चिन्ता उत्पन्न हो गई। उसकी तलाशी ली गई तो एक छुरा बरामद हुआ।

जिस पुलिस-अफसर ने उसे पकडा था उसने व्यग्य के साथ कहा कि 'चलो, तुमने भी शहीदों में नाम लिखा लिया।' फौरन जवाब मिला, नहीं यह तब

होगा जब गाधीजी की कोई हत्या करेगा। पुलिस अफसर ने फब्ती कसी ' लोटर लोगों को ही आपस में निबट लेने दो। हो सकता है सावरकर आकर यह काम करें। उत्तर मिला यह गाधी इतने बडे सम्मान का अधिकारी नहीं है। इस काम के लिए तो कोई जमादार ही काफी होगा।

बापू आश्रमवासियों के साथ गम्भीर रूप से विचारों का आदान प्रदान कर रहे है। उनका कहना है कि यदि आश्रम के लोग खतरे के समय कसौटी पर खरे न उतर पायें तो इससे अच्छा तो यही होगा कि आश्रम को बन्द कर दिया जाए। उनकी राय में इस अवसर पर जो विफलता हुई उसका एकमात्र कारण उनकी उपस्थिति थी। आश्रम का पुनर्गठन होने के बाद वह वहा से चल जायेंगे। और या तो सेवाग्राम से बिडला हाउस में जाकर टिक जायेंगे या वर्धा जाकर डेरा जमायेंगे। बापू ने अखिल भारतीय चरखा सघ के ढाचे के कायाकल्प का जो सुझाव पेश किया है वह तो आपकी नजर से गुजरा ही होगा। बापू के उद्गारों को मैंने पत्रों में प्रकाशनार्थ भेज दिया है। आप उनका मनन करिये। पर उसके बाद से कुछ ताजा घटनाए घटी है। आगे चलकर क्या रूपरेखा प्रकट होगी यह कहना फिलहाल कठिन है।

हम लोग घोर सकट के दौर से गुजर रहे हैं और हमारी चिन्ताओ का कोई अंत नहीं है। ये चिन्ताए हमारे लिए भारी बोझ साबित हो रही है। बापू बम्बई आशा लेकर अवश्य जा रहे हैं पर उन्हे कोई अपेक्षा नहीं है।

भवदीय
प्यारेलाल

१५

तार

बनारस
१३ सितम्बर १९४४

प्यारेलाल
बिडला हाउस,
मलाबार हिल,
बम्बई

मेरा नवम्बर के आरम्भ मे सेवाग्राम आने का प्रोग्राम था जिससे वहा कुछ समय निश्चित होकर ठहर सकू। पर यदि बापू चाहे, तो जल्दी भी आ सकता हू। मुझे कोई असुविधा नही होगी। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। थोडी-बहुत थकान अवश्य है। बापू की निश्चित राय का तार दो।

—घनश्यामदास

१६

तार

बनारस
१३ ९ ४४

प्यारेलाल
बिडला हाउस
मलाबार हिल
बम्बई

मेरी सलाह है कि सेवाग्राम म धरना देनेवालो के बारे म पत्रो म सही सूचना भेजी जाय जिससे जनता को जानकारी रहे।

—घनश्यामदास

१७

तार

बनारस
१-६-४४

प्यारेलाल
बिड़ला हाउस
मलाबार हिल
बम्बई

तुम्हारा पत्र तार भेजने के बाद अभी-अभी मिला। चिन्ता उत्पन्न हुई। और भी जल्दी आ सकता हूं जैसा बापू चाहें। उत्तर की प्रतीक्षा है।

—घनश्यामदास

१८

तार

बम्बई
१६-६-४४

घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
बनारस

मेरी निश्चित सलाह है मसूरी जाओ। जरूरत पड़ी तो वहां से बुला भेजूंगा।

—बापू

१६

बिडला हाउस
माउण्ट प्लेजेंट रोड
बम्बई
१६ सितम्बर १६४४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका तार मिला। बापू का कहना है कि इस प्रकरण के परम महत्त्वपूर्ण तथ्यो को—जिनका वास्तविक महत्त्व है—इस समय प्रकाशित नही किया जा सकता क्योंकि तकनीकी लिहाज से मामला विचाराधीन है।

मैं तकनीकी शब्द का प्रयोग जान बूझकर कर रहा हू क्योंकि जो डिप्टी पुलिस सुपरिंटेंडेंट मुक्स वर्धा मे मिला था उसका विचार है कि धरना देनेवाला को बापू की सेवाग्राम वापसी तक हाजत म रखा जाएगा जिससे उनकी वापसी के अवसर पर कोई नया उत्पात न हो सके।

यहा बातचीत अपना दौर ले रही है। प्रारम्भ म दिन म दो बार भेंट होती थी अब घटाकर एक बार कर दी गई है, और सो भी सध्या के समय क्योंकि प्रात काल का समय डॉ० दिनशा के लिए अलग छोडा गया है, जो कायदेआजम की देखरख कर रहा है।

आपके दोनो तार मिल गये थे। मैंने सारी बात रामेश्वरदासजी को समझा दी है। वह आपस फोन पर बात करेंगे।

फिलहाल और कुछ कहने के लिए नही है। आशा है आप स्वस्थ होग।

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

पुनश्च

यह पत्र लिखे जाने के बाद बापू ने आपके दोनो तार देख लिये हैं। उनका उत्तर तार द्वारा भेजा जा रहा है जो यह है मेरी निश्चित सलाह है मसूरी जाओ। जरूरत पडी तो वहा स बुला भेजूगा।

२०

तार

१ १० ४४

महात्मा गांधी,
सेवाग्राम
वर्धा

अत्यन्त भक्ति भाव के साथ अभिवादन करता हूं। भगवान करें आप अपनी १००वीं वर्षगांठ तक जीवनी शक्ति से ओतप्रोत रहें। आपके शुभाशीर्वाद की सन्द कामना करता हूं।

—घनश्यामदास

२१

सेवाग्राम,
वर्धा, सी० पी०
८ अक्तूबर १९४४

भाई घनश्यामदास

मोहनलालजी से मेरी बातें हुई है। देवदास से भी। मेरा अभिप्राय है कि महादेव के स्मरणार्थ एक लाख रुपया इकट्ठा करना सहल (सरल) बात है। उस निमित्त सोहनलालजी की पुस्तक बाजार दाम से ज्यादा लेकर बेचना अच्छा नहीं लगता है। पुस्तक बाजार दाम से बिका जाय और अपने गुण पर इससे जनता ऐसी पुस्तक को कहां तक आवकार देती है पता चल जायगा।

महादेव के स्मरण की बात अलग रखी जाय। उस बारे में जब यहां आओगे तब बात करेंगे।

सोहनलालजी समझ गये हैं। देवदास और श्रीमन् ने मेरी दलील को स्वीकार किया है। देवदास से समझा हूं कि तुम कुछ नैतिक बंधन में आ गये हो कि वह पुस्तक महादेव स्मारक निधि के लिए प्रगट होगा। अगर ऐसा है भी तो उसका

अथ नो इतना हा न कि एक लाख उस निधि मा जायगा ? पुस्तक द्वारा ही होन म तो कुछ अय नही है अनथ मैं स्पष्ट देखता हू।

पारनेरकर की नियुक्ति के लिए तुम्हारा आना पत्र आवश्यक हागा। आजकल सबमत्ता तुम्हार हाथ म है। कमिटी स्थगित की गई थी। अब अगर तुम पुन स्थापना करनी है तो जब मिलेंगे तब कर लेंग। लक्ष्मणराव आजकल सेक्रेटरी है उनका आना भी आवश्यकता रहती है। तब ही पारनेरकर को चाज मिल सकता है।

मेरा पराक्रम को ता अखबारा म देखा होगा। विशेष मिलने पर।

मसूरी म स्वास्थ्य को लाभ हुआ होगा।

बापु के आशीर्वाद

२२

सेवाग्राम

१६ अक्तूबर, १९४४

भाई घनश्यामदास,

इसक साथ हिगिनबाटेम के बारे म पत्रिका रखता हू। प्रा० जोषी यहा आये थे कि मैं उसम हस्ताक्षर दू। मैंने कहा मैं हस्ताक्षर नही दूगा लेकिन कुछ मित्रा का लिखूगा। शायत तुमने उसका काम देखा होगा। यदि अच्छा समजें तो कुछ मदद दें, और ग्लिशेबी सिंघानिया को मैं लिखना चाहता था लेकिन इस वक्त तो तुमको ही लिखकर सतुष्ट रहता हू।

मेरा कल का खत पहोचा होगा।

बापु के आशीर्वाद

२३

२० अक्तूबर, १९४४

प्रिय प्यारेलाल

हम डाक्टर हिगिनबॉटम के इलाहाबाद मेमोरियल के लिए ५०००) दे रहे हैं। यह केवल बापू के सूचनार्थ है।

मैं बैठक के अवसर पर वर्धा शायद १-२ दिन पहले पहुंच जाऊंगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

२४

सेवाग्राम
२२ अक्तूबर १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी

आपने ब्रेल्सफर्ड के लेख की 'न्यू रिपब्लिक' में से कतरन भेजी थी वह मिली थी। बापूजी ने पढ़ ली है।

आजकल वे बहुत गहरे पानी में उतरने की तैयारी कर रहे हैं। इस बारे में थोड़ा-सा इशारा रामेश्वरदासजी से किया था और सक्रिय रूप समर्थन मसूरी भी उन्होंने भेजा था। बापूजी का उपवास का विचार अब व्यक्त रूप ले रहा है। इसकी काफी चर्चा भी हो चुकी है। अंतिम निश्चय नहीं किया परन्तु पूर्व अनुभव से ऐसा लगता है कि यह टाले टलनेवाली चीज नहीं है। इसका हेतु त्रिविध होगा। आत्म शुद्धि, तप-साधना और विरोध—विरोध हिन्दुस्तान और सारे जगत में फैले हुए पशुत्व, दंभ, झूठ और मदांधता के खिलाफ। एक तरफ तो हिन्दुस्तान को हमेशा के लिए दबाये रखने और यहां की दरिद्र जनता का शोषण कायम रखने के लिए भयंकर षडयंत्र रचे जा रहे हैं दूसरी ओर युद्ध के अंत पर

विश्व शान्ति की बजाय पशुबल के साम्राज्य और कायदेवाजी की अराजकता का दृश्य सामने खडा है। ऐसे अवसर पर जगत की बेस्ट कानशस (उत्तम विवेक) को कैसे जाग्रत किया जा सकता है यह उनके आगे सवाल है। मुझे यह भी लगता है कि अदर अदर आठमी अगस्त के प्रस्ताव के परिणामस्वरूप उस प्रस्ताव के प्रणेता की देश के प्रति और कायकारिणी की अटक मे पडे हुए सभ्या के प्रति जिम्मेदारी का खयाल भी उन्हे व्यग्र कर रहा है। कहते हैं कि अगर कोई समस्या का दूसरा उपाय बता दें या परिस्थिति म ऐसी विशेष तब्दीली हो जाय कि उपवास की आवश्यकता न रहे तब यह सवाल टल जाता है। परन्तु इनम से मुझे तो कुछ आश्वासन नही मिलता।

अभी तो इतना ही। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

विनीत,
प्यारेलाल

२५

सेवाग्राम (वर्धा होकर)
२४ अक्तूबर १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी

बापू ने आपका २० तारीख का पत्र देख लिया है।

तो आप पहली या दूसरी को यहा पहुच रहे हैं।

मैंने आपको श्रीमती रामीबेन कामदार के हाथा जो पत्र भेजा था वह मिला होगा।

यह पत्र आपके हाथा तक पहुचने से पहले ही आपने पत्रा मे पढ लिया होगा कि बापू का दिमाग किस दिशा मे काम कर रहा है।

सदभावनाओ के साथ,

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला,
बिडला हाउस
बम्बई

२६

दिल्ली
१८ नवम्बर, १९४४

प्रिय गांधीजी

मैं बिड़ला काटन स्पिनिंग और वीविंग मिल के मजदूरों की ओर से आपको यह पत्र मिल की स्थिति को आपके ध्यान में लाने के लिए लिख रहा हूं।

पिछले साल इस मिल के मजदूरों की दशा विशेषरूप से शोचनीय रही। इस मिल की वेतन की दर दिल्ली क्लाथ मिल की दर से कम है और भत्ता भी उस मिल की अपेक्षा कम मिलता है। कुल मिलाकर इस मिल के मजदूर दिल्ली क्लाथ मिल के मजदूरों की अपेक्षा कम अर्जन कर पाते हैं और दिल्ली में ये ही दो बड़ी मिलें हैं। इसके अतिरिक्त बिड़ला मिल के अधिकांश मजदूरों के रहने की भी कोई व्यवस्था नहीं है। परिणामस्वरूप हम मिल के मजदूर काम छोड़कर जा रहे हैं। सी पाली में चलाये जानेवाले करघों की संख्या में काफी कमी की जाती रही थी। अब यह सी पाली बिलकुल बन्द कर दी गई है। जो मजदूर मिल से चले गये हैं उनके अतिरिक्त इस निर्णय के फलस्वरूप १५० मजदूर और बेकार हो जायेंगे। इस समय तीन पालियों के स्थान पर केवल दो पालियां ही काम कर रही हैं।

अब तक इन पालियों का कार्य विभाजन इस प्रकार रहा है

पहले ए पाली ने ४॥ घण्टे काम किया।

उसके बाद बी पाली ने ४॥ घण्टे काम किया।

उसके बाद ए पाली ने दुबारा ४॥ घण्टे काम किया।

फिर बी पाली ने दुबारा ४॥ घण्टे काम किया।

बाकी ६ घण्टे सी पाली ने काम किया।

यह इंतजाम अच्छा था। यह ए और बी पाली के मजदूरों के लिए सुविधाजनक था। वे ९ घण्टे काम करते थे पर ४॥ घण्टे के समय विभाजन के साथ। बीच के अवकाश में वे स्नान आदि से निवृत्त होते थे अपना खाना तैयार करते और खाते थे तथा अपनी अन्य दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते थे और थोड़ा बहुत आराम भी कर लेते थे। उनकी कार्यदक्षता अधिक थी और काम भी अधिक मात्रा में होता था क्योंकि जब वे काम पर आते तो तरोताजा होकर आते। सी पाली को प्रबन्धकर्ताओं ने इसलिए उठा दिया कि यद्यपि उसके

मजदूर केवल ६ घण्ट काम करत थे उ ह महगाई का भत्ता अ य मजदूरो जितना ही मिलता था। पर अब मिल मालिका ने सी पाली तो उठाई ही दी, साथ ही उ होने अ य दानों पालिया के काम करने के समय म भी रद्दा बदल कर दिया है। अब य पालिया इस प्रकार काम करेंगी

'ए' पाली ६ घण्टे काम करेगी बीच म डेढ घटे का अवकाश मिलेगा।

बी पाली ६ घण्टे काम करेगी और बीच मे उस भी डेढ घटे का अवकाश मिलेगा।

इसका मतलब यह हुआ कि मजदूरा को अब पहल की भाति ४।। घण्टे का अवकाश नहा मिलेगा। अत इस डेढ घण्टे के भीतर उनके लिए स्नान करन भोजन बनान तथा आराम करन का समय नही मिलगा। इससे उनकी काय दक्षता को आच आएगी, और वस्त्र क उत्पादन म कमी होगी। मजदूरो को यह भी आशका ह कि उ ह अतिरिक्त घटे भी काम करना पडेगा (अर्थात पहले की भाति ६ घण्ट की बजाय १० ११ घण्टे)। उनकी यह आशका निमूल कदापि नही है, पहले भी उन पर ऐसी ही गुजर चुकी है। इन अतिरिक्त घण्टा के लिए उ ह अतिरिक्त वेतन अवश्य मिलेगा पर महगाई भत्ता नही मिलेगा, क्योकि महगाई भत्ता जितने घण्टे काम किया है, उसके आधार पर नही कूता जाता है बल्कि महीने भर की हाजिरी के आधार पर कूता जाना है। इस प्रकार मिल के प्रबधकों के इस फसले के परिणामस्वरूप मजदूरो को अधिक कष्ट उठाना पडेगा। हा अलबत्ता यह बात अवश्य है कि इस हर फेर के कारण मिल का उा पसा की बचत हो जायगी जो सी पालीवाला को महगाइ के भत्ते के रूप मे देनी पडती थी, साथ ही ए और बी' पालीवाला को अतिरिक्त घण्टे काम के आधार पर कूते गय शुल्क के द्वारा भी मिल को कुछ बचत हो जाएगी।

इस प्रकार मिल के प्रबध कर्त्ता निम्नलिखित बाता के लिए जिम्मेवार है उ होने मिल म ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जो मजदूरा के हितो के लिए घातक सिद्ध हुइ जिसके कारण मजदूरा की सख्या घट गई। (२) उसमे सी पाली, जो बस ही आशिक रूप स ही काम कर रही थी, उठा दी। इससे यह महगाई भत्ता देन से बच गई, और १२० मजदूर निठल्ले हा गये। उनके ऐसा करने से उत्पादन की मात्रा म भी कमी हुई हालाकि इस समय देश को अधिकाधिक उत्पादन की जरूरत है क्योकि वस्त्र का नितात अभाव है। (३) उ होने 'ए' और बी पालिया के काम करन के समय म हेर फेर करके मजदूरो के लिए कठिनाइया उपस्थित कर दी और एसी परिस्थिति पैदा कर दी जिसके अतगत मजदूर अतिरिक्त काम के यथेष्ट मुआवजे से वचित हो गये।

पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत अतिरिक्त घण्ट काम कराना सम्भव नहा था क्योंकि 'ए' पालीवाले ९ घण्टे काम करते थे बी पालीवाले ६ घण्टे काम करते थे तथा सी पालीवाले बाकी ६ घण्टे काम करते थे।

मजदूरों की माग है कि (१) पुरानी व्यवस्था पुन लागू कर दी जाए, जिससे उन्हे ४॥ घण्टे की फुरसत मिल सके। इस फुरसत से मजदूरो की कार्यदक्षता मे वृद्धि होती है उनका स्वास्थ्य बना रहता है और उनको सुख मिलता है।

(२) सी पाली का अन्त न किया जाये इससे वहा काम करनेवाले मजदूर अधिकाधिक सख्या म बराबर काम म लग रहगे और अधिक मजदूर एकत्र करने का गम्भीर प्रयत्न करना चाहिए जिससे सी पाली म काम करनेवाले मजदूरो की सख्या भी उतनी ही हो जाये जितनी अन्य पाली के मजदूरो की है और सारे के-सारे करघे बराबर काम करते रह।

(३) मिल के प्रबन्ध कर्त्ताओ को मजदूरो की उचित और वध मागो पर सहानुभूतिपूवक विचार करना चाहिए जिससे और अधिक मजदूर काम पर आ सकें। यह मागें समय समय पर प्रबन्ध कर्त्ताओ के सामने पेश की जाती रही हैं।

मजदूर आपके हस्तक्षेप की अपेक्षा करते हैं जिससे मिल के प्रबन्ध-कर्त्ताओ को मजदूरो की शिकायतें रफा करने को राजी किया जा सके।

आदर सम्मान के साथ

मैं हू आपका
ए० सी० नन्दा
सयुक्त मत्री
कपडा मिल मजदूर सभा, दिल्ली

२७

सेवाग्राम
२७ नवम्बर १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी

इसके साथ एक पत्र भेज रहा हू जो बापू के पास आया है। पत्र सदुद्देश्य से प्रेरित होकर लिखा गया मालूम होता है। पहले तो सोचा कि इसे दिल्ली कपडा मिल के मनेजर के पास भेज दिया जाये पर फिर कुछ सोच विचारकर उन्होंने इसे आपके पास भेजने का निश्चय किया, जिससे आपकी जानकारी हो

और आवश्यक कारवाई की जा सक ।

उस दिन मुशी यहा आये थ, बापू के साथ दर तक बातें हुइ । अवसर मिलने पर वह आपस भी विचार विमश करेंगे । गत शुक्रवार का राजाजी वधा होते हुए गय । मैं उनस स्टेशन पर मिला था । आगामी मगलवार का सवाग्राम आ रहे हैं और कुछ दिन यही ठहरेंगे । मुशी राजाजी से भी जल्दी-स-जल्दी मिलना चाहत हैं ।

अभी उसी दिन बापू की तबीयत कुछ खराब हा गई थी, उन्होंने कास्टर आइल ल लिया था, पहले से ही थके हुए थे । स्नान घर मे बेहोश होकर गिर पडे । आगाथा पलस और उसस पहले विश्वविद्यालय के दीक्षान्त-समारोह क अवसर पर बनारस म जो-कुछ बीती थी, वह उसकी हूबहू पुनरावत्ति थी । गनीमत हुइ कि उन्हें कोई चाट नही आई । कुछ दर बाद होश म आये स्नान किया, और अपनी कुटिया तक खुद ही चलकर गय । पचिश की शिकायत है ही इसलिए उन्होंने कुछ समय स अपने भोजन की मात्रा म काफी कमी कर रखी है । यह दुबलता इस अपर्याप्त भाजन के कारण आई है ।

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला,
दिल्ली

२८

३० नवम्बर १९४४

प्रिय प्यारेलाल,

मैं यह कहन को बाध्य हू कि कपडा मिल-मजदूर सभा का पत्र सत्य पर आधारित नही है । इस सभा के मरे पास बीच बीच म पत्र आते रहते हैं । आरम्भ म मैं इन पत्रा की ओर ध्यान दिया करता था पर जब मैंने देखा कि व लोग मुनासिब ढग स बातचीत करन को तयार नही हैं और असत्य का आश्रय ल रहे हैं तो मैंन वसा करना छाड दिया । आजकल मैं सभा क पत्रा का उत्तर नहीं देता हू । बापू इन लोगा स वाकिफ हैं । यदि तुम चाहा तो मैं अपने मनजर स कह दू कि वह सार उठाये गय मुद्दा का यथेष्ट उत्तर भेज दे ।

सभा की मुख्य शिकायत पालिया क बार मे है । जब हम सी पाली चला

रह थे तो सभावालो न उसके उठाय जाने की माग की, जो वास्तव म वाजिब माग थी। हम लाचार थे क्योकि हमारे पास उतन करघे नही थे, पर अब जबकि यह पाली उठा दी है, और काम के घटा का पुनगठन अहमदाबाद आदि स्थाना म बरती जा रही व्यवस्था के अनुरूप किया तो सभावाले शिकायत कर रह हैं। पत्र म जिस असुविधा की चचा की है वह सचमुच मौजूद ह, पर यह सब व्यापक है। यदि हम सभा द्वारा सुझाया गया तौर-तरीका अपनायें तो अनेक करघे बेकार हो जायेंगे क्योकि सूत का अभाव है। यदि तुम सारी बात विस्तारपूवक जानना चाहो, तो म वसा अवश्य करूगा।

बापू के स्वास्थ्य म कुछ गडबडी हुई यह जानकर बडी चिता हुई यह लक्षण अच्छा नही है। पर बापू को अपनी दिनचर्या म आमूल परिवतन करन को कौन राजी करे ? मैं सवाग्राम म था तब बापू स बहुत कुछ कहा पर एक तो वह बेतरह काय-व्यस्त थे, और एक इस कारण कि उन्ह समझाना बुझाना किसी के बूते का नही है, मैंने इस प्रसग को आग नही बढाया। अब बापू अपन जीवन के उस चरण मे प्रवेश कर रह हैं जब उन्हें अपने काम काज की मात्रा म काफी कमी करनी होगी। उन्ह तो अब सलाह मशवरा करने तक ही अपना काय सीमित रखना चाहिए। हमारे पूवजो ने सन्यास धम क मामल म शारीरिक दक्षता की सीमा को घ्यान म रखा था। जहा तक सासारिक विषय वासनाओ का सम्बध है बापू सचमुच सन्यासी हैं। पर उनका शरीर अब इस लायक नहा रहा है कि उतना काय भार उठा सकें और इतनी सारी जिम्मेदारिया अपन कधा पर उठाए रखें। इस निमम सत्य का सामना करना ही होगा। आश्रम के सचालन का काम अय लोगा को सौंपना ठीक रहगा। बापू को स्थान परिवतन भी करना चाहिए। हमारे ऋषि मुनि हिमालय या ही नहा जाते थे पर मेरा यह सब लिखना व्यथ होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

२९

३ दिसम्बर १९४४

प्रिय प्यारेलाल,

मैंने अभी परसो ही तो तुम्हे लिखा था, और अब खबर आई है कि बापू ने चार हफ्ते पूरा विश्राम लेने का फमला किया है, तो मैं जो अपने पिछले पत्रो मे कहता जा रहा था कि वह हठी हैं ता वसी कोई बात नही है। क्षमा-याचना करता हू पर मैंने पहले जो कुछ कहा था उसक लिए मुझे जरा सा भी पछतावा नही है। बापू ने विश्राम लेने का जो सकल्प किया है सो एक असाधारण सी बात है। साधारणतया वह ऐसा कहा करते है। पर मर दूसरे सुझाव के बारे म क्या रहा, कि बापू को वायु परिवतन करना चाहिए ? फरवरी तक तो सेवाग्राम अच्छा स्थान है पर उसके बाद कोई अन्य स्थान उपयुक्त सिद्ध होगा, यदि प्रकृति के आदश का पालन करना ही है तो उसके सार आदेशो का पालन क्यो न किया जाये ?

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल,
सेवाग्राम

३०

सेवाग्राम, वर्धा होकर
(मध्य प्रात)
६ दिसम्बर, १९४४

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपके दोनो पत्र मिल गये थे।

आपके पहले पत्र के बारे मे सारा मामला आप ही पर छोडता हू। यदि आपके मनेजर के कुछ कहने का कुछ सुफल होगा, तो वसा ही कीजिए।

बापू को आखिरकार प्रकृति क आदश के आगे सिर नवाना ही पडा। उन्होंने यह निणय ठीक समय पर लिया। इस समय वह सचमुच आराम कर रहे है। पर कभी-कभी ऐसी घरलू झझट उठ खडी होती हैं जो उनके लिए काम से भी अधिक

याकुल करनेवाली होती है, और उनके सकल्प को शिथिल कर देती हैं। पर उन्होंने इतना किया, सो भी बहुत समझना चाहिए। अपने आराम के दौरान उनकी निगाह जिस किसी पुस्तक पर पड जाती है, उसीके पन्ने उलटते रहते हैं—कभी पतजलि का योगसूत्र तो कभी कोई उर्दू की किताब अथवा लोनिग्ज कुड रिक की एक जिल्द।

बापू किसी दिन मगनवाडी तक पदल जाने का और फिर वर्धा के निकट ही करजिया गाव जाने का विचार कर रहे हैं। यह वही गाव है जहा स्वर्गीय छोटा लाल ने काय आरम्भ किया था। उनका विचार कुछ दिन श्रीमन्नारायण और मदालसा के पास ठहरने का है। मदालसा का विशेष आग्रह है। वह नागपुरी की तीर्थ यात्रा करने की सोच रहे हैं। उनका विश्वास है कि इस मास के अन्त तक वे काम म पूववत लगने लायक हो जायेंगे। हम आशा तो ऐसी ही करनी चाहिए। पर मेरी तो यह राय है कि उनके कायक्षेत्र और काय की सीमा म आमूल परिवतन की आवश्यकता है। भविष्य मे उनका काम इजन ड्राइवर की हैसियत का न होकर, पाइटसमन जसा होना चाहिए। अब तो उन्हें अपने विचारो का प्रसार और आध्यात्मिक प्रकाश का दिग्दशन कराके ही सतुष्ट हो जाना चाहिए। मेरी तो यह बद्धमूल धारणा है कि उनके पथ प्रदशन की हम इस समय जितनी आवश्यकता मालूम होती है भविष्य म उससे वह कही अधिक होगी। अभी उनके लिए अपना सर्वोत्कृष्ट प्रसाद तो प्रदान करना बाकी ही रह गया है। बापू अपना स्वास्थ्य अक्षुण्ण रखें यह उनकी अपने तथा विश्व के प्रति एक जिम्मेवारी है जिसे उन्हें निबाहना है।

आज राजाजी रवाना हो रहे हैं। काश उनके जसा आदमी बापू के पास बना रहता। बापू ससार से लाख निर्लिप्त हो गये हो पर उनकी मानवता ज्यो-की त्यो है और जब वह अपने पास अपने पुराने साथियो मे से किसी को देख पाते हैं, तो जितने प्रफुल्लित हो उठते हैं वह वणनातीत है।

बापू का आध्यात्मिक एकाकीपन भयावह है। वास्तव म यह भी महत्ता का एक अग है पर इस एकाकीपन को दूर करने का प्रयत्न तो करना ही चाहिए।

सद्भावनाओ के साथ,

आपका,
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
नयी दिल्ली

३१

तार

वर्धागज
६ दिसम्बर, १६४४

घनश्यामदासजी,
बिडला हाउस
नयी दिल्ली

बन्दोबस्त की कोई जरूरत नही। चिन्ता का कोई कारण नही।

—प्यारेलाल

३२

पो० ऑ० जियाजीराव काटन मिल्स,
ग्वालियर
३० दिसम्बर, १६४४

प्रिय प्यारेलालभाई

दिल्ली कपडा मिल मजदूर सभा के बापू के नाम १४ तारीख के पत्र के उत्तर मे श्री घनश्यामदासजी ने मुझे आपको आकडे भेजने का आदेश दिया है। उक्त पत्र मे ये तीन बातें उठाई गई है

(१) हमारी मिल का वेतन स्तर दिल्ली क्लाथ मिल के वेतन-स्तर से नीचा है।

(२) मिल मे मजदूरो के रहने की यथेष्ट व्यवस्था नही है, तथा

(३) 'सी' वाली पाली का हटाया जाना ठीक नही हुआ।

मैं इन तीनों बातो का क्रमश उत्तर देता हू

(१) मजदूर सभा का यह कथन निराधार है। दिल्ली क्लाथ मिल कुछ विशिष्ट कोटि के मजदूरो को अपेक्षाकृत अधिक वेतन भले ही देती हो, जहा तक

उत्पादन का प्रति इकाइ का अथवा करघा पर सकडा पीछे अदा किये गये शुल्क का, या चरखा पर हजार पीछे अदा किये गये शुल्क का प्रश्न है, वह दिल्ली क्लाथ मिल के मजदूरा को दिये जानवाले शुल्क स किसी भी रूप म कम नही है बल्कि कई अशा म अधिक ही है।

महगाई भत्ते और बोनस क बारे म यह बात है कि हमने बम्बइ के साथ लगाव रखा है और बम्बइ की मिलें जितना कुछ महगाई भत्ता और बोनस दती हैं हम भी अपने मजदूरा को उतना ही देते हैं। आपको शायद इस बात का पता होगा कि मिल मालिको क प्रतिनिधियो सरकार के प्रतिनिधियो और मजदूर हितो का प्रतिनिधित्व करनवालो की एक सयुक्त बठक म जो करार हुआ था उसे सबस पहल बम्बई मिल ओनस एसोसिएशन ने अपनाया। यह बम्बईवाली व्यवस्था महगाई भत्त और बोनस के मामले म देश भर मे सर्वाधिक श्रेष्ठ व्यवस्था समझी जाती है। यद्यपि दिल्ली अपेक्षाकृत सस्ता नगर है तथापि इस व्यवस्था को अच्छा समझकर हमन भी बम्बई की व्यवस्था को अपना लिया।

(२) युद्ध से पहल हमारी मिल म मजदूरा के काई ४०० क्वाटर थे। युद्ध क दौरान इनकी सख्या म १२८ की वद्धि की गइ इस प्रकार अब ५७५ क्वाटर ह। यदि इस बात को ध्यान मे रखा जाये कि दिल्ली म जमीन मिलना सहज नही है इमारत के साज-सामान का तरह-तरह के कट्रोलो के कारण नितात अभाव है तो आपको यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण नही लगेगा कि अपने मजदूरो के रहने का जितना अच्छा प्रबन्ध हमारी मिल म है उतना भारत की किसी भी मिल मे शायद ही देखने को मिले। हमारी अपनी आकाक्षा है कि हमारे यहा जितने मजदूर काम करते ह, उन सबके रहन का एक ही इमारत म प्रबध हो पर इस लक्ष्य तक पहुचन म समय लगगा। साथ ही मैं यह भी कह दू कि हम इन क्वाटरो का जो किराया लेते है वह पडोस की मिल के किराये की अपक्षा काफी कम है।

(३) सी वाली पाली १९३७ म शुरू की गइ थी। उस समय हम जितना कातत थ उतना बुन नही पाते थे। इसलिए सारे कते हुए सूत को व्यवहार मे लाने क लिए ही यह सी वाली पाली शुरू की गई थी। दिल्ली कपडा मिल मजदूर सघ ने इसका बडा विरोध किया था। स्वय हमारे मजदूर भी इस व्यवस्था के खिलाफ थे। सी वाली पाली म काम करने का समय १२॥ से सुबह के ६॥ बजे तक रखा गया। मजदूरो को शिकायत थी कि यह समय बहुत अटपटा है। उनका कहना था कि सी पालीवाला के लिए रात के १२॥ जागकर डयूटी पर जाना बडा असुविधाजनक है। उन्हे आश्वासन दिया गया कि अधिक करघा की व्यवस्था होत ही यह पाली खत्म कर दी जायगी। उस समय मजदूरा को भी यह विचार पसन्द

आया। इन 'सी' पालीवाले मजदूरो के लिए काम की सुविधा दन क हेतु हमन ए' और बी' पालिया के काम करन के समय म यह परिवतन किया था कि बजाय इसके कि यह पालिया लगातार ६ घण्टे काम करे, वे ४ ४ घण्ट और ५ ५ घण्टे काम करके अपने ६ घण्टे पूरे कर लें, और हम भी फक्टरी एक्ट के भीतर रहकर २४ घण्टे लगातार मिल चला सकें। दिल्ली कपडा मिल मजदूर सघ न ए और 'बी' पालियो के काम करने के घण्टा के दो भागो म बाट जान का भी विराध किया था, और यह दलील भी पेश की गई थी कि यदि मजदूरा से पहले ५ ५ घण्टे और उसी दिन बाद म ४-४ घण्टे काम लिया जायेगा ता उन्ह बडी असुविधा होगी। पर चूकि और कोई उपाय नही था इसलिए मजदूरा ने मिल के प्रबध कर्ताओ के साथ बातचीत करके इस नयी व्यवस्था का मजूर कर लिया। पर हमारे दिमाग म मजदूरा की शिकायत काम करती रही, और उन्हे राहत देने की बात हम बराबर सोचत रहे।

पिछले कुछ महीनो म हम कुछ अधिक करघे बठा सके, जिसस 'सी' वाली पाली की आवश्यकता कम हाती रही, क्योकि 'ए और बी पालीवाला को अधिक करघा पर काम करने का अवसर मिला। साथ ही मैं यह भी बता दू कि पिछले एक वप म दिल्ली मिल के मजदूरा की व्यवस्था कदापि अच्छी नही रही। यह भी बता देना जरूरी है कि जो करघे मौजूद थे, उन पर काम करनवाले बुनकरा की सख्या अपर्याप्त थी उन्ह काम से निकालने का ता सवाल ही नही उठता है, जसा कि मजदूर-सभा न आरोप लगाया है। साधारणतया यह समझा जाता है कि यदि तीना पालिया म ८००/१००० करघा पर काम करन के लिए आवश्यक २० आदमी रह ता व्यवस्था सतोपजनक है। यह बात कुछ हमारी ही मिल पर लागू नही होती है बल्कि सभी मिलो पर लागू होती है। १९४४ जनवरी स नवम्बर तक औसतन कितन मजदूर प्रतिदिन काम पर आये, इसके आकडे नीचे दिय जाते है

जनवरी	१९४४	४१
फरवरी	,,	१३
माच	,,	२२
अप्रल	,	६
मई	,,	६
जून		४३
जुलाइ	,	१६
अगस्त	,	१

सितम्बर	,	—
अक्तूबर	,	३
नवम्बर		६

उपयुक्त तालिका से यह स्पष्ट हो जायगा कि जनवरी और जून मास को छोड अन्य महीना म मजदूरा की अतिरिक्त सख्या का अभाव था। जाडे के दिनो मे मजदूरो की उपस्थिति म एकरूपता रहती है। यही कारण था कि जनवरी मास म औसत उपस्थिति ४१ थी। इस समय भी अतिरिक्त मजदरो का अभाव है, और बीच बीच म हमे सी पाली क जो आशिक रूप से अब भी काम कर रही है करघा को बन्द रखना पडा है। इस पूरे ब्योरे से आपको यह स्पष्ट हो जायेगा कि सी पाली का अन्त करने से कुछ मजदूरो को काम से नही हटाया गया है। सी पाली के कुछ मजदरा को ए और बी पालियो म रख लिया गया है। दूसरी बात यह है कि कुछ मजदूर हमसे बात करके चले गये है और मिल से जाने के बाद उन्होने शहर म ही कोई धधा तलाश कर लिया है।

काम करन के समय म परिवतन करने के बारे मे मेरा कहना यह है कि यदि हम दोना पालिया से पहले की भाति पूरा काम लेते रहते, तो लगातार ६ घण्टे तक काते हुए सूत का भण्डार बढता रहता क्योकि कताई विभाग २४ घण्टे काम करता है और बुनाइ विभाग केवल १८ घण्ट। यदि काता हुआ सूत इसी प्रकार ६ घण्टे तक इकट्ठा होता रहता तो मिल के लिए भी यह असुविधाजनक सिद्ध होता और मजदूरा के लिए भी। भारत की किसी भी मिल म एक के बाद दूसरी पाली का किनारा करत हुए १८ घण्टे काम करन की व्यवस्था नही है। साधारण तया मिलें १८ घण्टे 'दा पालियो म काम करती हैं। मजदूर सभा की तो सदा से यही नीति रही है कि हमारी मिल म काम सुचारु रूप से न चल पाय। यदि हम १ २ साल बाद ए और 'बी पाली के काम करने के समय मे परिवतन करन की सोचें, ता यह मानी हुई बात है कि मजदूर सभा हमारा तब भी विरोध करेगी। अभी उस दिन मिल के मनेजर ने कुछ मजदूरो से बातचीत की तो उस पता चला कि सी पाली के हटाय जान और 'ए और बी' से पहल की तरह सीधे ६ घण्टे काम लने की व्यवस्था स वे कितने खुश थ। काम के समय म जो परिवतन हुआ है उसस मजदूर नही तथाकथित मजदूर-सभा अप्रसन्न है, क्योकि उसका अस्तित्व हमारा विराध करत रहने पर ही है। मुझे पता चला है कि महात्माजी के पास जो फरियाद पहुचाई गई है उस पर बलात हस्ताक्षर कराये गये थे।

मैंने सारी स्थिति को आपके सामन यथाथ पश करन की भरसक कोशिश की है। यदि और अधिक सूचना की जरूरत हो तो लिखने की कृपा करें भेज दी

जायेगी।

आपको यह जानकर खुशी होगी कि हाल ही म हमने अपन मजदूरा के लिए प्राविडेंट फड की व्यवस्था को कायरूप म परिणत किया है। मजदूर अपन वेतन का रुपये म –) देंगे और मिल भी –) देगी। वेतन के साथ छुट्टी की व्यवस्था भी जारी की गई है। इस व्यवस्था के अतगत जिस किसी ने साल मे २७२ दिन काम किया हो, वह १५ दिन वेतनयुक्त छुट्टी का अधिकारी होगा।

भवदीय
(ह०) मैनेजर

श्री प्यारेलालजी
निजी मत्री, महात्मा गाधी,
वर्धा

पुनश्च

ऊपर मैं जो कुछ कह चुका हू, उसके अलावा मुझे इतना और कहना है कि सी पाली के जिन मजदूरा को 'ए' और 'बी' पाली मे खपा लिया गया है उनके वेतन मे ५० प्रतिशत की वद्धि स्वत ही हो गई है क्योकि वे अब ६ घण्ट की बजाय ९ घण्टे काम करेंगे। 'सी पालीवाला को तो यह सुविधा मिली ही, इसके अतिरिक्त ए' और 'बी पालीवालो के वेतन म भी किंचित वद्धि हुइ है क्योकि अब वे लगातार ९ घण्टे काम करेंग, जिससे वे अपनी कायदक्षता का एक दूसरे को किनारे रखकर काम करन की अपेक्षा अधिक अच्छा सबूत दे पायेंगे।

यहा मैं यह भी बता दू कि इस मजदूर-सभा का वास्तविक स्वरूप क्या है। कुछ वर्षों तक चदोबीबी अपन-आपका दिल्ली के मजदूरा के हिता की सरक्षिका बताती रही थी। उन्होंने कपडा मिल मजदूर सघ की स्थापना की। अजितदास गुप्त उनका दाहिना हाथ था। बाद म चदोबीबी और अजितदास गुप्त का निकाल बाहर किया गया उनका सघ टूट गया और उन्होंने श्री एम० एन० राय और उनके दल की देख रेख मे काम करनेवाले कम्युनिस्टा के नेतृत्व म इस मजदूर-सभा को जन्म दिया। बाबा रामचद्र त्यागी तथा दो-एक अन्य कायकर्त्ता कम्युनिस्टो स पस लेते हैं पर मजदूरा को आकर्षित करने के लिए काग्रेसी होने का दावा करते हैं।

यहा यह बता देना भी अप्रासगिक नहीं होगा कि मजदूरा की एक रजिस्टड

यूनियन पहले से ही काम कर रही है। मिल का प्रत्येक मजदूर इस यूनियन का सदस्य है। इस यूनियन का नाम है, बिड़ला मिल मजदूर यूनियन। इस यूनियन की प्रबंध कारिणी का चुनाव हर साल होता है और बड़ी चहल पहल के साथ मजदूरों में प्रतिद्वंद्विता होती है। मिल के प्राय सभी स्थायी मजदूर इस निर्वाचन में भाग लेते हैं। इस प्रबंध-कारिणी की बैठक प्रति सप्ताह होती है और मिल के प्रबंधकर्त्ता उसकी अधिकांश मांगों को स्वीकार कर लेते हैं। मैं आपके पास अलग डाक से उस यूनियन के नियम उपनियम भेज रहा हूं।

—मनेजर

३३

प्यारेलाल,
सेवाग्राम,
वर्धा

मालूम हुआ है कि वैद्यराज शिवशर्मा बापू की चिकित्सा के लिए वर्धा जा रहे हैं और आवश्यक हुआ तो पपटी के माध्यम से चिकित्सा करेंगे। बापू किसी ऐसे वैद्य की सहायता चाहते हैं जो पपटी के प्रयोग में दक्ष हो। कृपा करके तार दो बापू क्या चाहते हैं। खबर मिलने पर आवश्यक कार्यवाही की जायेगी।

—घनश्यामदास

१९४५ के पत्र

सेवाग्राम
६ जनवरी १९४५

चि० घनश्यामदास,

तुमार सब खत पढता हू या पढाये जाते हैं।

मैं अशास्त्रीय पद्धति स आयुर्वेद मे नही फसा हू, जो कुछ है हमारा धन वही है। इसलिये अगर हम देहातो म आयुर्वेद को ले चलें तो अच्छा है। प० शिवशर्मा पर मेरा विश्वास जमा और मैंने उनक उपचार किये। दूसरी तरह मैं उनकी मर्यादा जान नही सकता था। मर्यादा जान लिया, तो मैंने सोचा कि जहा मैंने भूल की वहा स तो हट जाउ। इसलिये मैं मेर निसग पर जा बठा उसम तो भूल की जगह बहुत अल्प है। मैं तो रोज लाभ ही पाता हू। यहा आकर देखो तो जो डर तुमको होता है वह सब निकल जायगा। सचमुच मुझे बहुत अच्छा है। हुक्वम और एजीवा के बार म तो मैंने डाक्तरो को कह दिया है कि उनके उपचार करूगा। आज की जो थोडी सी भी कमजोरी है वह निकल जान पर ज्यादा विचार कर सकूगा।

मुझे स्थान फेर की आवश्यकता नही है होगी तो अवश्य मुबई या पचगनी जाऊगा—पूना भी हो सकता है।

दिल्ही जाना अच्छा लगेगा लेकिन झिझकता भी हू। लेकिन मरा आग्रह नही रहगा। क० बा०[1] निधि के बारे मे दिल्ही से जाउगा तो वहा आउगा जहा ले जाओग वहा जाउगा।

दीनशा के बार म दस्तावेज होना चाहिये।

बापु के आशीर्वाद

१ कस्तूरबा गाधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट।

२

१२ जनवरी १६४५

प्रिय सुशीलावहन

तुम्हारा पत्र भी मिला और बापू का भी। बापू के पत्र का जवाब बाद म अलग से दूगा।

यह पत्र कवल प्यारेलाल के हालचाल जानने के लिए लिख रहा हू। ऑपरेशन कौन स डाक्टर से करवाया था ? यदि ववासीर की शिकायत १६३५ क आपरेशन के बाद दुबारा उभरी है, तो दोप डाक्टर का है। इस बारे म मुझे जरा भी सन्देह नही है। आपरेशन किसी अच्छे डाक्टर से कराया जाए तो फिर यह शिकायत दुबारा कभी पदा नही होती। हा इसकी कोई गारण्टी नही है। आशा है अब तक वह बिलकुल स्वस्थ हो गय होंगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

सुश्री डाक्टर सुशीला नयर
सेवाग्राम

३

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रात)
१६ जनवरी, १६४५

प्रिय घनश्यामदासजी

यह पत्र आपके सुशीला के नाम १२ तारीख के पत्र के जवाब म है।

मेरा आपरेशन डा० टी० ओ० शाह ने किया था। जहा तक मेरी जानकारी है ववासीर के दुबारा उभरने की बात सर्जन पर उतनी निर्भर नहीं करती, जितनी आपरेशन क प्रकार और रोगी की प्रकृति पर करती है। गुदा म ८ या ६ नसे रहती हैं। जब उनकी शिरा पिघल जाती है, तो ववासीर की शिकायत होती है। मेरे १६२५ वाले आपरेशन म ववासीर की छह ग्रथिया निकाली गई थी। इस बार दो और निकाली गई हैं। ये ग्रथिया उन नसो पर नही बनी था जिनका १६३५ म आपरेशन हुआ था। यदि मैं अधिक सावधानी बरतता और उन कारणो का निवारण कर देता जिन्हें लेकर ववासीर की शिकायत होती है तो शायद यह

व्याधि दुबारा कभी न सताती। मैं बवासीर को दूर करने के अतिरिक्त उसके मूल कारणों का भी निवारण करने के पक्ष मे हू। मुझे बताया गया है कि एक ऐसा ऑपरेशन है जिसे श्वतशिरा वाला आपरेशन कहते हैं। पर इसमे बडी तकलीफ होती है और बहुत थोडे आदमी यह कराते हैं।

बवासीर के आपरेशन के बाद से कब्ज की शिकायत रहने लगी है। कल सुशीला ने परीक्षा करके देखा तो कहा कि गुदा के भीतरी भाग की धडकन के कारण मल बाहर आने से रुक जाता है। टट्टी सख्त होती है। पिछली बार ऐसी कोई शिकायत नही थी और अब यह इस आपरेशन के अवसर पर रीढ को सुन्न करने के फलस्वरूप है या और कुछ यह मैं नही जानता। पिछली बार सोडियम एविपन दिया गया था।

आपरेशन से कोई विशेष असुविधा तो नही हुई पर आपरेशन के बाद ४ से ८ सप्ताह तक भोजन आदि के बारे मे सतर्क रहना आवश्यक है। मैं आपरेशन के १० १२ दिन बाद तक मल बनानेवाले भोजन से बचा रहा। इससे बडी सहायता मिली। कुछ दिनो तक लिक्विड पैराफिन भी लेता रहा था।

मैं आपको एक अन्य बात के बारे मे लिखना चाहता था। कुछ लोग बापू को लिख रहे है कि ग्वालियर मे एक बिडला मिल बैठाई जा रही है जिसके लिए सरकार से जमीन हासिल करने की बात को लेकर काफी असतोष फैला हुआ है। पिछली बार पुस्तकेजी से भेंट हुई थी, तो वह कह रहे थे कि जमीन के मुआवजे के बारे मे कुछ-न-कुछ करना जरूरी हो गया है और किया भी जायगा। आशा है, आप इस ओर ध्यान देकर आवश्यक कारवाई करेंगे। वहा के कुछ कम्युनिस्टो ने इस मामले को तूल दे रखा है।

मुन्नाभाई आपसे मिल ही होंगे और वे किस दिशा मे जा रहे है इसका उन्होने आपको कुछ आभास दिया होगा।

बापू पुन शक्ति प्राप्त कर रहे हैं। दिन भर मौन धारण किये रहते हैं। तालीमी सघ की बैठक के दौरान यह मौनावलम्बन बडे काम आया। पर अभी पर्याप्त शक्ति-सग्रह नही कर पाये है। इसलिए उन्होने दिन मे अनिश्चित काल तक मौन रहने का जो फैसला किया है सुखद है।

सदभावनाओ के साथ

आपका ही
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
नयी दिल्ली

४

१८ जनवरी १९४६

प्रिय प्यारेलाल

ग्वालियर रियासत में जो बिड़ला मिल खड़ी करने की बात है उसके बारे में तुमने जो लिखा उस पर गौर किया। स्थिति कुछ इस प्रकार है। रियासत में जब मिल खड़ी की जाती है तो वह काश्तकारों से भूमि लेकर उन्हें मुआवजा अदा करती है और फिर वह भूमि मिल मालिकों को पट्टे पर इस शर्त पर उठा देती है कि जब तक मिल चलती रहेगी तब तक भूमि मिल मालिकों की मिल्कियत रहेगी पर मिल बन्द होने के बाद वह रियासत को वापस लौटा दी जायगी। जमीन मिल की सम्पत्ति कभी नहीं बनती है। काश्तकारों को जो मुआवजा दिया जाता है रियासत देती है। मुझे वहां के आन्दोलन की खबर समाचार पत्रों से मिली। मैंने पूछा तो मैनेजर ने वस्तुस्थिति बताई। इस मामले से मेरा कोई संबंध नहीं है क्योंकि मुआवजा स्वयं रियासत अदा करती है और जमीन मिल को किराये पर पट्टे पर उठाई जाती है। पर यह मुझे भी लगता है कि जो मुआवजा दिया जा रहा है वह पर्याप्त नहीं है। अतः मैंने रियासत के साथ लिखा पढ़ी करके उसे अधिक मुआवजा देने की बात कही। पर इसी बीच कम्युनिस्टों ने आन्दोलन खड़ा कर दिया और रियासत के अधिकारियों ने फैसला कर लिया कि मुआवजे में वृद्धि नहीं की जायगी। मेरे पास तक कोई नहीं पहुंचा है। वास्तव में यदि आन्दोलन खड़ा करने से पहले मुझ तक पहुंच की जाती, तो मैं रियासत को अधिक मुआवजा देने के लिए राजी कर लेता। कोशिश तो अब भी कर रहा हूं पर इस आन्दोलन की बदौलत स्थिति पेचीदा हो गई है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

५

२१ जनवरी १९४५

प्रिय नरहरिभाई,

नयी तालीम कांफरेंस मे बापू ने अपनी यह बात दुहराई कि बुनियादी शिक्षा स्वावलबी हो सकती है। मैं इस बात पर बापू न बात करना नही चाहता खास तौर से इस समय, जबकि उनकी तबीयत ठीक नही है। पर मेरे विचार म यह एक ऐसा वक्तव्य है जिसकी प्रामाणिकता वस्तुस्थिति के द्वारा सिद्ध नही की जा सकती, इसलिए मेरा कहना है कि बापू को एसा वक्त य देत समय अपक्षाकृत अधिक सावधानी बरतनी चाहिए थी। खुद मैंने एक बुनियादी स्कूल को स्वावलबी बनाने की दो वप तक कोशिश की पर असफल रहा।

यहा हरिजन आश्रम म हरिजी इन तीन विषया—लेखन पाठन और अक गणित के साथ साथ, औद्योगिक शिक्षा भी देत आ रहे है। सात घण्टे के शिक्षण-काल म चार घण्टे औद्योगिक प्रशिक्षण म लगाये जाते हैं बाकी तीन घण्टे म व उक्त तीन विषय पढते ह। छात्र दस्तकारी म दक्ष होते हैं पर इन तीन विषया म कमजोर रहते हैं। वे हिन्दी ता खूब पढत है, पर अकगणित भूगाल तथा अन्य विषयो के ज्ञान के लिए उनके पास समय नही बचता। तीन वप के प्रशिक्षण के बाद वे अच्छे खास कारीगर बन जाते हैं पर उनका अन्य विषया का ज्ञान नही के बराबर रहता है। व जब तक यहा शिक्षा पाते है उस दौरान जो जा चीजें तयार करत है, उनकी बिक्री कुछ मुनाफे के साथ हो जाती है। उनके शिक्षण पर २०,०००) खच होत हैं जिनम स ८०००) उनक द्वारा तयार की गई चीजो की बिक्री से प्राप्त हा जात हैं। इस प्रकार १२ ०००) का घाटा रहता है। तिस पर भी यह बुनियादी तालीम कदापि नही है क्योकि दस्तकारी को छोडकर अन्य विषया मे उनकी शिक्षा बिलकुल साधारण कोटि की है। शिक्षका को जो वतन दिया जाता है, वह कम है, नही तो खच और भी बढ जाता।

दस्तकारी के माध्यम से शिक्षण काय मे मेरी बडी आस्था है पर मैं यह विश्वास करने का तयार नही हू और जो-कुछ कह रहा हू, वह अनुभव पर आधारित है कि यह शिक्षा अथवा अन्य किसी भी प्रकार की शिक्षा स्वावलबी हा सकती है। हा, यदि छात्रा द्वारा तयार चीजें सरकार बहुत ऊचे दामा पर माल लने लग, तो यह अवश्य सम्भव हा सकता ह पर यह ता सरकारी सहायता मात्र हुई। एसी शिक्षा का स्वावलबी कदापि नही कहा जा सकता। मैं तो नही समझता कि कोई

भी ऐसा आदमी, जो किसी संस्था में बुनियादी तालीम दे रहा हो, यह दावा करने को तैयार होगा कि उसे उसके स्वावलंबी होने की क्षमता में आस्था है। हाँ, यह अपने आपको भुलावे में रखना चाहता हो, तो बात दूसरी है। कोई आदमी किसी भी शिक्षण संस्था का हिसाब किताब पेश करके यह साबित तो करे कि उसकी संस्था स्वावलंबी है। आज मैंने रामानन्द का लेख देखा था। उसमें आम तौर से सारी बात कही गई है। अभी तक मुझे कोई भी ऐसा आदमी नहीं मिला है जिसने विवरण के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया हो कि वह अपनी शिक्षण संस्था को स्वावलंबी बना सका है।

जब बापू खादी के बारे में कुछ कहते हैं तो मैं उनकी बात समझ सकता हूँ। बापू ने खादी के लिए जो आर्थिक लक्ष्य निर्धारित किया था उसकी उपलब्धि नहीं हो पाई है और आर्थिक दृष्टि से खादी असफल हुई है। पर आध्यात्मिक दृष्टि से खादी अवश्य सफल हुई है। पर बुनियादी तालीम में तो आध्यात्मिकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। मैं बहुधा बापू के वक्तव्यों का आध्यात्मिक अर्थ निकालता हूँ और अपना संतोष कर लेता हूँ। पर मेरे लिए यह विश्वास करना असम्भव है कि बुनियादी तालीम अथवा किसी भी तरह की तालीम स्वावलंबी हो सकती है। साथ ही मैं यह दुहरा देना चाहता हूँ कि मैं दस्तकारी के माध्यम से दिये गये शिक्षण को वर्तमान शिक्षा प्रणाली से उत्कृष्ट समझता हूँ पर इससे यह तो सिद्ध नहीं हुआ कि वह स्वावलंबी भी हो सकती है।

यदि आपको इस बाबत कुछ कहना हो तो अवश्य कहिये पर आँकड़े देकर, आम तौर से चर्चा करके नहीं।

भवदीय
घनश्यामदास

श्री नरहरिभाई परीख
सेवाग्राम

६

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
२३ जनवरी १९४५

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका १८ तारीख का पत्र मिला। पत्र बापू को दिखाया था। उन्हें यह जानकर संतोष हुआ कि आप इस मामले में यथाशक्ति प्रयत्न कर रहे हैं। केवल इसी कारण कि कुछ उत्तरदायित्वहीन लोग स्थिति का अनुचित लाभ उठा रहे हैं निर्धनों के साथ न्याय न हो यह तो कोई उचित तर्क नहीं हुआ। यदि दरबार आपके परामर्श पर चलने से इन्कार कर दे तब तो यही उचित होगा कि जब ऐसा प्रतीत होने लगे कि मिल निर्धनों को कष्ट में डाले बगैर नहीं बैठाई जा सकती तो आप मिल बैठाने के विचार मात्र का ही परित्याग कर दें।

अब तक आपको मेरा १८ तारीख का पत्र भी मिल गया होगा।

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला
नयी दिल्ली

७

२३ जनवरी १९४५

प्रिय प्यारेलाल

पता नहीं बापू को यह सारी सामग्री पढ़ने लायक समय मिल सकेगा या नहीं। पर इन दोनों पुस्तिकाओं[1] से उनका थोड़ा बहुत मनोरंजन अवश्य होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

[1] 'प्लान की दूसरी जिल्द और इन्डियन करेंसी इन रेटरास्पेक्ट'।

८

सेवाग्राम
२४ जनवरी, १६४५

चि० घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला। खासी तो कब म चली गई है। दौबल्य है वह भी धीरे धीरे जा रहा है। इस वक्त तो उपचार मेरा नसगिक ही हो रहा है। हवा फेर के लिय उत्साह बहुत कम है। आवश्यकता होगी तो जाउगा।

फड की सभा के बारे म मेरा आग्रह नहीं। जहा चाहोग वहा जाउगा।

नयी तालीम के बार म जब मिलोग तब तुमारे विचार सुनूगा। मैंन शिक्षका स चर्चा तो की ह। उद्योग द्वारा जो शिक्षण दिया जाय उस स्वावलम्बी होना ही है।

दीनशा क ब्यौरा की प्रतीक्षा क्या? तुम्हार कहन का तो तात्पय ही था कि यदि दस हजार की ही बात होगी तो उसम जितनी वद्धि करनी है हो जायगी।

बापु क आशीर्वाद

६

सवाग्राम
वर्धा हाकर (मध्य प्रात)
२५ जनवरी १६४५

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका २३ तारीख का पत्र और साथ म भेजी दोनो पुस्तिकाए मिल गइ।

प्लान आफ इकनामिक डवलपमट का दूसरा खण्ड भी किसी न भेज दिया है जो इस समय बापू क हाथ मे है। बापू भारतीय मुद्रा पर आपकी पुस्तिका का भी अवलोचन करेंग।

मैं देवदास क पास कुछ सामग्री भेज रहा हू आशा है आप देख जायग।

भवदीय
प्यारलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
नयी दिल्ली

१०

सवाग्राम
वर्धा—सी० पी०
ता० २५ १ ४।

प्रिय श्री घनश्यामदासजी,

आपका खत मैंने श्री जाजूजी, आशादेवी और रामचद्रन को भी पढाया। आपकी बात पर हम सब इकट्ठे मिलकर विचार करेंगे। शिक्षा के काय को स्वाश्रयी बनाना जरूर मुश्किल है। आज की स्थिति मे अशक्य सा है। श्री जाजूजी इसके बारे म बापू से भी बात करनेवाले हैं। यहा सब चर्चा हो जाने पर मैं आपको विस्तार से लिखूगा।

आपका
नरहरि

११

२६ जनवरी १९४८

प्रिय प्यारेलाल,

नागदा के काश्तकारो के बारे म तुम्हारे पत्र के बारे म मुझे यह कहना है कि चूकि बापू इस मामले म दिलचस्पी ले रहे है मैं कुछ अधिक विस्तृत विवरण देना चाहता हू। मेरी मिल के मनेजर ने उज्जन के सूबेदार के सामने यह मामला उठाया था और यह सुझाव दिया था कि राज्य को निम्नलिखित प्रणाली अपनाकर काश्तकारो को मुआवजा देना चाहिए और जो रकम रियासत द्वारा निर्धारित दर से अधिक होगी वह हम अदा करेंगे

(१) कुओ द्वारा सींची जानेवाली जमीन के मौरूसी काश्तकारो को उनके वार्षिक लगान का ४० से ५० गुना तक मुआवजा दिया जाय।

(२) खेती योग्य जमीन के मौरूसी काश्तकारो को उनके वार्षिक लगान का २५ गुना मुआवजा दिया जाय।

(३) पडती जमीन के मौरूसी काश्तकार को वार्षिक लगान का १० गुना

मुआवजा दिया जाये ।

(४) अस्थायी काश्तकारों को उनके लगान का एक से दो गुना तक मुआवजा दिया जाये ।

मुझे मालूम हुआ है कि उज्जैन के सूबेदार ने ये सिफारिशें अर्थ मंत्री के पास भेज दी हैं । पर अर्थ मंत्री इन सुझावों को मानने में हिचकिचा रहा है । कुछ इस कारण नहीं कि इनके कारण राज्य पर अधिक भार पड़ेगा बल्कि इसलिए कि वैसा करने से एक नयी परिपाटी को जन्म मिलेगा । उसकी धारणा है कि मुआवजे की ये दरें अपव्यय हैं इसलिए त्याज्य है । साथ ही, मुझे यह भी मालूम हुआ है कि यह मामला रियासत की प्रबन्धकारिणी समिति के सामने जायेगा और तभी अंतिम निर्णय हो पायेगा । मैं वैसा निर्णय काश्तकारों के पक्ष में कराने की भरसक कोशिश कर रहा हूं और मुझे सफलता की आशा है ।

तुम कहते हो कि काश्तकारों के वध हितों को आंच नहीं आनी चाहिए । मैं सहमत हूं । मैं काश्तकारों के मामले में प्रारम्भ से ही सहानुभूतिपूर्ण दिलचस्पी ले रहा हूं । उन्हें इसका आभास तक नहीं है । इसके विपरीत उनके नेता लोग मेरे खिलाफ जहर उगल रहे हैं मुझे बेईमान बता रहे हैं और मेरी नेकनीयती पर कीचड़ उछाल रहे हैं । मुझे आशा है कि रियासत मेरा सुझाव मान लेगी । पर यदि मैं अपनी कोशिश में सफल हुआ तो काश्तकारों के नेता लोग इसका श्रेय अपने गाली गलौज को देंगे । ऐसी घटनाओं से साधु प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है या कुत्सित प्रवृत्तियों को ? यह तो एक साधारण सा मामला है पर ऐसे साधारण मामलों के संचित योग से गुरुतर घटनाएं पैदा होती हैं ।

कभी कभी मैं लोगों की ऐसी मनोवृत्ति को देखकर व्याकुल हो उठता हूं । हमें बरबस यह धारणा बनाना सिखाया गया है कि किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए शांतिपूर्ण उपायों का तथा पारस्परिक बातचीत का अवलम्बन न करके हमें गाली गलौज और असत्य का आश्रय लेना चाहिए । अपने रोजमर्रा के जीवन में मुझे विध्वंसात्मक मनोवृत्ति के दर्शन होते रहते हैं रचनात्मक मनोवृत्ति का प्रभाव पड़ता नहीं दिखाई देता । परिणाम यह है कि हम लोग आपस में जूझ पड़ते हैं ।

मुसलमान लोग हिन्दुओं को बुरा भला कह रहे हैं, और बापू को सबसे अधिक । हिन्दू सभा कांग्रेस और लीग दोनों को कोस रही है । कांग्रेस को अपने विपक्षियों में कोई सद्गुण दिखाई नहीं देता । स्वयं कांग्रेस शिविर में ही एक दायरे के भीतर अन्य दायरे पनप रहे हैं । कुछ गांधीवादी हैं कुछ अगांधीवादी हैं कुछ समाजवादी हैं कुछ साम्यवादी हैं । और तो और पूंजीवादी भी समाजवाद और साम्यवाद की बात करते दिखाई देते हैं । और इन सभी वर्गों और उप वर्गों की

एकमात्र कार्यशीलता एक दूसरे पर कीचड उछालने तक सीमित है। एक ही ढग का जिला धारण किये दो नेताओं को मैंने एक-दूसरे पर लाछन लगाते और पीठ पीछे एक-दूसरे की बुराई करते देखा है। इस तमाशे का अत कहा जाकर होगा ?

यह व्याधि जोर पकड रही है। मुझे भविष्य अधकारमय प्रतीत हो रहा है और इसके दोषी हम खुद हैं। भगवान हमारी सहायता करे। पर क्या हम भी थोडी-बहुत अपनी सहायता कर रहे हैं ? मैं यह सब इसलिए लिख रहा हू कि इस सारी बात से मुझे वेदना होती है।

पर इस मामूली से मामले को लेकर तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नही। मेरे ऊपर जितनी कीचड उछाली गई है, उसके बावजूद मुझे पूरा इत्मीनान है कि मैंने जो रास्ता अपनाया है वही ठीक रास्ता है। (हो सकता है इस इत्मीनान की कोई जड-बुनियाद न हो।) मुझे आशा है कि सारा मामला सतोषजनक ढग से निबट जायगा। पर यह मत समझ लेना कि मैं दूध का धोया हू।

तुम्हारा
धनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
सेवाग्राम

१२

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रात)
२ फरवरी, १९४५

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका २५ जनवरी का विस्तृत पत्र मिला। पत्र बापू को दिखा दिया है। आप जो-कुछ कर रहे हैं वह उन्हे पसद आया।

आपने विभिन्न वर्गों की मनोवृत्ति के बारे में जो-कुछ कहा है वह कहते अफसोस होता है कि वह बावन तोला पाव रत्ती ठीक है। हमे बडी कठिनाई के बीच से गुजरना पड रहा है। इस बाड से बच निकलने का एकमात्र उपाय यही

है कि जिनके हाथ में साधन हैं और जो पहल करने में सक्षम हैं उन्हें इस मौके को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। यदि वे लोग ऐसा करने में चूक गये तो परिणाम घातक होगा भले ही वे अवसर से लाभ उठाने में उचित प्रतीत होनेवाले कारणों से कोताही कर गये हों। वंचित वर्ग आक्रोश से ओतप्रोत है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस वर्ग के साथ अनीति बरती गई है और एक वर्ग की हैसियत से हमें बहुत कुछ के लिए परिमार्जन करना है। यह बहुत-कुछ स्वयं हमारे पाप भले ही न हों पर लोगों ने हमें जिस ढांचे के भीतर रहते देखा है, उसके परिमार्जन के लिए एकमात्र वांछनीय उपाय यही है कि हम बीच में टांग अड़ाने वालों के प्रति क्षमा ही उदारतापूर्ण और सहिष्णुतापूर्ण तौर-तरीका अपनायें जिसका ज्वलंत उदाहरण बापू ने हरिजनों की समस्या से निपटने के दौरान प्रस्तुत किया था। साथ ही ऐसा करते समय यह नहीं जताना चाहिए कि हम कोई बड़ा भारी पुण्य-कर्म कर रहे हैं बल्कि ऐसा आचरण करना चाहिए जिससे यह लगे कि हम केवल एक पुराना ऋण भार उतार रहे हैं। स्थिति जैसी-कुछ है उसकी एक खूबी यह है कि उसने जोखिम उठाने और अवसर का सदुपयोग करने का समान मौका दिया है।

ऐसा मालूम पड़ता है कि आगामी मार्च में दिल्ली में हमारी भेंट होगी। सेवाग्राम में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जो कुछ हुआ और उसके सम्बन्ध में बापू ने जो टिप्पणी की उसका ब्यौरा तो आपने देखा ही होगा। बस, बापू की वर्तमान प्रवृत्ति का उसी से अन्दाजा लगा लीजिए। इस समय बापू रचनात्मक, सृजनात्मक कार्य सम्बन्धी उत्साह से परिपूर्ण है। मुझे तो ऐसा लग रहा है कि हम इस दलदल से अब बाहर आने ही वाले हैं। अभी श्रीगणेश ही हुआ है पर हुआ तो है। अब बापू के बारे में मैं कुछ निश्चित सा रहने लगा हूं।

बिहार की घटनाओं से बेचैनी पैदा होती है पर लोग नासमझी के अक्षम्य कार्यों में दोषमुक्त कदापि नहीं किये जा सकते। इस सारे मामले की जड़ में रचनात्मक कार्य विधि और उसकी उपादेयता में आस्था का अभाव मात्र ही है। यहां अनुग्रह बाबू आये थे। हमें बिहार कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं की विधान सभा की कारवाई का पूरा ब्यौरा उनकी जबानी सुनने को मिला। अनुग्रह बाबू वापस लौट गये हैं वहां वह अधिकारियों से भेंट करेंगे। थोड़ा-बहुत आशा तो है कि वह सब कुछ ठीक ठाक कर लेंगे। ऐसे अवसरों पर सतर्कता और सावधानी से काम लेना कितना जरूरी है इसका नमूना बिहार की घटनाओं ने प्रस्तुत कर दिखाया है।

नवाबजादा लियाकतअली खां ने कस्तूरबा कोष के खिलाफ जैसा विष वमन किया है आपने देखा ही होगा। संशय सदेह इन लोगों की आन्त में शामिल हो

गया है। जब कुछ लोगों की ऐसी मनोवृत्ति हो तो उनसे समझौते की अपेक्षा कैसे की जा सकती है ? मुझे तो ऐसा लगता है कि नवाबजादा की इस करतूत ने भूला भाई के सारे किये-कराये पर पानी फेर दिया।

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला
नयी दिल्ली

१३

सेवाग्राम
५ मार्च, १९४५

चि० घनश्यामदास,

दीनशा ने खरड़ा दे का भेजा है। वह चाहता है कि भिवंडीवाला जिन्होंने उनकी मदद दी थी और जो नर्सगिक उपचार में श्रद्धा रखता है उस और फ० जंग जो निज़ाम का फिनान्स मिनिस्टर था और जो एसे उपचारों को मानता है उनको ट्रस्टी बना लें। मेरा ख्याल है उसमें कुछ हरज नहीं है। बाकी तो मैंने दीनशा को लिखा है यही देवदास से बताओगे तो मैं एक ग्रन्थ से चला लूंगा।

मुझे दिल्ली ले जाओगे तो पिलानी मीरा का स्थान और धर्मदेव का स्थान पर जाना होगा। रहना हरिजन निवास में ?

बापु के आशीर्वाद

१४

सेवाग्राम,
वर्धा होकर (मध्य प्रांत)
१५ ३ ४५

चि० घनश्यामदास

आज बापा से सुना कि तुमको बुखार आ गया है। तुम्हारे बुखार से मैं बेचैन होता हूं। तुमको बुखार क्या ? अगर रामेश्वरदास की वहां आवश्यकता है तो

रोक लो तो भी मैं बिड़ला हाउस में ही ठहरूंगा। यहां से ३० मी को निकलूगा। मीटींग के बाद का कुछ निश्चय नही है। अशक्ति के कारण नही आ सकें तो ऐसे ही चला लूंगा।

बापु के आशीर्वाद

सेठ घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
अलबुकर्क रोड
नई दिल्ली

१५

तार

नयी दिल्ली
१८ ३ ४५

महात्मा गांधी
सेवाग्राम
वर्धा

कल से बुखार साधारण है। खांसी बनी हुई है। कमजोरी भी है। धीरे धीरे ठीक हो जाऊंगा।

—घनश्यामदास

१६

तार

नयी दिल्ली
१९ मार्च १९४५

महात्मा गांधी
सेवाग्राम
वर्धा

बुखार उतर गया पर खांसी है। टोस्ट शाक सब्जी और दूध ले रहा हूं। मक्खन नहीं। क्या भोजन में कुछ हेर फेर की जरूरत है?
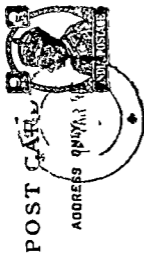
—घनश्यामदास

१७

तार

वर्धागंज
२० मार्च ४५

घनश्यामदासजी
बिड़ला हाउस,
नयी दिल्ली

रिपोर्ट अपूर्ण और अस्पष्ट है। दूध ले रहे हो, तो शाक-सब्जी में क्या क्या लेते हो ? हर हालत में टोस्ट के साथ सीधे दूध से निकाला आधा आउंस मक्खन लो। सलाद भी लो। खूब चबाओ। शहद सोडे सहित गुनगुना पानी पीओ। खाली पेट गहरा सांस लेने का अभ्यास करो। रिपोर्ट भेजो।

सस्नेह

—बापू

१८

सेवाग्राम
२० ३-४५

चि० घनश्यामदास

तुमको तार एक्सप्रेस भेजा है नकल भी साथ है। क्या कितना, कब खाते हो ? भाजी में क्या ? कच्ची कि उबली हुई, पानी फेंका तो नहीं जाता ? टोस्ट से बहतर खाखरा नहीं होगा ? आटा चुनी के साथ का है ? दूध लेते हैं तो कितना ? कुछ भी हो आधा आउंस मक्खन टोस्ट या खाखरा पर लगाकर सलाद के साथ लेना। बदहजमी हो तो दूसरा खाना कम करो लेकिन मक्खन रखो। गहरा श्वास अत्यावश्यक है। एक नाक बंध करके दूसरे नाक से श्वास खींचो। आस्ते आस्ते बढ़कर आधे घण्टे तक जा सकते हैं। प्रत्येक श्वास के साथ रामनाम मिलाओ। श्वास लेने के समय चौमेर से हवा होनी चाहिये खुल्ले में हो तो अच्छा ही है। प्रात काल में लेना ही है। बाकी खाना हजम होने के बाद कम से कम चार वार

तेना। श्वास लेना है निकालना है, यह क्रिया आराम से करनी चाहिय। पखाना बराबर आता है ? नीद आती है? यह सब समजपूर्वक होगा तो खासी शीघ्र चली जायगी।

बापु के आशीर्वाद

१६

तार

नयी दिल्ली
२३ माच १६४५

महात्मा गाधी
सेवाग्राम,
वधा

धीरे धीरे तबीयत सुधर रही है। कल बम्बई जा रहा हू वहा आपके पहुचने तक रुका रहूगा।

—घनश्यामदास

२०

सेवाग्राम
वर्धा होकर (मध्य प्रात)
२८ ३ ४५

चि० घनश्यामदास

तुम्हारा तार अभी मिला ६ बजे। अच्छा नही लगता। अगर मसुरी जाना चाहीय तो जाओ। कम से-कम वहा तो रहो। मुबई आने का छोड दो। भन रामश्वरदास भी वही रहे। मै चला जुगा।

बापु के आशीर्वाद

शेठ घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
आलबुकर रोड
नई दिल्ली

२१

१९४५

चि० घनश्यामदास,

मेरे अक्षर पढ सकते हैं क्या ? मुश्कील लगे तो मैं लिखवाकर भविष्य मे दु या भेजु।

दिन तो चले जाते हैं समय पेट भरके बातें करने का रहता नही इसलिये मुझे कहना है सो तो लिखु क्योंकि मेरी बात तो मैं लिखकर खतम कर सकुगा। उत्तर तो दो चार शब्द म दे सकते हैं। इसका मतलब यह नही कि मैंने कहा है सो खीच लेता हू। मैं तुमको वक्त न दू तब तक यहा स नही हटूगा। मेरी बात के लिये ठहरना नही चाहता।

(१) प्रफुल्ल ने मुझे कहा, अब कृष्णकुमार और माधवप्रसाद इतने महान हो गये हैं कि मुझ बीमार को देखने के लिये भी नही आये। पहले तो आया करते थे कुछ प्रश्न भी पूछा करते थे, इसमे कुछ सही है कि शरत चुक ही है, छोटे-बडे की कोई बात नही। प्र० से मैंने पूछ लिया था मैं यह बात कर सकता हू या नही।

(२) मेरा काम बढ गया है। अब तो कोशीश कर रहा हू कि मेरे पास से पैसे की कोई आशा न करें और मैंने बनाई है व सब सस्था स्वाश्रयी बन जाय ऐसा होने म कुछ समय तो जायगा और दरम्यान मुझे पैसा निकालना होगा। सस्थाए तो चर्खा सघ ग्राम-उद्योग सघ नई तालीम हिन्दुस्तानी प्रचार और ३ आश्रम हैं। २, ३, ४, ५ की हाजत आज है। पाचवी सस्था आश्रम तो कभी स्वाश्रयी नही बनेगा। कोशीश तो करता हू। आश्रम म अस्पताल आती है। अस्पताल का खर्च अलग रहता है। उसके पैसे इधर उधर से आया कर ऐसी चेष्टा चल रही है तो भी आश्रम खर्च प्रति वर्ष एक लाख के नजदीक जाता है। मैं स्मरण से लिख रहा हू। आश्रम का आज हाजत नही। रामेश्वरदास पैसे भेजते जाते हैं रहे २ ३, ४ उनके लिये पैसे चाहिये। रामेश्वरदास ने कुछ भेज दिये है। ऐसा ख्याल है। हिं० प्रचार और नयी तालीम के लिये चाहीये। शायद मुजको दो लाख की आवश्यकता रहे। यह खर्च उठाओगे क्या ? सफररस फण्ड (पीडितो के लिए निधि) का तो रामेश्वरदास के खत म है ही। मेरा ख्याल भी मैंने बताया है।

(३) अब रही बात स्त्रिया के साथ के सबध की और मेरे प्रयोग की। प्रयोग तो अब साथीओ के खातिर बध है। मुझको उसम कुछ भी अनुचित नही लगा है। मैं कोई नया नही कर रहा हू जो १९०६ की साल म प्रतिज्ञा-सील और जो १९०१ से

ब्रह्मचारी की स्थिति म रहा। आज मैं १९०१ से बहतर ब्रह्मचारी हू। मर प्रयोग न अगर कुछ किया है ता यह कि मैं था इसस ज्यादा पक्का हुआ। प्रयाग सपूण ब्रह्मचारी बनन के लिय था और यदि ईश्वरेच्छा होगी तो सपूण बनन म कारण होगा। अब इस बार म तुम बातें करना और प्रश्न पूछना चाहत थ—दोना चीज कर सकते हैं। सकोच की कोई बात है नही जिसके साथ इतना घनिष्ट सबध है और जिसके धन का मैं उपयोग करता हू उसक मन म कुछ सकोच रह सो मेरे लिये असह्य होगा।

अच्छा है कि दोना भाई मौजूद हैं। यह पत्र दोनो क लिय ता है ही लेकिन सब भाइया क लिय और परिवार के लिय है ऐसा समजो।

बापु के आशीर्वाद

पत्र छोटा लिखना था लकिन कुछ लम्बा तो हुआ ही बात तो तीन हैं।

आगे ह

एक बात रह गई आश्रम की जमीन चि० गाशाला का दी गई उसक तुमने ५० ०००) लिय हैं। अब बात ऐसी है कि जब चिमनलाल न फरिस्त भेजी तो उसमे आश्रम क खेत और निसम कुआ है उसका कुछ जिकर है। अगर है तो सब मकान भी गय। ऐसे तो हो नही सकता। यह ता शरत चूक ही थी। अब प्रश्न यह है कि अगर तुमन ऐसा माना है कि सब जमीन और कुआ गोशाला का दे दिया था तो तुमारे ५० ००० म से कुछ काटना हागा। तुमारे जसा कहना है ऐसा कीया जाय।

बापु

२२

महाबलेश्वर

६ ५ १९४५

चि० घनश्यामदास

सुनता हू कि तुमन १२ ता० को जाने का निश्चय किया है।

भाई दिनशा यहा है दूसरी सब शत तो कबूल करत हैं लेकिन वह इतनी कबूलत चाहते हैं कि दस्तावज म दस्तखत होन के बाद कम से कम पाच वष तक तो ट्रस्ट ग्राम नसगिक उपचार क लिये कायम रहेगा उसके बाद अगर प्रय न

निष्फल होवे तो भले तालीमी काम के लिये ट्रस्ट की जायदाद स्थावर या जगम उपयोग मे लाई जाय।

मुझे लगता है, इतनी बात तो हम कबूल करनी चाहीये।

तुमारी प्रकृति अच्छी होगी।

१२ तारीख की बात सही हो सकती है क्या ?

बापु के आशीर्वाद

तार से जवाब दो।

२३

तार

नयी दिल्ली
७ ५ ४५

महात्मा गाधी
महाबलेश्वर,
(सतारा)

इग्लड जा रहे औद्योगिक मण्डल के सबध मे आपके वक्तव्य का यूनाइटेड प्रेस का ब्यौरा अभी अभी देखा। भाषा गडबड कर दी है। पर आपने कहा बताते हैं कि हम इग्लड और अमरीका मे 'लज्जास्पद व्यापारिक समझौता करने पर उतारू हैं। बडी व्यथा हुई। विश्वास करने को मन गवाही नही देता कि आप मेरे, टाटा के और कस्तूरभाई की साख के प्रति जिसे आप भली भाति जानते हैं, अपने अविश्वास की भावना को इस प्रकार सार्वजनिक रूप से व्यक्त करेंगे और यह समझेंगे कि हम भारत की ओर से किसी प्रकार का लज्जाजनक व्यापारिक समझौता करेंगे। हममे अपनी सीमाओ को समझने की विवेक-बुद्धि है और हम जानते हैं कि हमे किसी भी प्रकार का समझौता करने का अधिकार प्राप्त नही है, 'लज्जाजनक' समझौते की तो बात ही अलग है। औद्योगिक मण्डल अपने ही खर्चे पर अपना ही अमला लेकर इग्लड और अमरीका वहा के लोगो से मिलने तथा उत्पादन के नवीनतम वैज्ञानिक साधनो का ज्ञान प्राप्त करने जा रहा है। मैं स्वय व्यक्तिगत असुविधा के बावजूद जा रहा हू और न भी जाता पर एक बार वचन

ब्रह्मचारी की स्थिति मे रहा। आज मैं १६०१ से बहतर ब्रह्मचारी हू। मेरे प्रयाग ने अगर कुछ किया है तो यह कि मैं था इमस ज्यादा पक्का हुआ। प्रयाग सपूर्ण ब्रह्मचारी बनन के लिय था और यदि ईश्वरच्छा होगी तो सपूर्ण बनन क कारण होगा। अब इस वार म तुम बातें करना और प्रश्न पूछना चाहत थे—टाना चीज कर सकते हैं। सकोच की कोई बात है नही जिसक साथ इतना घनिष्ट सबध है और जिसके धन का मैं उपयोग करता हू उसके मन म कुछ सकोच रह सो मेरे लिये असह्य होगा।

अच्छा है कि दोना भाइ मौजूद है। यह पत्र दोना क लिय ता है ही लेकिन सब भाइया क लिय और परिवार क लिय है ऐसा समजो।

बापु के आशीर्वाद

पत्र छोटा लिखना था लकिन कुछ लम्बा तो हुआ ही बात तो तीन हैं।

आगे है

एक बात रह गइ आश्रम की जमीन चि० गोशाला को दी गई उसक तुमने ५०,०००) दिय हैं। अब बात एसी है कि जब चिमनलाल न फरिस्त भेजी तो उसमे आश्रम का खेत और जिसम कुआ है उसका कुछ जिक्र है। अगर है ता सब मकान भी गय। ऐस ता हो नही सकता। यह तो शरत चूक ही थी। अब प्रश्न यह है कि अगर तुमने एसा माना ह कि सब जमीन और कुआ गोशाला का दे दिया था ता तुमारे ५०,००० म स कुछ काटना होगा। तुमारे जसा कहना है एसा कीया जाय।

बापु

२२

महाबलेश्वर
६ ५ १६४५

चि० घनश्यामदास

सुनता हू कि तुमने १२ ता० को जाने का निश्चय किया है।

भाई दिनशा यहा है दूसरी सब शत तो कबूल करते हैं लेकिन वह इतनी कबूलत चाहते हैं कि दस्तावेज म दस्तखत हान के बाद कम से कम पाच वप तक तो टस्ट ग्राम नसर्गिक उपचार के लिये कायम रहेगा उसके बाद अगर प्रयत्न

निष्फल होव तो भले तालीमी काम के लिये ट्रस्ट की जायदाद स्थावर या जगम उपयोग म लाई जाय।

मुझे लगता है, इतनी बात तो हम कबूल करनी चाहीये।

तुमारी प्रकृति अच्छी होगी।

१२ तारीख की बात सही हो सकती है क्या ?

बापु के आशीर्वाद

तार स जवाब दो।

२३

तार

नयी दिल्ली
७ ५-४५

महात्मा गाधी
महाबलश्वर
(सतारा)

इग्लड जा रहे औद्योगिक मण्डल के सबध मे आपके वक्तव्य का यूनाइटेड प्रेस का ब्योरा अभी अभी देखा। भाषा गडबड कर दी है। पर आपने कहा बताते हैं कि हम इग्लड और अमरीका मे 'लज्जास्पद व्यापारिक समझौता करने पर उतारू हैं। बडी व्यथा हुई। विश्वास करने को मन गवाही नही देता कि आप मेरे, टाटा के और कस्तूरभाई की साख के प्रति, जि ह आप भली भाति जानते हैं अपन अविश्वास की भावना को इस प्रकार सावजनिक रूप स व्यक्त करेंगे, और यह समझेंगे कि हम भारत का ओर स किसी प्रकार का लज्जाजनक व्यापारिक समझौता करेंगे। हमम अपनी सीमाओ को समझने की विवेक-बुद्धि है और हम जानते है कि हमे किसी भी प्रकार का समझौता करने का अधिकार प्राप्त नही है, लज्जाजनक समझौते की तो बात ही अलग है। औद्योगिक मण्डल अपन ही खर्चे पर अपना ही अमला लेकर इग्लड और अमरीका वहा के लोगा स मिलने तथा उत्पादन के नवीनतम वज्ञानिक साधनो का ज्ञान प्राप्त करने जा रहा है। मैं स्वय व्यक्तिगत असुविधा के बावजूद जा रहा हू, और न भी जाता पर एक बार वचन

वद्ध होने के बाद यदि वह वचन सिद्धांत के विरुद्ध न जाता हो, तो उसका पालन अवश्य करना चाहिए। आपके वक्तव्य से हमारी नीयत पर शंका की जायगी, जबकि वस्तुस्थिति से पूर्णतया अवगत होने से पहले कोई सम्मति व्यक्त करना आपके स्वभाव में नहीं है। कराची से १४ मई को रवाना हो रहा हूं और आपके आशीर्वाद और मंगल-कामना की आशा करता हूं। कल कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हूं।

—घनश्यामदास

२४

तार

महाबलेश्वर
६ मई १९४५

सेठ घनश्यामदास,
८, रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

तुम्हारा तार मिला। मेरा वक्तव्य आवश्यक था। उसका अभिप्राय संभावित परिस्थिति-सम्बन्धी था। जल्दबाजी से काम नहीं लिया गया। वक्तव्य मेरे मूल दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। तुम्हें सशंकित होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि तुम और वस्तूरभाई गैर-सरकारी तौर पर जा रहे हो। भारत के कोटि-कोटि बुभुक्षित और वस्त्रहीन स्त्री पुरुषों का ध्यान में रखते हुए तुम्हें आशीर्वाद देता हूं और तुम्हारी मंगल-कामना करता हूं। दोनों तार प्रकाशनार्थ दे रहा हूं।

—बापू

२५

तार

कलकत्ता
१० मई, १९४५

महात्मा गाधी,
महाबलेश्वर,
(सतारा)

आपके तार से भारी चिन्ता का निवारण हुआ। अब उल्लसित मन के साथ जा रहा हू। प्रेम और अभिवादन।

—घनश्यामदास

२६

महाबलेश्वर
१० ५ ४५

चि० घनश्यामदास,

तुमारा खत मिला। दो बार पढ गया।

तुमारा उत्साह मुझे प्रिय है—लाभ के बार म मुझे शक है, सिफ देखोगे ही लेकिन कुछ प्रतिज्ञा नही करोगे तो हरज नही है। तुमने तार दिया है, ताता ने लिखा है कि बधन म पडने के लिए नही जाते हो, सिफ अनुभव के लिए तो ठीक ही है।

नून[1] के कहन का उत्तर बिलकुल आवश्यक था।

तुमारा तार मैंने छपवाया है और उत्तर भी। मैंने जो निवेदन निकाला उस पर स जो तीखे उत्तर निकले वह बताता है हम कसे विचारहीन रहते हैं। मेरा निवेदन सब जा रहे है उनका बचाव है अगर वे सरकार का काम करन के लिए

१ फारोजखां नून

नही जाते हैं तो। सरकार की इच्छा है और मदद तो है ही। उनका मतलब भी जानते हैं। उसका मतलब पार नही करना है तो जाना क्या ? उनको स्पष्ट सुनाया है कि आरडर वगरह की आज्ञा जब तक राजकारण से पकड़े गये हैं उनको मुक्त नही किये हैं न करें। तो जाने मे हानी नहीं है भले कुछ लाभ भी हो उसे भी छोडना है। जब तक प्रजा का हूक्म नही है न शासन है।

साथीओं को समजाना कि मेरा निवेदन बिलकुल ठीक था अगर वे सच्चे सिद्ध होंगे तो।

स्वास्थ्य अच्छा रखो और मुसाफरी मे और अच्छा करो।

दिनशा के बारे मे खत लिखा सो मिला होगा। दिल्ली भेजा था। कुछ भी सकोच रहे तो ट्रस्ट छोडने मे हरज नही है। दिनशा का दिल उसी चीज पर जमा है।

बापु के आशीर्वाद

फिर ताता वगरा को ठंडे करो अगर मेरा निवेदन तुमको निर्दोष लगे तो।

२७

तार

१४ मई १९४५

महात्मा गाधी
महाबलश्वर (सतारा)

रुकना पडा। वायुयान के रवाना होने मे देर लग गई। वायुयान मिलते ही रवाना हो जाऊगा। राजाजी को मेरे प्रणाम।

—घनश्यामदास

२८

कराची
१८-१-४९

पूज्य बापू

मैं कल आया और आपका खत पड़ा मिला। आपने मेरा तार और अपना उत्तर अखबारों में भेज दिया वह मेरे लिए शुभ हुआ। आपका वक्तव्य निकलते ही मैं तो छटपटा गया। उसका उत्तर मैं अखबारों में तो दे ही नहीं सकता था। इसलिए आपको ही तार भेज दिया। आपने मेरा तार और आपका उत्तर छपवा दिया इससे अनेक गलतफहमियां दूर हो गई। तब भी काफी द्वेषयुक्त कटाक्ष आते हैं लेकिन मुझे उसकी चिंता नहीं।

इस यात्रा के बारे में आपको कुछ गलतफहमी तो अवश्य हुई है इसलिए फिर से समझ लेना जरूरी है। जब आप जेल में थे तब उस जमाने में तरह तरह के विशेषज्ञ भारतवर्ष की उत्पादन शक्ति कैसे बढ़ सकती है इसके लिये बुलाये जा रहे थे। विशेषज्ञों के इलावा राजर मिशन और ग्रेडी मिशन भी आये। तब मैंने खुले आम वक्तव्य दिया कि उत्पादन बढ़ाने का यह क्या वाहियात तरीका है कि बाहर से लोग बुलाये जायें। अगर उत्पादन शक्ति बढ़ानी है, तो क्या हममें अक्ल नहीं है? हम क्या नहीं जानते कि उत्पादन शक्ति कैसे बढ़ाई जा सकती है? सरकार का तो कोई सहयोग है ही नहीं। न पासपोर्ट देती है न जहाज का टिकट देती है न डालर देती है। क्यों नहीं सरकार हम लोगों को बाहर जाने देती, ताकि हम नया अनुभव लावें। हमको तो सरकार बाहर जाने देती ही नहीं और बाहर से विशेषज्ञ बुलाकर झूठमूठ हम पर खर्चा डालती है, उससे बचें।

इसके बाद वाइसराय का वक्तव्य आया कि कुछ विशिष्ट लोगों को हम अवश्य भेजेंगे। फिर मुझसे पूछा गया "क्या तुम जा सकते हो?" तब मैंने स्वीकार किया। उसमें कुछ राजप्रकरणी मनशा भी थी। पर आपके छूटने के बाद मुझे जाने में ज्यादा रस नहीं रहा। पर चूंकि मैंने स्वयं चर्चा की थी और सरकार ने उस पर अमल किया और मैंने उसे स्वीकार किया तो फिर मेरा धर्म हो गया था कि मैं उस चीज से न हटूं। हटने की कोशिश की पर वाइसराय की मरजी के बिना हट जाना अनुचित था।

आर्डर देने का सवाल आपके विचार में क्या है यह मुझे पता नहीं। क्या आर्डर देने के लिये यह लोग हमें अमेरिका भी भेजेंगे? और आर्डर के लिये हम

किसी को जान की जरूरत भी नहीं है। माल बचनेवाले तो यहां ही होटलों में भर पड़े हैं और जिसको आदर देना है वे देते भी हैं। अगर उत्पादन शक्ति बढ़ाने के लिये किसी को नये कारखाने बढ़ाने हैं तो उसे बढ़ाने में अनुचित भी कुछ नहीं है। वह तो हमारे हित में है। आज चीजों का जो अकाल है उससे निबटने के लिये उत्पादन शक्ति का बढ़ाना तो आवश्यक है। लेकिन उसके लिये न किसी का जान की आवश्यकता है और न कोई जा रहा है। अगर आदर से आपका मतलब सार्वजनिक आदर हो तो भी मेरा ऐसा ख्याल है कि मेरे जैसा आदमी जाता हो तो यह विश्वास कर लेना चाहिये कि ऐसे कोई दोष में पड़नेवाले हम लोग नहीं हैं। यदि इतने साल के अनुभव के बाद भी सर्वोत्तम व्यापारियों के सम्बन्ध में आपको शक बना ही रहे तो वह दुःखद बात है। आपको तो शायद शक न भी हो तो भी आपके वक्तव्य से कुछ आबोहवा बिगड़ी और लाभ भी हुआ है। लाभ तो यह कि हमारे लोगों में जो कुछ कमजोर थे वो वे अब सतर्क रहेंगे। मेरे जैसे आदमी के हाथ भी अब मजबूत बन गये। यह तो निश्चय लाभ ही हुआ। नुकसान यह हुआ कि आज हिन्दुस्तान में अनेकता की भी चरम सीमा पहुंच गई है। वह अनेकता बढ़ती ही जा रही है। हम एक-दूसरे पर शक करते हैं नीयत पर लांछन लगाते हैं यह हमारे लिये अहितकर है। पहले तो वर्ग-वर्ग में मतभेद फिर वर्ग के वर्गान्तर में मतभेद खड़ा हुआ। वह मतभेद भी सिद्धान्तों का नहीं केवल द्वेष और ईर्ष्या एक-दूसरे की नीयत पर लांछन। यह अशुभ चिह्न है। यदि हम स्वराज्य मिल भी जाये, तो ऐसी अनेकता में कोई रचनात्मक काम होना असम्भव-सा होगा। मेरी तो आपकी अहिंसा की बृहत व्याख्या यह है कि अनेकता में से एकता पैदा हो।

टाटा को तो मैं बहुत-कुछ कहनेवाला हूं क्योंकि उसकी कई चीजें मुझे प्रिय नहीं, और आपके वक्तव्य के बाद तो मैं उसे कुछ ज्यादा भी कह सकता हूं। पर वह सचमुच अच्छा आदमी है और आप उसको त्याग नहीं सकते। आप त्यागेंगे तो गलती करेंगे ऐसा मुझे लगता है। इसलिये अहर्निश उसको निकट लाने का मेरा प्रयत्न रहता है।

जब हम लौटेंगे, तब एक दफा हम सब लोग आपके पास आवेंगे।

दीनशा के बारे में तो मैंने आपको तार दे ही दिया था।

आप अहर्निश मुझे आशीष दें कि आपको मुझसे कभी क्लेश न हो।

विनीत,
घनश्यामदास

२९

तार

पूना
१० सितम्बर, १९४५

घनश्यामदास बिड़ला,
मारफत लकी,
कलकत्ता

घोष यहां आयेंगे तो पता चलेगा। आशा है, तुम स्वस्थ हो।

—बापू

३०

तार

बनारस
२ अक्तूबर, १९४५

महात्मा गांधी,
हैल्थ क्लिनिक,
पूना

आपकी वर्षगांठ पर मेरा सादर अभिवादन। भगवान आपको अनेक स्वस्थ वर्ष प्रदान करें।

—घनश्यामदास

३१

पूना
३.१०.४५

चि० घनश्यामदास

तुम्हारा खत मिला है। ११ को आने की राह देखूंगा।

बापू के आशीर्वाद

सेठ घनश्यामदास बिड़ला,
बिड़ला पार्क
बनारस

३२

पूना
२८.१०.४५

श्री घनश्यामदासजी,

आपका पत्र बापूजी को मिला है। पूना में रहने की अफवाह गलत है। अगर नेचर क्योर ट्रस्ट बना तो बापूजी का समय जहां नेचर क्योर का नया सेंटर बनेगा उसमें और सेवाग्राम के बीच शायद बंट जायगा। नया मकान बनाने का तो सवाल ही नहीं। डॉ० दीनशा नासिक जा आये हैं। स्कूल की जगह उन्हें पसन्द है। शायद कुछ तो लिया चाहेंगे। बापू उनसे बातें कर रहे हैं। आपसे भी थोड़ी बात करना चाहेंगे।

मेरे भाई अब कुछ अच्छे हैं। १४ दिन के बाद बुखार टूट गया है। कमजोरी है। आप अच्छे होंगे।

सुशीला का प्रणाम

श्री घनश्यामदास बिड़ला,
इम्पीरियल बैंक बिल्डिंग
बैंक स्ट्रीट फोर्ट,
बम्बई

३४

पूना,
४ ११ ४५

चि० घनश्यामदास

दीनशा ने आप भाइयो के साथ बात की है उसका असर यह है कि नासिक जाने का उतना उत्साह नही है इसलिये नासिक का विचार अब तो छूटा। इसलिये नासिक का विचार छूटा समझो। मकान का जैसे चलता है ऐसे चलने दो। अगर मैं दीनशा का उत्साह नासिक की ओर देखूगा तो बात करूगा। उस समय मकान या जमीन हुगे तो देख लेंगे।

हम सब यहा से १६ तारीख को मुबई पहुचेंगे। मुबई से मैं २० तारीख को वर्धा के लिये रवाना हुगा।

बापु के आशीर्वाद

३५

बिडला हाउस,
अल्बूकर्क रोड,
नयी दिल्ली
१२ ११ ४५

पूज्य बापू

चरणो मे नमस्कार। मै इस समय दिल्ली मे हू और कुछ दिनो के बाद पिलानी जाकर फिर कलकत्ता जाने का विचार है। शायद वहा आपसे भेट होगी।

दीनशा ने मुझसे और रामेश्वरदास से काफी बातें की थी। उसके कई सकल्प विकल्प थे इसलिये कई प्रश्न पूछे। बिजली पानी इत्यादि का क्या प्रबन्ध हो सकता है, नये ट्रस्ट का पुराने टस्ट से क्या सबध होगा ? मैंने उसे सक्षेप मे कह दिया था कि दोनो का जवाब बापू से मिल जायेगा। अर्थात जो रद्दोबदल वे चाहेंगे वे कर दी जावेंगी और जैसा सम्बध दो ट्रस्टो के बीच मे बापू चाहेगे वह भी हो

जावेगा। पर उसको इतने से संतोष नही हुआ। मुझे उसी समय लगा कि शायद वह नासिक पसंद नही करेगा।

आपको एक पत्र भेजता हू। आप शायद इसे दिलचस्प पाये। शायद आपको पता होगा कि महावीरप्रसादजी पोद्दार भी नैसर्गिक चिकित्सा का एक आश्रम चला रहे हैं। मैं देखता हू कि प्राकृतिक चिकित्सा मे लोग कभी कभी अधिक श्रद्धा कर बैठते हैं। इन सज्जन ने लिखा है, 'राजयक्ष्मा गठिया कोढ आदि का अभिमान प्राकृतिक चिकित्सा ने चूर कर दिया"—ये सब रोचक वचन हैं और मेरा ख्याल है कि ऐसी अतिशयोक्ति से कोई लाभ नही।

किंतु एक बात इस पत्र मे है। इन सज्जन की जो माग है वह साधारण है। मैं इन्हे कुछ सहायता भेजूगा। आपको यदि इस पत्र मे कुछ दिलचस्पी हो तो आप इन्हे बुलाकर बात करें क्योकि यह सज्जन लगनवाले मालूम होते हैं।

विनीत

घनश्यामदास

३६

पुना

१८-११-४५

चि० घनश्यामदास

तुमने जो कुछ भी हो सकता था, वह नासीक की जमीन के बारे मे किया है। उसमे मुझे कुछ सदेह नही है। दीनशा विचित्र प्रकृति का मनुष्य है लेकिन बहुत अच्छा उदार और सरल स्वभाव का है। नैसर्गिक उपचारको मे वही एक है जिस पर मेरी नजर स्थिर हुई है और उसमे जो खूबिया हैं उसीका मैं सेवन करता रहूगा और कर सकूगा तो उसके मारफत मरीजो की सहाय मे काफी मदद मिल सकेगी। इसी कारण जब मैंने देखा कि नासीक जाने की उनकी स्वतंत्र प्रबल इच्छा नही है तब मैंने छोड दिया। और साथ-साथ मैंने इतना निर्णय भी कर लिया कि सस्था का काम सब यहा से ही शुरू करू और इसको गरीबो के लिये चलाना। आज तक धनिक ही आये हैं और उनके पीछे-पीछे गरीब। अब गरीबो के पीछे पीछे जो धनवान मरीज आना चाहेंगे, उनको ही रखा जायगा। धनवानो को वही सुविधा मिलेगी जो गरीबो के लिये होगी। लेकिन इसके साथ इतना भी निश्चय

है कि स्वच्छता के नियमों का यथाशक्ति पालन की चेष्टा होगी। यह काम कठिन तो है उत्तरावस्था में इतना रस पैदा नहीं करना चाहिये। लेकिन वर्षों तक सुषुप्ति में जा था वह आज अनायास से जाग्रत अवस्था में आ गया है। उसे मैं कैसे रोकू ? ईश्वर को कराना है वही करावेगा। जिसमें आप भी ट्रस्टी हैं उसको आज तो स्थगित किया है। यहां की प्रवृत्ति से उसे पैदा होना है तो पैदा होगा। जो होगा वह सब तरह से ठीक ही होगा। अगर मुझे नासिक जाना होगा या इसीको चलाने में द्रव्य की आवश्यकता रहेगी तो लिखूंगा। अब तो देख रहा हूं। थोड़े पैसे मेरे पास पड़े हैं उसमें से इसे चलाऊंगा क्योंकि अब के ट्रस्ट की शरत यह है कि व्यवस्था दीनशा के हाथ में नहीं रहेगी उसके लिये जवाबदारी ऐसी ही बड़ी कि मेरी रहेगी।

आपने जो खत श्रीनाथ सिंहजी का भेजा है वह मैं पढ गया। मुझपर उसका अच्छा असर नहीं हुआ है। उसने लम्बा चौड़ा बहुत लिख डाला है फिर भी मैं उनको थोड़ा लिखता तो हूं।

बापु के आशीर्वाद

३७

कलकत्ता
१० सितम्बर, १९४५

प्रिय प्यारेलाल

श्यामलाल ने बापू को जो चिट्ठी लिखी है उसमें लगता है कि उसने अपने वेतन में १००) कमी चाहने के बाद अब ५०) का ताजा कमी चाही है। मैं तो नहीं समझता कि लोगों का इस प्रकार अपने वेतन में कमी कराने की अनुमति देना ठीक है। इससे रहन सहन के स्तर में सस्तापन आ जाता है और अनावश्यक रूप से कष्ट झेलना पड़ता है। वह सदुद्देश्य से प्रेरित अवश्य है पर ऐसा कदम उठाकर वह व्यावहारिक बुद्धि का परिचय नहीं दे रहा है। वास्तव में कुछ समय बाद उसके दिमाग पर विपरीत प्रतिक्रिया होगी जिसके फलस्वरूप वह अपने इस कदम पर पछतावा करने लगेगा। इससे अनावश्यक रूपमें असंतोष की भावना उद्दीप्त होगी। इसलिए मैं यह सब बापू की जानकारी के लिए लिख रहा हूं।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१९४६ के पत्र

१

२३ माच, १९४६

चि० घनश्यामदास,

मरा इरादा अब जिधर जाऊ, वहा जिस जगह भगी रहत हैं वहा रहने का तीव्रता स हो गया है। दिल्ली मरा आन का ३री ता० को होगा। क्योंकि दूजन मिल गया है। कुछ कठिनता से भी अगर मैं भगीवास म ठहर सकू तो ठहरने का प्रबध किया जाय। इस बार म वियागी हरिजी को अलग नही लिखता हू। आप ही उनस और ब्रिजकिसन स बात कर लें।

मैं अच्छा हू।

बापु क आशीर्वाद

२

उरूली (जी० आई० पी०)
२७ ३ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी

यह चिट्ठी अंग्रेजी म लिखवा रहा हू, क्षमा करियेगा। कारण आप स्वय ही समझ लेंगे।

कल बापू न ब्रजकृष्ण को तार भेजकर वाल्मीकि मन्दिर म ठहरने के बन्दोबस्त को पसन्द किया है। आज मैंने आपको एक और तार भेजा है जो इस प्रकार है

बापू न कल ब्रजकृष्ण का स्वीकृति का तार और सविस्तार पत्र भी भेजा है।

रही टेलिफोन और बिजली क बन्दोबस्त की बात सो बापू का कहना है कि अगर यह इन्तजाम करने म विशेष असुविधा न हो तो कर लिया जाय पर यदि य दोनो न भी रहें तो उनके काम म बाधा नही पडेगी। यदि बिजली रोशनी के लिए लगाई जाय, तो बापू चाहेंगे कि यह बन्दोबस्त स्थायी रूप स हो। यदि उनके

भगी निवास स विदा होते ही बिजली के तार काट न्यि जायें तो यह सब तमाशा करने की क्या जरूरत है ? उनक वहा ठहरने से वहाके निवासियो का कुछ-न कुछ स्थायी लाभ हाना चाहिए। बापू यह भी चाहेंग कि स्नान और पीने क लिए शुद्ध जल पर्याप्त मात्रा मे उपलब्ध रह। बापू के स्नान के लिए एक टब का भी बन्दो वस्त करना है। फिलहाल इतना ही। और अधिक भेंट होन पर।

सदभावनाओ के साथ

आपका,
प्यारेलाल

३

१५, हनुमान रोड,
नयी दिल्ली
१४ ५ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी,

मुझ यह खेद के साथ कहना पडता है कि आपने मरे इस्तमाल के लिए एक कार का जो प्रबध किया था उसम पहले तो शिथिलता बरती गई और जब बापू का आगमन निश्चित हुआ तो यह प्रबन्ध बिलकुल ही खत्म हो गया। मैंने पोद्दार जी से फोन पर भी बात की और अपनी कठिनाई का पत्र भेजकर भी समझाई पर कार न कल शाम आई न आज। इसका नतीजा यह हुआ कि बापू के साथ मैंने 'हरिजन के लिए सामग्री भेजने का जो प्रबन्ध किया था वह पास मे कार न रहने के कारण ठप हो गया और आज सुबह हरिजन क लिए सामग्री का जो पुलिन्दा आया है वह यो ही मरे पास पडा है।

एसी जरा जरा सी बाते आपके ध्यान म लाना मुझे अच्छा नही लगता पर बापू के अथवा आपक पीठ फरते ही आपके आदमी आपकी ताकीद के साथ जिस ढग स पेश आते है उसस कभी कभी बदमजगी पदा हो जाती है और इस समय जसा कुछ विरोधी प्रचार चल रहा है उसे बढावा मिलता है।

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला

४

१५ मई १९४६

प्रिय प्यारेलाल,

तुम्हारा १४ तारीख का पत्र पढ़कर बड़ा क्षोभ हुआ। तुम्हें जो कटु अनुभव हुआ मेरे आदमी आम तौर मे वैसा आचरण नही करते। यह कुछ अजीब सी बात हुई और इससे मुझे बड़ा सदमा पहुंचा है।

खातिर निशा रखो, अगर कोई संतोषजनक कैफियत नही मिली तो मैं अपने आदमी के साथ बड़ी सख्ती से पेश आऊगा। मैं अपनी फर्म मे नालायकी बर्दाश्त नही करता, और जिस अधिकारी ने यह सब किया है देखना उस पर क्या बीतती है। साथ ही, तुम्हें जो तकलीफ हुई उसके लिए माफ करना। दिल्लीवाली मिल का मनेजर पहले जैसा मनेजर नही है और ऐसा लगता है कि वह दूसरो की तकलीफ-आराम की ओर उतना ध्यान नही देता। मेरे प्रबंधकों के खिलाफ किसी अतिथि ने कभी कोई शिकायत की हो, इसका यह पहला अवसर है और इसके द्वारा भविष्य मे ऐसी घटनाए असम्भव हो जायेंगी।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
वाल्मीकि मंदिर
नयी दिल्ली

५

नयी दिल्ली
२६ मई १९४६

प्रिय घनश्यामदासजी

इस पत्र के साथ जो सामग्री रख रहा हू, बापू चाहते थे कि वह मैं आपको टेलिफोन पर कह सुनाऊ जिससे आप इस मामले मे आवश्यक कारवाई कर सके।

पर मुझे लगा कि आपको सामग्री की नकल भेजना समीचीन रहेगा। यदि बापू का बताना है तो मुझे खबर दीजिए।

आपका
प्यारेलाल

सलग्न

पूज्य महात्माजी

मैं निम्नलिखित बातें दुःखी दिल से आपकी सूचना और विचार के लिए भेज रहा हूं।

१) ईब नदी के दोनों तटों पर जो गाव बसे हुए है उन्हे व्रजराजनगर की ओरिएन्ट पेपर मिल के कारण बडी परेशानी का सामना करना पड रहा है। मिल से जो गदा पानी बहकर नदी में गिरता है उससे नदी का जल विषाक्त हो जाता है जिसके कारण इन तटवर्ती ग्रामो के निवासियो के स्वास्थ्य को भारी क्षति पहुंच रही है। नदी का जल अपने व्यवहार मे लानेवाले की सख्या ५० हजार से कम कदापि नही होगी। इस गन्दे पानी के कारण इन सब स्त्री पुरुषो के प्राण सकट मे पड गये हैं। ईब नदी के दूषित जल से महानदी का जल भी दूषित हो गया है और उस नदी के जल का काम मे लानेवाले स्त्री पुरुषो पर भी इसका साघातिक प्रभाव पड रहा है।

२) इस विषाक्त जल के व्यवहार के फलस्वरूप इधर कुछ काल से अनेक विलक्षण रोगो की शिकायतें सुनने मे आने लगी है। मेरा यह दृढ विश्वास है कि यदि मिल के इस दूषित जल को नदी मे जाने से रोकने का शीघ्र ही कुछ प्रबध न किया गया तो काफी लोग अनेक रोगो के शिकार बन जायेंगे। स्थानीय चिकित्सा विशेषज्ञो की भी मेरी जैसी ही राय है और इस स्थान के निवासियो ने मिल के दूषित जल को ईब नदी मे बहाये जाने का विरोध किया है। पर मिल के अधिकारियो ने इस विरोध को सुना-अनसुना कर दिया है, और स्थानीय अधिकारी भी न जाने क्यो, इस मामले मे खामोश हैं।

३) आप दरिद्रनारायण के हित चिंतक हैं, यह जानकर मैं आपके पास यह आशा लेकर पहुंच रहा हूं कि आप इस दिशा मे समुचित कारवाई करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जनता आपकी इस मामूली सी सहानुभूति की अधिकारी है। इसके स्वत्वाधिकारी श्री व्रजमोहन बिडला है। आपके इशारे भर की जरूरत है नदी मे इस विषाक्त जल का प्रवाह बन्द होते देर नही लगेगी और जनता नाना प्रकार की व्याधियो से त्राण पा जायेगी।

इस दिशा म अविलम्ब कदम उठाने की अत्यत आवश्यकता है। मुझे आशा है कि आप आवश्यक कारवाई अवश्य करेंगे।

श्रद्धा भक्ति क साथ,

आपका आज्ञाकारी,
आशुताप पण्डा
सत्यवादी भण्डार
ब्राह्मण वगात सम्बलपुर, उडीसा

नकल

६

नयी दिल्ली
२७ ५-४६

चि० घनश्यामदास

ओखला के मकान क बारे म चि० प्रभुदास सुनाता है सो सुनने लायक है। एसा ही है तो मुफ्त मिला है तो भी मकान मघा पडेगा लेकिन सुनो, तुमार बापा का और रामश्वरीबहन को समजन जसी बात लगती है।

बापु के आशीवाद

७

१४ जून १९४६

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हे याद होगा कागज की मिल का पानी ईब नदी म बहाय जान क बार म तुम्हे शिकायत मिली थी। अब वहा स जा उत्तर आया है, उससे सब स्पष्ट हो जाता है।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
वाल्मीकि मदिर
नयी दिल्ली

८

पुना
ता० १२ ७ ४६

भाई घनश्यामदास

यह तो आपको पता है कि आप लोगो की (होल्डिंग ट्रस्टीज) मजूरी स कस्तूरबा ट्रस्ट का करीब १० १२ लाख रुपय सेंट्रल और यूनाईटेड कामशियल बका म फिक्सड डिपोजीट के रूप म लगा हुआ है। सेंट्रल बक १२ महीने की मियाद पर १ ३/४ प्रतिशत ब्याज देता है और यूनाईटेड कामशियल बक २। प्रतिशत। ट्रस्ट चूकि पारमार्थिक काय क लिय है इसलिय मरी तो यह इच्छा है कि बैंको को जो कुछ ब्याज सरकारी लोन से या अन्य साधना स मिलता हो वह ट्रस्ट को दे। जिसका अथ यह है कि ट्रस्ट को कम स-कम ३ प्रतिशत टका ब्याज तो मिलना ही चाहिये। मैं सेंट्रल बैंक स ब्याज के सबध म सर होमी मोदी को लिख रहा हू और यूनाईटेड कामशियल बक के सम्बन्ध म आपको लिख रहा हू। आप उसके अध्यक्ष की हैसियत स ३ प्रतिशत टका ब्याज दे तो अच्छा होगा।

मैं कल पचगनी जा रहा हू। उत्तर वही भेजना।

बापु क आशीर्वाद

श्री घनश्यामदास बिडला
८ रायल एक्सचेंज प्लेस
कलकत्ता

९

वाल्मीकि मदिर
रीडिंग रोड,
नयी दिल्ली
२७ अगस्त, १९४६

प्रिय घनश्यामदासजी

मुझे अपने एक भतीजे के बारे मे बडी चिन्ता हो रही है। वह हाल ही मे जादवपुर मेडिकल स्कूल म भर्ती होने कलकत्ता गया था। उसकी बहन प्रकाश

नयर भी यही है। वह चाहती है कि मैं निम्नलिखित पते पर पूछताछ करवाकर उसके बारे म मालूम करू कि क्या बात है

बी० ए० सिंह
पजाब नेशनल बक लिमिटेट,
डलहौजी स्क्वेयर
कलकत्ता

आपका कलकत्ता म टेलिफान द्वारा सबध है इसलिए क्या आप आवश्यक कारवाई करने का कष्ट उठायेंगे ? मेरे भतीज का नाम है प्रतापचद नयर। दगे की खबर पाते ही मैंने उसे तार भेजा था पर शायद वह उस तक पहुच नहीं पाया है।

आपका
प्यारलाल

१०

१० सितम्बर, १९४६

प्रिय प्यारेलाल

इसके साथ जो चिट्ठी रख रहा हू उसका विषय स्पष्ट ही है। क्या तुम इस महिला स परिचित हो ? यदि बापू की अभिलाषा होगी तो मैं अवश्य सहायता करूगा।

भवदीय
घनश्यामदास

सलग्न

भगी कॉलानी,
नयी दहली
८ ९-४६

श्री बिडलाजी

मैं अपनी दु खद कहानी लेकर श्री गाधीजी का सुनान आई थी श्री प्यारलालजी न सब कुछ सुना, उनकी सलाह स ही यह पत्र मैं आपको लिख रही हू।

मरा एक ही लडका है उसकी उम्र ३८ वर्ष है। उसकी शादी १३ वष पहल

की थी उसकी स्त्री है और ६ वष की लडकी है। जब से शादी हुई तब स ही लडका बीमार है। उसकी बीमारी म घर की सारी सम्पत्ति खच हो गइ। मैं अपने भाइया के पास रहती हू वहू और उसकी लडकी अपने माता पिता के पास। लडक को वहम हो गया है। उसकी बुरी हालत है। यद्यपि वह ८०) मासिक वेतन पाता है मगर सब दवाओ पर खच कर देता है। जहा नौकर है वह भले आदमी हैं। काम कुछ करता नही फिर भी ८०) मास के अत म उस द दते हैं। मैं इज्जतदार घर की स्त्री हू। किसी स सहायता लेना नही चाहती मगर मर पास इतना साधन नही जा उसे पागलखाने भेज दू। आपसे इतनी ही सहायता मागती हू कि उसे आगर पागलखाने भज दें और वहा का खच दे दें। वह कानपुर म है वहा जाकर उसे लाना और आगर पहुचाना तथा वहा स वापस देहली आना इतना सफर खच और चाहता हू। आगर म ७०) मासिक खच होगा।

आशा है आप मुझे निराश नही करेंगे।

भवदीया
सरस्वतीदवी

८१

वाल्मीकि मदिर
रीडिंग रोड,
नयी दिल्ली
११ सितम्बर, १९४६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र मिला। यह बहन बापू से मिलना चाहती थी। मैंने उनस कहा कि बापू का समय लेना उचित नहीं है। यह बहन भले घर की मालूम होती हैं, और ऐसा लगता है कि कभी इन्होने अच्छे दिन देख होग। इनकी दशा सचमुच दयनीय है। मैंन इन्हें सलाह दी कि आपको लिखें जिसस आप इस तरह के मामला म जसी कारवाई करते हैं, कर सकें।

मूल चिट्ठी वापस लौटा रहा हू।

भवदीय
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
नयी दिल्ली

१२

तार

रामगज
२४-१० ४६

घनश्यामदास बिडला
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

मा लेडी हार्डिग्ज अस्पताल म इन्स्यूलिन की प्रतिक्रिया के इलाज के लिए भर्ती हुई है। कृपा करके उनकी हालत पुछवाइये और तार दीजिए। आपका पत्र मिला। लिख रहा हू।

—प्यारेलाल

मारफत महात्मा गाधी
शिविर काजिरखिल तारघर—रामगज
जिला नोआखाली

१३

तार

२६ १० ४६

प्यारेलाल
खादी प्रतिष्ठान
सोदपुर बगाल (कलकत्ता के निकट)

मेरा सुझाव है कि बापू कलकत्ता म ठहरे रह क्योकि फिर वारदातें शुरू हो गई हैं। यदि बापू दिन म नगर म ही ठहरे रहे, तो उत्तम होगा, क्योकि इससे लोगो को उनसे मिलने म आसानी होगी। यदि स्थिति ऐसी ही गम्भीर रही तो कल कलकत्ता के लिए रवाना होने का विचार है। तार भेजा मारफत 'लवी ।

—घनश्यामदास

१४

न्तपाडा
१२ ११ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी

कल बापू का मौन दिवस था तो भी उन्होंने नोआखाली सोनाचक और खिलपाडा नामक गावो का दौरा किया। नोआखाली म ८ आदमियो की हत्या हुई थी जिनम १५ वष का एक विद्यार्थी भी था। वहा ४ कपाल और झुलस हुए हाड मास चारो ओर छितराय हुए दिखाई दिय। प्राय सभा मकान बिलकुल स्वाहा हो गये हैं। जिस घर म उस विद्यार्थी की हत्या हुई थी वहा स्कूल की पुस्तक और लिखी हुई कापिया इधर उधर बिखरी पडा थी। घरो के चारो ओर सुपारी और नारियल के पड भी झुलस गय। जा लोग जीवित बचे थ उनका बलात धम परिवतन कर दिया गया था। इनम एक गूगा बहरा आदमी भी था जिसने अपनी काटी गई चोटी एक कपडे म बाध रखी थी। वह हृदय विदारक हाव भाव के माध्यम स सबका ध्यान उस पोटली की ओर आकर्षित कर रहा था। जा स्त्रिया बच गई थी व छाती पीट पीटकर विलाप कर रही थी। सोनाचक म मन्दिरो को भ्रष्ट कर दिया गया था और उनम आग लगा दी गइ थी। खण्डित मूर्तिया ध्वस्त मदिरा म और माग म छितरी हुई मिली। ठाकुर परिवार—जो ठाकुरवाडी क नाम स प्रख्यात है—ऐस ही एक मदिर का स्वामी है। यह मदिर कई शताब्दी पुराना है और इस कट्टर सनातनी परिवार म अनेक विद्वान उत्पन्न होत आए है। इस परिवार के सारे-क-सारे २०० सदस्य धमच्युत कर दिय गये थ। इनका उद्धार किया गया। बापू को इस ग्राम मे भी स्त्रियो के विलाप और आतनाद का दश्य देखना पडा।

आज सुबह बापू न घोषणा की कि दल म जितने जन हैं स्त्री पुरुष सभी उनम से एक एक को अलग अलग गाव म भेजा जायगा। जिनम इतना जीवट न हो अथवा जो मुसलमानो के प्रति रोष को काबू म रखने मे असमथ हो व वापस लौट जायें। हरिजन काका साहेब कालेलकर किशोरलालभाई और नरहरिभाई जस मित्र चलाएग। यदि व ऐसा न कर सकते हो तो पत्र बन्द कर दिया जाय।

बापू के भोजन की मात्रा काफी कम हो गई है। गावो की गश्त लगान स शारीरिक थकान होती है और हृदयविदारक दश्य दखने तथा करुण कहानिया सुनन स दिमाग पर असर पडता है। बापू पूरी खुराक कब स लेना आरम्भ करगे,

यह बिहार से आनेवाली खबरो पर निर्भर करता है। उनका कहना है कि बिहार को हार्दिक पश्चाताप का परिचय देना होगा।

कल हम लोग सोनाटाली गये थे। इस गाव की एक लडकी को उठाकर ले जाया गया था। तीन चार दिन बाद वह गाव के चौकीदार के मारफत वापस लौटाइ गई। अब भी यहा कइ स्थानो पर स्त्रियो को रात म उठाकर ले जाया जाता है और सुबह होने ही लौटा दिया जाता है। सोनाटोली म जुलाहो और नामशूद्रो को भय लग रहा था कि हमारे विदा होते ही उनके साथ ज्यादती फिर शुरू हो जायेगी। ये लोग हमारे साथ हो लेना चाहते थे। सुचेता ने उन्हे समझा बुझा कर वही रहने को राजी किया और गाव के चौकीदार को चेतावनी दी कि यदि उनके साथ ज्यादती की गई तो उसके साथ बुरी बीतेगी। मुसलमान केवल सेना और पुलिस से ही डरते हैं। कई स्थानो पर उन्होने हिन्दुओ से कह रखा है अभी तो तुम लोग हिन्दुओ की तरह रहते रहो, बाद मे हम जब तुमसे कहें तो दुबारा इस्लाम कबूल कर लेना।' ये लोग सेना से जल्दी से जल्दी पीछा छुडाना चाहते है। वसे भी पुलिस और सेना जितना कुछ कर रही है नही के बराबर है। जब तक सेना यहा मौजूद है ये लोग खामोश हैं।

हमे बताया गया कि गामाटाली से अनेक स्त्री पुरुषो का सशस्त्र गार्डों की देख रेख म उद्धार किया जा रहा है। पर जब आततायियो ने उन पर हमला बोला तो गार्डों ने उन पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया और कहा कि उन्हे गोली दागने का आदेश नही मिला है। यदि ऐसी बात है तो उन्हे इस अचल म हथियार लेकर गश्त लगाने को क्या कहा गया? एक आदमी ने भागकर दत्तपाडा म शरण ली। वह सैनिक अफसर के परो पर गिर पडा और बोला कि उसके दल की रक्षा के लिए आदमी भेजिए। इस दल पर दत्तपाडा के पास आक्रमण किया जा रहा था। पर अफसर ने उत्तर दिया कि अगले दिन सुबह तक वह कुछ नही कर सकेगा। इस कारण पन्द्रह आदमियो को प्राण गवाने पडे।

जो-कुछ हो रहा है, देखकर जी मिचलाने लगता है। अमतुस्सलाम दासगन्यिा म काम कर रही है। उन्होने बताया कि उनसे मुसलमानो ने खुद कहा कि यह सब इस्लाम के खिलाफ है पर बाद मे इन्ही लोगो ने हिन्दुओ पर सशस्त्र आक्रमण कर दिया। उन्होने खुल्लमखुल्ला कह दिया कि मुस्लिम लीग उनसे जो कहेगी वही वे करेंगे पर वसे किसी तरह की गारण्टी नही देंगे। उन्होने गाधीजी की बात सुनी अनसुनी कर दी बोले कि उनका उनसे कोई वास्ता नही है वे उन्हे जानते तक नही कि वे कौन हैं।

पर जब तक पूर्व बगाल म हिन्दुओ और मुसलमानो मे शान्ति स्थापित न हो

जाय बापू वहा ठहरे रहने को कृतसकल्प हैं। वह मुसलमानो म ही ठहरेंगे, और वे उ ह जो कुछ देंगे उसी को ग्रहण करके सतुष्ट हो जायेंग आदि।

हिन्दुओ का कहना है कि उन्हें मुसलमानो न सुरक्षा का आश्वासन दिया था और जो शाति-समितिया बनी उनमे ये मुसलमान भर्ती हुए। उन्होने इन हिन्दुओ से अपना जन्म स्थान परित्याग न करन का अनुरोध किया। बाद म उनस कहा गया कि रुपया दो तो तुम्हारी हिफाजत की जायगी। उन्होने रुपया पसा दिया फिर भी उन पर आक्रमण किया गया और उनकी हत्या की गई उन्हें बलात मुसलमान बनाया गया और स्त्रियो का सतीत्व नष्ट किया गया। अब ये लोग उन्ही आततायियो की बात का भरासा करके अपने घर कस वापस लौट सकते हैं? जिन लोगा न दिन दहाड़े ये सब काण्ड किये थ उ ह पकडने की कोई कोशिश नही की गई है। परसो एक सभा हुई जिसम एक सरकारी अधिकारी ने मुझे बताया कि ऐसे आततायियो की सख्या एक हजार के लगभग है और उन्हें उसी सभा म आसानी स पहचाना जा सकता था। पर बापू न अपनी प्राथना सभा म उनकी सुरक्षा का वचन दे दिया। जब तक य लाग फरार रहग शाति कस स्थापित हो पायेगी?

जब यह सुझाव दिया गया कि पूव बगाल म हिन्दुओ की बस्तिया बसाई जायें तो बापू का यह विचार अच्छा नही लगा। उनका कहना है कि हजारा आदमियो स इन व्यक्तिया की रक्षा करना सम्भव नही होगा। यदि उन्हें यह अचल त्यागना ही है तो उन्हें हिन्दूबहुल अचल म—पश्चिम बगाल आसाम और बिहार म—जाना चाहिए। पर यह कहना आसान है करना कठिन है। यह उपद्रव साम्प्रदायिक नही राजनतिक है। इस समस्या का हल दाना सम्प्रदायो के नता लोग ही तलाश कर सकत हैं।

आपका
प्यारेलाल

१५

कैम्प दत्तपाटा
१३ ११-४६

श्री घनश्यामदासजी

साथ का खत भाई ने सरदार को लिखा है। आपको लिखने को कहा है कि आप उसे पढ लें, और उन्हें पहुचाने की तजवीज करें। सेंसर म पडा ता कौन जान कब पहुचेगा।

यहा की स्थिति अखबारो मे पढी थी उससे बहुत ज्यादा भयकर है, और उस पर बापू का निश्चय। प्रभु जाने इसका अन्त क्या होगा। चपारन-सत्याग्रह जसा भी हो सकता है, और ईस्ट बगाल सबकी कबर भी बन सकता है।

बापू इतन स्ट्रेन (मानसिक तनाव) को पता नही कस बरदाश्त कर रहे हैं वह भी हाफ स्टार्वेशन डाइट पर (अधभूखे) रहकर।

आप कुशल हाग।

सुशीला का प्रणाम

पुनश्च

यह खत तुलसीरामजी के साथ जाना था। पीछे पता चला वे कानपुर रुकेंगे सो ले लिया। आज कृपलानीजी के साथ जा रहा है इसलिए सरदार का खत सीधा जायगा और आपका उसकी नकल भेजती हू।

बापू ने अब तो ग्लूकोज भी छोड दिया है पर स्ट्रेन (मानसिक तनाव) को अच्छी तरह बरदाश्त कर रहे हैं।

आज तो इतना ही।

सु०

सलग्न

१३ ११ ४६

सरदार श्री की सेवा म

कल बापू ने एलान किया कि वह अपनी टोली का विसर्जित करना चाहत हैं। टोली के प्रत्यक व्यक्ति का मुसलमाना के एक-एक गाव म बैठान की उनकी याजना है। दो व्यक्ति किसी भी गांव में नहीं रखे जायेंगे। एक हिन्दू और एक

मुसलमान को एक गाव म बठाकर उसके ऊपर ही उस गाव के हिन्दुआ की प्राणपण से रक्षा का दायित्व रहगा। लडकिया का भी इसी तरह मुसलमाना के गाव म रखना चाहते हैं। जिन्ह जान की इच्छा न हो अथवा मुसलमाना के प्रति अपने क्रोध को वश म रखन की शक्ति या प्रवत्ति न हो उन्ह घर लौट जान की छूट है। अपनी टोली म म किसी को भी अपने साथ नही रखना चाहते। हरिजन के बारे मे भी कह दिया है कि काका नरहरि किशोरलाल आदि जो कर सकते हो करें नहीं तो इस बन्द कर द। अगर मैं साथ रहू तो उन्हें सभाल सकता हू परन्तु वह मान आयेंगे ऐसा नही लगता। मैं या सुशीला साथ रहू तो रोज रोज की घटनाआ तथा उनके विचारो की खबर भी बाहर के स्नही मित्रा को भेजी जा सकती है। आप इस पर विचार कर इस बार म बापू को लिखना चाहे तो लिखें। आपकी ओर स हमम स किसी को साथ रखन की माग की जाय तो सभव है आप लोगो के सतोष के लिए रख लें।

बाकी यहा की समस्या तो बडी जटिल है। लोग इतने दब गय हैं कि आज भी उनकी पत्नी या लडकी को (मुसलमान) शाम के वक्त ले जाते हैं और सवेरे वापस छोड जाते है। एस लोगा को अपने एसे गावो म वापस जाकर रहने की सलाह भला कस दी जा सकती है? बापू एक अच्छे हिन्दू और एक अच्छे मुसलमान स ऐसी अपेक्षा करते हैं कि वे अपने जिम्मेवाले गाव के हिन्दुआ की प्राणपण से सेवा और रक्षा करेंगे। परन्तु बागचीजी यही स्पेशल रिलीफ अफसर हैं। उस दिन खुद उन्होंने ही कहा अच्छे मुसलमान मुझे तो अभी तक सिर्फ दो ही मिल है बाकी तो जो लाग आज शान्ति समितिया की बात करते है व खुद खूनी या लुटेरे हैं। लूटपाट म गाव के लगभग सभी लोग शामिल रह वही पीछे इस रूप म आयें तो उसस क्या लाभ? उस वक्त ता इन लोगो का सिलसिला ही यह था कि पहले एक टोली आकर मुस्लिम लीग के लिए चन्दा वसूल करें फिर एक के बाद एक दो तीन टोलिया आकर वादा करें कि इतनी रकम द दो तो तुम्हे बचा लिया जायगा। इसके बाद धन सम्पत्ति का पता लगाकर रुपया पसा सब ले लिया जाय फिर उन्हे मुसलमान बना घर के कपडे लत्ते बतन भाडे सब लूटकर घरो मे आग लगा दें। इस तरह सभी गाव राख के ढेर हुए पडे हैं। इसलिए लाग कहते है कि जिन्होने इतने वचन दिये रुपये पसे लिये और फिर एसी क्रूरता दिखाई उनके ऊपर विश्वास कसे किया जा सकता है? वस्तुत तब तक लोगो म विश्वास पदा करना असम्भव मालूम पडता है जब तक कि इन लोगो पर किसी प्रकार की कोई रुकावट नही हो। खुने आम घूमते फिरते हैं रुन्नास और शान्ति समितिया मे प्रवेश पाते हैं और पुलिसवाला से शिकायत करो तो जवाब मिलता है कि हम

क्या करें, इन कामा के लिए काफी आदमी हमारे पास नही हैं।' यह भी सुना है कि किसी किसी ने तो ऐसा रुख अपनाया है कि फिलहाल खामोश होकर बैठ जाओ जिससे सभी तरह के आश्वासन देती पुलिस और फौज फिर से न जाय। गाधी आखिर कब तक यहा रहेगा ? उसके बाद सब ठीक कर लेंगे। कितनों हो जगह उन्होंने अपने ठिकाने बना लिये हैं। कहते हैं कि आज नही तो कल तो हिंदुओं का नाश करके ही रहेंगे।

कल हम एक गाव मे गये। वहा सरेआम एक स्त्री को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था। वह मर गई तो उसके शव को जलाने न देकर दफनाया गया। उसमे लोग गाव मे अमनुस्सलाम काम करती हैं। वहा किसी को घर मे राम-नाम लेने की भी हिम्मत नही। लोगो के साथ मीठी मीठी बातें करके जाने के बाद एक आदमी छुरे से हिंदुओ को धमकी देकर कल ही गया था। वहा अभी तक स्त्रियो को रात मे उठाकर ले जाते हैं और दिन मे वापस छोड जाते हैं। डर के मारे कोई बोलने की हिम्मत नही करता। परसो उनकी टोली ने हमारे आदमियो से शिकायत की। फिर क्या था, उन्हे खूब धमकाया गया। कल वहा गये तो गाव की फिजा ही नयी मिली।

आपका
प्यारेलाल

(मूल गुजराती से)

१६

कलकत्ता
१८ नवम्बर १९४६

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारा पत्र मिला सरदारजी के नाम तुम्हारे पत्र की नकल भी मिल गई। सुशीलाबहन की भी एक चिट्ठी आई थी। ठक्कर बापा के पास से अनेक चिट्ठिया आ चुकी हैं। सबमे कमोबेश एक ही बात है और पढकर हृदय मे टीस उठती है। इसके विपरीत मैं मार्निंग न्यूज मे प्रकाशित नफीजुद्दीन अहमद के वक्तव्य की कटिंग भेज रहा हू। यह आदमी पार्लमेंटरी सेक्रेटरी है और दूसरा ही राग अलाप रहा है। जब एक ही प्रसग पर दो दल अलग अलग बयान देने लगें तो इसमे तो यही प्रकट होता है कि हम घटित घटनाओ के बारे मे भी एकमत नही हो सकते। हम कहा से कहा आ पहुचे हैं।

इस समय बिहार मे सचमुच शाति है। पर कहना पडेगा कि हम नोआखाली

म जिस स्थिति का सामना करना पड रहा है ठीक वैसी ही स्थिति का सामना बिहार क मुसलमान कर रहे हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि जहा हम बिहार म साधारण स्थिति वापस लाने म तत्परता और सकल्प स काम ले रहे हैं, वहा बगाल की सरकार उतनी स्फूर्ति स काम लेती दिखाई नही दे रही है। या तो वहा की सरकार कुछ करना नही चाहती या कर नही सकती या जो-कुछ करती है उसम लगन का अभाव है।

दिल्ली स एक प्रेस नोट प्रकाशित हुआ है कि सुहरावर्दी ने बापू से भेंट करके और उनकी सदभावना प्राप्त करने की कोशिश करके मुस्लिम लीग हाइ कमाण्ड को बेहद खफा कर दिया है। पता नही इसम सत्य का अश कितना है। पर अब एक बात ता स्पष्ट हो ही गई है कि यह प्रश्न साम्प्रदायिक नही रहा है बल्कि खालिस राजनतिक प्रश्न बनकर सामन आ खडा हुआ है जिसका निपटारा चोटी के आदमी ही कर पायेंगे। अभी वह समय आया है या नही मैं नही कह सकता। पर यह बात निर्विवाद है कि इस प्रश्न का निपटारा जिलो म नहीं किया जा सकता।

एक और कटिंग रख रहा हू। यह दक्षिण वजीरिस्तान म वाइसराय के दौरे का वणन है। जो उदगार व्यक्त किये गए उनस यही पता लगता है कि या तो कबाइलियो को सिखा पढाकर वसा कहलाया गया था या यदि वे उन लोगो के दिल स निकले उदगार हैं तो सडाध बहुत गहराई तक पहुच चुकी है। इसके साथ ही अम्बेडकर के वक्तव्य की कटिंग भी भेज रहा हू। यह सब देखकर कलेजा काप उठता है क्योकि इससे खड खड होने का सकेत मिलता है।

बापू के दल को कुछ गावो म बखेर देने का विचार बडा उत्तम है। पर हम कास्टीटयूएट असम्बली के महत्त्व की ओर स भी पराडमुख नहा रहना चाहिए। कुछ ऐसी समस्याए ह जिनका हल तलाश करन म दिल्ली मे बापू की उपस्थिति की जरूरत है। पता नही इस ओर बापू का ध्यान है या नही, पर मरी समझ म तो कास्टीटयूएट असेम्बलीवाला प्रश्न हमार इतिहास म एक बहुत ही महत्त्वपूण स्थान रखता है।

बापू के स्वास्थ्य को लेकर बेचन होने लगता हू। मुझे पूरी खबर देते रहा करो।

बापू ने कम्बला आदि के लिए कहा था। वे भेजे जा रहे है। यदि राहत-काम के लिए अन्य किसी पदाथ की आवश्यकता हो तो लिख भेजना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१७

बिहारवासियों के नाम बापू की अपील

मेरे सपनों के बिहार ने उन सपनों को झुठला दिया है। मैं एक सवाद पर निर्भर नहीं रह रहा हूँ जो विद्वेष भावना द्वारा दिये गए हों अथवा अतिशयोक्ति पूर्ण हों। बिहार में जो दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटित हो रही हैं उनकी वास्तविकता केन्द्रीय मुख्य मंत्री और उनके सहयोगियों की लम्बी उपस्थिति से भली भांति प्रभावित होती है। यह कहना आसान है कि बगाल में मुस्लिम लीगी सरकार के अन्तर्गत वहां की स्थिति बिहार-जैसी ही खराब है बल्कि उससे भी गई बीती है, या यह भी कहा जा सकता है कि बिहार में जो-कुछ हो रहा है वह बगाल की दुर्घटनाओं का परिणाम मात्र है। किसी एक पार्टी के बुरे कारनामे किसी अन्य पार्टी के वैसे ही बुरे कारनामों को न्यायोचित सिद्ध नहीं कर सकते विशेषकर जब उस पार्टी को अपनी लम्बी राजनैतिक उपलब्धियों पर गर्व हो। मुझे यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि बगाल की दुःखद घटनाओं के विराट स्वरूप का सम्यक ज्ञान नहीं हो सका है। मुझे बिहार बुला रहा है पर मैं नोआखाली के दौरे में विघ्न नहीं डाल सकता हूँ। इसके अलावा काग्रेसी लोग मुस्लिम लीग को जिस सम्प्रदायवाद का दोषी ठहरा रहे हैं, क्या उसका जवाब आवेग द्वारा व्यक्त सम्प्रदायवाद है? क्या बिहार की १४ प्रतिशत मुस्लिम जनता को बलपूर्वक कुचलने की अभिलाषा एक स्वाभाविक स्थिति है? मुझे यह बताए जाने की जरूरत नहीं कि मुझे हजार बिहारियों के पापों के लिए समूचे बिहार को नहीं धिक्कारना चाहिए। क्या बिहार को अकेले ब्रजकिशोर प्रसाद अथवा अकेले राजेन्द्रप्रसाद को लेकर गर्व नहीं है? मुझे भय है कि यदि बिहार में यह दुराचरण जारी रहा तो सारा ससार भारत की सारी हिन्दू जाति को धिक्कारेगा। ससार का यही नियम है, इसे बुरा नहीं बताया जा सकता। बिहार के हिन्दुओं के कारनामों से कायदेआजम जिन्ना के इस ताने की पुष्टि होगी कि काग्रेस में इक्का-दुक्का मुसलमान सिख, ईसाई पारसी आदि भले ही हों है वह वास्तव में एक हिन्दू सस्था। बिहार के हिन्दुओं की मर्यादा का यह तकाजा है कि वे अल्पसंख्यक मुसलमानों को अपना भाई समझें और उन्हें वही सरक्षण प्रदान करें, जो वहां की बहुसंख्यक हिन्दू जाति को उपलब्ध है। बिहार ने काग्रेस की प्रतिष्ठा को गगन चुम्बी बनाया है अब वह उसे रसातल पहुंचाने में न लगे।

मुझे अपनी अहिंसा पर लज्जित होने की कोई जरूरत नहीं। मैं बंगाल यह देखने के लिए गया हूं कि ठीक मौके पर मेरी अहिंसा किस हद तक कार्यरूप में व्यक्त हो सकती है। मैं इस पत्र में आपको अहिंसा का बखान करने नहीं बैठा हूं। पर मैं आपको यह तो बता ही दूं कि आप लोगों ने जो कुछ किया है वह कभी वीरता में शुमार नहीं किया जा सकता। हजारों आदमी कुछ सौ स्त्री पुरुषों को मौत के घाट उतारें यह वीरता नहीं है, बुजदिली है बल्कि उससे भी कुछ बदतर है। यह किसी भी धर्म की राष्ट्रीयता के लिए अशोभनीय है। यदि आप बराबर की चोट करके संतुष्ट रहते तो कोई आपको दोषी नहीं ठहराता पर आपने तो अपने-आपको पतन के गर्त में गिरा दिया और अपने साथ सारे भारत को भी लपेट लिया।

आपको पं० जवाहरलालजी निश्तर साहब तथा डॉ० राजेन्द्रप्रसाद से कह देना चाहिए कि वे अपनी सेना वापस बुला लें और भारत के मामलों की देखभाल करें। ऐसा वे तभी कर सकते हैं जब आप अपने कुकृत्यों पर पश्चात्ताप करें और उन्हें इस बात का भरोसा दें कि मुसलमान आपके भाई बहनों की नाईं ही आपकी हिफाजत के हकदार हैं। आप तब तक चैन से न बैठें जब तक सारे शरणार्थी अपने अपने घर वापस न लौट आयें। आपको उनके घर स्वयं बनवाने चाहिए और इस काम में अपने मंत्रियों से हाथ बंटाने को कहना चाहिए। आपके मंत्रियों के आलोचकों ने मुझे जो कुछ बताया है सो आप नहीं जानते।

मैं अपने आपको आप लोगों में से ही एक समझता हूं। आपने मेरे ऊपर प्रेम की जो गागर उडेली उसने मुझे आपके प्रति वफादार रहने को बाध्य कर दिया है। बिहार के हिंदुओं का क्या कर्त्तव्य है इसकी प्रतीति आप लोगों की अपेक्षा मुझे अधिक है। इसलिए जब तक मैं यथेष्ट प्रायश्चित्त न कर लूं मुझे चैन नहीं मिलेगा। मैं जब से कलकत्ता आया हूं मैंने अपने स्वास्थ्य की खातिर कम से-कम आहार से संतुष्ट रहना जारी रखा है। जब से बिहार की दुर्घटना की मुझे जानकारी हुई है तबसे मेरे प्रायश्चित्त ने यही रूप धारण कर रखा है। यदि पथ भ्रष्ट बिहारियों ने इतिहास का नया पन्ना नहीं पलटा तो हो सकता है कि यह स्वल्प आहार पूर्ण उपवास का रूप धारण कर ले।

बिहार मेरे इस काम को विशुद्ध प्रायश्चित्त का एक पावन कर्त्तव्य न मानकर किसी अन्य रूप में ग्रहण करेगा इसकी मुझे बिलकुल आशंका नहीं है।

किसी मित्र को मेरी सहायता करने अथवा मेरे प्रति सहानुभूति दिखाने के लिए दौड़े आने की जरूरत नहीं है। मैं इस समय भी अनुरक्त मित्रों से घिरा हुआ हूं। किसी के लिए मेरी नकल करना भी वांछनीय नहीं होगा। किसी प्रकार के

सहानुभूति-सूचक उपवास या अनशन की कतई जरूरत नहीं है। एसा करने से उलटे हानि ही होगी। मेरे इस प्रायश्चित्त का उद्देश्य उन मित्रों के अंतःकरण को जाग्रत करना नहीं है जो मुझे जानते हैं और जिनकी दृष्टि में मेरी साख है। किसी को मेरे लिए चिंतातुर होने की आवश्यकता नहीं, अन्य सबकी भांति मैं भी भगवान् की शरण में हूं। जब तक भगवान की इच्छा रहेगी कि मैं इस अस्थायी आश्रय-स्थल के माध्यम से सेवा करता रहूं तब तक मेरा बाल भी बांका नहीं होगा।

आपका सेवक
मोहनदास गांधी

१८

तार

२०.११.४६

प्यारेलाल,
नोआखाली रैसक्यू रिहैबिलिटेशन कमेटी,
चौमुहानी (नोआखाली)

बिहार पूर्णतया शांत। आशा है अब बापू पूरा आहार लेने लगेंगे। चिंता अकारण।

—घनश्यामदास

१९

मारफत खादी प्रतिष्ठान सोदपुर
काजिरखिल
२३.११.४६

प्रिय घनश्यामदासजी

आज हम सब अपने-अपने स्थानों में जा रहे हैं। पत्र का हेतु आपको तकलीफ देना है। सुशीला की तबीयत बहुत कमजोर है। मुझे उसकी चिंता रहती है। उसके लिए शायद कुछ सहूलियत कलकत्ते से करनी पड़ेगी। तो क्या उसके लिए मैं

आपको कष्ट दे सकता हू ?

फिलहाल तो उसके लिए नीचे का सामान अगर आप भिजवा सकें तो खादी प्रतिष्ठान कॉलिज स्क्वेअर के मारफत यहा भेजा जा सकता है

(१) इस्टेन्स सीरप एव बातल।

(२) घी खालिस दो-तीन सेर या मक्खन के तीन चार डब्बे।

(३) खजूर के तीन चार डब्ब।

विनीत,
प्यारलाल

पुनश्च

एक टाइपराइटर मरम्मत के लिए भेज रहा हू। वह ठीक कराकर खादी प्रतिष्ठान के मारफत भेजने की कृपा करवायें। उसका काड टूट गया है।

प्या०

२०

काजिरखिल
२८ ११ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका पत्र और उसके साथ भेजी कटिंग मिल गइ। ऐसा लगता है कि बापू उसका उत्तर देंगे। हो सकता है आपके पास इस बीच उत्तर पहुच भी गया हो।

यहा स्थिति मे किंचित सुधार दिखाई पडता है। यह सब हृदय परिवतन की बदौलत हुआ है सो तो कहना कठिन है पर नीति म परिवतन अवश्य दिखाई देता है। शरणार्थिया क शिविरों म एक मत्री ने जाकर जो कुछ देखा वह उसकी आखें खोलन के लिए काफी था। शम्सुद्दीन छिपा हुआ राजनेता है इसलिए उसके ऊन पर चाहे जो बीती हो उसके चेहरे स कुछ प्रतीत नही हुआ। पर हमीदुद्दीन अहमद पालमेटरी सेक्रेटरी है। वह इतना विह्वल हो उठा कि चण्डीपुर की एक सभा म उसन जो-कुछ कह डाला यदि उसका पूरा ब्योरा प्रकाशित हो जाए, तो उसे शायद अपने पद से हाथ धोना पडे।

उस दिन रामगज म हिन्दुओ और मुसलमानो के प्रतिनिधियो की एक बैठक हुई। मन्त्री (शाहुद्दीन) और कई एक पालमेटरी सेक्रेटरी भी मौजूद थे। मनोरजन चौधरी न मागो की एक फेहरिस्त पेश करते हुए कहा कि उनकी पूर्ति के बाद ही शांति-समितियो का बनना सम्भव हो सकता है। जहा तक दिखाई पडा, सरकार के प्रतिनिधियो की ओर स औचित्यपूर्ण रुख पेश किया गया। बापू न एक दूसरे पर भरोसा और विश्वास करने की सलाह दी और मनोरजन चौधरी स कहा कि वह पहलेवाली स्थिति के आधार पर मसौदा तयार करें। उनका सुझाव मान लिया गया और शांति-समिति का तत्काल गठन हो गया। फार्मूला यह है कि गाव और यूनियन और थाट म क्रमश शांति समितिया बनाई जाए जिनम हिन्दू-मुसलमान प्रतिनिधि बराबर की सख्या म रहे और उनका प्रधान कोई सरकारी अधिकारी रहे। समिति जो जो सिफारिश करेगी सरकार उन्हें कार्यान्वित करने को बाध्य होगी। यदि किसी बात का लेकर आपस म मतभेद हुआ तो जिला मजिस्ट्रेट का फसला अन्तिम माना जायगा। अपराधियो (मैं उन्ह गुण्डा नही कहना चाहता वे पाकिस्तानी भावना से ओत प्रोत सिर्फ साधारण श्रेणी के लोग मात्र हैं) को पकडने, भगाई गई स्त्रियो को वापस लौटाने जिन लोगो का बलात धर्म परिवर्तन कराया गया है उन्ह उनके पुराने धर्म म वापस करने, ध्वस्त घरो की मरम्मत करने वहा स भागे हुए खेतिहरो की, सुपारी और धान की खेती की रक्षा करने जिन्हें क्षति उठानी पडी है उन्हें हर्जाना देने आदि की दिशा म सरकार न यथासम्भव पूरी सहायता देने का वचन दिया है। चण्डीपुर की सार्वजनिक सभा म बापू ने घोषणा की कि यदि मन्त्रियो ने धोखा दिया, तो वह अनशन करेंगे।

कल शरत बाबू ने बापू के साथ वर्तमान स्थिति पर विचार विमर्श किया। कोई खास बात नही हुई।

कल बापू के भोजन की सामग्री म कुछ त्रुटि रहने के कारण उन्हें चण्डीपुर जाते हुए उल्टी हुई और पतली टट्टी आई पर अब उनकी स्थिति ठीक है।

मन्त्रियो के दौरे और एलानो के फलस्वरूप वातावरण म निश्चित रूप से कुछ सुधार हुआ है। हिन्दू मुसलमान एक बार फिर साथ साथ घूमते फिरते और एक दूसरे को सलाम बन्दगी करते दिखाई देने लगे हैं। कल मैंने कोई १८ मील का सफर किया। जहा-कहीं गया मुसलमानो ने आदाब अर्ज किया। यदि उनकी बन्दगी की ओर ध्यान नही गया, तो लोगो ने कहा, साहब, आपसे आदाब अर्ज करते हैं। बापू द्वारा श्रीरामपुर म अपनी वहीं समाधि बना डालने के सकल्प ने ही यह करिश्मा कर दिखाया है।

कल लौटत ममय कुछ बुखार आ गया। डेरे पर आकर देखा १०१ ८ था। रात को वेहोशी सी भी हा गई। पर सान से पहले मैंने कुनन ले ली थी और उम्मीद है कि तबीयत ठीक हो जायेगी। रात के डेढ बजे क बाद से नीद गायब हो गई थी। यह पत्र इमी हालत म घसीट रहा हू।

आज मुझे अपन शाहपुर भटियालपुर शिविर म जाना है। कल हफ्ते का हाट बाजार था इमलिए नाविक ने २०) २०) तलब किय। साधारणतया ३) ४) दिय जाते हैं। दल के अन्य सारे सदस्य अपने अपन शिविरो मे मजे म न्ट हुए है।

सन्भावनाओ के साथ

आपका,
प्यारलाल

२१

काजिरखिल क पत पर
डा० रामगज
२६ ११ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी

अपने पहले एक पत्र म मैंने कुछ अतिरिक्त खाद्यान्न का बन्दोबस्त करने को लिखा था। अब पुन विचार करन और अधिक जानकारी हासिल करने के बाद मुझे लगा कि आपको लिख दू कि आप इस बारे म परेशान न हो। बापू जिस करो या मरो की भावना की चट्टान पर यह इमारत खडी कर रहे है वसा करना उसके प्रतिकूल जायेगा। जैसा निर्माता वसी इटें।

मैंने आपको इस बारे में बेकार ही कष्ट दिया यह मेरे लिए लज्जा का विषय है। मुझे पहले ही सोचना चाहिए था। एक न्नि के ज्वर की बलिहारी कि मुझे आत्मचिंतन करन का मौका मिला।

अब तो मैं ठीक ही हू।

आपका
प्यारेलाल

२२

२६ ११ ४६

चि० घनश्यामदास

तुम्हे पता है कि मैं श्रीरामपुर म एकाकी रहता हू। साथ म प्रो० निर्मलचद्र और परसुराम हैं। यहा के घरवाले सज्जन हैं, एक ही हिन्दू कुटुम्ब इस देहात म है बाकी सब मुसलमान हैं। सब दूर दूर रहते हैं। यहा सैंकडा देहात ऐसी हैं जो पानी सूकने के बाद एक दूसरा से बाहन सबध कम रखते हैं। नतीजा यह है कि पहले काम हो सकता है इसलिए या भी बदमाश लोग या शरीर से सशक्त साधु लाग ही एक दूसरा के साथ व्यवहार कर सकते हैं ऐसी एक देहात मे पडा हू और यहा स या ऐसी देहात मे दिन व्यतीत करूगा। जब तक यहा के हिन्द मुसलमान हार्दिक मत्री म नही रह तब तक ता यही रहने का इरादा है। भगवान ही मन स्थिर रख सकता है। आज तो दिल्ली छूटा सेवाग्राम छूटा, उरली पचगनी छूटा इच्छा यहा 'मरना या करना' है इसमे मरी अहिंसा की परीक्षा है परीक्षा म उत्तीर्ण होने के लिये आया हू। मुझे मिलना चाहीय तो यहा आ सकते हैं तो आना होगा। मैं आवश्यकता महसूस नही करता हू किसी को पूछने के लिए भेजना है या हाथ स डाक भेजना है तो भेजो।

कन्स्टीटयूण्ट असेम्बली म मैं नही जाऊगा। आवश्यकता भी कम है। जवाहर लाल सरदार राजेन बाबू राजाजी मौलाना सब या एक आ सकते हैं या पाचो या कृपलानी।

उनको पैगाम भेजो। यदि मिलीटरी मदद म ही क० असम्बली बैठ सकती है तो नही बैठाना अच्छा होगा। शाति से बठ सके तो जितने सूबे शरीक होवें उनके ही लिये कानून बन सकते हैं। मिलिटरी पोलीस का भविष्य म क्या होगा, सो देखना होगा। मुस्लीम सूबे क्या करेंगे, जिन सूबो मे मुस्लिम सख्या कम है, वहा क्या करना सो भी देखना होगा। इग्रेजी सरकार क्या करेगी राजा लाग क्या करेंगे यह सब देखना होगा—मेरा ख्याल है कि तब १६ अप्रल का स्टेटपेपर शायद बदलना होगा। काम मेरी निगाह म पचीदा है अगर हम सब काम स्वतत्र रूप स करना चाहे ता मैंने तो मेरे ख्यालो का दिग्दर्शन करवाया है।

यह भी मित्र वग समज लें कि यहा जो मैं कर रहा हू वह काग्रेस के नाम म मन म भी नही है। निजी अहिंसा दृष्टि से है। मेरे काय का विरोध हर कोई आदमी जाहर म भी कर सकता है। उनका अधिकार है धम भी हो सकता है।

इसलिए जो-कुछ किसी का कहना करना है, निडर रूप से कहा जाय किया जाय। मुझे किसी बात म सावधान करना है तो किया जाय।

इसकी नकल सरदार का भेजो और उपरोक्त और अन्य मित्रा को बतावें या इतनी नक्ल करवाकर उन ५ मित्रो को भेजो।

तुमारे कहना है सा कहा।

मुझको लिखना पडे सा सीधा लिखो। प्या० सुशीला वि० सब अलग देहाता म हैं। प्या० कल से बीमार है। कुशल हागे।

बापू के आशीर्वाद

२३

खादी प्रतिष्ठान,
सोदपुर २४ परगना
१ दिसम्बर १९४६

प्रिय बिडलाजी,

गाधीजी न साथवाली चिट्ठी आपके लिए यह कहलाकर भेजी है कि इसे श्री राजगोपालाचारी को दिल्ली म किसी पत्र वाहक क हाथ भेज दिया जाये।

चिट्ठी कल रात का गाधीजी के श्रीरामपुर (नाआखाली) शिविर से आई थी। उस एक पत्र वाहक लाया था।

भवदीय
क्षितीशचद्र दासगुप्त

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला पाक
१९ स्टोर रोड,
बालीगज कलकत्ता

२४

२६ ११ ४६

चि० घनश्यामदास,

तुम्हारा खत मिला। कल एक खत राजाजी के लिये तुमको भेजा उस किसी व्यक्ति के साथ भेजना है। पढ़ने पर पता चलेगा।

मैं क्या कर रहा हू जानता नही हू। अगर अहिंसा मरे मे है तो मैं दूसरा कर ही नही सकता था, देखें भगवान क्या कराता है।

बापु के आशीर्वाद

२५

शिविर काजिरखिल
डा० रामगज
३०-११-४६

प्रिय घनश्यामदासजी,

आपका नोट मिल गया, धन्यवाद। जब जब कभी किसी चीज की जरूरत होगी मैं आपके कहे मुताबिक करूगा।

यहा सब कुछ मन्थर गति से चल रहा है। शाति समिति बनाने के काय म एक शत यह रखी गई थी कि उसके मुसलमान सदस्य हिंदुओ को ग्राह्य होने चाहिए। ऐसे मुसलमान ढूढ निकालना कठिन हो रहा है। शाहपुर के इलाके म प्राय हर कोई प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपराधी और उपद्रवी रह चुका है। मैं यह देखकर काप उठा कि बच्चे तक इस विष से नही बच पाये हैं। उनकी शिक्षा-दीक्षा तरुण नाजियो की प्रणाली जसी हुई है। इन्होने एक ही ढग का असत्य भाषण कठस्थ कर रखा है। ये बच्चे जब सयाने होंगे तो किस ढग के नागरिक बनेंगे ? बाजार जले पडे हैं, घर उजडे पडे हैं और राख के ढेर मात्र हैं चारो ओर अपवित्र मदिर दिखाई दे रहे हैं और अभी मानव रक्त से हाथ सने हुए हैं, तिस पर भी शिक्षित और सम्भ्रात लोग यह कहते नहीं अघाते कि यहा कुछ नहीं हुआ गुलाम सरवर ने शाति बनाये रखी थी उसे छोड दिया जायगा और यहा वापस लाया

जायेगा तभी यहा शाति और भरोसे की भावना पदा हो सकेगी। इस वातावरण म मानव स्वभाव पर से विश्वास प्राय उठ जाता है।

पर इन सारी बातो के बावजूद इस आतकग्रस्त अचल म जीवन शनै शन स्वाभाविक गति स वापस लौट रहा है। कारपाडा म स्त्रिया को चूडिया पहनकर और सिन्दूर लगाकर बाहर निकलने का साहस नही होता था। अब वे ५० ६० एकत्र होकर एक ध्वस्त मदिर म पूजा-अचन करती हैं कीतन करती दिखाई देती हैं। हफ्ते की हाट फिर स लगेगी बच्चा की पाठशालाए फिर स खुलेंगी। हा, शिक्षक दुलभ हैं। कल रात कारपाडा और शाहपुर की गश्त लगाकर वापस लौट रहा था तो एक मील दूर पर दास गढिया से पखावज क साथ कीतन की ध्वनि कानो म आई। रात के ६॥ बज होगे। इस परिवतन स मन प्रफुल्लित हुआ। एक पखवाडे पहले स्थिति बिलकुल भिन्न थी तब घरा क भीतर भी रामनाम का जाप खतरे स खाली नही था।

यह सब हवा म उडते हुए तिनको के समान है जिनस हवा का रुख जाना जा सकता है। जसा कि आप कहत हैं आधारभूत समस्या का निदान सर्वोच्च राज नतिक स्तर पर ही हो सकता है। पर बापू जो आधार शिला रखने म लगे हुए है उसके बगर सब कुछ बालू की दीवार की तरह ढह जायेगा।

सदभावनाआ क साथ

आपका,
प्यारलाल

२६

१ १२ ४६

चि० घनश्यामदास

मैंने कस्टीटयुअ ट असम्बली क बारे म एक खानगी निवेदन बनाया है। प्रफुल्ल बाबू देंगे। देखो अपना अभिप्राय सरदार को भेजो।

बापु क आशीर्वाद

शेठ घनश्यामदास बिडला

२७

४ दिसम्बर १९४६

प्रिय प्यारेलाल,

बीच-बीच में लिखते रहा करो जिससे मुझे हालचाल मालूम होते रहें।

यह जानकर खुशी हुई कि वातावरण में सुधार हो रहा है। यह अवश्यम्भावी है। पर आग कब भड़क उठे, यह कोई नहीं जानता। जिन्ना वातावरण में पूरा तनाव बनाये हुए हैं और जब कभी ऐसा लगने लगता है कि स्थिति साधारण रूप धारण कर लेगी वह कोई न-कोई ऐसी बात कह देता है, जिससे लोग बाग फिर भड़क उठते हैं।

स्थिति कैसा रूप धारण करेगी यह कुछ ही दिन बाद प्रकट हो जायेगा। पर मेरी अपनी धारणा तो यही है कि जिन्ना का स्टीटयूएट असेम्बली में भले ही शामिल हो जाय उसका उपद्रव जारी रहेगा। अभी हमारा विपत्ति से निस्तार नहीं हुआ है। वास्तव में हमने स्वराज्य की ओर, या कहो अराजकता की ओर कदम बढ़ाना शुरू ही किया है। इस बीच आर्थिक स्थिति तेजी से बिगड़ रही है। उधर संसार के अन्य देश उत्पादन बढ़ा रहे हैं, और एक हम लोग हैं जो उत्पादन बढ़ाना तो एक ओर उलटे उसमें ह्रास के कारण बन रहे हैं। इसके अनेक कारण हैं, उनमें साम्प्रदायिक स्थिति भी एक कारण है। इस साल हम ९० करोड़ रुपये का खाद्यान्न आयात कर रहे हैं। यह जाहिर है कि इतनी बड़ी धनराशि विदेशों को देने के लिए हमारे पास हर साल मौजूद नहीं रहेगी। पर इतने पर भी खाद्यान्न के उत्पादन में वृद्धि करने की कोई कोशिश नहीं की जा रही है। आज जनता की खपत की अन्य सामग्री के बारे में भी यही बात लागू है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारी नयी सरकार को भी केवल राजनीति की चिन्ता है आर्थिक समस्या की नहीं। सच बात तो यह है कि वह उसकी बात सोचती तक नहीं।

यहाँ सबको बापू के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता हो रही है। आशा है तुम बुखार से पूरी तरह छुट्टी पा गये होगे।

यदि कोई बताने लायक बात हुई, तो तुम्हें लिखूंगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

२८

चंगीर गाव
नोआखाली अचल
५ १२ ४६

आदरणीय घनश्यामदासजी

आपकी पुस्तक 'बापू' अभी अभी पढकर पूरी की। कई साल पहले महादेव भाई ने कहा था कि आप यह पुस्तक मेरे पास भिजवायें और आपने भेजी थी। तब मैं अपने शिक्षण म इतनी व्यस्त थी कि इसे पढ नही पाई और अलमारी मे रख छोडी। उसके बाद तो दो साल जल मे बीत गय। इस बार इसे साथ ले आई थी। मलेरिया के कारण बिस्तर पकड लिया और तभी पूरी-की पूरी पुस्तक पढ जाने का अवसर मिला।

मैं आश्चयचकित हू कि बापू पर आपका अध्ययन कितना गहरा और मार्मिक है। मुझे मालूम नही यह पुस्तक कितनी लोकप्रिय हुई। लकिन मैं मानती हू कि यह पुस्तक बापू को मनुष्य क नाते समझनेवाले हर इच्छुक पाठक के लिए अनिवाय है। यदि इसका अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओ म अभी होना बाकी हो तो हो ही जाना चाहिए। भारतीय भाषाओ म ही क्या अग्रेजी म भी होना चाहिए। बापू पर यह पुस्तक उच्च दर्जे की है।

बापू मेरे पडाव स ३ मील दूर हैं। बुखार म घिर जाने से पहले मैं ३० ४० बार बापू के पास हो आई हू। वे ऊपर से कमजोर लगते हैं। उनके दल के और सहयोगी साथ मे न रखने के कारण वे असुविधा भी भुगत रहे हैं। लकिन उनक इस कठोर व्रत के कारण दूसरो को बहुत सबक मिला है। हम सब सीख रहे हैं। मैं उनके इस तप का मम सबको समझाती हू—उतना ही तो कह पाती हू जितनी मुझम बुद्धि है।

पिछले दो रोज से बुखार नही है। इस कारण आज उन्हे प्रणाम करने जाऊगी। परशुरामजी उनके लिए अति उपयोगी साबित हो रहे है—इसी तरह निर्मल बाबू भी।

यहा की स्थिति एक शाश्वत समस्या है।

आप कुशल हागे।

सुशीला के प्रणाम

२९

६ १२ ४६

चि० घनश्यामदास,

तुम्हारा २ दिसम्बर का खत आज मिला। राजेन्द्र बाबू का भी।

तुम्हारा लिखना उचित है लेकिन अनुचित करणी का विरोध सच्चे दिल से नहीं है ऐसा मुझे लगता है। मेरा कहना इतना है कि जंगली काम का जवाब जंगली काम से देने से बाजी बिगड़ती है। हिंसा का जवाब भले प्रतिहिंसा हो लेकिन हिंसा तो जंगली होती है। जो विहार में हुआ सो जंगली और बिन असर ऐसी ही गढ़मुक्तेसर की—इन बातों में महाभारत के और भागवत के दृष्टांत टेढ़े मार्ग पर ले जा सकते हैं। अर्थात हमारा यानी प्रजा का जीवन विचारमय और पद्धतिसर होना चाहिये। मेरा प्रयत्न इस दिशा में है। परिणाम ईश्वर के हाथों में। राजेन्द्र बाबू को अलग नहीं लिखता हू। मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता न करें। मैं देखभाल करता हू।

बापु के आशीर्वाद

३०

१३ दिसम्बर, १९४६

प्रिय प्यारेलाल,

तुम्हारे पत्रों में जो खबरें रहती हैं उनका बापू के पत्रों में अभाव रहता है। इसलिए बीच बीच में लिखते रहा करो।

यहा जितनी तेजी से एक के बाद एक घटनाएं हो रही हैं देखते ही बनता है। मेरा कोई पत्र पहुंचने के पहले ही तुम्हें नये समाचार मिल जायेंगे।

मेरी अब भी यही धारणा है कि समस्या का हल सम्भव है, पर अभी हम इस प्रश्न का निबटारा करने में काम-काजी ढंग से नहीं जुटे हैं। जिन्ना में उच्च आदर्शों को समझ पानेवाले मानस की कमी है। वह सौन्दर्य के मन्दिर हैं। परन्तु सिरे का बुद्धिमान है और षड्यन्त्र रचने की कला में पारंगत है। मैंने आशा नहीं गवाई है। कुछ-न-कुछ होकर रहेगा। कब सो मैं नहीं जानता। जो भी हो हमें समस्या को

शीपस्थ स्थान पर रहकर सुलझाना है। इसमे सदह नही कि बापू के प्रयत्नो का दूरगामी परिणाम होगा पर फिलहाल उनका कोई परिणाम नही निकलेगा। वह कुछ ऐसा काम कर रहे हैं, जिसकी सराहना बहुत दिनो बाद की जायगी।

आशा है तुम अब पहले से अच्छे होगे।

तुम्हारा
घनश्यामदास

३१

काजिरखिल शिविर के पते पर
डा० रामगज
(जि० नोआखाली)
भनियालपुर (बेपारीबेड)
२५ १२ ४६

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १३ तारीख का पत्र कल शाम को मिला। मैंने वह बापू को पढकर सुनाया। सुशीला के नाम का पत्र उसके पास भेज दिया है।

मैं यथास्वभाव काजिरखिल श्रीरामपुर और चगीरगाव की गश्त लगाकर रात के ११ बजे वापस लौटा। रास्ते मे पाव के एक अगूठे मे चोट आ गई। यह पत्र उसी बलात विश्राम का नतीजा है। मैंने कल शाम को बलियालपुर शाहपुर और सोशालिया के लोगो की एक बैठक बुलाई है। कल सुबह ८॥ बजे श्रीरामपुर के लिए फिर निकल पडना है। इसलिए रात होते होते मुझे अपना अगूठा ठीक कर ही लेना होगा। उस पर शीतल जल से भीगा कपडा रख छोडा है।

यहा सब-कुछ मथर गति से चल रहा है। बापू का मूल सुझाव था कि प्रत्येक गाव मे एक भद्र हिन्दू और एक शरीफ मुसलमान छाटे जाये। उन्हे वापस लौटने वाले शरणार्थियो की जान और माल के लिए उत्तरदायी ठहराया जाए और उनसे यह भी वचन ले लिया जाए कि ऐसे शरणार्थियो की धार्मिक भावनाओ को ठेस नही पहुचेगी और उनके मान-सम्मान का बट्टा नही लगेगा। ऐसे शरीफ मुसलमान की शराफत की गारण्टी स्थानीय मुस्लिम लीग देगी। मुस्लिम लीग वैसी गारण्टी

देने में या तो असमर्थ रही, या उसने जान-बूझकर नही दी। निवर्तमान मंत्रि मंडल ने यूनियन और थाना शांति समितियो की योजना पेश की, जिसमें हिंदू-मुसलमान बराबर की संख्या में रहें जो मुसलमान रहें वे हिंदुओ की पसन्द के हों। समिति को पुनर्वास के हेतु विभिन्न सम्प्रदायो में सुरक्षा की भावना बढ़ाने-सम्बंधी सुझाव पेश करने का अधिकार दिया गया जिससे शरणार्थी वापस लौट सकें। समिति से कहा गया कि वह आततायियो की सूची पेश करे जिससे उन्हें गिरफ्तार किया जा सके साथ ही उसे ऐसे सुझावो को कार्यान्वित करने का भी अधिकार दिया गया। शम्सुद्दीन साहब (मंत्री) हमीदुद्दीन (पार्लमेंटरी सेक्रेटरी) तथा [illegible] लीगियो ने रामगढ में ऐसी प्रथम समिति की नियुक्ति की घोषणा की थी। उस अवसर पर बापू मौजूद थे। बाद में उन्होंने चण्डीपुर में एलान किया कि यदि उन लोगो ने अपना वचन भंग किया तो वे उन्हें जीता नही पायेंगे। चूंकि मंत्री शांति समितिवाली योजना को कार्यान्वित करने के निमित्त चार दिन के भीतर लौटनेवाले थे। इस बीच हमीदुद्दीन इसी उद्देश्य को सफल करने के लिए यही [illegible] रहनेवाले थे। पर दोनो दूसरे ही दिन वहा से रवाना हो गये और अभी तक [illegible] नही लौटे हैं। उनके लौटने के लक्षण भी दिखाई नहीं देते है। सुहरावर्दी [illegible] से हाल मे जो खत आया है उससे रही-सही उम्मीदो पर पानी फिर गया है।

छुटपुट वारदातें अब भी होती रहती है पर वे साम्प्रदायिक हैं अथवा नहीं, यह कहना मुश्किल है। पर आततायी अभी तक खुले घूम रहे हैं और जान [illegible] उन्हें पकड़ने का सरकार का इरादा नही है। इससे उनकी हिम्मत बढ़ गई है, और उसी अनुपात में लोगो मे भय छाया हुआ है।

मैंने यह पत्र २५ दिसम्बर को लिखना आरम्भ किया था आज [illegible] लगाया है क्योंकि मैं एक ऐसे गुर्गे की वापसी का इंतजार कर रहा हू, [illegible] के दिनो में लीग के लिए चन्दा इकट्ठा करने के बहाने लोगो से रुपया [illegible] अब बचा खुचा वापस लौटाने की बात है। यहा से छुट्टी पाते ही मैं [illegible] लिए चल पडूंगा। वहा मैं बापू को कुछ स्थानीय समस्याओ के [illegible]।

यहा मैं दिन रात इसी प्रयत्न में लगा हुआ हू कि किसी [illegible] समितिया बना सकू। अभी तक भटियालपुर गाव में सफलता मिली है। [illegible] में मोमिनपुर गाव आया था। उसने प्रस्ताव तो पास कर दिया, [illegible] उस पर अमल नही हुआ है। पुरुषोत्तमपुर के निवासियो ने [illegible] दिया है। वे मेरे सुपुर्द एक लिखित प्रतिज्ञा पत्र करेंगे। [illegible] के दिनो में ऐंठे गये रुपये का बचा खुचा तथा कुछ लूटी गई [illegible] का वचन दिया है। गत रात मैंने एक अन्य उपद्रव-स्थान—[illegible]

बुलवाये। कल सुबह ८ बजे उनसे फिर मिलने की बात है। पर चारों ओर से शिकायतें आ रही हैं और जब तक जाने बूझे आततायियों को नहीं पकड़ा जायेगा, कुछ नहीं हो सकेगा। परन्तु अधिकारियों ने इस दिशा में अभी तक कुछ नहीं किया है। जिन लोगों ने दंगों का आयोजन किया था वे अब शांति स्थापना के मार्ग में रोड़े अटका रहे हैं और अपने प्रधान अगुआ गुलाम सरवर की रिहाई की माग कर रहे हैं। शाहपुर गाव में तो उन्होंने मेरा सारा किया-कराया मटियामेट कर दिया।

इन परिस्थितियों की ओर ध्यान देता हू, तो यह नहीं समझ पाता हू कि बापू अपने मिशन में किस रूप में सफल होंगे। मुझे लगता है कि उन्हें कोई अज्ञात शक्ति जबरदस्ती उस दिशा की ओर खदेड़ रही है, जहां पहुचने पर उनके पास केवल एक ही चारा रह जायेगा—घृणा और अविवेक के मुकाबले में अहिंसा का अमोघ अस्त्र। हा यदि ऊपर से कोई हिदायत आये तो बात दूसरी है। नहीं तो संकट मुह बाये खड़ा है। यह सारा काम वर्षा ऋतु के आरम्भ होने के पहले-पहले समाप्त हो जाना चाहिए, नहीं तो हमारी विपत्तियों का वारापार नहीं रहेगा। जिन कुछेक स्थानों पर हिन्दू शरणार्थी वापस लौटे हैं वहा भी उन्हें त्रास दिया जा रहा है और उनकी आर्थिक अवस्था शोचनीय है। उनका बहिष्कार किया जा रहा है वे अपनी जमीनें जुतवाने के लिए मजदूर तक नहीं पा सकते। उनका कारोबार चौपट हो गया है क्योंकि वातावरण में अरक्षा व्याप्त है। एक विपदग्रस्त बोला मेरा अंतिम पुत्र ००४०० रुपये मासिक कमाता था। आज उसके पास खाने तक को नहीं है। कुछ-न-कुछ ऊपर से करना अत्यावश्यक है पर वैसे कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। हम तो हेनरी न्यूमन के साथ मिलकर प्रार्थना भर कर सकते हैं

रात्रि निबिड है, मैं हू घर से दूर
पथ प्रदर्शन करो हे भगवान।

सद्भावनाओं के साथ

आपका,
प्यारेलाल

३२

आसाम के बारे में गांधीजी के साथ हुई चर्चा की नोंध

१५ दिसम्बर, १९४६ को सुबह आसाम से दो मित्र श्री विजयचंद्र भगवती तथा श्री महेन्द्रमोहन चौधरी, गांधीजी से मिलने आये। उन्हें श्री बारदोलई ने भेजा था। उन्होंने जानना चाहा कि ग्रुपिंग के सम्बन्ध में आसाम को क्या करना चाहिए। यह आसाम के लिए जीवन और मृत्यु का प्रश्न है। वे बंगाल के साथ ग्रुप में शामिल नहीं होना चाहते। कुछ लोगों ने उन्हें बताया है कि यदि वे अलग अलग रहें तो इस प्रकार लीग के हाथ मजबूत करेंगे। शेष भारत प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रहा हो और आसाम उसके मार्ग में बाधास्वरूप बना रहे, यह कदापि नहीं हो सकता। उन्होंने कार्यकारिणी से पूछा पर वहां से कोई असंदिग्ध पथ प्रदर्शन प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए वे गांधीजी से सलाह लेने आये हैं।

उत्तर में गांधीजी ने कहा, मुझे इस मामले में निर्णय करने में क्षण भर से अधिक समय की जरूरत नहीं है क्योंकि इस बारे में मेरा निश्चित मत है। मेरा हाड़ मांस सब कुछ कांग्रेसी है और कांग्रेस की वर्तमान रूपरेखा मेरे ही द्वारा निश्चित की गई है। मैंने बारदोलई से कह रखा है कि यदि उन्हें कांग्रेस कार्यकारिणी की ओर से कोई निश्चित पथ प्रदर्शन न मिले तो आसाम को ग्रुपिंग में शामिल नहीं होना चाहिए। आसाम अपना विरोध प्रकट करेगा, और कांस्टीट्यूएण्ट असेम्बली से निकल आयेगा। यह एक प्रकार से कांग्रेस के ही हित में उसके विरुद्ध किया गया सत्याग्रह होगा।

गलत या सही कांग्रेस ने यह फैसला किया है कि वह फेडरल कोर्ट के निर्णय को मान्यता प्रदान करेगी। शतरंज के मुहरे कांग्रेस के बिलकुल खिलाफ जा रहे हैं। जहां तक मैं देख सकता हूं फेडरल कोर्ट का निर्णय ग्रुपिंग के कांग्रेस द्वारा लगाये गये अर्थ के खिलाफ जायेगा। इसका सीधा-सादा कारण यह है कि कैबिनेट को कानूनी सलाह प्राप्त है जो उसके निर्णय को बरकरार रखती है। यह फेडरल कोर्ट एकपक्षीय विचारकों से भरा हुआ है और उसे अंग्रेजों ने जन्म दिया है। जब कांग्रेस ने एक ढंग का फैसला कर लिया है तो उसे फेडरल कोर्ट के निर्णय को मान्यता प्रदान करनी ही चाहिए निर्णय जो भी हो। यदि आसाम चुप्पी साधे

रहेगा तो उसका अन्त निश्चित है। आसाम की इच्छा के विरुद्ध कोई कुछ करने को बाध्य नहीं कर सकता। आसाम को एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में अपना स्वतंत्र अस्तित्व कायम रखना चाहिए। आज भी वह एक प्रकार से आत्मनिर्भर ही है। अब उसे पूर्णतया आत्मनिर्भर और स्वतंत्र हो जाना चाहिए। आप लोगों में उतना साहस, जीवट और संकल्प है या नहीं, यह मैं नहीं जानता। यह आप स्वयं ही बतायेंगे। पर यदि आप यह फैसला कर सकें तो बहुत बढ़िया बात होगी। जब कान्स्टीट्यूएण्ट असेम्बली के ग्रुपों में बंटने का समय आएगा तो आप कह देंगे, 'मेहरबानी, आसाम अलग होता है।' भारत की स्वतंत्रता के लिए सभी लालायित हैं। प्रत्येक इकाई को अपने बारे में अपना निर्णय स्वयं ले सकना और तदनुसार आचरण करना चाहिए। मैं यह आशा लगाये बैठा हूं कि इस दिशा में आसाम अगुआ रहेगा। सिक्खों के लिए भी यही बात लागू है। पर आप लोगों की स्थिति सिक्खों की स्थिति से कहीं बेहतर है। आप लोग पूरा-का-पूरा प्रान्त हैं, वे लोग एक प्रान्त में एक जाति मात्र हैं। पर मेरा विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी मर्जी के अनुसार आचरण करने का, स्वतंत्र रहने का अधिकार है। मुझे भी ऐसा ही अधिकार है।

प्रश्न : पर हमें बताया गया है कि केवल आसाम की खातिर सारे भारत के शासन विधान का रचना-कार्य रोका नहीं जा सकता। आसाम को रोकना रोक रहने का अधिकार नहीं है।

उत्तर : इसकी कोई जरूरत नहीं है। इसीलिए तो मैं कह रहा हूं कि मैं निर्विष्ट अधिकार में हूं। इतने वर्षों के बाद भी यह सीधा-सादा सत्य लोगों की समझ में क्यों नहीं पैठ रहा है? यदि आसाम निश्चय करेगा तो वह ऐसा करके भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति के मार्ग में बाधक सिद्ध न होकर उलटे इसमें पथ-प्रदर्शन करेगा।

प्रश्न : लीग का कहना है कि कान्स्टीट्यूएण्ट असेम्बली द्वारा रचित शासन विधान असहमत इकाइयों पर लादा नहीं जा सकता। फलतः यदि भारत के कुछ हिस्से उसे स्वीकार नहीं करेंगे तो ब्रिटिश पार्लमेंट भी उसे स्वीकार नहीं करेगी।

इस पर गांधीजी भड़क उठे। ब्रिटिश सरकार होती कौन है? यदि हम यह समझे बैठे रहें कि हमारी स्वतंत्रता हमारे ऊपर इंग्लैंड अथवा अन्य कहीं से आकर टपक पड़ेगी तो यह हमारी भारी भूल है। वह स्वतंत्रता नहीं होगी। हमारा बीज नाश हो जायगा। हम लोग स्वतंत्रता और असहाय निर्भरता के बीच इधर उधर भ्रमित हो रहे हैं। कैबिनेट मिशन की योजना इन दोनों अवस्थाओं के बीच

की स्थिति है। यदि हमारी प्रतिक्रिया ठीक ठीक रही तो हम सवतत्र स्वतन्त्रता के पुष्प को प्रस्फुटित अवस्था म देखेंगे। यदि हमारी प्रतिक्रिया गलत ढग की हुई तो वह प्रस्फुटित पुष्प मुरझाकर रह जायेगा। एक बात ध्यान म रखिय। लीग का रवया नपातुला है यदि लीग अलग थलग रही तो कास्टीटयूएट असेम्बली असहमत दल पर अपना शासन विधान नही लाद सकती। ब्रिटिश सरकार के लिए इस वारे म कुछ कहना नही रह जाता है।

'ब्रिटिश सरकार कास्टीटयूएट असेम्बली के काय-कलाप म अडगा नही लगा सकती। फज कीजिए यदि बहुसख्यक लाग जिनम मुस्लिम लोग भी शामिल हो कोई शासन विधान तयार करें और ब्रिटिश सरकार हस्तक्षेप करने लग तो आप उसकी अवज्ञा कर सकते हैं। अधिकार स्वय आप लोगो के हाथ म है। अभी हाल ही म कुछ-कुछ ऐसा ही आयरलड मे हो चुका है और डिवेलरा अहिंसात्मक प्रणाली अपनाकर लडनेवाला म से कदापि नही है। भारत की अवस्था आयरलड की अवस्था से कही बहतर है। यदि हमम यह बात समझन की सूझ बूझ न रही तो हमे जो सुविधा प्राप्त हुई है उस हम गवा बठेंगे, गवा भी रहे है, ऐसा लगता है।

'यदि आसाम अपनी देख भाल खुद करन लग, तो शेष भारत भी अपनी देख भाल कर सकेगा। यूनियन सरकार क विधान स आपका क्या वास्ता है? आप अपना शासन विधान खुद तयार करें। बस इतना ही काफी है। इस समय भी आपको शासन विधान का आधार उपलब्ध है।

"मैंने १९३६ के शासन विधान को कभी उपक्षा की दृष्टि स नही देखा। वह प्रान्तीय स्वराज्य पर अवस्थित है। यदि लोग साथ दें तो उसम पूण विकास क अणु विद्यमान हैं। पवत के लोग आपके साथ हैं ही। अनक मुसलमान भी आपक साथ हैं। यदि आप औचित्य और न्याय स काम लें तो बचे-खुचे लोग भी आपक साथ हो लेंगे।

"आप लोगो को ईर्ष्या द्वेष और प्रतिद्वद्विता की भावना को भुलाना होगा और अपनी कमजोरियो पर काबू पाना होगा। आसाम म कमजोरिया भी हैं उसम शक्ति-सामर्थ्य भी है। मैं आसाम स परिचित हू।'

मित्रो ने कहा 'आपका आशीर्वाद रहा तो हम काग्रेस से भी निकलकर अपना सघष जारी रखेंगे।

गांधीजी ने बताया कि जब १९३९ म मत्रि मडल भग करन का प्रश्न उठा तो सुभाष बाबू ने प्रस्ताव का विरोध किया था, क्योकि उनकी राय म आसाम का प्रश्न एक साधारण कोटि का प्रश्न है। मैंने बारदोलाई स कहा था कि

सुभाप बाबू की बात म सार है और यद्यपि बहिष्कार की योजना का रचयिता मैं स्वय ही था तथापि मैंने कहा था कि यदि आसाम गद्दी छोडन का प्रस्तुत न हो, तो भले ही न छोडे। पर आसाम ने पद त्याग कर दिया। यह गलती का काम था।

मित्रो ने कहा, मौलाना साहब की राय थी कि आसाम के मामल म दूसर ढग का रवया नही अपनाया जा सकता।

गाधीजी बाल दूसर ढग के रवय का यहा कोई प्रश्न ही नही उठता है। आसाम न विद्रोह का झडा खडा किया पर भद्रता क साथ। पर हम लोगा म लकीर के फकीर बनने की टव कूट कटकर भरी हुई है। हम हरएक बात मे काग्रेस का ओर निगाह जमाय रखते है, और समझते है कि यदि हमने उसका आख मूद कर अनुसरण नही किया तो कुछ न कुछ अवश्य गवा बठेंगे। मैं यह कह चुका हू कि एक प्रात तो क्या एक व्यक्ति भी काग्रेस क खिलाफ विद्राह का आचरण कर सकता है और यदि वह ठीक रास्ते पर चलता साबित हुआ तो उसम काग्रेस का मगल ही होगा अमगल नहा। मैं ऐसा स्वय कर चुका हू। काग्रेस ने अपनी वत-मान मर्यादा इस द्वद्व युद्ध के फलस्वरूप ही प्राप्त की है। मुझे याद पडता है कि १९१८ म अहमदाबाद मे गुजरात काग्रेसकमिया की एक बठक हुइ थी। स्वर्गीय अब्बास तयबजी साहब उसके प्रधान थे। उन दिना सभी भाइया ने मरा बाद के दिना की भाति साथ नही दिया था। स्वर्गीय श्री विट्ठलभाई पटल वहा मौजूद थे। मैंने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया। तब मुझे कोई नही जानता था। एक वधानिक प्रश्न उठा क्या एक प्रातीय बठक काग्रेस के निणय से पहले कोई निणय ले सकती है? मैंन कहा हा अवश्य। एक प्रातीय बठक क्या एक व्यक्ति मात्र सस्था के हित म निणय ले सकता है।' पुराने महारथियो ने विराध के बावजूद प्रस्ताव पारित हा गया। इससे काग्रस क कलकत्ता अधिवेशन म पास होनेवाले थम ही प्रस्ताव का माग साफ हो गया। एक प्रातीय कान्फरेंस द्वारा ऐसा क्राति कारी कदम उठाने की जरूरत थी यह देखकर सारा भारत अवाक रह गया।

हम लागो न काग्रेस से बाहर रहकर एक सत्याग्रह सभा बनाइ थी। उसम हॉर्निमन, सरोजिनी नायडू शकरलाल उमर सोभानी और वल्लभभाई शामिल हुए। मैं अस्वस्थ था। रौलट एक्ट पास हुआ। मैं क्रोध से काप उठा। मैंन सरदार से कहा कि उनकी सहायता के बिना मैं कुछ न कर सकूगा। सरदार तयार हो गय। बाकी कहानी आप लोग जानते ही हैं। वह विद्रोह का आचरण था—पर स्वराज्यविद्राह था। हमने ६ अप्रल स १३ अप्रल तक जश्न मनाया। ये सभी एतिहासिक उदाहरण आपक सामन मौजूद हैं।

मैंने आपको अपने हृदय फौलाद जैसे कठोर बनाने का साहस प्रदान करने का पूरा पूरा समय दिया है। यदि आपने ठीक ग का अविलम्ब आचरण नहीं किया तो आसाम का खात्मा हो जायेगा। बारदोलई से कह दीजिए मैं तनिक भी व्यग्र नहीं हूं। मैंने निणय ले लिया है। आसाम को अपनी आत्मा का बलिदान नहीं करना चाहिए। उस सारे ससार के मुकाबले म अपनी आत्मा की रक्षा करनी चाहिए। नहीं तो मैं समझूगा कि आसाम म पुरुष सिह नहीं बल्कि बास करते हैं। कितनी धृष्टता की बात है कि बगाल आसाम पर किसी प्रकार का प्रभुत्व रखे।

मित्रो न जिज्ञासा की कि क्या वे आसामियों से यह जाकर कह सकते हैं कि काग्रेस के खिलाफ विद्रोह का आचरण करने म उन्हे गाधीजी का आशीर्वाद प्राप्त है।

गाधीजी बोले, 'आशीर्वाद देना तो भगवान का ही काम है। भगवान से जो आशीर्वाद प्राप्त होता है वह एक अक्षय निधि के समान है। लोगो से जाकर कह दीजिए कि यदि स्वय गाधी हमसे अपना विचार बदलने को कहे, तो भी हम उनकी बात सुनी अनसुनी कर देंगे।'

गोपनीय

नकल श्री घनश्यामदास बिडला के पास उनके अवलोकनार्थ भेजी जा रही है। यह १६ दिसम्बर १९४६ के दिन दोपहर के भोजन के समय हमारी वार्ता के सदर्भ मे है।

गोपीनाथ बारदोलई

१९४७ के पत्र

१८ जनवरी, १९४७

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारा २५ दिसम्बर का पत्र मुझे आज ही मिला। इसे डाक मे कब डाला गया सो तो मैं नही जानता, पर यह स्पष्ट है कि इसे तुमने २५ दिसम्बर को लिखना शुरू किया था। पत्र तुमने कब समाप्त किया मैं इसका अनुमान नही लगा पाया।

बापू के दौरे के हालचाल समाचार पत्रो से मालूम होते रहते है। बापू का निजी खिदमतगार हरिराम और जिस रसोइये को मैंने भेजा था और जिसे बापू ने लौटा दिया था वे दोनो ही कहते हैं कि बापू पहले से कमजोर हो गये हैं और रोजमर्रा दाढी न बनाने के कारण उनकी दाढी मूछ बढ गई है और सिर के बाल भी बढ गये हैं। मुझे यह भी मालूम हुआ कि उनके पास मुसलमान मित्रो की आवा जाई लगी रहती है पर यह कहना कठिन है कि वहा से लौटते समय तक उनमे से कितनो का कितना हृदय परिवर्तन हो जायेगा।

इस शांति मिशन के बारे मे मैं कुछ हताश हो चला हू। दुनिया तो जैसी कुछ है वैसी ही रहेगी। बापू भले ही तपश्चर्या मे लगे रहे उसका तात्कालिक प्रभाव क्या होगा इस बारे मे मेरा सशय पहले से कही अधिक बढ गया है। बापू के इन प्रयत्नो के दीर्घ कालीन प्रभाव को उपेक्षा की दृष्टि से नही देखा जा सकता यह तो ठीक पर मैंने बापू को कुछ समय पहले लिखा था कि हिन्दू मुस्लिम ऐक्य एक-मात्र कान्स्टीटयूएंट असेम्बली के माध्यम से ही सम्भव है, यदि वह सम्भव है तो यह मैं फिर दुहराता हू। जिन्ना असेम्बली से कुछ दिनो तक भले ही कन्नी काटता रहे पर अन्त मे वह भी उसके काम मे भाग लेने लगेगा। हा, यह बात अवश्य विचारणीय है कि यह असेम्बली मे आने के बाद मुनासिब रुख अख्तियार करेगा या नही यह विवादास्पद है।

परन्तु जिन्ना आये चाहे न आये, हम सबको तो अपना फर्ज निबाहना ही है। शासन कार्य का सचालन पूर्णतया पक्षपातरहित ढग से और एकमात्र देश के हितो को सामने रखकर होना चाहिए। पर देखता हू कि सदिच्छा के बावजूद सरकारी ढाचे मे कोई हेर फेर नही हुआ है।

खाद्यान्न का राशन घटाकर छह छटाक रोजाना कर दिया गया है। इसमे

१ छटाक घटिया किस्म की मक्का रहती है और एक छटाक ज्वार रहती है। फिलहाल सारा दश अधपट खाकर निवाह कर रहा है। हाल ही म राजेन्द्र बाबू ने एक भाषण के दौरान कहा था कि वह भविष्य के बारे म अपनी काय योजना स्थिर कर रह है। पर यह सब जबानी जमा खच-जसा लगता है। हम पिछल पाच वर्षों स ऐसी ही स्पीचें सुनत आ रहे है, और राजेन्द्र बाबू की स्पीच अन्य सदस्या की स्पीचो जसी ही लगी। हम इस समय जिस चीज की जरूरत है वह है ठोस कदम। खाद्यान्न के उत्पादन म वृद्धि करन एव अन्य पदाथ अधिक मात्रा मे तयार करने, शिक्षा का प्रसार करने, जनता क स्वास्थ्य का देख रेख करने अथवा लोगा के रहने सहन का समुचित प्रबध करन की दिशा म प्राय कुछ नही किया जा रहा है।

सरदार बडी मुस्तदा स काम ले रहे हैं। उन्होने बात की बात मे दिल्ली के दगे दबा दिय। अब वहा सवत्र शाति विराज रही है।

पर आम जनता की समझ मे मौलाना का शिक्षा मत्री और आसफअली का अमरीका का राजदूत नियुक्त करन की बात नही बठ रही है। यदि निष्पक्ष रूप से विचार किया जाए तो यह सब वही पुराना कुनबापरस्ती-जसा लगेगा जिसे लेकर हम पहली सरकारो की आलाचना किया करत थ।

चारो ओर हडताला का दौर दौरा है। कानपुर मे कोई एक लाख मजदूरो ने हडताल कर रखी है और वहा गोली चलान की नौबत आ गई है। कोयला खदानो को नोटिस दे दिये गय हैं कि शीघ्र ही हडताल बडे पमाने पर होनवाली है। वस्तुओ का अभाव है। अनेक कल-कारखाने बन्द हानवाले हैं। खर्चे बढ रह हैं। सरकारी कमचारियो के वेतन म वद्धि अनिवाय है और एसा जल्दी ही होने वाला है। इसके परिणामस्वरूप २० ३० करोड का खच बढ जायेगा। दिल्ली म अध्यापको न हडताल कर रखी है। हर कोई यह चाहता है कि पस अधिक मिलें काम कम करना पड। उधर शासन के क्षेत्र म शीपस्थ अमले की सख्या मे, युद्ध के दिना से भी अधिक वृद्धि हुई है। केन्द्रीय सचिवालयो म युद्ध के दौरान ८००० क्लक काम करते थे। अब उनकी सख्या बढकर ५० ००० तक पहुच गई बताई जाती है। इस व्यय म कटौती करन का साहस किसी म नही है क्योंकि वसा करन स सरकार की लोकप्रियता को ठेस लगने की आशका है।

उधर समाचार पत्र नेताओ की स्पीचो मुलाकाता और लेखो से भरे रहते हैं। पर इससे न ता अन्न-उत्पादन म छटाक भर की वद्धि होती है न एक गिरह कपडा अधिक तयार होता है। सारा आर्थिक ढाचा रेत की दीवार की तरह गिरता दिखाई पडता है। मैं आगे की बात सोच रहा हू सम्भव है, इसी कारण

मुझे यह सब इतना भयावह प्रतीत हो रहा हो पर वस्तुस्थिति उल्लासप्रद कदापि नही है।

यह तो साफ जाहिर है कि हमारे राजनेता और शासन-कला विशारद जितना जोर राजनीति पर देते हैं, उतना आर्थिक पहलू पर नही देते जबकि हमारी सरकार की दक्षता का प्रमाण आर्थिक क्षेत्र में कुछ कर दिखाने से ही मिलेगा। इसमे कोई सदेह नही है कि देश को स्वतत्रता की जरूरत है, पर साथ ही उसे अधिक शिक्षा, अधिक वस्त्र अधिक खाद्यान्न, अधिक सफाई अधिक स्वास्थ्य और अधिक अच्छे घरो की भी जरूरत है। इस दिशा मे जबानी जमा खर्च और कागजी घोडे दौडाने से अधिक कुछ नही किया जा रहा है। यही सब कुछ देखता हू तो दिल बैठने लगता है।

आशा है तुम सकुशल होगे। बापू से मिलने का सयोग हो तो उन्हे मेरा प्रणाम अभिवादन कह देना।

तुम्हारा
घनश्यामदास

२

काजिरखिल शिविर के पते पर
२५-१ ४७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १२ जनवरी का पत्र मिला। आप ठीक ही कहते हैं। जिस पत्र का आपने पत्र मे जिक्र किया है उसे मैंने २५ दिसम्बर को लिखना आरम्भ किया था। बाद मे मैंने कई दिन बाद पुन हाथ लगाया। आपका पिछला पत्र बापू की नजरो से गुजर चुका है। वास्तव मे वह पत्र काजिरखिल से सीधे उनके पास पहुचा। उस पर अपनी टिप्पणी देने के बाद बापू ने कल पत्र मेरे पास भेज दिया।

आम स्थिति के बारे मे आपका कहना ठीक ही लगता है। इससे ज्यादा बुरी स्थिति और क्या हो सकती है ? बौद्धिक दृष्टि से देखा जाये, तो ऐसा लगता है कि कोई निर्मम शक्ति हमे गर्त की ओर ढकेल रही है और उससे छुटकारा पाने का कोई उपाय सूझ नही पड रहा है। अभी उस दिन बापू ने एक मित्र को लिखा था कि यदि लक्षणो के आधार पर ही चला जाए तब तो यह आशा नहीं होती कि

वह इस अग्नि परीक्षा से जीवित निकल पायेंगे। पर बापू की यह आस्था तो है ही कि जो काम उन्होंने नोआखाली में अपने हाथ में लिया है यदि भगवान् को उसे पूरा कराना मंजूर होगा तो उसकी सफलता हमारी अन्य कठिन समस्याओं की कुंजी प्रमाणित हुए बिना नहीं रहेगी। एक मामले में सफलता का अर्थ है सभी मामलों में वैसी ही सफलता। उनके निकट यह 'यथापिण्डे तथा ब्रह्माण्डे' जगा है। वह एक मादे हैं शरीर से भी, मन से भी और स्वयं अपने ही शब्दों में उनका प्राण रस निचोड़ा जा चुका है। पर वह अग्नि-परीक्षा के पूरे दौर से गुजरने को कृतसंकल्प हैं और उन्हें उनके संकल्प से विचलित करने की चेष्टा-मात्र घोर अप्रिय है। इन सारी बातों को ध्यान में रखने के बाद हमारे लिए केवल इतना ही शेष रह जाता है कि भगवान उन्हें अभय के रक्षा कवच से विभूषित करें। आम तौर से यह कहा जा सकता है कि वह जितना मानसिक और शारीरिक भार वहन कर रहे हैं उसे देखते हुए उनका स्वास्थ्य असाधारणतया संतोषजनक है। उनकी इस शारीरिक क्षमता में मुझे स्वयं भगवान के दर्शन होते हैं अतः हमारा चिन्ता करना बेसूद है। हम अपने जिम्मे सौंपा गया काम पूरा करने में लगे रहें यही हमारे लिये यथेष्ट है।

अमतुस्सलाम के अनशन का कुशलतापूर्वक अंत हो गया उससे भी हमारा धीरज बंधा है। मैंने मन ही-मन उस अनशन को भी बापू की साधना की कसौटी के रूप में ग्रहण किया था ठीक उसी प्रकार जैसे भणसाली के अनशन तथा स्वयं बापू के आगाखा पैलेसवाले उपवास को मैंने बापू की साधना की कसौटी के रूप में ग्रहण किया था। हम सबको उन दिनों ऐसा लग रहा था मानो हमारे सिरों पर कच्चे धागे में बंधी नंगी तलवार लटक रही है। एक दिन अकस्मात मेरी बहन सुशीला पूछ बैठी "भाई साहब अगर आपसे कोई वरदान मांगने को कहे तो आप क्या चीज मांगेंगे?" उसने सोचा था कि शायद मैं यह मांगूंगा कि बापू का अनशन टल जाए। पर यह जानकर उसे आश्चर्य हुआ और खुशी भी हुई कि मेरी कामना भणसाली के अनशन की सफलतापूर्ण समाप्ति की थी और यह कितने आश्चर्य की बात थी कि उसी दिन पत्रों में भणसाली के अनशन के अंत की घोषणा प्रकाशित हुई। उसी घड़ी से मुझे विश्वास सा हो गया कि बापू के उपवास के बारे में यही होगा और मेरी बात ही ठीक साबित हुई।

बस इस पत्र को और आगे नहीं बढ़ाऊंगा। डाकिया इंतजार कर रहा है। क्या आप अपने कार्यालय को 'रीडर्स डाइजेस्ट' और अमरीकी साप्ताहिक पत्रिका 'टाइम्स' का नये साल का चन्दा भेजने की हिदायत देने की कृपा करेंगे? ये इधर काफी दिनों से नहीं मिले हैं। आप इन दोनों पत्रों के पिछले ६ अंक भिजवा दें तो

और भी उत्तम रहे।

अधिक अन्य पत्र में लिखूंगा। कोई बताने लायक बात हो तो अवश्य लिख भेजिए खास तौर से अपने बारे में।

शुभभावनाओं के साथ

आपका

प्यारेलाल

भी किसी तरह की मदद नही कर सकते। अपने अपने देहातो म जो बन पडता है कर रहे हैं। मगर यह एक बडे वक्ष के एक एक पत्ते को हिलाने की कोशिश जसी बात है। सामान्य बुद्धि स देखते हैं तो लगता है बापू कहा आ फस। मगर यह श्रद्धा की कमी है। ईश्वर उनका मागदशक है। श्रद्धा रखें तो परिणाम अच्छा ही होगा।

मेरे देहात म तो जीवन फिर से नामल सा हो गया है। वहा पहले बहुत नुकसान हुआ था मगर वस्ती हिन्दुओकी ज्यादा है। भाई के गावम वस्ती मुख्यत मुसलमानो की है वहा अभी तक हवा पूरी सुधरी नही।

यहा इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन की तरफ स एक अस्पताल खुला है। वहा मरी मदद माग रहे है। अभी तो घर घर जाकर मरी डाक्टरी चलती है। कामचलाऊ बगला बोलन लगी हू। बापू नियमित बगला सीखत है। हमारे लिफाफे पर अब नाम बगला मे लिखकर भेजते है।

आप कुशल होग।

सुशीला का प्रणाम

४

काजिरखिल शिविर के पते पर

डा० रामगज

११ २ ४७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने इधर कई दिना स इष्ट मित्रा को चिट्ठी पत्री भेजना बद सा कर रखा है। हम सब इस दलदल मे फस है। तालाब का पानी सड रहा है। उसम गति नाममात्र को नही है। बापू का दौरा माच क अ त तक समाप्त हो जायगा। प्रश्न है फिर क्या ? जब तक बापू अपने मिशन म पूण सफलता प्राप्त नही कर लेंगे, उ होन उदबोधन और आचरण के द्वारा अपना काम जारी रखने का निश्चय कर लिया प्रतीत होता है। इसका अथ यह हुआ कि आगामी वर्षा ऋतु म भी हम यही फसे रहना होगा। यदि स्वय बापू यहा स चल भी गय तो भी शायद हम लोगा को यहा रहना होगा।

जब हम लाग यहा पहली बार पहुच, तो यहा के लोग हमार काफी खिलाफ

थे। अब कम-से-कम ऊपरी तौर से लोग मैत्री का व्यवहार करते हैं। पर भीतर ही भीतर आक्रोश की भावना बराबर काम कर रही है। कल जब कार्जिरखिल मे डाक लानेवाला मेरी डाक लाया, तो मार्ग मे उसे मुसलमान नौजवानों की एक भीड ने घेर लिया और हाथापाई की नौबत आ गई। गत ६ तारीख को कोई २०० नौजवानों का एक जुलूस शाहपुर बाजार से 'लडके लेंगे पाकिस्तान' के नारे लगाता हुआ गुजरा। मैं शाहपुर मे जुलूस के पास पहुचा तो पता चला कि प्रातीय मुस्लिम लीग ने समाचार-पत्रो मे निर्देश दिया है कि जुलूस निकालकर गुलाम सरवर और उसके साथियो की जमानत पर रिहाई की मांग की जाए। अन्य मार्गे भी थी। उस समय मैं कारटखाल मे था जहा शरणार्थी अपने घरो को वापस लौट रहे थे। उनमे इस जुलूस को लेकर काफी आतक फैल गया।

बस इतना ही लिख पाऊगा। बुलावा आया है।

सदभावनाओ के साथ

आपका
प्यारेलाल

पुनश्च

इधर करीब दो महीनो से सेठ रामकृष्ण बिडला के नाम भेजी गई मेरी चिट्ठियो का कोई उत्तर नही आ रहा है। ठिकाना वही ८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता है। पता नही क्या कारण है?

प्यारेलाल

५

पडाव नोआखाली
रायपुर
१५-२-४७

चि० घनश्यामदास

तुमको एक खत लिखकर सुशीला के मार्फत भेज दिया। लेकिन सरदार के खत मे मैं कुछ अस्वस्थ हुआ हू। देवदास का खत तो मेरे कानो मे गूज रहा है। तुमको तो मैंने लिखा है वह याद तो नही है उसकी नकल नही रखी। आज तो

इतना ही लिखना चाहता हू कि तुम्हारी तटस्थता छोडनी चाहिये। सरदार के मन म स्पष्ट है कि ऐसा लिखता ही है। सरदार की बुद्धि पर मुझे विश्वास है। देव दास की बुद्धि पर भी है। लेकिन मेरे नजदीक देवदास बडे होते भी बालक है। सरदार के लिये ऐसा नही कहा जा सकता। किशोरलाल और नरहरि भी बालक नहा हैं पर उनका विरोध समझने म मुझको दिक्कत नही है। मेरा जीवन शुद्ध है पवित्र है धम पालन के लिये ही चलता है। एसी मान्यता ही तुम्हारे और मेरे बीच मे गाठ है। अगर यह नही है तो कुछ नही है। इसलिये मै चाहता हू कि इस काम म पूरा हिस्सा लो भले ही अदृश्य रूप से ही क्योकि तुम्हारे व्यापार म खलल पहुचे एसा मैं नही चाहता लेकिन मैं अधम का आचरण करता हू तो मेरा सख्त विरोध करने का सब मित्रो का धम हो जाता है। सत्याग्रही अंत मे दुराग्रही भी बन सकता है। भेद तो इतना ही रहता है कि असत्य को सच मानकर बैठ जाय तो दुराग्रही बन गया। मैं ऐसा नही हू। ऐसे मानता हू लेकिन उससे क्या हुआ ? परमेश्वर तो नही हू गलती कर सकता हू। गलतिया की हैं। अतिम समय पर बडी भारी गलती हो सकती है। अगर हुई है तो जितने हितेच्छु है वे मेरा विरोध करके मेरी आखें खोल सकते हैं न करें तो मुझको ऐसे ही जाना है तो मैं चला जाऊगा। मैं कुछ भी यहा करता हू वह सब मेरे यज्ञ का हिस्सा है जान बूझकर ऐसा कुछ नही करता हू जो इस यज्ञ म समाविष्ट न हो सके। आराम लेता हू वह भी यज्ञ के ही लिये।

इस समय आख और पेट पर मिट्टी है और इसे लिखवाता हू। थोडे समय मे शाम की प्राथना म जाना है। मनु प्रकरण मेरा काफी समय लेता है उससे मुझको आपत्ति नही है क्योकि उसको भी यज्ञ के कारण रखी है।

उसकी परीक्षा भी यज्ञ का हिस्सा है यह सब मैं समझा न सकू वह दूसरी बात है। मित्रो का समझना तो इतना ही है कि मैं मनु को मेरी गोद म लेता हू तो एक पवित्र पिता की हैसियत से कि धमभ्रष्ट पिता की हैसियत से ? जो मैं करता हू वह मेरे लिये नई बात नही है विचार सृष्टि म शायद ५० साल से आचार म भी वर्षों से थोडा या बहुत किया ही है। मेरे साथ का सबध तोडोगे तो भी मुझको दुःख नहीं होगा। जसे मैं अपना धम पर कायम रहना चाहता हू, ठीक इसी तरह से तुम्हारे रहना है।

अभी दूसरा विषय पर आता हू। यहा के हिंदू गुनाहा हैं उनको ताती कहते हैं। वे लोग नाराज हो गये हैं। उनका घर के चर्खे काफी जलाये गये हैं मकान भी जलाये गये हैं। सूत न मिले तो बेकार बैठना है या तो कुदाली लेकर मजदूरी करता है तो यहा के ऑफिसर ने मुझको कहा कि सूत गवनमेंट को मिल नही

सकता। सेंट्रल गवनमट दे ता हो सकता है। तो मैंने कहा अगर आप दाम दें तो मैं शायद सूत पैदा कर लूंगा। तो वह राजी हुआ। क्या आप लोग सूत दे सकते हैं ? अगर दे सकते हैं तो कितना ? और क्या दाम से ? और कब दे सकेंगे ? क्या वह सूत देने में मध्यवर्ती गवनमट की इजाजत लेनी पडती है ? वह सब लिखो।

बापु के आशीर्वाद

६

१७ फरवरी १९४७

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारा ११ फरवरी का पत्र मिला। समाचार पत्रों से भी यही लगता है कि स्थिति बिगडती जा रही है। इधर कुछ दिनों से फजलुल हक ने बापू के खिलाफ जहर उगलना शुरू कर दिया है। इससे स्थिति में नये सिरे से तनाव पैदा हुआ है।

तुम्हारी इस बात से मुझे हैरत हुई कि तुम सेठ रामकृष्ण बिडला को (८ रायल एक्सचेंज प्लेस कलकत्ता के पते पर) जो पत्र भेज रहे हो उनका तुम्हें कोई उत्तर नहीं मिल रहा है। पर यदि तुम्हें कोई उत्तर नहीं मिला, तो आश्चर्य की कोई बात नहीं है क्योंकि यहां इस नाम का कोई आदमी नहीं है। शायद तुम्हारी चिट्ठियां डेड लेटर आफिस में पडी होंगी। तुम्हारा अभिप्राय कृष्णकुमार बिडला से होगा।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
काजिरखिल

७

गाधी शिविर काजिरखिल के पते पर,
डा० रामगज
नोआखाली
३० ७ ४७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपको पत्र लिखे एक युग बीत गया लगता है। आपका भी कोई पत्र नही आया। मेरे आपको कुछ न लिखने का कारण है—शायद बापू ने आपको या सरदार को अपनी श्रीरामपुर से लिखी एक चिट्ठी म बता भी दिया होगा। वह पत्र व्यवहार को अपने यज्ञ म विघ्न के रूप म ग्रहण करते हैं और अपना सारा ध्यान उस यज्ञ म ही केन्द्रित रखना चाहते है।

हमारी यह अवधि घटनाओ से सर्वथा शून्य रही हो ऐसी कोई बात नही है। हा यह हो सकता है कि यहा जो कुछ घटित हो रहा है उसम बाहरी दुनिया को कोइ दिलचस्पी न हो। अगर आपकी दिलचस्पी देखूगा तो यहा से कागज पत्रो का पुलिन्दा भेज दूगा जिससे आपको पता लग जायगा कि यहा कसी बीत रही है।

नो राज्य अस्तित्व म आय मेरे लिए यह कोई खुशी की बात नही है। मुझे ऐसा लग रहा है कि अशोभनीय घटनाए होनेवाली हैं। मेरी तो यही आशा और कामना है कि मेरी आशकाए निर्मूल सिद्ध हो। बापू के स्वास्थ्य को लेकर मुझे बडी चिन्ता होने लगी है। वह भग्नोत्साह और उदास लगत है। ये किसी सम्भावित व्याधि के लक्षण भी हो सकते है।

मेरी सारी आवश्यकताओ की पूर्ति कलकत्ता करता आ रहा है। आपकी ताकीद के मुताबिक ही सब-कुछ होता आ रहा है। मुझे कोई शिकायत नही है।

मुझे पिछले दिसम्बर से टाइम और पिछली जनवरी से डाइजेस्ट नही मिले है। डाइजेस्ट ने चन्दा भेजने का स्मरण पत्र भेजा था। क्या आप इन दोनो का चन्दा भिजवाने की कृपा करेंगे? अपने यहा से जनवरी और उसके बाद के सारे अक भी भिजवा दीजिए। अपने दफ्तर को यह भी कहिये कि लाइफ आने के दो सप्ताह बाद जब सब उसे देख चुकें, तो मेरे पास भेज दिया करें और पिछले दिसम्बर के बाद के सारे अक भी भेज दें। मैं पढ़ने के बाद उन्हे सुरक्षित रखूगा और बीच बीच म वापस लौटाता रहूगा। यह स्थान ही ऐसा एकान्त है कि ससार

हमे मगन की ही आशा करनी चाहिए।

पत्रिकाओं के चदे की बाबत तुम्हे मुझे लिख देना चाहिए था कि नये साल का च दा भेजना है। कुछ एक पत्रिकाए भेजता हू। ऐसा बन्दोबस्त कर रहा हू कि 'टाइम और रीडर्स डाइजेस्ट तुम्हारे पास नियमित रूप से पहुचते रहे।

तुम्हारा,
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल नयर,
गाधी शिविर काजिरखिल
डा० रामगज
जिला नोआखाली

६

कलकत्ता मे

१

लगभग छह महीने बाद इस चिरपरिचित आकृति को निहारने और इस चिरपरिचित कण्ठ स्वर का आनन्द लेने का सौभाग्य हुआ। साथ मे मेरे मित्र और सहकर्मी श्री चारुभूषण चौधरी थे। हम दोनो कलकत्ता गाधीजी को नोआखाली के हालचाल बताने और उनके पथ प्रदर्शन की याचना करने आये थे। वैसे ऊपरी तौर से देखने मे लगता था कि कलकत्ता साम्प्रदायिक सद्भाव का स्वाद लेने मे तल्लीन है पर आत्मा मे जो प्रवचना छिपी रहती है उसकी प्रतीति गाधीजी की अपनी विशेषता है अत वह निर्द्वन्द्व दिखाई नही पडे। पजाब से भयावह समाचार आ रहे थे तिस पर भी उन्होंने थोडे बहुत सकोच के बाद नोआखाली जाने का ही निर्णय लिया। उनके चारो ओर जो सब थे उनमे उन्होने कहा, कल जाना ठीक रहेगा या परसो ? अन्त मे परसो का दिन ही यात्रा के लिए ठीक समझा गया। उसी दिन सध्या के समय उस ऊपरवाले ने जो मानव जाति के नग्न मुर्दे होने पर सबकी रखवाली करता है चेतावनी दी। मैं उस दिन रात को

गाधीजी के पास पहुचा तो उन्होंने कहा 'आज सध्या समय जो-कुछ हुआ है उसे लेकर मेरा नोआखाली जाने का अब इरादा नहीं है। जब कलकत्ते में आग लगी हो, तो मैं न नोआखाली जा सकता हू न कहीं और। आज जो दुघटना हुई वह भगवान की ओर से इगित किया गया एक लक्षण और उनके द्वारा दी गई एक चेतावनी है। अब तुम्हें नोआखाली अकेले ही जाना होगा मुझे साथ लेकर नहीं। नोआखाली में लोगों को बता देना कि यदि वे लोग मेरे मित्रों और सहकर्मियों को किसी कारणवश अपने मध्य न पायें तो मुझे तो अवश्य उपस्थित पायेगे।

और फिर उन्होंने सहज ही यह भी बता दिया कि यदि साम्प्रदायिक ज्वाला भड़की, तो उनके लिए उपवास करने के सिवाय और कोई चारा नहीं रहेगा। 'क्या मैंने यह पहले से ही नहीं कह रखा है कि मुझे एक बार और उपवास करना है ?" अगला दिन उनका मौन दिवस था। भयावह खबरों का ताता लगा हुआ था। दिन में कई डेपुटेशन आये—सब यही जानना चाहते थे कि यह आग क्योंकर बुझाई जाए। गाधीजी का कहना था दगाइयों में जाओ उनसे यह पागलपन बन्द करने को कहो, इसी चेष्टा में मर मिटो पर यहा अपनी विफलता की कहानी सुनाने मत आओ। स्थिति कुछ ऐसी हो गई है कि चोटी के आदमियों को आत्म बलिदान करना ही होगा। अब तक केवल एक आदमी को छोड़कर बाकी जितने आदमी इस आग में भस्म हुए सब अज्ञात थे वह अकेला आदमी था—गणेशशकर विद्यार्थी। इतने ही से काम नहीं चलेगा।"

जिस समय गाधीजी यह सब कह रहे थे वह मन ही-मन सोच रहे थे कि उन्होंने श्रोताओं के सम्मुख जो चित्र उपस्थित किया है उसमें स्वय उनका स्थान कहा पर है। उन्होंने कहा, मैंने इन लोगों से जो कुछ करने को कहा है, वह मैं खुद अभी नहीं कर सकूगा। मुझे करने की अनुमति भी नहीं मिलेगी। यह मैंने कल खुद देखा। यदि मैं उन्मत्त भीड़ में जाने की कोशिश करूगा, तो सब मेरी रक्षा करने में लग जायेंगे। यदि मैं थककर गिर पड़ू तो कोई बात नहीं पर जब युद्ध हो रहा हो उस समय सिपाही का थककर गिर पड़ना क्षम्य कदापि नहीं है।'

पर सकट की वेला में हाथ-पर हाथ रखकर बैठना गाधीजी की आदत में नहीं है। जब उनके एक पुराने मित्र उस रात को उनसे मिलने आए तब तक गाधीजी अपना कर्तव्य कर्म निश्चित कर चुके थे। उक्त मित्र ने गाधीजी का वह वक्तव्य पढ़ा जिसमें उन्होंने उपवास करने के निर्णय को समझाया था। इसके बाद वह स्नेह में विनोदी स्वर में कहने लगे आप मुझसे तो यह आशा नहीं रखते होंगे कि मैं आपके इरादे की पुष्टि करूगा। अब दोनों ने स्थिति पर सम्यक रूप से विचार करना और समस्या के सारे पहलुओं का विशद विश्लेषण करना आरम्भ

किया।

मित्र न पूछा   क्या आप गुण्डा क खिलाफ उपवास कर सकत है ?

गाधीजी न उत्तर दिया ' यह आग जिन लोगा ने भडकाई है व गुण्डे नही थ, पर बाद म हा गय। हम लाग ही ता गुण्डो को जन्म देते ह। यदि उन्ह हमारी सहानुभूति और परोक्ष सहायता उपलब्ध न रहे ता व निराश्रय हा जायेंग। मैं उन लागा के दिल टटोलना चाहता हू जो गुण्डा की हिमायत करत हैं।

अन्त म मित्र न कहा   पर उपवास करन म इतनी जल्दबाजी स क्या काम लिया जाए ? देखिए आग क्या होता है।

इस दलील क उत्तर म बापू का कहना था कि   या तो उपवास अभी हो या फिर कभी न हा। देर लगेगी तो उपवास कारगर नही होगा। अल्पसख्यक मुसल मानो का सकटापन्न अवस्था म नही छोडा जा सकता। यदि मर उपवास का कोई वाछनीय परिणाम निकलता है तो वह यही है कि उसक द्वारा उनका रक्षा हा।

इसक बाद गाधीजी बोले   अगर मैं कलकत्ता म उपद्रव शात कर पाऊगा, तो पजाब की स्थिति पर भी नियत्रण कर पाऊगा। पर यदि मुझ इस समय लड खडाता पाया गया तो आग चारो ओर फल जायगी और तब हमारी जुम्मा जुम्मा आठ दिन की आजादी को दो नही तीन शक्तियां से खतरा पदा हो जायगा।

मित्र न कहा   और यदि आपन अपने प्राण गवा दिये तब तो यह अग्नि और भी प्रज्वलित हो जायेगी।

पर मैं तो उस देखने आऊगा नही। मैं अपना कत्त य पालन कर चुका होऊगा। आदमी इसस अधिक क्या कर सकता है ?   गाधीजी बाले।

मित्र ने हथियार डाल दिय।

उन्हाने गाधीजी के वक्तव्य पर पुन निगाह दौडाइ। उनकी निगाह उस अश पर जाकर अटक गई जिसम गाधीजी ने कहा था कि उपवास के दौरान वह जल म खट्टा नीबू निचोडकर पीते रहेग। मित्र ने कहा   ता फिर यह भी क्यो ? जब आप अपने आपको भगवान के हाथा म ही सौंपने को तयार हैं तो नीबू निचोडा पानी पीन की भी क्या जरूरत है ?'

गाधीजी न तुरन्त कहा   आपकी बात बिलकुल ठीक है। मैं दुबलता क वशी भूत हा गया था पर जिस समय मैं यह लिख रहा था तब भी मुझे उसका अनौचित्य प्रतीत हा रहा था। एक सत्याग्रही को अपने उपवास की शर्तों को पूरा करने पर ही जावित रहने की बात सोचनी चाहिए।

और इस प्रकार जल म नीबू निचोडनेवाली बात वक्तव्य म स निकाल दी गई, और विशुद्ध आस्था का परीक्षण आरम्भ हुआ।

यह बात सोमवार की रात की है। दो दिन बाद कलकत्ता मुस्लिम लीग का एक प्रमुख अधिकारी उनके पास यह अनुरोध लेकर आया कि वह उपवास करने का विचार त्याग दें। 'आपकी मौजूदगी ही हमार लिए एक नियामत है। आपकी मौजूदगी हमारी सलामती की गारण्टी है। आप हमे इस गारण्टी स मह रूम मत कीजिए।"

मेरी मौजूदगी उस दिन उन दगाइयो को कहा रोक पायी ? उ होने तो मरी बात एक कान से सुनी दूसरे से निकाल दी। मेरा उपवास तो तभी छूटेगा जब यह ज्वाला बिलकुल शात हो जायगी और १२ दिन तक जसी शाति बनी रही थी वसी ही शाति दुबारा कायम हो जायगी। अगर मुसलमान लोग सचमुच मुझम मोहब्बत करत हैं और मेरी जिन्दगी को अपनी हिफाजत की गारण्टी समझते हैं तो उन्हे चाहिए कि भले ही सारा कलकत्ता पागल हो जाए वे बदले म हाथ नही उठायेंग। इस दौरान मेरा अग्नि परीक्षा जारी रहेगी।

उक्त मित्र उदास मन स वापस लौट गय। उनके विदा लने के बाद गाधीजी बोले, हमलावरो को मेरे प्राण बचाने क लिए अपना पागलपन नही छोडना है बल्कि सच्चे हृदय परिवतन स प्रेरित होकर अपनी हरकतो से बाज आना है। यह बात सबको अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए कि मैं दिखाव की शाति से सतुष्ट होन वाला नही हू। मैं यह नही चाहता कि अस्थायी रूप से शाति हो जाए और फिर से जो आग भडके वह इसस भी बढकर हो। यदि वसा हुआ तो मुझे आमरण और बगर किसी शत के उपवास करना होगा।

प्यारेलाल

कलकत्ता,
४ ९ ४७

२

फिर चमत्कार घटित हुआ। अनशन जारी था शय्या पर एक एक क्षण बीत रहा था। इस नन्हे-से आदमी की शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती जा रही थी। सबके हृदयो म टीस थी सब बचन थे। अचानक साधारणतया नम्रता से आच्छन्न प्रेरणा के दशन हुए। लोग आग आन लगे गाधीजी को वह सब बतान लग, जो वे

जय किसी के सामने क्बूलने की बात स्वप्न में भी नही सोच सकते थे। भाई भाई के रक्त का प्यासा न रहे इस निमित्त एक अमूल्य जीवन की बलि दी जा रही थी। अब हिन्दू मुसलमान दोनो इस जीवन की रक्षा करने मे संयुक्त रूप से जुट गये। शहर के विभिन्न अंचलो में दोनो सम्प्रदायो के लोग जलूस बना-बनाकर एकता के प्रयत्न को लेकर निकल पड़े। ४ तारीख को गांधीजी के पास कोई पचास आदमियो की एक टोली आई। यह वह प्रतिरोध टोली थी जो गत अगस्त की गड़बड़ी के दौरान अस्तित्व में आई थी। इस टोली में साधारण लोग भी थे, नेता लोग भी थे। इस टोली का प्रभाव काफी था और इसके सदस्य स्थिति को शांत करने और बनाये रखने में सक्षम थे। इस गिरोह ने गांधीजी को वचन दिया कि जो लोग गड़बड़ी फैला रहे हैं उन्हें काबू में कर लिया जायगा। इन लोगो ने बताया कि गत रविवार को जिन लोगों ने उनके शिविर मे अशान्ति फैलाई थी उनका पता लगा लिया गया है और उन्हें नियंत्रण में रखने की कारवाई की जा चुकी है। गांधीजी को बताया गया कि गड़बड़ी फैलानेवाले इन लोगो में वह आदमी भी था जिसने गत शनिवार को गांधीजी पर लकड़ी से प्रहार किया था, जिससे घायल होने से गांधीजी बाल बाल बचे थे। टोली के इन सदस्यो ने बताया कि जिन लोगो ने गड़बड़ी फैलाई थी वे गांधीजी के समक्ष अपना अपराध स्वीकार करेंगे और गांधीजी जैसा कुछ दण्ड देना चाहेंगे उसे वे लोग स्वीकार कर लेंगे। उन्होंने गांधीजी से प्रार्थना की कि उन्हें उपवास का अन्त कर देना चाहिए जिससे वे लोग उनके प्राणो की चिन्ता से मुक्त होकर निर्द्वन्द्व भाव से साम्प्रदायिक मैत्री के लिए सचेष्ट हो सकें। यदि इतने पर भी उनका समाधान नही होता है तो वह किन शर्तों पर उपवास का अन्त करने को तैयार हो जायेंगे यह बतलायें। इसके उत्तर में गांधीजी ने कहा कि उनका उपवास तब तक जारी रहेगा, जब तक वे लोग उन्हें पक्का यकीन नही दिला देंगे कि भले ही बाकी समूचे पश्चिम बंगाल में क्या सारे भारत में साम्प्रदायिक आग भड़कती रहे कम से कम कलकत्ता से साम्प्रदायिक उन्माद सदैव के लिए विदा हो गया है, और जब तक स्वयं मुसलमान आकर उन्हें यह न बतायेंगे कि उनकी जान जोखिम में नही है और अब उपवास जारी रखना अनावश्यक है। गांधीजी ने यह माना कि उनके लिए शहर भर के गुण्डो पर काबू पाना उनके बूते के बाहर अवश्य है पर वह यह चाहेंगे कि उनमें उतनी आत्म शुद्धि अनासक्ति और एकाग्रता जाग्रत हो, जिसके द्वारा वह सभी गुण्डों को प्रेम की डोर मे बांध सकें। यदि वह उपद्रवियो को साम्प्रदायिक विष से अपने-आपको मुक्त करने लायक नही बना सके तो उन्हें लगता है कि यह जीवन वृथा है। गांधीजी ने कहा कि उन लोगो ने जो यह कहा है कि उपवास के द्वारा व

स्वरूप वे पहले से भी अधिक उपद्रव करने का साहस करते हैं। उन्होंने कहा, 'मेरे उपवास से आपको अधिक चौकन्ना तथा अधिक सत्यभाषी होना चाहिए और वही बात मुंह से निकालनी चाहिए जो नपी तुली हो।

उपवास समाप्त करने के निवेदन पर बापू ने दो प्रश्न किये क्या वे इस बार में कि कलकत्ता में फिर कभी साम्प्रदायिक वारदात नहीं होगी उनका समाधान करा सकते हैं? क्या वे यह कह सकते हैं कि कलकत्ता के नागरिकों का सचमुच हृदय परिवर्तन हुआ है और अब वे साम्प्रदायिक भावनाओं को भूलकर भी बढ़ावा नहीं देंगे? यदि वे उन्हें वैसा आश्वासन देने में अपने-आपको असमर्थ पाएं तो इससे अच्छा तो यही रहेगा कि वे उन्हें अपना उपवास जारी रखने दें क्योंकि यदि वर्तमान साम्प्रदायिक उपद्रव के बाद फिर कोई ताजा उपद्रव हुआ तो वह आमरण उपवास करने को विवश हो जायेंगे। पर यदि आपके आश्वासन के बावजूद कोई ताजा उपद्रव हुआ क्योंकि आप सर्वज्ञ तो हैं नहीं तो क्या आप यह जिम्मा लेने को तैयार हैं कि आप अपनी जान जोखिम में डालकर भी अल्पसंख्यक जाति का बाल भी बांका न होने देंगे और साम्प्रदायिक ज्वाला को शांत करने की चेष्टा में जान तक गंवा देंगे या आप बच रहे तो आकर अपनी विफलता की कैफियत देने आयेंगे? यह सब आप लोग मुझे लिखकर दीजिए। यदि आप इस जिम्मेदारी को लें तो मैं अपने उपवास का अंत कर दूंगा। पर मैं आपको यह बताये देता हूं कि यदि आप लोगों के मन में कुछ और हो और आप कहते कुछ और हों तो मेरी हत्या आपको लगेगी। आप बगैर सोचे-समझे मुझसे उपवास छोड़ने का आग्रह करने में जल्दबाजी से काम न लें इससे अच्छा तो यही है कि उपवास कुछ दिन और चलने दें। इस उपवास से मुझे कोई क्षति पहुंचने से रही क्योंकि आदमी जब उपवास करता है तो उसकी रक्षा भगवान करता है—कुछ गिलास पानी पीने से क्या होगा।' बापू जो-कुछ कह रहे थे वह सीधा उनके अंतःकरण से आ रहा था और इतनी स्तब्धता छाई हुई थी कि पत्ता खड़कने तक की आवाज साफ सुनाई देती थी। यह खामोशी शहीद साहब ने भंग की। बापू ने कहा था कि जब कलकत्ता वालों के होश हवास दुरुस्त होंगे उनके उपवास का तभी अंत होगा उससे पहले नहीं। अब शहीद साहब बोले आपकी यह शर्त पूरी हो चुकी है। अब आप एलान पर दस्तखत कराने की हठ करके नयी शर्तें थोप रहे हैं। इस 'कानूनी' दलील का बापू ने सीधा-सा उत्तर दिया नहीं, नहीं मैंने कोई नयी शर्त नहीं लगाई है। यह तो पुरानीवाली शर्त ही है और इसी शर्त को लेकर उपवास शुरू किया गया था। मैंने अभी-अभी आपसे जो-कुछ कहा है वह केवल आप लोगों की असलियत बताने के लिए ही कहा है। यदि आप लोगों की भावना और आस्था में

पूर्ण सामंजस्य हो, तो आपको घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने में कोई पसोपेश नही होनी चाहिए। यह तो आप लोगों की नेकनीयती और आस्था की कसौटी भर है। पर यदि आप मुझे मृत्यु के गाल से बचाने के लिए ही हस्ताक्षर कर रहे हो, तो वैसा करके आप उलटे मुझे मृत्यु की ओर ढकेल देंगे।

उस अवसर की गम्भीरता से सभी द्रवीभूत थे। इधर बातचीत के आखिरी दौर मे आचार्य कृपलानी तथा राजाजी भी आ पहुचे। उन्होंने उपस्थित सज्जन वृन्द मे अनुरोध किया कि गाधीजी को एकान्त म छोडकर पासवाले कमरे म सब विचार विमर्श करें तो उचित रहेगा। शहीद साहब ने सुझाव का अनुमोदन किया। सब लोग उठने की तैयारी कर ही रहे थे कि इतने म ही नारिकेल डागा शीतलातला मानिकतला और कांकुरगाछी के हिन्दुओ और मुसलमानो के कोई ४० प्रतिनिधियो का सयुक्त घोषणा पत्र आ पहुचा। उस घोषणा पत्र म इन प्रतिनिधियो ने वचन दिया था कि इन इलाको मे जो पिछले उपद्रवो के केन्द्र स्थल थे किसी प्रकार का उपद्रव नही होने देंगे। उन्होंने अनुनय की कि अब गाधीजी को उपवास का अन्त कर देना चाहिए। इस घोषणा पत्र म इस बात का भी उल्लेख था कि गत १४ अगस्त १९४७ के बाद से इन इलाको म कोई उपद्रव नही हुआ है। घोषणा पत्र पढ सुनाने के बाद शहीद साहब बोले तो हमारी कोशिशें बेकार साबित नही हुई। गाधीजी ने भी कहा हा कोशिशें कारगर होती दिखाई देती है।'

इसके बाद शहीद साहब ने कहा अब तो मुसलमानो ने भी आपसे फाका छोडने की दरख्वास्त की है इसलिए आपको इस अपील को मान लेना चाहिए। मुसलमानो ने भी इस अपील मे हिन्दुओ का साथ दिया इससे यह जाहिर है कि हालाकि हाल के फसाद म उनके ही जानोमाल का नुकसान हुआ है तो भी उन्हे आपके मिशन पर पूरा एतबार है। सबसे बडी खूबी यह है कि कभी मुसलमान लोग आपको अपना जानी दुश्मन समझते थे। आपने मुसलमानो के साथ जो सलूक किया है उसका उनके दिलो पर इतना गहरा असर पडा है कि वे सब आपको अपना सच्चा महबूब तसव्वुर करने लगे हैं। अगर मेरा कहना बेजा न हो, तो मैं तो यहा तक कहूगा कि इस मामले म मुसलमान लोग खुद कायदेआजम से भी बढकर जोश-खरोश से काम ले रहे हैं।

राजाजी ने बहुत ही शालीनता से कहा कि 'क्या खूब ! पराक्रम की होड म पीछे क्या रहा जाए। मै तो यहा तक कहूगा कि गाधीजी आज हिन्दुओ के बजाय मुसलमानो के हाथो म अधिक सुरक्षित हैं।

गाधीजी चुपचाप उदात्त विचारो का यह सवाल सुनते रहे। अन्त मे उन्होंने

अपनी टिप्पणी के लिए शहीद साहब के उस वाक्य को चुना, जिसमें उन्होंने मुसलमानों को मजलूम बताया था। उन्हें मजलूमवाली बात बिलकुल अच्छी नहीं लगी। उन्होंने कहा मुसलमानों को 'मजलूम' बताना तो ठीक नहीं है। इस शांति मिशन का एकमात्र यही लक्ष्य है कि पुरानी बातें भुला दी जायें। मैं यह कदापि नहीं चाहूंगा कि पश्चिम बंगाल के मुसलमानों को यह लगने लगे कि उनकी कोई हैसियत नहीं है। जब तक हम उनके दिमाग से यह नहीं निकाल पायेंगे तब तक कोई ठोस काम होने से रहा।

इसके बाद सब लोग बगलवाले कमरे में चले गये। गांधीजी बातचीत के आखिरी दौर में कमजोरी का अनुभव करने लगे थे और उन्हें उबकाइयां आनी शुरू हो गई थी। अब अकेले हुए तो उन्हें कुछ चैन मिला।

बगल के कमरे में जो विचार विमर्श हुआ उसमें शहीद साहब ने सतर्कता और संयम से काम लिया। यह उनकी नेकनीयती और जिम्मेदारी का ही सबूत था। आचार्य कृपलानी ने यथास्वभाव व्यंग्य और फब्तियां कसीं। राजाजी अपने उद्गारों में विवेक बुद्धि और व्यवहारकुशलता का परिचय देते रहे। बातचीत थोड़ी देर तक ही रही पर उसमें जल्दबाजी से काम नहीं लिया गया। राजाजी ने प्रतिज्ञा पत्र का मजमून बोलकर लिखवाया जिस पर सबसे पहले श्री निर्मलचंद्र चटर्जी ने हस्ताक्षर किये फिर श्री देवेन मुकर्जी ने। इनके बाद शहीद सुहरावर्दी श्री आर० के० जदका और सरदार निरंजनसिंह तालिब ने बारी बारी से दस्तखत किये। इसी बीच हथगोला और शस्त्रास्त्रों में नदी एक कार आ पहुंची। यह गांधीजी को उन लोगों की पश्चात्तापव्यंजक भेंट थी जिन्होंने हाल के उपद्रवों में हिंसा प्रतिहिंसात्मक कार्य में भाग लिया था। हस्ताक्षर करनेवाले तुरंत गांधीजी के पास वह प्रतिज्ञा पत्र लेकर पहुंचे।

शहीद साहब गांधीजी से बोले मगर जनाब मेरे दस्तखत की क्या कीमत है? मुझे किसी भी दिन पाकिस्तान बुलाया जा सकता है। फिर मेरे कौल करार का क्या होगा?

गांधीजी ने उत्तर में कहा अगर ऐसा हुआ तो आप जिन लोगों को अपने पीछे छोड़ जायेंगे आपके कौल करार को निभाने की जिम्मेदारी उन पर रहेगी। गांधीजी ने आगे कहा इसके सिवा आप वापस आ सकते हैं।

शहीद साहब ने कहा मैं आपको जान बूझकर चकमा देना कभी नहीं चाहूंगा। गांधीजी को उनकी सतर्कता बहुत पसन्द आई।

अंत में गांधीजी ने कहा तो अब मैं अपने उपवास का अंत करूंगा। कल पंजाब के लिए रवाना होना है। अब मैं वहां अधिक शक्ति सामर्थ्य और विश्वास

के साथ जा सकूंगा, जो कि मुझ तीन दिन पहले नसीब नहीं था।"

शहीद साहब ने बीच ही मे दखल दिया, कल तो आपका जाना नहीं हो सकता। कम से कम दो दिन और ठहरिये, जिससे अमन की जड और मजबूत हो।' औरों ने भी यही बात कही। सबके दिमाग में जो बात काम कर रही थी वह कुछ और ही थी—गाधीजी बहुत कमजोर हो गये हैं। रेल का सफर करने में उन्हें बेहद तकलीफ उठानी पड़ेगी। बिहार में और मार्ग में पड़नेवाले सभी स्थानों पर उनके दर्शनों के लिए लालायित भीड उनके बचे खुचे स्वास्थ्य को चौपट करके ही दम लेगी।

इसलिए यात्रा के लिए फिलहाल आगामी शनिवार निश्चित हुआ।

इस दौरान डा० निशा महता नारंगी का रस तैयार करने दौड गये थे। रस आ गया। गाधीजी ने यथास्वभाव व्रत का अंत करने से पहले ईश्वर प्रार्थना सुनी। पर इस दृश्य के मर्मस्पर्शी क्षणों का आनन्द लेने के लिए न मैं उपस्थित रह पाया न श्री चारभूषण चौधरी ही। गाधीजी ने हम ढाका में पूरा करने के लिए जो कार्य सौंपा था उसके लिए रवाना होने में देर लगाने की गुजाइश नहीं थी। मेरे उक्त मित्र अभी ठहरे रहना चाहते थे पर मैंने कहा कि गाडी छूट गई, तो फिर हमारी खैर नहीं। अतः इधर हम झटपट प्रतीक्षा करती हुई कार में सवार होकर सियालदह स्टेशन की ओर रवाना हुए उधर प्रार्थना की जा रही थी

हे प्रभु जीवन जब सूख चला हो और झुलस गया हो तब अपनी करुणा धारा बरसाओ।

रामधुन से सारा वातावरण गूंज उठा।

प्यारेलाल

ढाका ६ सितम्बर १९४७

१०

गाधी शिविर काजिरखिल के पते पर
डा० रामगंज
जिला नोआखाली
७ सितम्बर १९४७

प्रिय घनश्यामदासजी

मैंने आपको कलकत्ता से एक लम्बा-सा पत्र लिखा था जो नयी दिल्ली से रिडाइरेक्ट होकर आपके पास अब तक पहुंच चुका होगा। आप बापू के उपवास

दन का अनुरोध किया है। न० २ के लिए नपन बाबू ने भार वहन करने का वचन दिया है पर वह अपने सीमित साधना के साथ यह भार किस हद तक वहन कर सकेंगे सो मैं बताने म असमथ हू। क्या आप इस दिशा म कुछ सहायता कर सकेंगे? न० ३ के लिए श्री बारगलाई न फम चादमल सरावगी और फम हिम्मत सिहका मे पूछा है कि क्या वे इस वितरण काय का हाथ मे लेने को तैयार होग? पूव बगाल तथा भारत के कोने-कोने म आपकी एजेन्सिया काम कर रही हैं। क्या वे भी इस काम को हाथ म ले सकेंगी? यदि काम धडल्ले के साथ शुरू किया जाए, तो म प्रति सप्ताह १० १५ मन तेल तयार करा सकता हू। मैं यह चाहूगा कि यह तल वितरण करनेवाली एजेसिया को नकद दामा पर सप्लाइ कर दिया जाए। बस मेरा काम यही समाप्त हो जाता है। बाकी सारा काम वितरण करनेवाली एजसिया के जिम्मे रहगा। मेरी शत यही है कि इस तल म किसी प्रकार की मिलावट न की जाए। हम जो तेल उत्पादन करते है उसके खालिस रहन के मामल म मैं बडा सतक हू। नोआखाली के मजिस्ट्रेट न पूव बगाल की रेलो के मुसाफिरी के डिब्बा म तल ढोने का बन्दोबस्त करने का वचन दिया है और शायद आसाम सरकार भी वसा करने को राजी हो जायेगी। मैंने ४) की जो दर बताई है वह मटियालपुर सहकारिता समिति के गोदाम स उठाकर माल उठाने की दर है।

पूव बगाल मे आयात किये तथा भारी मिलावटवाले नारियल के तेल की दर ५) स ३॥) सेर तक ह। हम जो तेल सप्लाई करेंगे उसके ताजा और खालिस होने की गारण्टी रहगी और जिन कनस्तरा म उसे भरा जायगा, उन पर तेल भर जाने की तारीख लिखा रहेगा। नारियल का ताजा तल बडी अच्छी गध देता है और उसे घी अथवा डालडा की जगह काम म लाया जा सकता है। यह तेल १ महीने से अधिक समय तक ताजा नही रह सकता। उसकी ताजगी बनाये रखने के लिए उसम से प्राकृतिक प्रोटीन निकालना जरूरी होगा और यह भी एक तरह की मिलावट ही है।

सदभावनाओ के साथ

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिडला
बिडला हाउस
अलबूकक रोड
नयी दिल्ली

का पूरा विवरण जानने को लालायित होंगे इसलिए मैंने बापू के निर्देश के अनुसार हरिजन के लिए जो सामग्री तयार की है उसकी अग्रिम प्रति आपके अवलोकनाथ भेजी है।

मुझे झटपट ढाका वापस लौटना था जहां मुझे पूर्व बंगाल के मुख्य मंत्री के नाम बापू का पत्र उन्हें देना था। अल्पसंख्यक जाति की रक्षा की जाए इस बारे में वह सदाशय से ओतप्रोत थे पर वैसी रक्षा किस प्रकार की जाए इस बारे में उनकी अपनी धारणाएं जिनकी जानकारी हासिल करके मुझे चिन्ता होने लगी क्योंकि उनकी धारणाएं हमारी धारणाओं से बिलकुल भिन्न कोटि की हैं। उपद्रव ग्रस्त लोगों के कष्ट निवारण के निमित्त जो रकम मंजूर की गई है उनका समुचित उपयोग होता दिखाई नहीं देता है। एक प्रश्न यह भी उठता है कि वर्तमान द्वेष पूर्ण वातावरण तथा सरकारी ढांचे में कार्य सम्पादन सम्बन्धी अक्षमता एवं भ्रष्टाचार ने जो जड़ जमा ली है उससे वर्तमान मंत्रि मण्डल कहां तक पार पा सकेगा। यहां की विधान सभा में कोई १०० सदस्य हैं और मंत्रि मण्डल में जाने के लिए उनमें से कम से कम २५ सदस्य लालायित हैं। हरएक उम्मीदवार के पक्ष में ३ से लगाकर ५ तक वोट हैं। इसलिए चाहे जो मंत्रि मण्डल गठित हो बाकी लोग मिलकर उसका विरोध करने में एक हो जाएंगे। आपने देखा ही होगा कि गुलाम सरवर और कासिम अली के पृष्ठपोषक फजलुल हक ने अभी से नाजिमुद्दीन सरकार के खिलाफ प्रचार शुरू कर दिया है।

बापू का स्वास्थ्य अच्छा ही था इसलिए इस दफा उपवास अधिक कष्टदायक नहीं रहा। वह पंजाब के लिए चल पड़े होंगे किस चीज का सामना करने के लिए सो भगवान ही जानें। उन्होंने नोआखाली जाने की बात भी सोच रखी है पर उनका यहां कब आना होगा यह कोई नहीं जानता।

आपका
प्यारेलाल

११

गांधी शिविर काजिरखिल के पते पर
डा० रामगंज जि० नोआखाली
६ अक्तूबर १९४७

प्रिय घनश्यामदासजी

तीन सप्ताह से अधिक हुए होंगे जब मैंने आपके बम्बई के पते पर एक लम्बा पत्र लिखा था। पता नहीं, वह आप तक पहुंचा या नहीं क्योंकि मुझे अभी तक उसकी पहुंच तक नहीं मिली है। उस पत्र में मैंने अन्य बातों के अलावा यह भी लिखा था कि न तो मुझे अभी तक 'रीडर्स डाइजेस्ट' या 'टाइम' ही मिलना शुरू हुआ है और न आपके यहां से गत जनवरी से अब तक के पिछले अंक ही प्राप्त हुए हैं। 'टाइम' के पिछले अंक भी अभी तक नहीं पहुंच पाए हैं।

मैं एक ऐसे प्रयोग की रूपरेखा भेज रहा हूं जिसे मैं काफी सफलता के साथ काम में लाया हूं। बापू ने अपने एक फुटनोट के साथ इस रूपरेखा को 'हरिजन' में प्रकाशित किया है। उन्हें यह प्रयोग अच्छा लगा है। कोई एक महीना पहले बंगाल रिलीफ कमेटी ने उसके निमित्त ५०००) की मंजूरी दी थी। पर इधर नारियल के तेल पर से प्रतिबंध उठा लिया गया, जिससे पूर्व बंगाल में तेल के भाव काफी गिर गये और मैंने अपना प्रयोग स्थगित कर दिया। साथ ही नारियल की गरी के भाव बेतरह ऊंचे चढ़ गये, जैसा कि इस मौसम में होता आया है। नारियल की गरी को अपने पुराने भाव तक पहुंचने में २-३ महीने लग जायेंगे। इधर यहां घोर दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई है और छह या सात गांवों में फैले हुए कोई ५०० परिवारों को जिनके बीच मैं राहत का काम कर रहा हूं, तेल-उत्पादन-कार्य स्थगित करने के कारण आर्थिक कष्ट भुगतना पड़ रहा है। ये परिवार बड़े साहसी हैं, 'करो या मरो' में आस्था रखते हैं और भाग निकलने की बात तक नहीं सोच सकते हैं। यदि दुर्भिक्ष निवारण के रूप में नारियल के तेल का उत्पादन फिर से शुरू नहीं किया गया तो ये लोग भूखों मर जायेंगे। इसके लिए तीन चीजों की जरूरत है :

(१) इन्हें कंट्रोल की दर पर चावल दिया जाए, (२) घाटे के दिनों में एक रुपया प्रति सेर के हिसाब से क्षति की भरपाई की जाए, तथा (३) विशुद्ध सेवा भावना को सामने रखकर नारियल के तेल के स्टाक की खपत का बन्दोबस्त किया जाए। नं० १ के बारे में नोआखाली के जिला मजिस्ट्रेट ने ५० मन चावल का प्रबन्ध करने का वचन दिया है और मैंने श्री बारदोलाई से भी ५० मन चावल

देने का अनुरोध किया है। नं० २ के लिए नवीन बाबू ने भार वहन करने का वचन दिया है पर वह अपने सीमित साधनों के साथ यह भार किस हद तक वहन कर सकेंगे सो मैं बतलाने में असमर्थ हूं। क्या आप इस दिशा में कुछ सहायता कर सकेंगे? नं० ३ के लिए श्री बारदोलई ने फर्म चान्मल सरावगी और फर्म हिम्मत सिंग्का से पूछा है कि क्या वे इस वितरण कार्य को हाथ में लेने को तैयार होंगे? पूर्व बंगाल तथा भारत के कोने-कोने में आपकी एजेंसियां काम कर रही हैं। क्या वे भी इस काम को हाथ में ले सकेंगी? यदि काम धड़ल्ले के साथ शुरू किया जाए, तो मैं प्रति सप्ताह १० १५ मन तेल तैयार करा सकता हूं। मैं यह चाहूंगा कि यह तेल वितरण करनेवाली एजेंसियों को नकद दामों पर सप्लाई कर दिया जाए। बस मेरा काम यहीं समाप्त हो जाता है। बाकी सारा काम वितरण करनेवाली एजेंसियों के जिम्मे रहेगा। मेरी शर्त यही है कि इस तेल में किसी प्रकार की मिलावट न की जाए। हम जो तेल उत्पादन करते हैं उसके खालिस रहने के मामले में मैं बड़ा सतर्क हूं। नोआखाली के मजिस्ट्रेट ने पूर्व बंगाल की रेलों के मुसाफिरी के डिब्बों में तेल देने का बंदोबस्त करने का वचन दिया है, और शायद आसाम सरकार भी वैसा करने को राजी हो जायगी। मैंने ४) की जो दर बताई है वह मटियालपुर सहकारिता समिति के गोदाम से उठाकर माल उठाने की दर है।

पूर्व बंगाल में आयात किये तथा भारी मिलावटवाले नारियल के तेल की दर ५) से ३॥) सेर तक है। हम जो तेल सप्लाई करेंगे उसके ताजा और खालिस होने की गारण्टी रहेगी और जिन कनस्तरों में उसे भरा जायगा उन पर तेल भरे जाने की तारीख लिखी रहेगी। नारियल का ताजा तेल बड़ी अच्छी गंध देता है और उसे घी अथवा डालडा की जगह काम में लाया जा सकता है। यह तेल ३ महीने से अधिक समय तक ताजा नहीं रह सकता। उसकी ताजगी बनाये रखने के लिए उसमें से प्राकृतिक प्रोटीन निकालना जरूरी होगा और यह भी एक तरह की मिलावट ही है।

सद्भावनाओं के साथ

आपका
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
अल्बुकर्क रोड
नयी दिल्ली

१२

१४ अक्तूबर १६४

प्रिय प्यारेलाल

तुम्हारे पत्र मेरे पास पहुच रहे हैं। उनका उत्तर इसलिए नही दिया क्योवि उत्तर देने की काई जरूरत नही थी। पर तुम्हार पत्र बडे ही रोचक होते है। इस प्रकार लिखते रहना।

आजकल अमरीकी पत्र पत्रिकाओ का मिलना दुश्वार सा है। पर मैं तुम्ह अपनी प्रतिया भेजने की काशिश करूगा।

तुम्हारा
घनश्यामदास

श्री प्यारेलाल
गाधी शिविर काजिरखिल
डा० रामगज जि० नोआखाली

१३

गाधी शिविर काजिरखिल के पत्ते पर
डा० रामगज
जिला नोआखाली
२३ अक्तूबर, १६४७

प्रिय घनश्यामदासजी

आपका १४ तारीख का पत्र कल मिला। मुझे इसका बडा दुख है कि मैंने आपको अमरीकी पत्रिकाओ के बाबत लिखा क्योकि उन्हे पाना आजकल बडा कठिन हो रहा है। उन्हें भिजवाने की तकलीफ मत उठाइये और यदि आप अपनी निजी प्रतिया भेजें तो खातिरजमा रहिये कि उनका उपयोग करने के बाद उन्हें ज्यो का-त्यो वापस कर दिया जायगा।

कृपा करके मेरी ६ दिसम्बर की चिट्ठी फिर से देखिये उसे ध्यानपूर्वक पढ़ने से आपको लगेगा कि उसमे उठाये गये प्रसगो के उत्तर की जरूरत है। उसमे

उल्लिखित (२) और (३) नम्बर की चीजों में आपकी सहायता की अत्यंत आवश्यकता है। यह मैं दुबारा इसलिए लिख रहा हूं क्योंकि मुझे लगता है कि आपने पत्र जल्दी में पढ़ लिया होगा और उसमें उठाये गये प्रसंगों की ओर आपका ध्यान नहीं गया होगा।

यहां पूजा का उत्सव निर्विघ्न समाप्त हो गया। कुल मिलाकर अल्पसंख्यक जाति के प्रति पूरे जिले में सद्भाव का वातावरण दिखाई देता है। इसका श्रेय सरकार द्वारा बरती गई दृढ़ता को मिलना चाहिए। खासकर इस गांव में उत्सव के दिनों में प्रायः वैसा ही उत्साह दिखाई दिया जो दंगों के पहले के दिनों के उत्सवों में रहता था। पर एकमात्र इसी को आधार मानकर यह नहीं कहा जा सकता कि पूर्व पाकिस्तान भर में कुशल मंगल है और स्वर्ग में भगवान विराजमान हैं। इससे तो केवल इतना ही प्रतीत होता है कि पाकिस्तान हाई कमाण्ड की शांतिवाली नीति किसी भी कीमत पर कम से कम इस अंचल में सफल हो रही है। वास्तव में यह भी कुछ अधिक नहीं है पर इस अंधकारमय संसार में प्रकाश की क्षीण सी रेखा भी बहुत है।

सद्भावनाओं के साथ

आपका ही
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
अल्बुकर्क रोड
नयी दिल्ली

१४

३० अक्तूबर १९४७

प्रिय प्यारेलाल

तुमने अपने ९ अक्तूबर के पत्र में जो मुद्दे उठाये हैं उनका उत्तर मैंने इसलिए नहीं दिया था कि मैं अपने कलकत्ता के कुछ मित्रों से सलाह मशवरा करना चाहता था। उनके साथ बातचीत की तो पता चला कि ४०) मन की

क्षति पूर्ति दना व्यावहारिक दप्टि से सम्भव नही है। नारियल क तल का भाव ५०) से ६०) मन तक ही रहेगा। ४०) मन क्षति पूर्ति क रूप म दिया जायेगा तो तयार तेल बहुत ज्यादा महगा पडेगा। उत्पादन म इतना खच करके तुम यह काम कब तक चला पाओग ? बस मुझे यही बताया गया है।

तुम्हारे पत्र स मालम हुआ कि तुम प्रति सप्ताह १५ मन तल तैयार करा सकत हो। ४०) प्रति मन के हिसाब से क्षति पूर्ति दने का अथ होगा कि २५००) मासिक अर्थात ३० ०००) वार्षिक देने हागे। इस तरह तुम खुद ही देखोग कि इस प्रस्ताव मे दाप है। क्याकि इस पर अमल करने का अथ यह हागा कि शुरू से ही ७० प्रतिशत क्षति पूर्ति के लिए देना आवश्यक होगा।

अब पूव बगाल मे मेरी कोई एजेंसी नही है। हमने पाकिस्तान-अचल म कारोबार एक प्रकार स बन्द ही कर रखा है। जब हम पाट खरीदत थ ता भी दा तीन जगहा पर खरीदते थे।

बापू मजे म हैं। सुशीला सवाग्राम चली गई है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

उल्लिखित (२) और (३) नम्बर की चीजों में आपकी सहायता की अत्यंत आवश्यकता है। यह मैं दुबारा इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि मुझे लगता है कि आपने पत्र जल्दी में पढ़ लिया होगा और उसमें उठाये गये प्रसंगों की ओर आपका ध्यान नहीं गया होगा।

यहाँ पूजा का उत्सव निर्विघ्न समाप्त हो गया। कुल मिलाकर अल्पसंख्यक जाति के प्रति पूरे जिले में सद्भाव का वातावरण दिखाई देता है। इसका श्रेय सरकार द्वारा बरती गई दृढ़ता को मिलना चाहिए। खासकर इस गाँव में उत्सव के दिनों में प्रायः वैसा ही उत्साह दिखाई दिया जो दंगों के पहले के दिनों के उत्सवों में रहता था। पर एकमात्र इसी के आधार मानकर यह नहीं कहा जा सकता कि पूर्व पाकिस्तान भर में कुशल मंगल है और स्वर्ग में भगवान विराजमान हैं। इससे तो केवल इतना ही प्रतीत होता है कि पाकिस्तान हाई कमाण्ड की शांतिवाली नीति किसी भी कीमत पर कम-से-कम इस अंचल में सफल हो रही है। वास्तव में यह भी कुछ अधिक नहीं है पर इस अंधकारमय संसार में प्रकाश की क्षीण सी रेखा भी बहुत है।

सद्भावनाओं के साथ

आपका ही
प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला
बिड़ला हाउस
अल्बूकर्क रोड
नयी दिल्ली

१४

३० अक्तूबर १९४७

प्रिय प्यारेलाल

तुमने अपने ६ अक्तूबर के पत्र में जो मुद्दे उठाये हैं उनका उत्तर मैंने इसलिए नहीं दिया था कि मैं अपने कलकत्ता के कुछ मित्रों से सलाह मशवरा करना चाहता था। उनसे बातचीत की तो पता चला कि ८०) मन की

क्षति-पूर्ति देना व्यावहारिक दृष्टि से सम्भव नही है। नारियल मे तेल का भाव ५०) स ६०) मन तक ही रहेगा। ४०) मन क्षति पूर्ति के रूप म दिया जायेगा तो तयार तेल बहुत ज्यादा महगा पडेगा। उत्पादन मे इतना खच करके तुम यह काम कब तक चला पाओग ? बस, मुझे यही बताया गया है।

तुम्हारे पत्र स मालम हुआ कि तुम प्रति सप्ताह १५ मन तेल तयार करा सकते हो। ४०) प्रति मन के हिसाब से क्षति पूर्ति देने का अथ होगा कि २५००) मासिक अर्थात ३० ०००) वार्षिक देने होगे। इस तरह तुम खुद ही देखोग कि इस प्रस्ताव म दाप है। क्याकि इस पर अमल करने का अथ यह हागा कि शुरू से ही ७० प्रतिशत क्षति पूर्ति के लिए देना आवश्यक होगा।

अब पूव बगाल म मेरी कोई एजेंसी नही है। हमने पाकिस्तान अचल म कारोबार एक प्रकार म बन्द ही कर रखा है। जब हम पाट खरीदते थ तो भी दो तीन जगहो पर खरीदते थे।

बापू मजे म है। सुशीला सेवाग्राम चली गइ है।

तुम्हारा
घनश्यामदास

१९५५ के पत्र

की रक्त पिपासा और उन्माद के बीच अपनी आत्मा को तपा-तपाकर पावन कर रहे होते हैं। मै ईश्वर का कृतज्ञ हू कि इस अमूल्य निधि का रेकार्ड रखने का भाग्य मुझे मिला।

प्या०

सलग्न

वार्ता

घनश्यामदास मुझे बम्बई जाना है कृपा करके उपवास छोडिए। सावित्री को तो यह वरदान मिला था कि—पुत्रवती हो मुझे भी यह वरदान दीजिए कि तुम्हारा कहा सच हो।

बापू सर्वथा निर्दोष तो ईश्वर ही हो सकता है। सब उपवास मे लगता था कब छूटे। कलकत्ता मे भी ऐसा था—मैं निश्छल आदमी हू सो कहता था हो न हो पर लगता था। यह आदमी आया। कुछ खबर लाया होगा कि छूट सकता है—इस समय यह नही छूटेगा, तो अच्छा तो लगेगा—उपवास करने मे कुछ मजा नही पर यह नही लगता। घनश्यामदास आया है—उपवास छटने की बात क्या—मृदुला पूछती है। काम करती है—पजाब मे क्या करू? मैंने कहा, ज्यादा नही पुछ सकती वहा से इफ्तिखार वि० पूछते हैं। वे पूछने आवे क्या करें ? मैंने कहा भले आवें—मैंने उसे कहा तू जा—पजाबियो को समझाने। वहा अच्छा होगा तो सब जगह होगा। मैं छोड दू तो पजाब मे जो पक रहा है नही पकेगा। दिल्ली काफी साफ होने की जरूरत है। कही कुछ हो दिल्ली साफ रहे तो बडी बात है। सरदार को दिल्ली मे कुछ करना ही न पडे तो बडा आसान हो जाता है। जहा जाना है जावें—आज हिन्द का कारोबार रुक गया है। मुझे अटूट धीरज है। काम भी काफी कर लेता हू हरिजन के लिए लिखवाया।

घनश्यामदास रणधावा से कल बात हुई—उसने कहा शहर का वातावरण काफी बदल गया है।

बापू रणधावा को कहो—उसमे रणधावा बहुत ऊचा जाता है—सबके दिल मे शक है कि वह पक्षपात से काम करता है। वह निकम्मा है ऐसा कोई नही कहते हैं।

४२ नया दिल्ली टाउन हाल
पार्लियामेंट स्ट्रीट
नयी दिल्ली
२० जनवरी १९५५

प्रिय घनश्यामदासजी

आपको याद होगा कि मैंने आपसे बापू के साथ हुई वार्ता के बारे में जो बापू के उपवास-काल में आपके बम्बई के लिए रवाना होने से पहले हुई थी चर्चा की थी। आपसे बात करने के बाद लौटा, तो बहुत कोशिश करने पर भी उस वार्ता का ब्योरा खोज पाने में असमर्थ रहा क्योंकि वह वार्ता कागज के एक पुर्जे पर लिखी गई थी और साथ ही मैं बापू की जीवनी की पहली जिल्द के लिए सामग्री तैयार करने में इतना संलग्न था कि मैं उस ओर अधिक समय नहीं दे सका।

अब मुझे वह कागज का टुकड़ा मिल गया है और उसकी एक प्रतिलिपि इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। मैं आपको बता ही चुका हूं कि वह वार्ता प्रभावती की लिखावट में थी। उसके कुछ एक अंश मेरी समझ में नहीं आ सके। अतएव सबसे उत्तम यही रहेगा कि मैं सारा विवरण आपके स्टेनो को बोलकर लिखा दूं और वह अपनी टाइप की हुई सामग्री मेरे देखने के लिए भेज दे। यदि कुछ अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता हुई तो मैं आपसे कह दूंगा।

सद्भावनाओं के साथ

प्यारेलाल

श्री घनश्यामदास बिड़ला

पुनश्च

वार्ता के जिन अंशों के बारे में स्पष्टीकरण की जरूरत है उन पर मैंने निशान लगा दिये हैं। मैं समझता हूं कि मेरे लिए उन अंशों का मर्म ग्रहण करना सम्भव होगा, पर मैं इस बारे में अपना पूरा समाधान कर लेना चाहता हूं। इस ब्योरे को फिर से पढ़ा तो मुझे यह अमूल्य लगा—यह छूटे हुए सोने का एक बेशकीमती टुकड़ा है जो धीमे धीमे चलचित्र की तरह बापू के जीवन के उन महान क्षणों की याद दिलाता है जबकि वे बर्बरता से भरे दिनों में बर्बर और पाशविक बने मनुष्य

की रक्त पिपासा और उन्माद के बीच अपनी आत्मा को तपा-तपाकर पावन कर रहे होते हैं। मैं ईश्वर का कृतज्ञ हूं कि इस अमूल्य निधि का रिकाड रखने का भाग्य मुझे मिला।

प्या०

सलग्न

वार्ता

घनश्यामदास — मुझे बम्बई जाना है कृपा करके उपवास छोडिए। सावित्री को जो यह वरदान मिला था कि— पुत्रवती हो मुझे भी यह वरदान दीजिए कि तुम्हारा कहा मान लो।

बापू — सर्वथा निर्दोष तो ईश्वर ही हो सकता है। सब उपवास में लगता था सब छूट। कलकत्ता में भी ऐसा था—मैं निश्छल आदमी हू सो कहता था होन हो पर लगता था। यह आदमी आया। कुछ खबर लाया होगा कि छूट सकता है—इस समय यह नहीं छूटेगा तो अच्छा तो लगेगा—उपवास करने में कुछ मजा नहीं, पर यह नहीं लगता। घनश्यामदास आया है—उपवास छूटने की बात क्या—मृदुला पूछती है। काम करती है—पजाब, मैं क्या करूं? मैंने कहा ज्यादा नहीं पूछ सकती वहां से इफ्तिखार वि० पूछते हैं। वे पूछने आवें क्या करें? मैंने कहा भले आवें—मैंने उसे कहा तू जा—पजाबियों को समझाने। वहां अच्छा होगा, तो सब जगह होगा। मैं छोड दू तो पजाब में जो पक रहा है नहीं पकेगा। दिल्ली काफी साफ होने की जरूरत है। कहीं कुछ हो दिल्ली साफ रहे तो बडी बात है। सरकार को दिल्ली में कुछ करना ही न पडे तो बडा आसान हो जाता है। जहां जाना है जावें—आज हिन्द का कारोबार रुक गया है। मुझे अटूट धीरज है। काम भी काफी कर लेता हूं हरिजन के लिए लिखवाया।

घनश्यामदास — रणधावा से कल बात हुई—उसने कहा शहर का वातावरण काफी बदल गया है।

बापू — रणधावा को कहो—उसमें रणधावा बहुत ऊंचा जाता है—सबके दिल में शक है कि वह पक्षपात से काम करता है। वह निकम्मा है ऐसा कोई नहीं कहते हैं।

घनश्यामदास आज किसे निष्पक्ष कहना सो कठिन है—मेरा दिल भी नही। इतना दद हुआ है पाकिस्तान के कामो से कि मुसलमान पर से विश्वास उठ गया है। आप फिर कानशन्स (सदसद्विवेक) जाग्रत करते हैं तो होता है। गुस्से मे निष्पक्ष विचार नही करता।

बापू तो क्या पजाब म जो होता है वह निष्पक्ष है वह अब कहते है। होता है कि मैंने क्या पाकिस्तान के लिए काम किया नोआखाली म।

घनश्यामदास कुर्बानअली की दृष्टि निष्पक्ष है। अपने भले के लिए भी कम्युनलिज्म (साम्प्रदायिकता) बुरा है—सोचने पर निष्पक्षता आती है गुस्से मे नही।

बापू तो ठीक है। आपको भी कहना चाहिए बुरा है पर यह परिणाम अच्छा आ रहा है। मैं छोड दू तो यह परिणाम यही रुक जायेगा।

घनश्यामदास मैं तो अपने मन की बात करता हू। यह बीमार मन की क्षणिक स्थिति है। ऐसे हम चले तो पायमाल ही होना है। वह सफाई आपको आगे लानी है।

बापू वह भी तभी हो सकता है। अभी काफी सफाई होना है।

घनश्यामदास वह भी तभी जब शरीर हो।

बापू ऐसा तो लगता है कि शरीर को रहना है। विल टू लिव (जीवन इच्छा) छूटी नही। विल (इच्छा) को ईश्वर मदद देता है। डाक्टरो की नजर से—पेशाब कम नीद ज्यादा कुछ अच्छा नही है। और बिलकुल न खाऊ तो उनको अच्छा नही लगता। मगर मैं सचमुच भगवान पर कितना भरोसा रखता हू ? हृदय से हैं तो अपने आप किडनी फक्शन (गुर्दा का काम) सुधरता है।

घनश्यामदास मेरा दिल यही पडा है यह कहना चाहिए कल श्यामाप्रसाद ने कहा तो हुआ कि जाऊ। वायदा किया है और सरदार का चेहरा—उस स्टाग (दृढ सकल्प) आदमी का चेहरा दीन हो गया। उन्होने भी कहा, आ सकते हो तो आ जाओ। मैं दुख स तो भरा था। कहा उपवास क्या चलना है ? मैंने कहा उपवास लम्बा नही चलेगा ऐसा मानता हू। तो भी यहा रहना अच्छा लगता है।

बापू ब्रजमोहन तो है। यहा साधारण स्थिति रहगी।

घनश्यामदास काम तो ईश्वर करता है अपने-आप होता है। मनुष्य का लगना है, मैं करता हू।

बापू जहा जाऊ वहा शुद्धि का काम तो होता है नही तो विचार करने की बात है।

+ + +

बापू यही एक चाज थी जिसे एक्सप्लाइट (उपयोग म लाना) कर सकते थे। यह करन स पाकिस्तान का ५५ करोड रुपया दन म यूनियन की प्रेस्टीज (प्रतिष्ठा) बहुत बढ गई है। लडे हमारे साथ इस ५५ करोड म। हमार सिपाही समझेंगे कि हमारे पैस स लडते हैं। लडो कितने दिन लडोगे ?

(समाप्त)